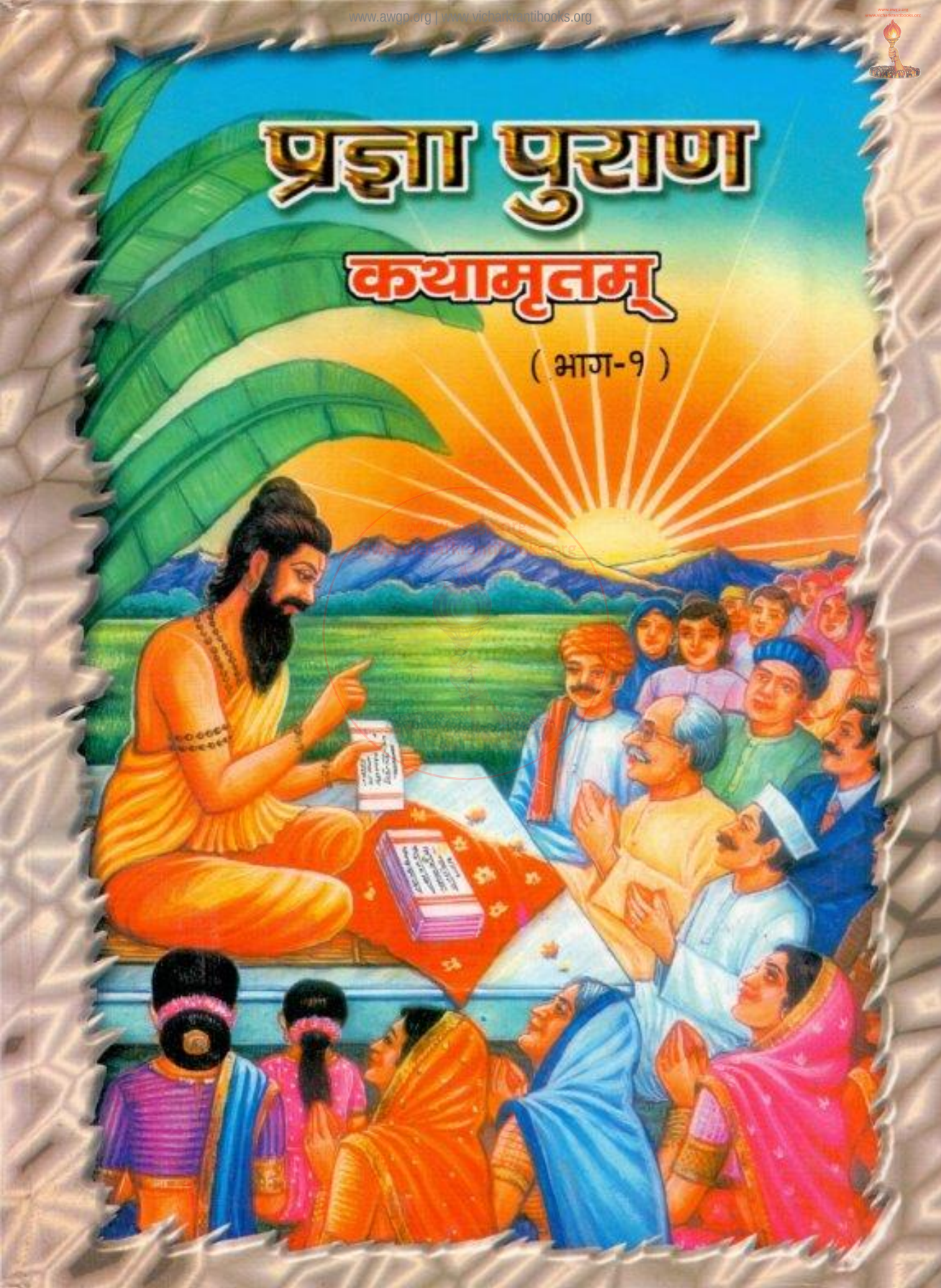
www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# प्रज्ञा पुराण

## कथामृतम्

( भाग-१ )



: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम्

( भाग-एक )

*

लेखिका :
डॉ. सुशीला गुप्ता
डी. लिट्.

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

*

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा—२८१००३
फोन (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. : ०९९२७०८६२८९, ०९९२७०८६२८७

पुनरावृत्ति सन् २०१३

मूल्य-१३०.०० रुपये

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# विषयानुक्रम

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम्


| क्र. | दिवस | प्रकरण | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १ | प्रथम दिवस | लोक कल्याण जिज्ञासा प्रकरण | १३ |
| २ | द्वितीय दिवस | आत्मज्ञान एवं अजस्र अनुदान प्रकरण | ४९ |
| ३ | तृतीय दिवस | संयमशीलता, कर्त्तव्यपरायणता प्रकरण | ८७ |
| ४ | चतुर्थ दिवस | ज्ञान, कर्म, भक्ति भावना प्रकरण | १२४ |
| ५ | पंचम दिवस | सत्साहस संघर्ष प्रकरण | १६५ |
| ६ | षष्ठ दिवस | परिवार प्रकरण | १९८ |
| ७ | सप्तम दिवस | प्रज्ञावतार प्रकरण | २४६ |
| ८ | गीत | गीत | २७७ |


Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# आभार-समर्पण

मेरे पूर्व जन्मों के संचित पुण्यों के फलस्वरूप पूज्य गुरुदेव के दर्शन हुए और माँ गायत्री की असीम कृपा बरस पड़ी। उनकी प्रेरणा से प्रज्ञा पुराण पर डी. लिट् किया, जिसमें अनेक बाधाएँ आने पर भी सफलता मिली। इसके पश्चात् ''प्रज्ञावतरण'' नामक पुस्तक वंदनीया माता जी ने मुझ से लिखवाई। शांतिकुंज में प्रज्ञा पुराण की कथा के बीच में जो संगीत दिया जाता था, वह मेरे मन को इतना भाया कि मेरे मन में संपूर्ण ग्रंथ को ही राधेश्यामी तर्ज पर लिखने की इच्छा जाग उठी। संगीत की प्रभावोत्पादकता सर्व विदित है, इसके द्वारा मनोरंजन के साथ– साथ उपदेश देकर विचार परिवर्तन किया जा सकता है।

इस कार्य में मुझे सबसे अधिक आशीर्वाद मिला गायत्री तपोभूमि के व्यवस्थापक पितृ तुल्य पंडित लीलापत शर्मा जी का, जिन्होंने मुझे इस कथा को सुनाने का आदेश दिया और उनका आशीर्वाद पाकर जब मैं कथा वाचक बनकर मंच पर बैठी तो उन्होंने मेरा तिलक कर स्वयं नीचे बैठकर कथा को सुना। मेरे लिए यह परम सौभाग्य का दिन था, जब पूज्य पंडित जी ने मुझे आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी यह कथा देश विदेश में गूँजेगी। उनके आशीर्वाद का ही प्रतिफल है कि मुझें कनाडा (टोरन्टो) जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मैंने इस कथा को विदेश में सुनाया।

इस ग्रंथ की रचना में परम आदरणीय सर्वश्री डॉ. प्रणव पंड्या जी, वीरेश्वर उपाध्याय जी, श्यामबिहारी दुवे जी, डॉ. विष्णुशरण इंदुजी,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शचींद्र भटनागर जी, डॉ. आर. पी. कर्मयोगी जी एवं द्वारिकाप्रसाद चैतन्य जी का प्रोत्साहन, मार्गदर्शन एवं सहयोग भुलाया नहीं जा सकता। इनका आभार प्रकट करने की क्षमता मुझ में नहीं है। मैं माँ गायत्री, पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माता जी से इन सब के दीर्घ स्वस्थ जीवन की प्रार्थना करती हूँ। मैं जाने अनजाने गीतकारों के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ, जिनके गीतों को मैंने इस कथा–माला में पिरोया है।

अंत में मैं यह पुस्तक समर्पित करती हूँ अपने पतिदेव को जिन्होंने गुरु की भाँति सदैव मेरा मार्ग दर्शन किया है। आज वे स्थूल रूप में मेरे समक्ष नहीं हैं, किंतु सूक्ष्म रूप में उनका मार्गदर्शन ही मेरे जीवन का आधार है।

यह पुस्तक सर्व साधारण भावुक जनता को प्रज्ञा पुराण का संदेश देने के लिए लिखी गई है। अतः 'सियाराम मय सब जग जानी, करहु प्रनाम जोरि जुग पानी' के अनुसार सब को प्रणाम करते हुए ''प्रज्ञा पुराण कथामृतम्'' आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ और समस्त सुधी पाठकों से अनुरोध करती हूँ कि इसमें जो कुछ अच्छा लगे उसे गुरुदेव का प्रसाद तथा जो गलत लगे उसे मेरा प्रमाद समझकर मेरी त्रुटियों से मुझे अवगत कराने की कृपा करें।

तमसो मा ज्योतिर्गमय। असतो मा सद्गमय। मृत्योर्माऽमृतंगमय।

**–डॉ० सुशीला गुप्ता**

दीपमालिका–२००१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# विनम्र–निवेदन

भारतीय संस्कृति के उपासक आचार्य पं०श्रीराम शर्मा जी द्वारा रचित प्रज्ञा पुराण को उनके समस्त साहित्य सागर का सार कहा जा सकता है। कथा साहित्य की लोकप्रियता को देखते हुए आचार्य श्री ने प्रज्ञा पुराण की रचना की, जिसमें आधुनिक परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं के अनुरूप कथाओं के माध्यम से मानव के अचिंत्य चिंतन को बदलने के उद्देश्य से दैनंदिन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया गया है। प्रज्ञा पुराण ग्रंथ रामायण तथा गीता के समान ही प्रेरणा प्रद है।

आधुनिक युग की इस प्रेरक कृति प्रज्ञा पुराण को जन–जन तक पहुँचाने के उद्देश्य को लेकर इस पुस्तक की रचना की गई है। प्रज्ञा पुराण का मूल ग्रंथ संस्कृत में है, उन श्लोकों की हिन्दी में व्याख्या कर कथाओं के द्वारा युग चेतना जगाने का प्रयत्न किया गया है। संगीत की लोकप्रियता सर्वविदित है, उसमें हृदय तंत्री को झंकृत करने की अपूर्व क्षमता है, अतः मनोरंजन के साथ साथ जन कल्याण की भावना को ध्यान में रखकर **प्रज्ञा पुराण कथामृतम्** पुस्तक में श्लोकों की व्याख्या को राधेश्यामी तर्ज पर गेय पदों में प्रस्तुत किया गया है, जिससे प्रज्ञा पुराण का संदेश घर–घर, ग्राम–ग्राम, नगर–नगर तक पहुँच सके। लोक रंजन के साथ लोक मंगल का यह सर्व सुलभ मार्ग है। बहन सुशीला गुप्ता का यह अभूतपूर्व एवं सराहनीय

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयास है। हम उनके यशस्वी जीवन की कामना गायत्री माता से करते हैं। गुरुदेव ने एक स्थान पर लिखा है कि लेखनी तो सतत् क्रियाशील रहेगी, चिंतन हमारा ही सक्रिय रहेगा, हाथ भले ही किसी के भी हों।

**प्रज्ञा पुराण कथामृतम्** पुस्तक में सात दिवस की कथाओं के माध्यम से सात प्रकरणों को प्रज्ञा पुराण से लिया गया है। स्वयं पढ़ने के अतिरिक्त सामूहिक सत्संग में इसे हारमोनियम–तबले अथवा ढपली के साथ सुनाया जा सकता है। पुराणों की कथाएँ सभी श्रद्धालु बड़े प्रेम से सुनते हैं। प्रज्ञा पुराण कथा प्रज्ञा पुत्रों द्वारा देश विदेशों में सुनाई जा रही है। हर व्यक्ति इस कथा को सुना सके, इसी लक्ष्य को लेकर **प्रज्ञा पुराण कथामृतम्** पुस्तक की रचना की गई है। आस्था संकट की इस बेला में सांस्कृतिक पुनर्जागरण हेतु क्या व कैसे किया जाना चाहिए, पुस्तक में स्पष्ट करने का प्रयास है।

कथा सुनाने के लिए युग निर्माण योजना, मथुरा से प्रकाशित 'प्रज्ञावतरण' नामक पुस्तक की कथाएँ भी सहायक सिद्ध हो सकती हैं। कथावाचक को प्रज्ञा पुराण के चारों खण्डों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए, क्योंकि उसमें कथाओं का भंडार है, उसकी जानकारी अति आवश्यक है। परिजनों को चाहिए कि अपने क्षेत्र में कथा कहने में सक्षम तथा संगीत की संगति देने वाले परिजनों की टोली बना कर कथा का अभ्यास करें तथा क्षेत्र में स्थान–स्थान पर कथाओं के आयोजन संपन्न कराएँ।

व्यवस्थापक
युग निर्माण योजना, मथुरा.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# प्रज्ञा पुराण कथा की पूर्व व्यवस्था एवं आयोजन

## भूमि पूजन एवं शोभा यात्रा

प्रज्ञा पुराण कथा के आयोजन का प्रचार–प्रसार बैनरों एवं प्रचार पत्रकों द्वारा व्यापक रूप से किया जाए।

प्रथम दिन भूमि पूजन, दीपयज्ञ अथवा अग्निहोत्र द्वारा 'कर्मकांड भास्कर' पुस्तक की सहायता से कराया जाए। शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ, मंदिर आदि पवित्र स्थान पूर्व से ही संस्कारित होते हैं, अतः वहाँ भूमि पूजन आवश्यक नहीं है। भूमि पूजन प्रातः कराने के उपरांत उसी दिन शोभा यात्रा निकाली जा सकती है अथवा अगले दिन भी निकाली जा सकती है। शोभा यात्रा में पाँच महिलाएँ सुसज्जित कलश एवं अन्य भाई–बहन लाल–पीले कपड़े में लिपटे प्रज्ञा पुराण ग्रंथ सिर पर रखकर चलें। यथासंभव सभी पीत वस्त्र धारण करें। लाउडस्पीकर से नारे, गीत आदि गाते चलें। सबसे आगे झंडा रहे। बैनर तथा तख्तियों पर मिशन के नारे अथवा सद्वाक्य लिखे हुए हों। अंत में गायत्री माता, गुरुदेव एवं माता जी के चित्रों की सुसज्जित झाँकी रहे। सबसे आगे बैंड बाजे की व्यवस्था भी की जा सकती है।

## मंच सज्जा

कथा का मंच यथासंभव आकर्षक सजाया जाए। देव मंच पर गायत्री माता, गुरुदेव, माताजी तथा मशाल के चित्र लगाए जाएँ। दीपक एवं कलश देव मंच पर रखे जाएँ। पूजा की थाली में रोली, चावल, नैवेद्य, पुष्प, मालाएँ आदि रखे जाएँ। व्यास का आसन कुछ ऊँचा एवं सुसज्जित रहे। व्यास के सम्मुख चौकी पर प्रज्ञा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुराण लाल कपड़े में लिपटा हुआ स्थापित रहे। मंच पर संगीत टोली के बैठने की व्यवस्था भी रहे। माइक एवं प्रकाश की समुचित व्यवस्था रहे।

**प्रतिदिन कार्यक्रम इस तरह प्रारंभ करें :**

(१) उद्घोषक द्वारा माइक पर सभी सम्मानित श्रोताओं का आभार, सम्मान प्रकट करते हुए शांति एवं व्यवस्था बनाने का अनुरोध किया जाए। तत्पश्चात् संगीत टोली द्वारा गायत्री मंत्र, प्रतिदिन के लिए निर्धारित गुरु वंदना एवं प्रज्ञागीत गाए जाएँ।

(२) उद्घोषक द्वारा कथावाचक के आने की सूचना देना तथा किसी वरिष्ठ परिजन द्वारा कथावाचक को सम्मान सहित लाकर पुष्प वर्षा करते हुए मंच पर बिठाना। उद्घोषक द्वारा कथावाचक का सूक्ष्म परिचय देना।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

(३) मुख्य अतिथि (पति–पत्नी) द्वारा प्रज्ञा पुराण का पूजन तथा कथावाचक का तिलक एवं माल्यार्पण। अन्य सम्मानित अतिथियों द्वारा संगीत टोली का तिलक एवं माल्यार्पण। प्रज्ञा पुंराण पूजन में पवित्रीकरण, स्वस्तिवाचन, गुरु वंदना, ईश वंदना, गणपति वंदना, सरस्वती वंदना, गौरी वंदना, व्यास वंदना, प्रज्ञा पुराण पूजन एवं साष्टांग नमस्कार करें, जिनके मंत्र नीचे दिए गए हैं।

(४) कथावाचक द्वारा मुख्य अतिथि तथा सम्मानित अतिथियों का तिलक, माल्यार्पण कर सम्मान अथवा आशीर्वाद। दुपट्टा तथा प्रज्ञा पुराण भी भेंट किए जा सकते हैं।

(५) संगीत टोली द्वारा कीर्तन के उपरांत कथा प्रारंभ की जाए। हर कथा से पूर्व कथावाचक द्वारा भाव भरी वंदना निम्नलिखित मंत्रों द्वारा अवश्य की जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वेदमाता गायत्री की जय
परमपूज्य गुरुदेव की जय
वंदनीया माताजी की जय
प्रज्ञा पुराण की जय
भारतीय संस्कृति की जय

## पवित्रीकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु।

## गुरु वंदना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुरेव महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥

## ईश वंदना

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः, त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम, त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥
नमस्ते सते ते जगत्कारणाय नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैततत्त्वाय मुक्तिप्रदाय नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय॥

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गणेश स्तुति

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं, पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै, गणाधिपतये नमः॥

सरस्वती वंदना

सरस्वत्यै नमो नित्यं, भद्रकाल्यै नमो नमः।
वेदवेदान्तवेदाङ्ग, विद्यास्थानेभ्य एव च ॥

गायत्री वंदना

ॐ आयातु वरदे देवि ! त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रिच्छन्दसां मातः, ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते॥

गौरी वंदना

सर्वमङ्गलमांगल्ये, शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि ! नमोऽस्तु ते॥

व्यास वंदना

व्यासाय विष्णुरूपाय, व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये, वासिष्ठाय नमो नमः॥

प्रज्ञा पुराण पूजन

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञ
ꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोꣳ३म्प्रतिष्ठ॥

साष्टांग नमस्कार

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

मुख्य यजमान द्वारा कथा वाचक का कलावा व तिलक किया जाए

ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नःपूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः, स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

## संकल्प : (केवल प्रथम दिन)

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य, अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, भूर्लोके, जम्बूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते.....क्षेत्रे, मासानां मासोत्तमेमासे..... मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे.....गोत्रोत्पन्न:.....नामाऽहं सत्प्रवृत्ति–संवर्द्धनाय, दुष्प्रवृत्ति–उन्मूलनाय, लोककल्याणाय, आत्मकल्याणय, वातावरण–परिष्काराय, उज्ज्वलभविष्य कामनापूर्तये च प्रबलपुरुषार्थं करिष्ये, अस्मै प्रयोजनाय च कलशादि–आवाहितदेवता प्रज्ञापुराणपूजनपूर्वकम् श्रवण कर्म सम्पादनार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।

प्रतिदिन प्रज्ञा पुराण कथा के अंत में यह आरती गायी जानी चाहिए। कम से कम पाँच थालियों में आरती सजाकर विशिष्ट व्यक्तियों से आरती कराई जाए। आरती के पश्चात् प्रसाद वितरण तथा छठवें दिन सायंकाल सामूहिक दीपयज्ञ किया जाए।

## आरती श्रीप्रज्ञा पुराण की

आरती श्री प्रज्ञा पुराण की, युग द्रष्टा के दिव्य ज्ञान की।
दीन दयाल दु:खी जन जन है, त्रय तापों से तापित मन है।
दूषित हुआ मनुज चिंतन है विकृत होता जन जीवन है।
युक्ति बताएँ आप त्राण की, आरती श्री प्रज्ञा पुराण की।
जन मंगल की चिंता जिनको, मेरा द्वार खुला है उनको।
साधुवाद हे नारद तुमको, जन सेवक से ममता तुमको।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिली कृपा करुणा निधान की, आरती श्री प्रज्ञा पुराण की।
नारद समाधिस्थ हो जाओ, युग का समाधान फिर पाओ।
लो प्रज्ञा पुराण ले जाओ, प्रज्ञा पुत्रों को समझाओ।
यह कृति है युग समाधान की, आरती श्री प्रज्ञा पुराण की।
यह प्रभु का प्रज्ञावतार है युग पीड़ा का शमनसार है।
दुश्चिंतन का यह उतार है, विधि भव रोगों के निदान की।
पीड़ा युग के विकल प्राण की, आरती श्री प्रज्ञा पुराण की।
आरती श्री प्रज्ञा पुराण की, युग द्रष्टा के दिव्य ज्ञान की।
आरती श्री प्रज्ञा पुराण की।

अंतिम दिन सामूहिक यज्ञ किया जाए तथा पूर्णाहुति के पश्चात् यदि संभव हो सके तो प्रसाद रूप में अमृताशन (खिचड़ी, खीर) इत्यादि की व्यवस्था की जा सकती है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# प्रज्ञा पुराण कथा की सरिता घर-घर बहे

लोक शिक्षण को ग्राह्य बनाने और जन सामान्य को सीखने सिखाने की लगन बहुत समय से रही है। गुरुकुल आरण्यकों की व्यवस्था के पीछे यही भाव रहा है। समूचे समाज तक यह शिक्षण की प्रक्रिया पहुँच सके, इसके लिए मनीषियों ने कथा–कीर्तन का विधान बनाया। उद्देश्य यही रहा कि यदि समाज विद्यालय तक नहीं पहुँच सकता, तो विद्यालय को समाज तक पहुँचना चाहिए। समूचा समाज शिक्षार्थी बने और सारी धरती पाठशाला। इस स्वरूप को विकसित करने के लिए तरह–तरह के धर्मानुष्ठानों का विधान किया गया।

संसार का बहुसंख्यक समुदाय भावों की भाषा समझता और कर्म में जीता है। शोध का संसार विचारों का है। प्राचीन काल के ऋषि–मुनि गुफाओं और वनों में एकांत में बैठकर मानव की अंतःप्रवृत्तियों के रहस्यों और उसकी बाहरी प्रवृत्ति के साथ सामंजस्य के बारे में खोज किया करते थे। इन मूल्यवान तथ्यों को व्यवहार में उतारने की विधि का प्रश्न बना ही रहता था। जन जीवन तत्त्वचिंतन का नहीं, कला का रसिक है और वह कर्म की ओर आकर्षित होता है। जन–मन की इसी अभिरुचि को ध्यान में रखकर वेदों को काव्य रूप में और धर्मानुष्ठानों को कर्म के रूप में निरूपित किया गया।

उपनिषदों और दर्शनों में शोध के निष्कर्ष सूत्र की भाषा में दिए गए। सर्व साधारण इन्हें सोचे–समझे और तद्नुरूप जीवन जी सके, इसी विचारधारा को लेकर पुराणों की धारा बह निकली। अठारह पुराण और इक्कीस उपपुराणों के साथ रामायण और महाभारत के साथ समूचा कथा साहित्य वेदों और दर्शनों की तुलना में कई गुना है। ''सूचनात् सूत्रम्'' सूत्र संकेत भर करते हैं। जिस ओर उनका संकेत है, उस तरफ सामूहिक जन जीवन चल पड़ने के लिए मचल उठे। यह तभी संभव है, जब सूत्रों का भाव भली प्रकार गहराई में बैठ जाए।

हृदय के कपाट खुले नहीं रहते, उन्हें खोलना पड़ता है और यह खोलने की क्रिया अपने आप में कला है। कला का अर्थ है–ग्रहणशीलता का जागरण। कला संपर्क में आने वाले मनों को बरबस अपनी ओर खींच–घसीट ले जाती है। कला अपने आप में पूर्ण नहीं। किसी न किसी तरह दर्शन का अवलंबन अनिवार्य होता है। ''कला के लिए कला'' का आधुनिक विचार अपरिपक्व और उथली सोच का परिणाम है। जैसे पाक कला के सिद्ध हस्त के हाथों बने व्यंजन देख कर किसी के मुँह में पानी आ जाता है और उसकी प्रशंसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होने लगती है, परंतु यदि व्यंजनों में जहर मिला हो, तो परिणाम रोग–शोक–मृत्यु ही होंगे। अतः महत्त्वपूर्ण यह है कि पाक कला विशेषज्ञ के विचार और भाव क्या हैं ?

कलाओं में साहित्य सर्वश्रेष्ठ है। इस पर समाज का जीवन और उसका मानसिक स्वास्थ्य टिका है। पुराणकार यह जानते थे कि दर्शन विचारों की अनुभूति है और कला विचारों की अभिव्यक्ति। आजकल जनता की विचारधारा विकृत हो गई है, इसलिए कला भी विकृत हो गई है। यदि कलाकारों में सद्विचारों का अभाव रहा, तो उनकी कला समाज में प्राण और प्रेरणा नहीं भर सकती। ऐसे कलाकार प्रशंसा, प्रोत्साहन, पुरस्कार और उपाधियाँ पाकर भी पीड़ा और पतन देने वाले ही सिद्ध होते हैं। कथाओं के विस्तृत तंत्र का प्रयोजन यही है कि मानव की आस्थाओं और आचरण दोनों को उत्कृष्ट कैसे बनाया जाए ? रीति–रिवाजों, नियम–मर्यादाओं और आचार–व्यवहार का शिक्षण ही कथा साहित्य का उद्देश्य रहा है। रामकथा ने जन जीवन में मर्यादाओं को रोपण किया, तो श्रीमद्भागवत कथा ने संवेदना अंकुरित की। मृत्यु का रहस्य बताने और शोक निवारण में हरिवंश पुराण की कथाएँ जीवन रहस्य का बोध कराती हैं। महाभारत तो कथा शैली में ज्ञान का विश्वकोश ही है।

अन्य धर्मों में भी कथाओं का प्रचलन रहा है। बाइबिल के उपदेश कथा भंडार ही हैं। जैन कथाओं और बौद्ध जातक कथाओं की शैली भी यही है। उपदेश के समय श्रोता के मन में प्रश्न उठता है कि इसे किसी अन्य ने भी पालन किया है या नहीं, अन्यथा हम ही क्यों भोग–विलास को छोड़कर आदर्श के मार्ग पर चलें ? कथा का सरिता प्रवाह इन प्रश्नों का समाधान निकालता चलता है।

भारतीय संस्कृति में कथा को एक धर्मानुष्ठान का स्वरूप दिया गया है। श्रोता और वक्ता दोनों को कुछ खास कर्मकांडों को पूरा करके अपनी मनोभूमि का निर्माण करना होता है। नैमिषारण्य कभी इस तरह के धर्मानुष्ठानों का केंद्र होता था, जहाँ से सूत–शौनक परंपराएँ गाँव–गाँव पहुँचती थीं। आज भी उनके चिह्न नौ दिवसीय रामकथा और सात दिवसीय भागवत् कथा के रूप में देखने को मिलते हैं। कथावाचक साधक हो, तो उसकी साधना से दृष्टांतों की मार्मिकता श्रोताओं के हृदय में संवेदनाओं का अंकुरण करती है। इन कथाओं को सुनकर अपराधियों को भी बदलते देखा गया है। तुलसीदास से रामकथा सुनकर रामचरितमानस की पोथी चुराने आए दो चोरों का हृदय परिवर्तन विख्यात है। रामानुज की भागवत् कथा ने दुर्दांत नामक भयंकर दस्यु को संत बना दिया। शुकदेव जी से कथा सुनकर राजा परीक्षित का मोक्ष हो गया। परीक्षित श्रोता हो और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शुकदेव जी जैसे निस्पृह साधक वक्ता हों, तो मोक्ष आज भी संभव है।

शहरी वातावरण में तड़क–भड़क, मशीनी जिंदगी और टी.वी.–कम्प्यूटर का प्रचलन कथा आयोजनों के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण नहीं कर पाता, लेकिन भारत के ग्रामीण अंचल के लिए कथा समारोह आज भी वरदान हैं। कथा समारोहों के साथ कीर्तन का गहरा संबंध है। कीर्तन में नृत्य और संगीत का समावेश है। भजन में संगीत और गीत का गुंफन है । कथा में ये दोनों जुड़े रहने चाहिए। भजन में टोली के गायक जन समूह को भी शामिल करें। कीर्तन तो स्वतः सामूहिक होने लगता है। भजन के बोल सभी दुहराएँ तो अच्छा रहता है। भजन–कीर्तन की प्रक्रिया मनुष्य में भावोल्लास विकसित करती है। मशीनी जिंदगी जी रहा इंसान न तो खुलकर हँस सकता है और न रो सकता है। बस घुटन–सिसकन–तड़पन ही उसके पल्ले पड़ती है। कीर्तन मनोविकारों के विरेचन और रूपांतरण की प्रक्रिया है। इस जनांदोलन में चैतन्य महाप्रभु के गौड़ीय संप्रदाय और महाराष्ट्र के वारकरी संप्रदाय का विशेष योगदान रहा है। प्रेमोन्मत्त होकर स्वर–ताल की बात भूलकर नृत्य के साथ जो कीर्तन किया जाता है, वह हनुमदीय पद्धति है। जैसे मीरा का कीर्तन। स्वर–ताल के साथ तांडव नृत्य नियमों के साथ किया जाने वाला कीर्तन शांभवी पद्धति है। वाद्यों के साथ या बिना वाद्यों के बैठकर या खड़े होकर भगवन्नाम का संकीर्तन नारदीय पद्धति है। कथा के बीच–बीच में नामध्वनि, पद कीर्तन, वैयासकीय पद्धति है। चैतन्य महाप्रभु के कीर्तन ने जघाई–मघाई दस्युओं का जीवन बदल दिया। प्राचीन कथा एवं भजन–कीर्तन की शिक्षण शैली को भूल जाने के कारण मानव जीवन दुर्दशा के गर्त में चला गया। इसे परिमार्जित करते हुए नए सिरे से युगानुकूल निर्धारण करने की अकुलाहट ने परम पूज्य गुरुदेव को प्रज्ञा पुराण की रचना करने को विवश किया। समय परिवर्तनशील है। उसकी परिस्थितियाँ, मान्यताएँ, प्रथाएँ, समस्याएँ एवं आवश्यकताएँ भी बदलती रहती हैं। उनके समयानुकूल समाधान खोजने पड़ते हैं। यह कार्य ऋषि कल्प ही करने में समर्थ होते हैं। युग ऋषि ने इसी परिवर्तित सृष्टि क्रम को ध्यान में रखते हुए प्रज्ञा पुराण की रचना छः खंडों में की है, जिसमें से चार खंड प्रकाशित हो चुके हैं। इसके साथ युग संकीर्तन की वैयासकीय एवं नारदीय पद्धतियाँ भी जुड़ी हुई हैं।

कथाएँ मनुष्य जीवन को बहुत प्रभावित करती हैं। प्राचीन काल में विष्णु शर्मा नामक पंडित जी ने राजा के दुष्ट पुत्रों को कथाएँ सुनाकर सदाचारी बना दिया था। हितोपदेश और पंचतंत्र की कहानियाँ इसके प्रमाण हैं। होम्योपैथी की मीठी गोलियों की तरह

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कथाओं के माध्यम से मानव के दृष्टिकोण को बदला जा सकता है। यहाँ प्रश्न यह भी उठ सकता है कि जब पहले से १८ पुराण, २१ उपपुराण और विशाल कथा साहित्य मौजूद था, तो पूज्यवर को प्रज्ञापुराण रचने की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई ? इस विषय में यह कहा जा सकता है कि रोगी का उपचार उसके रोग के अनुसार ही किया जा सकता है। त्रेता में रावण ने धन और शक्ति एकत्रित कर ली, तो उसे अहंकार हो गया। अहंकार ही विनाश का कारण होता है, यह समझाने के लिए रामायण की रचना हुई। महाभारत काल में धृतराष्ट्र के पुत्रमोह के कारण विनाश की कथा महाभारत ग्रंथ में समझाई गई और अर्जुन के कुटुंब मोह को दूर करने के लिए गीता लिखी गई। आज का मानव अनास्था के कारण भौतिकवादी बनकर दुर्बुद्धि ग्रस्त हो गया है, तो युग व्यास पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने व्यक्ति के विचारों एवं दृष्टिकोण को बदलने के उद्देश्य से प्रज्ञा पुराण की रचना की। इस ग्रंथ की विशेषता यह है कि इसमें काल्पनिक देवी–देवताओं, राजा–महाराजाओं और सिद्ध–साधकों की असंभव सी लगने वाली चमत्कारिक घटनाओं के स्थान पर वर्तमान युग की सत्य ऐतिहासिक घटनाओं को कथा रूप में दिया गया है, जिससे मनुष्य समझ ले कि सद्बुद्धि के द्वारा साधारण मनुष्य कितना महान् बन सकता है।

देव संस्कृति की इस कथा संकीर्तन सरिता को घर–घर, गाँव–गाँव पहुँचाने का दायित्व युग के भागीरथों को पूरा करना है। इस कथा को कम पढ़े लिखे, श्रद्धावान परिजन एक–दो महीने के अभ्यास से कहने में समर्थ हो सकें, इसके लिए सात दिवसीय ज्ञानयज्ञ सप्ताह की कथा सात प्रकरणों को लेकर इस अनुपम, सुबोध ग्रंथ ''प्रज्ञा पुराण कथामृतम्'' की रचना की गई है। इस ग्रंथ में कथा की पूर्व व्यवस्था एवं नित्यप्रति होने वाले कर्मकांड की विधि भी दी गई है। इस ग्रंथ का भलीभाँति स्वाध्याय करके कोई भी परिजन कथा सुनाने में सफल हो सकते हैं। संगीत (गाने व बजाने) वाले परिजन गाँव–गाँव मिल जाते हैं। ऐसे परिजनों के साथ इस ग्रंथ की सहायता से कुछ दिन अभ्यास करने पर प्रज्ञा पुराण कथा की टोली तैयार हो जाती है। ऐसी टोलियाँ गाँव–गाँव में बना ली जाएँ और एक गाँव के लोग दूसरे गाँवों में कथा कहने लगें, तो बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। प्रज्ञा पुराण कथामृतम् ग्रंथ को घर–घर में पढ़ाया जाए। परिवार के लोग मिलकर गाएँ और कोई एक कथा पढ़कर सुनाए, तो प्रतिदिन थोड़ी देर का सत्संग परिवार में हो सकता है। ऐसा प्रचलन प्रारंभ किया जाना चाहिए। इस ग्रंथ का स्वाध्याय संस्करण छोटे साइज में छोटे अक्षरों में भी प्रकाशित किया गया है। □

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# युग ऋषि परम पूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

बड़प्पन और महानता लगभग असंबद्ध और प्रतिकूल हैं। एक को खोकर ही दूसरे को पाया जा सकता है। सद्गुरु के मार्गदर्शन ने उन्हें विवेक दिया, विश्वास दिया और साहस दिया। इन तीन अवलंबनों को पाकर वे महानता की राह पर चल पड़े। कौन क्या कहता है, यह उन्होंने सुना ही नहीं। महानता की राह पर ही जीवनपर्यंत उँगली पकड़कर छोटे बच्चों को चलाते रहे। उनके मार्गदर्शक की कृपा को सराहा जाए या शिष्य की समर्पणभरी निष्ठा को। दादा गुरु ने अपना तप और आत्मबल शिष्य पर उड़ेल दिया और शिष्य ने अपना आपा और अस्तित्व ही उन्हें समर्पित कर दिया। तन तो तुच्छ है, अपनी कोई इच्छा तक शेष नहीं रहने दी। जो मार्गदर्शक की इच्छा वही अपनी इच्छा। तर्क-कुतर्क की कोई गुंजाइश ही नहीं। दुनियाँ वाले आरंभ से ही हँसते थे और उसी क्रम में उनकी कसौटी पर हम लोग भी हँसी और उपहास के पात्र बने हैं। जहाँ तृष्णा, कामना और अहंता की पूर्ति ही लाभ, सौभाग्य और वरदान माना जाता हो, वहाँ गुरुदेव की ही तरह सच्चे अध्यात्मवादी को उपहास का पात्र बनना ही पड़ेगा। यहाँ हर चीज मूल्य देकर खरीदी जाती है। भौतिक संपदाओं की कीमत पर ही आत्मिक विभूतियाँ खरीदी जाती हैं।

हिमालय पिता ने गुरुदेव का व्यक्तित्व विनिर्मित किया। गुण, कर्म और स्वाभाव की उत्कृष्टता उसी की देन है। शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन उन्हें पिता का दिया हुआ है। दृष्टिकोण में उत्कृष्टता, लक्ष्य की ऊँचाई, सर्वतोमुखी प्रतिभा, अविचल साहस और अटूट धैर्य जैसी दिव्य संपदाओं को लेकर ही वे ऊँचे उठे और महामानव के स्तर तक पहुँचे। यदि ऊपर से यह अनुग्रह न मिला होता, तो अपने बलबूते इतना उपार्जन करना तो दूर, इतनी सफलता मिलना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य था।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधनों की दृष्टि से उ[illegible] ही कहना चाहिए। पैसे की दृष्टि से हाथ खाली, माँगने में [illegible] को आवश्यकता का पता भी न चले। भरपूर विज्ञापन [illegible] की उपेक्षा आदि [illegible] बाधक कारणों के रहते हुए भी [illegible] भाव मेंरुकी [illegible] उनके मार्गदर्शक की प्रत्यक्ष अनु[illegible] में उन्हें [illegible] जब भाषण देने खड़े होते, तो [illegible] संपादन रहता। लेखनी मस्ती पैदा [illegible] उनका लिखा कि[illegible]ढ़ा, [illegible] बिना न र[illegible] का [illegible] चमत्कार है, जिसने करोड़ों को उनके प्रवाह [illegible] और स[illegible] लिए विवश कर दिया। पैज[illegible] नए प्रतिमान ने संसार [illegible] हलचल पैदा कर दी। स[illegible] कार्यक्रमों की योजना, भाव[illegible] महाभारत की व्यूह [illegible] जैसे दूरदर्शिता के [illegible] है और सफलता की प्रतिक्रिया चमत्कार [illegible] के पीछे [illegible] की अपनी प्रतिभा नहीं, वरन् निश्चि[illegible] के महान् मार्गदर्श[illegible] ही मूल कारण है। [illegible] निर्माण अभि[illegible] में [illegible] होती है, उसे उनके [illegible] मार्गदर्शक [illegible] अनु[illegible] [illegible] अर्जुन [illegible] कीमें [illegible] कर पाया [illegible] पात्रता सिद्ध करने [illegible] था।

[illegible] ह्यवर्चस्, आत्मबल [illegible] और [illegible] माता से ही [illegible] [illegible] था। वे धनी नहीं थे, पर उनकी दिव्य संपदा [illegible] [illegible] किसी को खाली हाथ [illegible] जाने देते। जो भी [illegible] उसकी व्यक्तिगत व्यथा, चिंता और [illegible] समझने [illegible] सामर्थ्य के अनुसार सहायता में [illegible] नहीं की। [illegible] लिए नहीं, चमत्कार दिखाकर और [illegible] उससे कुछ काम [illegible] में भी नहीं सूझी। रोते हुए आने वाले हँसते हुए लौटे। [illegible] अनुदान जो बादलों की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तरह निरंतर बरसते रहे, आखिर कहाँ से आते? ये अनुदान वेदमाता के थे। ब्रह्मवर्चस् और ऋषितत्त्व की सारी संपदा इन्हें गायत्री माता के कोष से मिलती रही। हिमालय पिता ने व्यक्तित्व, मार्गदर्शक ने कृतित्व और गायत्री माता ने ब्रह्मवर्चस् प्रदान किया। ये तीनों ही चीजें उन्होंने कष्ट सहकर ही नहीं खरीदीं, वरन् उपलब्धि का प्रयोग मात्र लोकमंगल के लिए करने की शर्त के साथ स्वीकार किया। गुरुदेव की आत्मीयता का विकास ही है, जिसने लाखों व्यक्तियों को मजबूत रस्सी के साथ जकड़कर उनके साथ बाँध दिया। विद्वत्ता, प्रतिभा, भाषण, लेखन, संगठन और आंदोलन आदि बहुत छोटे आधार हैं। यह कला दूसरों को भी अच्छी तरह आती है, पर वे इतना सघन कुटुंब कहाँ बना पाते हैं। उनकी कला केवल आकर्षण का केंद्र बनी रहती है। ऐसे व्यक्तित्व किसी को घनिष्ठ आत्मीयता से बाँध लेने और उनसे साहसपूर्ण कार्य करा सकने में समर्थ नहीं होते। पूज्य गुरुदेव ने हिमालय के वातावरण में अंतर्मुखी होकर प्रकृति के कण-कण में व्याप्त दिव्यता को पढ़ा, समझा और वे तत्त्वदर्शी के स्तर तक पहुँचे।

कष्ट-पीड़ितों और अभावग्रस्तों को उनका अनुदान सदा मिलता रहा। रोते को हँसाने में उन्हें मजा आता। यह उनका सबसे बड़ा विनोद-व्यसन कहा जा सकता है। जिन्हें वे कुछ ऊँचा उठा देखते, उनकी कामनाओं और तृष्णाओं को तृप्त नहीं, वरन् समाप्त करते और उन्हें बड़प्पन से छुड़ा कर महानता में संलग्न करते। जिन्हें और भी ऊँचा समझते उन्हें और भी ऊँचा उपहार देते। अहंता और तृष्णा छोड़े बिना ब्रह्मवर्चस् मिलता नहीं। जिसे सबसे अधिक प्यार करते, उसकी तृष्णा और अहंता छीनकर अपने सदृश बनाने का प्रयास करते। मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का स्वप्न उन्होंने इसी आधार पर देखा। स्वर्ग की ज्ञान-गंगा को धरती पर लाने के प्रयास में भगीरथ की तरह जूझते रहे और गायत्री माता की दिव्य सत्ता उन्हें मुक्त हस्त से सहायता प्रदान करती रही।

स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि और विभूति की कामनाएँ उनके लिए निरर्थक थीं। बार-बार जन्म लेना, मरना और निरंतर सर्वतोभावेन परमात्मा के इशारों पर चलते रहना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही उनका लक्ष्य था, जिसने उन्हें दिव्य माता, दिव्य पिता और दिव्य गुरु की महान् उपलब्धियाँ देकर अनाथ से सनाथ बनाया।

अखंड दीपक पर पुरश्चरणों की शृंखला संपन्न करते हुए उन्होंने भावना क्षेत्र में यह निष्ठा परिपक्व की कि जीवन को ज्वलंत दीपशिखा की तरह अंतरंग एवं बहिरंग क्षेत्र में प्रकाश उत्पन्न करने के लिए तिल-तिल जलते रहने की प्रक्रिया व्यवहार में लाई जाए। यदि दीप उपकरण के साथ-साथ वे आत्मज्योति को प्रकाशवान् बनाने का लक्ष्य सामने रखकर न चले होते, तो उनकी अखंड ज्योति भी मात्र रोशनी पैदा करने का तुच्छ-सा प्रयोजन पूरा कर सकी होती।

गुरुदेव की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने आस्तिकता की गरिमा को अपने जीवन की प्रयोगशाला में यथार्थ सिद्ध किया और उन लोगों का मुँह बंद किया जो इसे भ्रम या छद्म कहते रहे। गुरुदेव ने अपने लेखों और प्रवचनों में ही नहीं, आचरण की भाषा में भी यह कहा कि यदि देवसान्निध्य, ईश्वरीय अनुग्रह और आत्मबल अभीष्ट है, तो सबसे प्रथम चरण दृष्टिकोण के परिष्कार का उठाया जाना चाहिए। अपने को मात्र शरीर और मन से बना मांसपिंड मानकर वासना-तृष्णा के, पेट-प्रजनन के तुच्छ प्रयोजनों में ही संलग्न नहीं रहना चाहिए, वरन् कुछ आत्मकल्याण की, मानवीय गरिमा की और जीवनोद्देश्य की बात भी सोचनी चाहिए और उसके लिए कुछ कारगर प्रयत्न भी करने चाहिए।

पूज्य गुरुदेव के संकल्प के साथ गुरु का बल और महाकाल का आश्वासन था कि वे किसी से भी बिना सहायता माँगे विचार क्रांति का माहौल तैयार करेंगे। उन्होंने सब कुछ दाँव पर लगा दिया। कुछ धनपति वित्तीय समूहों ने उनके शुभ संकल्प को सुनकर धनराशि देने की बात कही, तो उन्होंने अस्वीकार कर दी। यह उनके ब्राह्मणत्व को एक चुनौती थी। हम सब भी इसी प्रकार लोभ-मोह में ग्रस्त, पेट और प्रजनन में व्यस्त, वासना-तृष्णा का पशु जीवन जीने से इनकार कर दें। हम भी युगऋषि के आदर्शों को अपनाने का साहस करें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# वंदनीया माता भगवती [illegible]

वंदनीया माताजी के जन्म के साथ [illegible] ने बताया कि एक दैवी सत्ता शक्ति रूप में उनके घर आई है [illegible] असाधारण बनती हुई यह ऐसे उत्कर्ष को प्राप्त होगी कि करो[illegible] श्रद्धा का पात्र बनेगी। हजारों-लाखों व्यक्ति इस अन्नपूर्णा के द्वार पर [illegible] जन करेंगे। कोई भी, कभी भी इसका आशीर्वाद पा लेगा, तो वह खाली [illegible] नहीं जाएगा।

एक ऐश्वर्यशाली सम्पन्न घर में जन्म लेने के बावजूद सादगी भरा जीवन [illegible] उन्हें पसंद था। रेशमी कीमती वस्त्रों की तुलना में गाँधी बाबा की बात कहकर [illegible] को खादी अपनाने की प्रेरणा देतीं और स्वयं भी वही पहनतीं। औरों को [illegible] खाना, उनका आतिथ्य करने, उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार में वे सबसे [illegible] चलतीं। जिसने भी एक बार उनके हाथों प्यार भरे स्पर्श के साथ भोजन कर लिया, वह उन्हें सदा याद रखता। विवाह के बाद बड़ी प्रतिकूल परिस्थितियों में वे उस जमींदार घराने में पहुँची, जहाँ आचार्य जी ओढ़ी हुई गरीबी का जीवन जी रहे थे। जैसा पति का जीवन, वैसा ही अपना जीवन। जहाँ उनका समर्पण, उसी के प्रति अपना भी समर्पण। यही संकल्प लेकर वे जुट गयीं, कंधे से कंधा मिलाकर पूर्व जन्मों के अपने आराध्य इष्ट के साथ। २४ वर्षों के २४ महापुरश्चरणों का उत्तरार्द्ध चल रहा था। जब गायत्री तपोभूमि की स्थापना का समय आया, तब पूज्य गुरुदेव १०८ कुडीय यज्ञ कर २४ [illegible] अनुष्ठान की समाप्ति करना चाह रहे थे। स्वयं अपनी ओर से [illegible] माताजी ने अपने सारे जेवर अपने आराध्य के कार्य को [illegible] दिए। माताजी ने लिखा है—"परिजनों की इस माँ ने [illegible] क्षण एक समर्पित शिष्य की तरह जिया है। अपने [illegible] को पूरा करने का अथक प्रयास किया है। प्रत्यक्ष दृश्यपटल [illegible] दिखाई न भी पड़ें, तो हमारा कृतित्व जो अब तक गुरुसत्ता की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुकंपा से बन पड़ा है, सबके लिए प्रेरणा का केंद्र बना रहेगा एवं हमारे बच्चे उत्तराधिकारी बनते हुए आदर्शों के क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा करते हुए उज्ज्वल भविष्य समीप लाते दिखाई पड़ेंगे, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।''

गुरुदेव के तप की प्रभा जहाँ अपने तीव्र आकर्षण से चकाचौंध करती है, वहाँ वंदनीया माता जी का अपरिमित वात्सल्य हृदय की गहराइयों को तृप्त करता है। माता जी और गुरुदेव के रहस्यमय जीवन की अबूझ पहेली भले ही समझ में न आए, पर इतना अवश्य है कि यदि माता जी न होतीं, तो मिशन का इतना विस्तार संभवत: न होता। यानि कि शक्ति न होती, तो शायद शिव अपना लीला-विस्तार न कर पाते। पूज्य गुरुदेव ने लिखा, ''माताजी भगवान के वरदान की तरह हमारे जीवन में आईं। उनके बगैर मिशन के उदय और विस्तार की कल्पना करना तक कठिन था। उन्होंने अपने आने के पहले दिन से ही स्वयं को तिल-तिल गलाने का व्रत ले लिया। विरोध का तत्त्व तो उनमें जैसे था ही नहीं। यदि वे चाहतीं, तो साधारण स्त्रियों की तरह मुझ पर रोज नई फरमाइशों के दबाव डाल सकती थीं। ऐसे में न तो तपश्चर्या बनतीं [illegible] साथ लगते। फिर जो कुछ आज तक हो सका, उसका कहीं नामोनिशान तक नहीं होता।''

वंदनीया माताजी ने लिखा है—''जहाँ तक कष्ट सहने का प्रश्न है, सारा जीवन तितीक्षा के अभ्यास में ही लगा है। गुरुदेव की छाया में रहकर अधिक नहीं, तो इतना तो सीखा ही है कि आगत आपत्तियों के समय धैर्य, साहस और विवेक को दृढ़तापूर्वक अपनाए रहना चाहिए। व्यथा को इस तरह दबाए रहना चाहिए कि समीपवर्ती किसी अन्य को उसका आभास न होने पाए। मानव जीवन सुखों के साथ दुखों का भी युग्म है। संपत्ति ही नहीं विपत्ति भी भगवान मानव कल्याण के लिए भेजते हैं। गुरुदेव के संपर्क में ऐसे पाठ पढ़ती रही हूँ कि रुदन को मुस्कान में कैसे बदला जाना चाहिए?''

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है—''माताजी का दर्जा ऊँचा बैठता है, क्योंकि उनका

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्नेह सहयोग ही नहीं, वात्सल्य भी हमने भरपूर उदारतापूर्वक परिपोषण देती रही हैं। उनका मूल्यांकन कम नहीं किया जा सकता। वे अनवरत रूप से सहयोग हमें निजी जीवन में भी धर्म-धारणा पर अडिग दिशा में चला सकने में असाधारण सहायता सजल श्रद्धा कहा जा सकता है। उनकी काया में है पर कोई कण ऐसा नहीं है, जिसमें श्रद्धा कूट-कूट कर न भरी हो। हमारे साथ चलने वाले हमारी प्रज्ञा से निष्ठावान् नहीं बने हैं, वरन् उनको वात्सल्य पाकर निष्ठावान् बने हैं। मिशन को अग्रगामी बनाने में कितना योगदान किया, जब इसका लेखा-जोखा भगवान के घर होगा, तो कदाचित मूर्धन्यों में माता जी का नाम ही अग्रणी होगा। यदि वे साथ न रही होतीं, तो इतना सब कर पाते क्या, सो कह नहीं सकते। वात्सल्य ने हमारी ही तरह समूचे गायत्री परिवार को, उनके कार्यक्षेत्र को वातावरण को कृतकृत्य किया है।

महाप्रयाण के पूर्व माता जी ने कहा था, "निःस्वार्थ प्यार, ममत्व लुटाकर ही हमने यह संगठन खड़ा किया है। इसकी जिम्मेदारी को निभाना। मिशन का भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल है। मुझे अपने पुत्र-पुत्रियों पर पूरा विश्वास है कि स्नेह की डोर में परस्पर बँधे इस मिशन के संस्थापकों व दैवी संचालन तंत्र के नियामक ऋषिगणों द्वारा निर्धारित लक्ष्य अवश्य पूरा होगा।"

गुरुदेव ने लिखा है, "मिशन को बढ़ाने में माताजी ने हमारे बाँए या दाँए हाथ की नहीं, हृदय की भूमिका निभाई है। उन्हीं की भावनाओं के संचार से मिशन पलता और बढ़ता रहा है। औरों की तरह हम भी उनका प्यार-दुलार पाकर धन्य हुए हैं, अनेकों सहने आघातों के चलते कौन जाने हम कब टूट-बिखर कर चकनाचूर हो जाते। वात्सल्यमयी हैं, प्यार तो जैसे उनके रोम-रोम में बसता है। ममत्व बनाना तो नहीं आता, पर ममत्व लुटाने में वे हमसे हमारी तरह वे बौद्धिक चातुर्य की धनी न हों, किंतु

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूँजी उनके पास हमसे कई गुनी अधिक है। इसी कारण हम उन्हें सजल-श्रद्धा कहते हैं। मिशन के प्रत्येक परिजन ने उन्हें इसी रूप में अनुभव किया है। वे बेटा-बेटी और बहू का मोह इतनी आसानी से छोड़कर हरिद्वार के जंगल में बसने के लिए तैयार हो जाएँगी इसका मुझे भी विश्वास न था। मैंने अपने मन के असमंजस को छिपाते हुए जब उनसे शांतिकुंज में तप-साधना की बात कही, तो वे बिना एक पल की देर लगाए, तुरंत तैयार हो गईं। हमें भी उनके इस साहस भरे समर्पण को देखकर आश्चर्य-मिश्रित प्रसन्नता हुई।''

वंदनीया माता जी ने हम लोगों के लिए लिखा है, '' श्रवणकुमार की तरह मुझे व मेरी गुरु सत्ता को घर-घर पहुँचाओ। घर-घर तक नूतन चेतना का संदेश पहुँचाओ। कर दो आलोकित युग चेतना के प्रकाश से हिमालय से विंध्याचल व विंध्याचल से सतपुड़ा दंडकारण्य एवं अरावली से कन्याकुमारी तक के हर क्षेत्र को। इन पावन सरिताओं की हर बूँद को व मातृभूमि को सांस्कृतिक दासता से मुक्ति दिलाकर इसे पुन: देव संस्कृति की चेतना से अनुप्राणित कर दो। आगे तुम्हें और भी बड़े-बड़े कार्य करने हैं। सारे राष्ट्र को जगाना है। तुम सभी मेरे वरिष्ठ पुत्रों में से हो। अब इस परिवार संस्था में अहंकारियों का कोई स्थान नहीं है। तुम सभी अच्छे हो, मुझे आशा है, तुम में से किसी का अहंकार टकराएगा नहीं व टीम-भावना के साथ तुम काम करते चले जाओगे। स्वभाव में जहाँ कहीं भी थोड़ी बहुत कमियाँ हैं, उन्हें दूर कर अच्छी आदतों में बदलने की कोशिश करो। अपनी-अपनी योग्यता बढ़ाओ। तुम समर्पण करोगे, तो गुरुजी की आवाज ही तुम्हारे चोगे से निकलेगी। तुम सबको देखना है कि आगे क्या होता है, जो काम होंगे, वे माता जी नहीं बेटे जी करेंगे। ये और भी शानदार होंगे। अब हम मिशनरी भावना की तरह फैलते चले जाएँगे। देखते-देखते कई गुना हो जाएँगे। तुम में से विवेकानंद निकलेंगे, दयानंद निकलेंगे और देखते जाओ तुम से वह करा लेंगे, जो तुमने सोचा भी नहीं था।''

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org




# आद्यशक्ति माँ गायत्री

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# देवसंस्कृति की माता—गायत्री

भारतीय संस्कृति में प्रतीकवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सबके लिए सरल, सीधी पूजा-पद्धति का आविष्कार करने का श्रेय भारत को ही प्राप्त है। पत्थर, मिट्टी, धातु, चित्र इत्यादि की प्रतिमा को मध्यस्थ बनाकर हम सर्वव्यापी अनंत शक्तियों और गुणों से संपन्न परमात्मा को अपने सम्मुख उपस्थित देखते हैं। भावुक भक्तों, विशेषत: नारी-उपासकों के लिए तो किसी प्रकार की मूर्ति का आकार रहने से उपासना में बड़ी सहायता मिलती है। मानस-चिंतन और एकाग्रता की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रतीक रूप में मूर्ति-पूजा की योजना बनी है। साधक अपनी श्रद्धा के अनुसार भगवान की कोई भी मूर्ति चुन लेता है और साधना करने लगता है। उस मूर्ति को देखकर हमारी आत्मचेतना ऐसा अनुभव करती है [illegible] ही हमारा मिलन हो रहा है। मूर्ति-पूजा में भावना [illegible] गुण है, तो [illegible] का ही यह श्रेय होगा कि वह भगवान [illegible] भावनाओं का उद्रेक और संचार विशेष रूप से हमारे अंत:करण में करे।

गायत्री दरदर्शक प्रज्ञा की देवी, नारी में देवत्व की विशिष्टता का भान, उसके प्रति पवित्रतम सद्भावना की धारणा, वाहन हंस नीर-क्षीर विवेक, उचित-अनुचित के वर्गीकरण की प्रखरता, दाग-धब्बे रहित धवल कलेवर, मोती चुगने अथवा लंघन करने की प्रवृत्ति श्रेष्ठतम को ही स्वीकार करने की प्रवृत्ति, एक हाथ में पुस्तक, जो ज्ञान का प्रतीक है, दूसरे हाथ में कमंडल, जो [illegible] शीलता और प्रामाणिकता से भरा-पूरा [illegible]

ऋतंभरा प्रज्ञा का ही नाम गायत्री है। ऋतंभरा प्रज्ञा क्या है? वह प्रज्ञा, वह धारणा, वह विद्या जो आदमी को ऊँचा उठा देती है, ऊँचा उछाल देती है, जिसकी प्रेरणा से आदमी ऊँची बातों पर विचार करता है और ऊँचा उठता चला जाता है, उसे ऋतंभरा प्रज्ञा कहते हैं। गायत्री का वाहन हंस है। हंस एक प्रतीक है। हंस वह व्यक्ति है, जिसकी दृष्टि ऋतंभरा प्रज्ञा के अनुकूल है। हंस कीड़े नहीं खाता, वह मोती चुगता है। जो ठीक है, उचित है उसी को करेगा, जो अनुचित है उसके बगैर काम नहीं चलेगा, तो मर जाएगा, भूखा रह लेगा, चाहे मरना ही क्यों न पड़े, पर न तो कुछ अनुचित करेगा और न अभक्ष्य खाएगा। हंस उस व्यक्ति का नाम है, जो नीर और क्षीर का भेद करना जानता है। इसे ही हासिल करने के लिए गायत्री-साधना की जाती है। छोटे बालक को बताया जाता है कि गायत्री माता हंस पर सवारी करती है और हाथ में पुस्तक और कमंडल लिए रहती

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। गायत्री माता सिद्धियों और चमत्कारों की देवी है, वह शांति और वरदान की देवी है। वह ऐसी देवी है, जिसको प्राप्त करने के बाद और कुछ प्राप्त करना बाकी नहीं रह जाता।

गायत्री माता जवान स्त्री है। जवान स्त्री के प्रति हमारे अंदर मातृ-बुद्धि पैदा हो, आँखों में शुद्धता, पवित्रता का भाव पैदा हो, इसीलिए गायत्री माता को जवान स्त्री के रूप में बनाया गया है। पूजा के माध्यम से हम अपनी चरित्रनिष्ठा, विचारशीलता और आंतरिक उदारता का विकास करते हैं। उपासना इसी के लिए की जाती है।

गायत्री माता वेदमाता है। सारे वेदों का जन्म गायत्री से ही हुआ है। उसी ने सारी संस्कृति और सभ्यता को जन्म दिया। अत: गायत्री माता वेदमाता बनी। इसके बाद गायत्री माता देवमाता बनी। हिंदुस्तान के निवासी देवता थे। वे स्वयं तो कम खाते थे, पर दूसरों को अधिक खिलाते थे। यहाँ के नागरिकों ने सारी दुनियाँ को अपनी संपदा बाँट दी, इसलिए वे देवमानव कहलाए। अकेले खाते समय उन्हें मन में अप्रसन्नता होती और दूसरों को खिलाते समय वे प्रसन्न होते। जब गायत्री माता हमारे हृदय में उदय होती है, तो हमारे जीवन को चमकाकर रख देती है। वह हमारे विचारों में परिवर्तन कर देती है। हमें केवल अपना परिवार ही नहीं, सारा समाज और देश दिखलाई पड़ता है और हम देवता बनते चले जाते हैं। गायत्री माता हंस पर बैठकर कमंडल लेकर नहीं आती। वह करुणा के रूप में, दया के रूप में हमारे अंदर आती है। यही उसका स्वरूप है, जो हमें देवता बनाकर चला जाता है और हम देवता जैसा जीवन जीने लगते हैं। गायत्री माता की कृपा से हम लोकमंगल हेतु अपनी बुद्धि, धन और समय को लगाने लगते हैं। हमारा जीवन धन्य हो जाता है। सारे संसार में गायत्री मंत्र का विस्तार हो। यह मात्र हिंदुओं तक ही सीमित न रहे, यह ब्राह्मणों का ही होकर न रह जाए, बल्कि विश्वमानव का मंत्र बने। विश्वमाता से मतलब है कि सारा विश्व एक नए आधार पर एक होने जा रहा है। एक नई संस्कृति आ रही है। एक नया सार्वाभौम धर्म आ रहा है। सारी दुनियाँ इस एक ही केंद्र के ऊपर इकट्ठी होने जा रही है। हम सब एक आचारसंहिता और एक मातृभाव में बँधने जा रहे हैं। गायत्री माता ईमानदारी, नेकनीयती, सज्जनता और शराफत की देवी है। हंस इसका वाहन है। गायत्री माता की स्थापना करके हम राजहंस पैदा करना चाहते हैं। गायत्री उपासकों में राजहंस की वृत्ति पैदा करना चाहते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org




Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल

जनमानस का भावनात्मक नव निर्माण करने के लिए जिस विचार क्रांति की मशाल इस ज्ञानयज्ञ के अंतर्गत जल रही है, उसके प्रकाश में अपने देश और समाज का आशाजनक उत्कर्ष सुनिश्चित है। [illegible] के अभाव ने हमें मूढ़ता और रूढ़िवादिता के गर्त में गिरा दिया। [illegible] ने हमें हर क्षेत्र में दीन-हीन और निराश निरुपाय बनाकर रख दिया है। इस स्थिति को बदले बिना कल्याण का और कोई मार्ग नहीं। मानसिक [illegible] ग्रसित समाज के लिए उद्धार के सभी द्वार बंद रहते हैं। प्रगति का प्रारंभ चिंतन से होता है। लाभ में विवेकवान् रहते हैं। समृद्धि साहसी के पीछे चलती है। इन्हीं सत्प्रवृत्तियों का जनमानस में रोपण और अभिवर्द्धन करना अपनी विचार क्रांति का एक मात्र उद्देश्य है। ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल इसी दृष्टि से प्रज्वलित की गई है।

पूज्य गुरुदेव ने [illegible] है, "नव निर्माण की लाल मशाल में हमने वर्चस्व का तेल टपकाकर उसे प्रकाशवान् रखा है। अब परिजनों की [illegible] जिम्मेदारी है कि वे उसे [illegible] रखने के लिए हमारी ही तरह अपने अस्तित्व के सार तत्त्व को ट्रांसफर करें। परिजनों पर यही कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व छोड़कर इस आशा के साथ हम विदा हो रहे हैं कि महानता की दिशा में कदम बढ़ाने की प्रवृत्ति अपने परिजनों में घटेगी नहीं बढ़ेगी ही।

गायत्री तपोभूमि स्थित युग निर्माण योजना का केंद्र हमारी जलाई हुई मशाल को भविष्य में हमसे भी अच्छी तरह जलाए रखने में समर्थ होगा। इस ईश्वरीय प्रयोजन के पीछे भगवान [illegible] हमारे गुरुदेव का, हमारा तथा उत्तराधिकारियों के भाव भरे पुरुषार्थ का जो प्रचंड बल है, वह उसे घटने या गिरने न देगा। अभियान गतिशील होगा और विश्वमानव के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में ऐतिहासिक भूमिका प्रस्तुत करेगा।

समर्थ गुरुदीक्षा दे सकने योग्य अभी कोई अनुचर हम नहीं छोड़ सके हैं। असमर्थ व्यक्ति यह महान उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठा लेंगे, तो उनकी कमर टूट जाएगी और वे [illegible] रहेगा, वह डूब जाएगा, इसलिए भविष्य में गायत्री मंत्र की दीक्षा लेनी [illegible] हो, तो लाल मशाल के प्रतीक को ही गुरु बनाया जाए। उक्त संस्कार [illegible] कोई भी करा सकेगा, पर वह स्वयं गुरु न बन सकेगा। जैसे सिखों [illegible] साहब और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में ध्वज को ही गुरु के रूप में स्वीकार किया गया है, उसी प्रकार गायत्री परिवार युग निर्माण अभियान के अंतर्गत

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लाल मशाल के प्रतीक को ही गुरु के रूप में मान्यता दी जाती है। ज्ञान क्रांति की लाल मशाल युग शक्ति के प्रतीक के रूप में विकसित हुई है। इस प्रतीक और उसके साथ जुड़े विचार-दर्शन की जानकारी सबको होनी चाहिए। जनसमूह-भली चाह, अच्छी सोच वाले सभी वर्गों के नर-नारी हैं। हाथ-समूह की संगठित शक्ति है। मशाल-नव सृजन का संकल्प है। लौ-नव सृजन के लिए दिव्य ऊर्जा अनुदान है। प्रभा मंडल-ईश्वरी चेतना का सतत् संरक्षण है।

ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल में मेरे हर प्रियजन को कुछ श्रद्धा स्नेह डालते ही रहना है, इसे किसी भी कीमत पर बुझने नहीं देना है। इस अनुरोध की ओर से मुँह मोड़कर हम उस कृपणता का ही परिचय देंगे, जिसमें आत्मधिक्कार और लोकोपवाद की भर्त्सना की जलन ही पल्ले बँधेगी।

इन दिनों स्रष्टा की अदम्य और प्रचंड अभिलाषा एक ही है कि इस सड़ी दुनियाँ को बदलने में कायाकल्प जैसा नया सुयोग बनाया जाए। यही है इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य । यही है मनुष्य में देवत्व का उदय और प्रतिभा परिष्कार का महाभियान। इसी को लोग विचार क्रांति की लाल मशाल का प्रज्ज्वलन भी कहते हैं। इस दैवीय उत्कंठा की पूर्ति में जो जितना सहायक बनेंगे, वे उतना ही अपने को समग्र रूप से कृतकृत्य हुआ अनुभव करेंगे।''

## हमारा संकल्प

लक्ष्य विशाल विस्तृत है । जनमानस के परिष्कार के लिए प्रज्ज्वलित ज्ञानयज्ञ के, विचार क्रांति के, लाल मशाल के टिमटिमाते रहने से काम नहीं चलेगा। उसके प्रकाश को प्रखर बनाने के लिए जिस तेल की आवश्यकता है, वह पूज्य गुरुदेव की प्रत्येक संतान के भाव भरे त्याग से निचोड़ा जा सकेगा। मनुष्य में देवत्व का उदय संसार के समस्त उत्पादनों की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण उपार्जन है। इस कृषि कर्म में हमें शीत व वर्षा की परवाह न करके निष्ठावान कृषक की तरह लगना चाहिए। धरती पर स्वर्ग का अवतरण एक नंदन वन खड़ा करने के समान है।

पूज्य गुरुदेव के आदर्शों की रक्षा और युग निर्माण योजना के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी हमें सौंपी गई है। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि इस जिम्मेदारी को गायत्री तपोभूमि एवं शांतिकुंज के सभी कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं को भुलाकर परस्पर एक शक्ति, एक मन होकर काम करके पूरा करेंगे। परम पूज्य गुरुदेव ने हमारे हाथों में जो नव जागृति की मशाल सौंपी है। जब तक हमारे शरीरों में रक्त की एक भी बूँद शेष रहती है, तब तक उसे बुझने न देंगे, भले ही अपना सारा जीवन ही जल-खप जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा पुराण कथामृतम्

## प्रथम दिवस

### कल्याण जिज्ञासा प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

### गुरु वंदना

तुम्हारे पद्म चरणों में नमन सौ बार है गुरुवर॥
कृपा की एक किरण दे दो, दुःखी संसार है गुरुवर।
कृपा से आपकी नद भी सुपावन नीर बन जाता।
कृपा पाकर मरुस्थल भी गंगा तीर बन जाता।
मनुजता पर तुम्हारा तो बहुत आभार है गुरुवर। तुम्हारे पद्म....
तुम्हें छू लोहकण भी हो गए अनमोल कंचन से।
निरर्थक वृक्ष भी सुरभित हुए सब ओर चंदन से।
सहज सान्निध्य से सब का किया उपकार है गुरुवर। तुम्हारे पद्म....
तुम्हीं ने सूत्र सिखलाया विचारों को बदलने का।
तिमिर में आचरण बल से दिए की भाँति जलने का।
प्रखरता की मिली तुमसे हमें पतवार है गुरुवर। तुम्हारे पद्म....
शिवाजी का समर्पित ज्यों गुरु के वास्ते प्रण था।
विवेकानंद का गुरु के लिए जैसा समर्पण था।
हमारे कर्म चिंतन पर वही अधिकार है गुरुवर। तुम्हारे पद्म....
तुम्हारी ज्ञान गंगा की सुधा सब को पिलाएँगे।
हृदय निष्प्राण हैं जिनके सरस उनको बनाएँगे।
बनें जीवंत वे जिनको सृजन स्वीकार है गुरुवर। तुम्हारे पद्म....



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

## प्रज्ञा गीत

मनुज देवता बने, बने यह धरती स्वर्ग समान,
यही संकल्प हमारा।
यह प्रज्ञा अभियान, इसी को कहते युग निर्माण,
यही संकल्प हमारा॥
द्वेष, दंभ सब मिटे यहाँ पर, ना कोई भ्रष्टाचारी हो।
सभी सुखी हों, सबका हित हो, जन–जन परउपकारी हो॥
मिलजुल कर सब रहें प्रेम से, दें सबको सम्मान,
यही संकल्प हमारा।
भेद भाव हों दूर, सिख, हिंदू, मुस्लिम, ईसाई का।
परमपिता के पुत्र सभी का नाता भाई–भाई का॥
सब हों एक समान, सभी जगदीश्वर की संतान,
यही संकल्प हमारा।
मनुज देवता बने, बने यह धरती स्वर्ग समान,
यही संकल्प हमारा॥

## सरस्वती वंदना

*स्वर दे वीणावादिनी, गणपति भरे विवेक।*
*दें त्रिदेव शुभ शक्तियाँ, बनें सभी जन नेक।*
*गायत्री के जाप से, मिटें सभी संताप।*
*प्रेममग्न हों भक्त जन, करें निरंतर जाप॥*
*माँ सरस्वती, हे महालक्ष्मी, माँ जगदंबे बस यह वर दो।*
*कलिमल नाशक प्रज्ञा पुराण, बस मेरी वाणी में भर दो।*
*माँ आज तुम्हारे चरणों में, हम पुष्प चढ़ाने आए हैं।*
*वाणी में तनिक मिठास नहीं, पर विनय सुनाने आए हैं।*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है धूप दीप नैवेद्य नहीं, माँ पूजा का सामान नहीं।
हूँ वेद शास्त्र तप से वंचित, है छंदों का भी ज्ञान नहीं।
फिर भी मेरा साहस देखो, हम तुम्हें मनाने आए हैं।
प्रज्ञावतार की जग पावन शुभ कथा सुनाने आए हैं।
शिशु की तुतली वाणी सुन, माँ जैसे प्रसन्न हो जाती है।
उसकी अनगढ़ता भूल उसे, माँ अपने गले लगाती है।
बस उसी तरह माता मेरी, अटपट वाणी स्वीकार करो।
सुनकर सब हर्षित, प्रेरित हों, इसमें कुछ ऐसा सार भरो।
माँ भाव सुमन स्वीकार करो, माँ भाव सुमन स्वीकार करो।
माँ भाव सुमन स्वीकार करो, माँ भाव सुमन स्वीकार करो।

गुरुवर यदि मिलते नहीं, शांतिकुंज के पास।
तो बस गंगा पूजते, कभी न बुझती प्यास॥
गुरुवर यदि मिलते, नहीं तपोभूमि के धाम।
तो जीवन भर भटकते, नहीं मिलते श्रीराम॥
हे वेदमूर्ति, हे तपोनिष्ठ, हे युग द्रष्टा, हे युग त्राता।
गूँजेगी सदियों तक तेरे, प्रज्ञामय जीवन की गाथा॥
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, शत–शत वंदन, शत–शत वंदन।
हो गया धन्य यह धरा–धाम, पाकर के तव युगल चरण॥

(प्रज्ञा पुराण कथा की पूर्व व्यवस्था एवं आयोजन के अनुसार पूजन इत्यादि)

## कीर्तन

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ, सत् ॐ चित् ॐ आनंद ॐ।
प्रभु के नाम रूप अगणित हैं, वह तो घट–घट में स्थित हैं।
प्रभु का बोध कराए ॐ, सत् ॐ चित् ॐ आनंद ॐ ॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वह तो है निर्मल अति पावन, दे सद्बुद्धि कुबुद्धि नशावन।
दूर विकार हटाए ॐ, सत् ॐ चित् ॐ आनंद ॐ॥
प्रभु से डरे सो निर्मल होवे, सब सुख लहे दीनता खोवे।
कर विश्वास पुकारो ॐ, सत् ॐ चित् ॐ आनंद ॐ॥
उसके घर सबको है जाना, सबका अंतिम वही ठिकाना।
अक्षर ब्रह्म सनातन ॐ, सत् ॐ चित् ॐ आनंद ॐ॥

हमारे आत्मीय परिजनो, स्नेही भाइयो तथा बहनो ! आज परम सौभाग्य का दिन है, कि हम लोग यहाँ परम पूज्य गुरुदेव आचार्य पं. श्रीराम शर्मा जी द्वारा रचित प्रज्ञा पुराण कथा को सुनने के लिए एकत्रित हुए हैं। हमारा देश, धर्म प्रधान देश है। अतः यहाँ व्रत, उपवास, कथा, पूजा का बहुत महत्त्व है। हमारे पूर्वजों ने शायद अपनी दूरदृष्टि से यह देख लिया था कि आने वाले समय में मनुष्य इस भौतिक चकाचौंध को देखकर भटक जाएगा, अतः उन्होंने हर दिन व्रत, उपवास एवं कोई न कोई कथा कहने, सुनने का नियम सा बना दिया। सात दिन की सात कथाएँ–सोमवार भगवान शिव–पार्वती, मंगलवार हनुमान जी, बुधवार राहु–केतु, वृहस्पतिवार गुरुदेव, शुक्रवार संतोषी माता, शनिवार शनिदेवता तथा रविवार सूर्यदेव की कथा तथा व्रत, उपवास, इसके अतिरिक्त नवरात्रि प्रतिपदा, भैयादूज, हरियाली तीज, गणेश चौथ, वसंत पंचमी, सूर्य षष्ठी आदि। इसके पश्चात् भी सत्य नारायण कथा, एकादशी कथा, प्रदोष कथाएँ, भागवत् पुराण सप्ताह, अखण्ड रामायण, गीता का पाठ आदि का प्रचलन भारत में बहुत अधिक है। कारण स्पष्ट है कि मनुष्य के जीवन का प्रत्येक दिन महत्त्वपूर्ण है, उसे कथाओं के माध्यम से सचेत किया जाता है कि उसे किसी भी दिन कोई भी गलत कार्य नहीं करना चाहिए।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कथाएँ किसी भी राष्ट्र की संस्कृति को जीवंत बनाए रखने वाली होती हैं। धार्मिक, आध्यात्मिक अथवा नैतिक कथाओं से मनुष्य का नैतिक उत्थान होता है। ये मानव जीवन की समस्याओं का समाधान कर उसे सही मार्ग दिखातीं हैं।

कथाएँ मनुष्य जीवन को बहुत प्रभावित करती हैं। प्राचीन काल में विष्णु शर्मा नामक पंडित जी ने राजा के दुष्ट पुत्रों को कथाएँ सुनाकर सदाचारी बनाया था, हितोपदेश तथा पंचतंत्र की कहानियाँ इसका प्रमाण हैं। दादी–नानी की गोद में बैठकर कथा सुनने वाले बच्चों के महान व्यक्तित्त्व का निर्माण कहानियों के माध्यम से सहज ही हो जाता है, इसीलिए इस कथा साहित्य का निर्माण किया गया। व्यक्ति के चरित्र निर्माण के लिए ही वेद, उपनिषद, आरण्यक, स्मृति ग्रंथों की रचना हुई, किंतु कथा कहानियों को उससे भी अधिक प्रभावशाली उपाय समझा गया। होम्योपैथी की मीठी गोलियों की भाँति पौराणिक कथाओं के माध्यम से मनुष्य को समझाया जाए, तो जीवन में अवश्य बदलाव आता है। इसी के लिए व्यास जी ने अठारह पुराणों की रचना की, जिनमें भगवान के अवतारों की कथाओं के माध्यम से मनुष्य को सत्कर्म करने की प्रेरणा दी गई। यहाँ प्रश्न उठता है कि **जब अठारह पुराण तथा इतना अनंत कथा साहित्य मौजूद है तो फिर प्रज्ञा पुराण की क्या आवश्यकता थी ?** इस विषय में कहा जा सकता है कि रोग के अनुसार ही रोगी का उपचार करना पड़ता है। जब त्रेता युग में रावण को बहुत शक्ति और धन को पाकर अहंकार हो गया, तो अहंकार ही विनाश का कारण होता है, यह समझाने के लिए रामायण की रचना हुई। महाभारत काल में मोह ग्रस्त धृतराष्ट्र के मोह को दूर करने के लिए महाभारत तथा अर्जुन के मोह को दूर करने के लिए



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गीता लिखी गई। इसी प्रकार आज के इस अनास्था संकट के समय, जब मनुष्य भौतिकवादी बन कर दुर्बुद्धि ग्रस्त हो गया है, तो आचार्य पं. श्रीराम शर्मा जी ने प्रज्ञा पुराण की रचना की, जो व्यक्ति के विचारों एवं दृष्टिकोण को बदलने के उद्देश्य से लिखा गया। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने वैसे तो हजारों ग्रंथों की रचना की है, परंतु पौराणिक कथाओं की शैली में इसी ग्रंथ को लिखा है। इस की विशेषता यह है कि इसमें देवी देवताओं की, राजे महाराजाओं की तथा सिद्ध साधकों की चमत्कारिक घटनाओं के स्थान पर साधारण मानव की ऐतिहासिक घटनाओं को कथा रूप में दिया गया है, जिससे मनुष्य यह समझ ले कि सद्बुद्धि के द्वारा साधारण मनुष्य कितना महान बन सकता है।

सत्यवादी हरिश्चंद्र की कथा को सुनकर मोहनदास करमचंद गांधी विश्ववंद्य बापू बन गए। साधारण घर में जन्म लेने वाले लाल बहादुर शास्त्री अपनी मेहनत और ईमानदारी तथा संकल्प शक्ति के कारण देश के प्रधान मंत्री बने तथा अब्राहीम लिंकन जो रात को सड़क के किनारे जलती हुई रोशनी में पढ़ते थे, वे अमेरिका के प्रेसीडेंट बने। अतः सद्बुद्धि को जागृत करने वाले, नवीन संदेश देने वाले इस पावन ग्रंथ की कथा को आइए हम सभी सुनें।

## प्रज्ञा पुराण गीत

यह प्रज्ञा पुराण पूज्य गुरुजी को प्यारा है।
इसकी जगमग ज्योति से सारा जग उजियारा है।
यह प्रज्ञा पुराण पूज्य गुरुजी को प्यारा है॥
कौन बड़ा है कौन है छोटा, ऊँच नीच क्या होता है।
कर्म भूमि में वैसा काटे, जैसा जो कोई बोता है।
माँ की ममता एक समान, जननी सुत दुलारा है।
यह प्रज्ञा पुराण पूज्य गुरुजी को प्यारा है॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिथ्या माया मोह के चक्कर में डूबा है यह इंसान।
सद्बुद्धि दे ममतामयी माँ, सबको लाल कमल भगवान।
नर और नारी एक समान यही हमारा नारा है।
यह प्रज्ञा पुराण पूज्य गुरुजी को प्यारा है॥

प्रज्ञा पुराण युग ऋषि की अमर वाणी है, इसके पढ़ने, सुनने से जीवन की सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है। ये ग्रंथ युगद्रष्टा की साधना व तप का संदेश हैं। प्रज्ञा पुराण को आधुनिक युग की रामायण गीता कहा जा सकता है। ये ग्रंथ आकाशदीप की भाँति प्रकाश देने वाले हैं तथा जीवन के करुण क्रंदन को मिटाने वाले, हर भ्रांति को दूर कर, कल्मष कषाय को मिटाकर देवत्व का निर्माण करने वाले हैं। प्रज्ञा पुराण के चार खण्ड प्रकाशित हैं। **प्रथम खण्ड** लोक कल्याण जिज्ञासा प्रकरण से प्रारंभ होता है, फिर आत्म दर्शन कराके भगवान के अनुदान स्वरूप संयमशीलता सिखाता है तथा भक्तिभाव एवं सत्साहस जगाकर जीवन में संघर्ष का पाठ पढ़ाता है। **दूसरा खण्ड** मानव जीवन को पशुता से उठाकर देवत्व की ओर ले जाता है। **तीसरे** में परिवार निर्माण, नारी जागरण, शिशु निर्माण तथा वसुधैव कुटुंबकम् का पाठ व्यक्ति को पढ़ाया जाता है तो **चतुर्थ खण्ड** में भारतीय संस्कृति के जागरण का संदेश है। ये चार खण्ड जीवनरूपी मानसरोवर के चार किनारे हैं, इनके सात अध्याय मानसरोवर तक पहुँचने की सात सीढ़ियाँ हैं तथा इन सात सीढ़ियों को पार कर मनुष्य उस अमृत का पान करता है, जिसमें डूबकर मानव जीवन धन्य हो जाता है।

**प्रज्ञा पुराण कथा का शुभारंभ देवर्षि नारद तथा भगवान विष्णु के संवाद से होता है।** इस पावन कथा के मूल वक्ता विष्णुजी हैं, श्रोता



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारद जी। नारद जी ने यह कथा महाकाल को सुनाई, महाकाल ने ऋषि परशुराम को, उन्होंने दादागुरु को तथा दादागुरु ने गुरुदेव आचार्य श्रीराम शर्मा जी को सुनाई, जिन्होंने हम सब तक इसे पहुँचाने के लिए प्रकाशित कराया। इस के मुख्य पात्र हैं–देवर्षि नारद, जो देवता भी हैं और ऋषि भी, निर्विकार, निरीह, परहितचिंतन में संलग्न वे भगवान के भी हैं और भक्तों के भी। ध्रुव, प्रहलाद को भगवान के पास पहुँचने का रास्ता बताते हैं तो भगवान के पास पहुँच कर भक्तों की सहायता करने की प्रार्थना भी करते हैं। **कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।**

नारद जी डाकू रत्नाकर को ऋषि वाल्मीकि बना देते हैं। वे देवताओं के पास भी पहुँच जाते हैं।

नारद जी कलियुग का क्रम देखते हुए, एक बार वृंदावन पहुँचे। देखा, एक युवती के पास दो पुरुष मूर्च्छित पड़े हैं। दुःखी युवती ने नारद जी के पूछने पर बतलाया–''मैं भक्ति हूँ। मेरे ये दो पुत्र–ज्ञान और वैराग्य असमय ही वृद्ध हो गए और मूर्च्छित पड़े हैं। इनकी मूर्च्छा दूर करें, तो मेरा दुःख दूर हो।'' नारद जी दुःखी होकर प्रार्थना करने लगे। आकाशवाणी हुई–''हे नारद ! आपका प्रयास उत्तम है, किंतु मात्र वेदपाठ से इनकी मूर्च्छा दूर नहीं होगी, संतों से परामर्श करके कुछ सत्कर्म करो, तो ज्ञान–वैराग्य भी प्रतिष्ठापित हों।

नारद जी ने तमाम संतों से पूछा–''क्या सत्कर्म करें, जिससे इनकी मूर्च्छा टूटे।'' कहीं समाधान न मिला। अंत में बद्रीविशाल क्षेत्र में सनकादिक मुनियों से भेंट हुई। उन्होंने सारी बात सुनी, तो कहा–''नारद जी, आपकी भावना दिव्य है। कलि के प्रभाव से मूर्च्छित ज्ञान–वैराग्य की मूर्च्छा दूर करने के लिए ज्ञान यज्ञ ही एक मात्र ऐसा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सत्कर्म है, जिसका प्रभाव निश्चित रूप से होगा। ज्ञान यज्ञ के लिए वेदादि का उपयोग भी ठीक है, पर कलि में बोधगंम्य न होने से उसका प्रभाव कम होता है। अतः आप कथा के माध्यम से ज्ञान यज्ञ करें, वह निश्चित रूप से सफल होगा।''

नारद जी सनतकुमारों के साथ गंगा के किनारे आनंदवन में गए। वहाँ पवित्र वातावरण में उन्होंने ज्ञान यज्ञ का, कथा–दृष्टांतों के माध्यम से धर्म धारणा के विस्तार हेतु शिक्षण का शुभारंभ किया। उनकी इस सक्रियता से और ऋषियों को भी प्रेरणा मिली एवं उन्होंने भी सद्ज्ञान विस्तार का पुण्य–परमार्थ करने का निश्चय किया।

ऐसा कोई शास्त्र नहीं, कोई ग्रंथ नहीं, जिसमें नारद जी की चर्चा न हो, वे हर कथा के सूत्रधार हैं। वे राम के भी हैं रावण के भी, कृष्ण के भी और कंस के भी। कंस उन से राय लेता है, देवकी के किस पुत्र को छोड़ दूँ, किसको मारूँ। ऐसे महान देवर्षि को मुख्य पात्र बनाकर प्रज्ञा पुराण का शुभारंभ किया गया है, आइए, देवर्षि नारद की विशेषताओं को गीत के माध्यम से सुनें।

*देवर्षि नारद हुए भक्तों में सिरमौर।*
*परहित चिंतन में निरत, उन सा कोई न और।*
*निज स्वार्थ सुखों की चिंता तज, वे परहित चिंतन करते थे।*
*सब भक्तों को सन्मार्ग दिखा, उनकी पीड़ा को हरते थे।*
*बस इसीलिए तो श्रीहरि ने, था उनको यह सम्मान दिया।*
*जब चाहें पहुँचें विष्णुधाम, उनको वांछित वरदान दिया।*
*वे समय समय पर भूतल पर, विचरण भी करते रहते थे।*
*भव आतप से पीड़ित जन की, चर्चा श्रीहरि से करते थे।*
*उनके मन में एक दिन, आया एक विचार।*
*दुःखी दरिद्री मनुज का, कैसे हो उद्धार॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**लोककल्याणकृद् धर्मधारणासंप्रसारकः।**
**व्रती यायावरो मान्यो देवर्षिऋषिसत्तमः॥ १।१।१॥**
**अव्याहतगतिं प्राप गन्तुं विष्णुपदं सदा।**
**नारदो ज्ञानचर्चार्थं स्थित्वा वैकुण्ठसन्निधौ॥ १।१।२॥**

देवर्षि नारद भगवान के अनन्य भक्त हैं, वे सदैव परहित की चिंता में लगे रहते हैं, इसलिए वे भगवान के पास कभी भी कहीं भी जा सकते हैं। प्रज्ञा पुराण के प्रथम श्लोक में देवर्षि की चार विशेषताएँ अंकित हैं–(१) **लोक कल्याणकृत** अर्थात् लोक कल्याणार्थ, संलग्न। कथा भी लोक कल्याण के लिए कही लिखी जाती हैं, स्वार्थ के लिए नहीं। (२) **धर्म धारणा संप्रसारक**–धर्म में व्याप्त भ्रांतियों को दूर कर सच्चे धर्म का प्रसार करने वाले । (३) **व्रती यायावर**–एक स्थान पर नहीं बैठते, घूमते रहते हैं दीन दुःखियों की तलाश में। दो घड़ी से अधिक कहीं नहीं रुकते। (४) **अव्याहतगति**–किसी भी समय कहीं भी जा सकते हैं। इन समस्त विशेषताओं से विभूषित होने के कारण देवर्षि भगवान को बहुत प्यारे हैं। इनके विषय में पुराणों में अनेक कथाएँ हैं।

एक ऊँची पहाड़ी पर एक मंदिर था। उस मंदिर की मूर्ति ने एक दिन सामने वाली पगडंडी से सहानुभूति दिखाते हुए कहा–बहन ! तुम कितना कष्ट सहती हो, यहाँ आने जाने वाले लोगों का बोझ उठाती हो, यह देखकर हमारा जी भर आता है। पगडंडी मुस्कराती हुई बोली–''भक्त को भगवान से मिलाने का अर्थ भगवान से मिलना ही तो है देवी।'' मूर्ति पगडंडी की इस महानता के आगे नतमस्तक हुए बिना न रह सकी। इसीलिए नारद जी भी भक्तों को भगवान से मिलाने का प्रयास करने के कारण महान कहलाते हैं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक बार देवर्षि नारायण नारायण का महामंत्र जपते जपते पृथ्वी लोक की तरफ जा रहे थे कि सामने से एक देवदूत आ रहा था। उससे नारद जी ने पूछा–''कहाँ जा रहे हो ? तुम्हारे हाथ में क्या है ?'' देवदूत ने कहा–''मेरे हाथ में भगवान के भक्तों की सूची है, उसे लेकर पृथ्वी पर जा रहा हूँ।'' देवर्षि ने कहा–''इसे मुझे दिखा सकते हैं ?'' देवदूत ने उन्हें उस सूची को दिखाया, तो उसमें नारदजी का कहीं नाम नहीं था। नारद जी कुछ उदास हो गए, सोचने लगे शायद मुझ में ही कुछ कमी है। भगवान ने अप्रसन्न होकर मेरा नाम सूची में से काट दिया है। सोचते हुए आगे बढ़े, देखा तो सामने से दूसरा देवदूत आ रहा था। नारद जी को प्रणाम करके वह रुका। नारद जी ने पूछा–''तुम कहाँ जा रहे हो ? तुम्हारे हाथ में क्या है ?'' उसने कहा–''मेरे हाथ में उन भक्तों की सूची है, जिन के भगवान स्वयं भक्त हैं।'' नारद जी ने देखा तो देखते ही भाव विभोर हो गए, उनका नाम उस सूची में सबसे ऊपर था। नारद जी ने मन ही मन भगवान को प्रणाम किया और चल दिए पृथ्वी लोक की तरफ भगवान के नाम का स्मरण करते हुए। ( श्रोता भी साथ साथ गाएँ। )

**कीर्तन**

''भज मन नारायण नारायण नारायण।
श्रीमन्नारायण, नारायण, नारायण।
लक्ष्मी नारायण, नारायण, नारायण।
प्रज्ञा नारायण, नारायण, नारायण॥''

नारद जी ने सोचा कि आजकल पृथ्वी लोक से बड़ी–बड़ी खबरें आ रही है। मनुष्य आकाश में उड़ सकता है, समुद्र को पार कर सकता है, घर बैठे ही टेलीविजन पर सब जगह का दृश्य देख सकता



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, स्विच दबाते ही प्रकाश हो जाता है, पंखा चलने लगता है, तब तो पृथ्वी पर ही स्वर्ग होगा, चलो सैर करके देख आते हैं। पृथ्वी लोक में गए तो देखा, एक मंदिर में एक भक्त बड़ी जोर जोर से जल्दी–जल्दी रामायण का पाठ कर रहा है। देवर्षि का मन प्रसन्न हो गया। अहा ! कितना सुंदर मंदिर बनवाया है, कितनी तन्मयता से पूजा कर रहा है, जब वह पूजा कर चुका तो वेश बदलकर उससे पूछा–''भैया, राम के बहुत बड़े भक्त हो, क्या रोज पूजा करते हो ?'' उसने कहा–''पंडित जी, पूजा तो मैं रोज ही करता हूँ, पर आज जरा जल्दी में हूँ, कचहरी जाना है।'' नारद जी ने पूछा–''भैया, कचहरी में क्या कोई मुकदमा चल रहा है ?'' बोला ''हाँ, वह जो मेरा छोटा भाई है, बहुत दुष्ट है, उसने मेरे मकान की पाँच गज जमीन ले ली। मैं भी उसे छोड़ूँगा नहीं, मैंने भी मुकदमा ठोक दिया है, आज पेशी है, बाकी शाम को मिलना तो बताऊँगा, जीत गया तो मिठाई खिलाऊँगा।'' सुनकर नारद जी दंग रह गए, रामायण का पाठ कर रहा है और राम भरत के आदर्श को भूलकर छोटे भाई से मुकदमा लड़ रहा है, केवल पाँच गज जमीन के लिए। नारद जी का मन खिन्न हो गया। आगे चले तो एक और दृश्य देखा–आगे आगे एक अर्थी जा रही है, पीछे पीछे दो स्त्री पुरुष रोते चिल्लाते जा रहे हैं और उसके पीछे पुलिस के आदमी तीन लोगों को हथकड़ी पहनाए लिए जा रहे हैं। शव के साथ रोना चिल्लाना तो स्वाभाविक था, किंतु पुलिस की बात समझ में नहीं आई। नारद जी ने वेश बदल कर फिर किसी से पूछा तो पता लगा कि यह एक लड़की का शव है, जिसका विवाह छः महीने पहले हुआ था। सास, ससुर व पति ने मिलकर दहेज न मिलने के कारण बहू को जला कर मार डाला है। पुलिस उन तीनों को पकड़ कर ले जा रही है और रोने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाले लड़की के माता–पिता थे। देवर्षि का मन व्याकुल हो उठा। कहीं किसी का अपहरण, कहीं बलात्कार, कहीं आतंकवादी दस्ते ने बम विस्फोट से कितनों को मार डाला, कहीं गाय की चर्बी घी में मिलाई जा रही है, तो कहीं नकली दवा खा कर लोग बेमौत मर रहे हैं। देवर्षि यह देख कर व्याकुल हो गए।

वे सोचने लगे कि सचमुच स्वतंत्र विवेक बुद्धि ही व्यक्ति को दो मार्गों–आत्मिक प्रगति तथा भौतिक समृद्धि के चयन, अनुपयोग, दुरुपयोग, सदुपयोग के माध्यम से स्वर्ग व नरक के दृश्य इसी जीवन में दिखाती है व उसका भविष्य निर्धारित करती है।

स्वर्ग और नरक करनी के फल हैं, एक संत ने अपने शिष्य को समझाया, पर शिष्य की समझ में बात आई नहीं। तब उसका उत्तर देने के लिए अगले दिन संत शिष्य को लेकर एक बहेलिए के पास पहुँचे। वहाँ जाकर देखा, जंगल से व्याध कुछ निरीह पक्षी पकड़कर लाया था, वह उन्हें काट रहा था, घर में कलह मची थी। यह सब देखते ही शिष्य चिल्लाया–''महाराज ! यहाँ तो नरक है, यहाँ से शीघ्र चलिए।'' संत बोले–''सचमुच, इस बहेलिये ने इतने जीव मार डाले, पर आज तक फूटी कौड़ी तक न जोड़ पाया। कपड़ों तक के पैसे नहीं, इसके लिए यह संसार भी नरक है और परलोक में तो इतने मारे गए जीवों की तड़पती आत्माएँ उसे जितना कष्ट देंगी, उसकी तो कल्पना भी नहीं हो सकती।''

संत दूसरे दिन एक साधु की कुटी पर पधारे। शिष्य भी साथ थे, वहाँ जाकर देखा, साधु के पास है तो कुछ नहीं, पर उनकी मस्ती का कुछ ठिकाना नहीं, बड़े संतुष्ट, बड़े प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। संत ने कहा–''वत्स ! यह साधु इस जीवन में कष्ट का, तपश्चर्या का जीवन



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जी रहे हैं तो भी मन में इतना आह्लाद इस बात का प्रतीक है कि इन्हें पारलौकिक सुख तो निश्चित ही है।''

सायंकाल संत एक वेश्या के घर में प्रवेश करने लगे तो शिष्य चिल्लाया–''महाराज ! यहाँ कहाँ ?'' संत बोले–''वत्स ! यहाँ का वैभव भी देख लें। मनुष्य इस सांसारिक सुखोपभोग के लिए अपने शरीर, शील और चरित्र को भी किस तरह बेचकर मौज उड़ाता है, पर शरीर का सौंदर्य नष्ट होते ही कोई पास नहीं आता, यह इस बात का प्रतीक है कि इसके लिए यह संसार स्वर्ग की तरह है, पर अंत इसका वही है, जो उस बहेलिए का था।''

अंतिम दिन वे एक सद्गृहस्थ के घर रुके। गृहस्थ बड़ा परिश्रमी, संयमशील, नेक और ईमानदार था, सो सुख–समृद्धि की उसे कोई कमी नहीं थी, वरन् वह बढ़ रही थी। संत ने कहा–यह वह व्यक्ति है, जो इस पृथ्वी पर भी स्वर्ग के सुखों का अनुभव कर रहा है और परलोक में भी स्वर्ग को प्राप्त करेगा। शिष्य ने इस तत्व–ज्ञान को भली प्रकार समझ लिया कि स्वर्ग और नरक वस्तुतः करनी का फल है।

विधाता ने तो मानव को यही सोच कर भेजा है कि वह पृथ्वी पर अन्य जीवधारियों से अलग अपनी दिशाधारा चयन करेगा और श्रेय पक्ष की ओर बढ़कर सबका कल्याण करेगा, पर उसे भी वर्तमान स्थिति देखकर निराशा ही होती होगी।

बस देवर्षि बहुत परेशान हुए और अपने को न रोक सके, सीधे चल दिए विष्णु लोक।

*यह विचार कर देवर्षि, पहुँचे बैकुण्ठ धाम।*
*श्री नारायण को किया, श्रद्धा सहित प्रणाम॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*हँस कर पूछा तब श्रीहरि ने, कहिए ऋषि कैसे आए हैं।*
*है कहाँ कहाँ पर भ्रमण किया, और क्या संदेशा लाए हैं।*
*कारण जो भी हो प्रकट करें, यात्रा के कष्ट उठाने का।*
*कहिए अब क्या कुछ काम पड़ा, बैकुण्ठ लोक में आने का।*
*कुछ दुःखी दिखाई देते हो, मुख मंडल क्यों मुरझाया है।*
*क्या कहीं स्वयंवर है फिर से, शादी को मन ललचाया है।*
*नारद जी कहने लगे, हे हरि दया निधान।*
*अंतर्यामी आप हैं, क्यों बनते अनजान।*

**एकदा हृदये तस्य जिज्ञासा समुपस्थिता।**
**ब्रह्मविद्यावगाहाय काल उच्चैस्तु प्राप्यते॥ १।१।५॥**
**सामान्यानां जनानां तु मनसः सा स्थितिः सदा।**
**चंचलास्ति न ते कर्तुं समर्था अधिकं क्वचित् ॥१। १।७॥**

जब देवर्षि नारद पृथ्वी लोक की स्थिति से व्याकुल होकर विष्णु लोक पहुँचे, तो नारायण नारायण की ध्वनि सुनकर लक्ष्मी जी ने कहा–''उठिए भगवन्, नारद जी आए हैं।'' भगवान ने उठकर नारद का सम्मान किया। भगवान अंतर्यामी हैं, सब कुछ जानते हैं फिर भी भक्तों से मित्रभाव रखते हैं। नारद जी को दुःखी देखकर उन्हें हँसाने के लिए हास–परिहास करते हुए कहने लगे–''देवर्षि ! आज बहुत व्याकुल दिखाई दे रहे हो, क्या बात है ? कहीं फिर कोई स्वयंवर तो नहीं है, जिसकी सूचना लेकर आए हो ?''

यह सुनकर देवर्षि ने बनावटी क्रोध दिखाया और कहा–''भगवन्! आपको हर समय हँसी ही सूझती है। आप अंतर्यामी होकर भी अनजान क्यों बन रहे हैं ? क्या आपको नहीं मालूम कि आज धरती पर कितना संकट आया हुआ है ? आप एक बार जाकर तो देखिए कि आज हर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदमी कितना दुःखी है। पहले एक राक्षस होता था, पर इस समय तो प्रत्येक आदमी के भीतर दुर्बुद्धि रूपी राक्षस घुसा है। अनास्था के भस्मासुर ने सारी धरती को भस्म करने का निश्चय कर लिया है। अब आप ही कुछ कीजिए प्रभु । मनुष्य ने तो मानव जीवन पाकर भी उसे निरर्थक ही खो दिया। यह सुनकर श्रीहरि ने कहा–हे देवर्षि ! इस समय मनुष्य उस व्यक्ति की तरह है, जो पारसमणि पाकर भी लाभ नहीं उठा सका।

एक व्यक्ति को महात्मा जी के आशीर्वाद से सात दिन के लिए पारस पत्थर मिल गया, पर अब वह व्यक्ति सस्ते लोहे की तलाश में शहर–शहर भटकता फिरा, एक जगह नहीं मिला तो दूसरी जगह गया। इसी दौड़–धूप में सारा समय व्यतीत हो गया और रत्ती भर भी सोना नहीं बना सका। सातवें दिन पारसमणि महात्मा जी ने वापस ले ली। भगवान बोले–''हे नारद ! यह जीवन भी पारसमणि है, जो इसे आत्मिक संपदा में बदलना चाहता है, वह अवसर नहीं गँवाता। समय नष्ट न करके बुद्धि से काम लेता है।'' नारद जी बोले–''हे प्रभु ! विद्वान विद्या बल की सूझ बूझ से काम चला रहे हैं, धनी धन के बल पर, पर आपके गरीब भक्त तो बहुत दुःखी हैं। आप अपनी पूर्व प्रतिज्ञा का ध्यान रखकर फिर पृथ्वी पर अवतरित होइए, तभी पृथ्वी का संकट दूर होगा।''

*फिर कहा हरि ने हे मुनिवर, यह मेरे मन की बात कही।*
*तुम सचमुच भक्त शिरोमणि हो, इस में संशय है जरा नहीं।*
*पर आज मनुज पर जो संकट है, उसने स्वयं बुलाया है।*
*बनकर अदूरदर्शी उसने, निज गरिमा को विसराया है।*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*जो नहीं सोचने योग्य अरे, उस पर चिंतन चलता रहता।*
*बस इसीलिए तो मानव का, आचरण भ्रष्ट बनता रहता।*
*चिंतन से बढ़ती चाह गलत, जो गलत काम करवाती है।*
*जब कर्म भोग बनकर डसते, तब बात समझ में आती है।*
*हो उदास बोले ऋषि, दीनबंधु भगवान।*
*पूर्व प्रतिज्ञा का करो, नाथ आज कुछ ध्यान॥*

**जिज्ञासां नारदस्याथ ज्ञात्वा संमुमुदे हरिः।**
**उवाच च महर्षे त्वमात्थ यन्मे मनीषितम्॥ १।१।१६॥**
**अचिन्त्यचिन्तना जाता अयोग्याचरणास्तथा।**
**फलतः रोगशोकार्तिकलहक्लेशनाशजम्॥ १।१।१९॥**

देवर्षि के वचन सुनकर भगवान बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे– हे ऋषि श्रेष्ठ ! सचमुच आप भक्त शिरोमणि हैं, जो अब भी आप पृथ्वी पर रहने वालों के दुःख से दुःखी हैं, लेकिन आप ही बताइए इस मनुष्य को विधाता ने इतनी संपदा देकर भेजा है, धरती का सारा वैभव इसी के लिए तो है, पर मैं क्या करूँ ? आज मनुष्य ने अपनी दुर्बुद्धि के कारण अपने को इतना दीन हीन बना लिया है कि वह राजकुमार होकर भी भिखारी की भाँति भटक रहा है।

''एक बार एक सेठ के घर में आग लग गई। सेठ के कहने से लोग कीमती सामान, धन आदि तो निकालने लगे, पर सेठ के बच्चे की ओर किसी का ध्यान न गया। जब सारा सामान निकल आया, तब सेठ ने बच्चे की याद की, पर तब तक वह जल चुका था। सेठ छाती पीट–पीटकर रोने लगा कि धन का अधिकारी तो मर ही गया।'' संत ने कहा कि–''शिष्यो ! इसी तरह संसार के लोग दुनियावी सुखों के फेर में आत्मा को भूल जाते हैं।''



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तुलसीदास जी ने भी रामचरित मानस में कहा है–

**ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहस सुखरासी।**
**सो मायावश भ्रमयो गुसाईं, बंध्यो कीर मरकट की नाईं॥**

यह सब उसके अचिंत्य चिंतन का ही परिणाम है, वह सृष्टि का उपभोग करने के लिए, भौतिक सुख सुविधाओं को पाने के लिए दुष्ट आचरण कर रहा है, उस का ही यह फल उसे भोगना पड़ रहा है। वह तपस्या भी करता है, तो भस्मासुर की भाँति वर माँगता है कि वह जिसके सिर पर हाथ रखे, उसी को भस्म कर दे। जब उसने वरदान का दुरुपयोग किया, तो भगवान ने ऐसी मोहिनी माया रची कि स्वयं ही अपने सिर पर हाथ रख कर स्वयं ही भस्म हो गया। इतना ही नहीं, वह वर देने वाले भगवान शिव को ही भस्म कर पार्वती जी को अपने पास रखना चाहता था, ऐसे दुष्ट व्यक्ति का विनाश नहीं होगा, तो क्या होगा? भगवान कहते हैं–

**निर्मल मन जन सो मोहि पावा,**
**मोहि कपट छल छिद्र न भावा।**

प्रभु के ये वचन सुनकर देवर्षि उदास हो कर कहने लगे– हे दीनबन्धु ! आपने प्रतिज्ञा की थी कि **यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥**

तुलसीदासजी कृत रामचरित मानस में भी आया है।

**जब जब होय धर्म की हानि, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।**
**तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा, हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा॥**

जब जब धर्म की हानि और अधर्म की स्थापना होगी तब तब आप पृथ्वी पर आकर धरती का संकट दूर करेंगे। प्रभु ! अब वह समय आ गया है कि आप को अब पृथ्वी पर आना ही होगा। यह विनती सुनकर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान प्रसन्न हो कर कहने लगे–हे मुनिवर ! पृथ्वी मेरी सर्वश्रेष्ठ कृति है। मैं इसको नष्ट होते नहीं देख सकता। अतः मैं शीघ्र ही फिर पृथ्वी पर अवतार लूँगा। यह मेरा चौबीसवाँ अवतार होगा। अवतार का क्रम आदिकाल से चला आ रहा है। जिस समय जैसी समस्याएँ होती हैं, मुझे उन्हीं के अनुरूप स्वरूप धारण करना पड़ता है।

हे देवर्षि ! जब जिस प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं, तब उसी का समाधान करने के लिए एक दिव्य चेतना प्रादुर्भूत हुई है, जिसे अवतार कहा गया है और उसी क्रम से अवतार, युग प्रवाह को उलटने के लिए अपनी लीलाएँ रचते रहे हैं। सृष्टि के आरंभ में जल ही जल था। प्राणी जगत में जलचरों की ही प्रधानता थी, तब उस असंतुलन को **मत्स्यावतार** ने दूर किया। जब जल और थल पर प्राणियों की हलचलें बढ़ीं, तो उनके अनुरूप क्षमता संपन्न **कच्छप** काया ने संतुलन बनाया। उन्हीं के नेतृत्व में समुद्र–मंथन के रूप में प्रकृति दोहन का पुरुषार्थ संपन्न हुआ। हिरण्याक्ष ने समुद्र में छिपी संपदा को ढूँढ़कर उसे अपने ही एकाधिकार में कर लिया, तो भगवान का **वाराह** रूप ही उसका दमन करने में समर्थ–सक्षम हो सका। जब मनुष्य अपनी आवश्यकताओं से अधिक धन कमाने में समर्थ हो गया, तो संकीर्ण स्वार्थपरता से प्रेरित संचय की प्रवृत्ति भी बढ़ी। संचय और उपभोग की पशु प्रवृत्ति को उदारता में परिणत करने के लिए भगवान् **वामन** के रूप में प्रकट हुए। छोटे, बौने और पिछड़े लोग उठ खड़े हुए और बलि जैसे संपन्न व्यक्तियों को स्वेच्छापूर्वक उदारता अपनाने के लिए सहमत कर लिया गया।

हे देवर्षि ! उच्छृंखलता जब उद्धत और उद्दंड हो जाती हैं, तब शालीनता से उसका शमन नहीं हो सकता। प्रत्याक्रमण द्वारा ही



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसका दमन करना पड़ता है। ऐसे अवसरों पर नरसिंहों की आवश्यकता पड़ती है और उन्हीं का पराक्रम अग्रणी रहता है। उन आदिम परिस्थितियों में भगवान् ने नर और व्याघ्र का समन्वय आवश्यक समझा तथा **नृसिंह** अवतार के रूप में दुष्टता के दमन एवं सज्जनता के संरक्षण का आश्वासन पूरा किया।

हे देवर्षि ! इसके बाद **परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध** के अवतार आते हैं। इन सभी का अवतरण बढ़ते हुए अनाचरण के प्रतिरोध और सदाचरण के समर्थन–पोषण के उद्देश्य के लिए हुआ। परशुराम ने शस्त्र बल से सामंतवादी निरंकुश आधिपत्य को समाप्त किया। राम ने मर्यादाओं के पालन पर जोर दिया, तो कृष्ण ने अपने समय की धूर्तता और छल–छद्म से घिरी हुई परिस्थितियों का दमन 'विषस्य विषमौषधम्' की नीति अपना कर किया। कृष्ण चरित्र में कूटनीतिक दूरदर्शिता की इसलिए प्रधानता है कि उस समय की परिस्थितियों में सीधी उँगली से घी नहीं निकल पा रहा था। इसलिए काँटे से काँटा निकालने का उपाय अपनाकर अवतार प्रयोजन को पूरा करना पड़ा।

हे ऋषिवर! बुद्ध के बुद्धवाद का स्वरूप 'विचार क्रांति' था। पूर्वार्द्ध में धर्म चक्र का प्रवर्तन हुआ था। धर्म धारणा का सम्मान करते हुए लाखों व्यक्तियों ने उसमें भाव भरा योगदान दिया था। आनंद जैसे मनीषी, हर्षवर्धन जैसे श्रीमन्त, आम्रपाली जैसी कलाकार, अंगुलिमाल जैसे प्रतिभाशाली बड़ी संख्या में उस अभियान के अंग बने थे। इससे पिछले अवतारों का कार्यक्षेत्र सीमित रहा था, क्योंकि समस्याएँ छोटी और स्थानीय थीं। बुद्धकाल तक समाज का विस्तार बड़े क्षेत्र में हो गया था। इसलिए बुद्ध का अभियान भी भारतकी सीमाओं तक सीमित नहीं रहा और उन दिनों जितना व्यापक प्रयास संभव था,उतना अपनाया



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गया। धर्मचक्र प्रवर्तन भारत से एशिया भर में फैला और उससे भी आगे बढ़कर उसने अन्य महाद्वीपों तक अपना आलोक बाँटा।

**प्रज्ञावतार, बुद्धावतार का उत्तरार्ध है। बुद्धि प्रधान युग की समस्याएँ भी चिंतन प्रधान होती हैं। मान्यताएँ, विचारणाएँ, इच्छाएँ ही प्रेरणा केंद्र होती हैं और उन्हीं के प्रवाह में सारा समाज बहता है। ऐसे समय में अवतार का स्वरूप भी तदनुरूप ही हो सकता है। लोकमानस को अवांछनीयता, अनैतिकता एवं मूढ़मान्यता से विरत करने वाली विचार–क्रांति ही अपने समय की समस्याओं का समाधान कर सकती है।**

आज आस्था संकट के कारण मनुष्य सुख–समृद्धि से संपन्न होने के बावजूद जिस जंजाल में स्वयं फँसा हुआ है एवं अन्यों के लिए विपत्ति का कारण बना हुआ है, उसका निवारण आस्था एवं प्रज्ञारूपी अस्त्र द्वारा ही संभव है।

हे देवर्षि ! मनुष्य सुख समृद्धि के होने पर भी जिस जंजाल में फँसा है, उसे इस समस्या से मुक्त करने के लिए मुझे **प्रज्ञावतार** रूप में अवतरित होना होगा, किंतु इस समय एक काम आप को और भी करना होगा कि आप ने जिस प्रकार व्यास जी को प्रेरणा देकर भागवत् पुराण की रचना करवाई थी, उसी प्रकार इस समय युग व्यास पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य को प्रज्ञा पुराण की रचना करने के लिए प्रेरित कीजिए। इस समय मनुष्य की स्थिति मधुवर्त नामक वैश्य के समान है।

मधुवर्त नामक वैश्य महाराज समुद्रदत्त के यहाँ नौकरी करता था। जितना मिलता था, उसमें घर का अच्छा गुजर–बसर चलता था, बालक बच्चे सभी सुखी थे। एक दिन मधुवर्त जंगल से गुजर रहा था,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो एक पीपल से आवाज आई–'सात घड़ा धन लोगे।' मधुवर्त लालच में आ गया। उसने हाँ कर दी। अदृश्य आवाज ने कहा–''जाओ, घड़े तुम्हारे घर पहुँचा दिए जाएँगे।'' मधुवर्त घर लौटा तो पत्नी ने बताया कि सातों घड़े आ गए हैं। उसने सातों घड़े देखे। छः तो भरे थे। एक आधा खाली था। मधुवर्त को उसे पूरा करने की चिंता सताने लगी। अब उसने अपना, बच्चों का, सभी का पेट काटना शुरू कर दिया। फलतः स्वयं हो चला दुर्बल, बच्चे करने लगे उत्पात, पत्नी कभी उसकी तरफ कभी बच्चों की तरफ। घर में हाहाकार मच गया। एक दिन इसी शोक में डूबे मधुवर्त को देखकर महाराज समुद्रदत्त ने पूछा–''कहीं तुम्हें यक्ष के सात घड़े तो नहीं मिल गए ?'' मधुवर्त ने कहा–''हाँ महाराज।'' वे हँसकर बोले–''तुम्हारे दुःखों का यही कारण है। सुख चाहो तो उन्हें लौटा दो।'' गलती समझ में आई तो मधुवर्त ने घड़े लौटाए और जितना भी कुछ अपने पास था, उसी में गुजारा करने लगे। जो लोग भले होते हैं, वे तो किसी प्रकार उबर आते हैं, पर कुटिल चाल चलने वाले अंततः स्वयं गिरते हैं।

**गीत–**

युग तो बदल रहा है, बदलना जरूर है।
वो अब भी बदल जाएँ, कि जिनको गरूर है॥
रहता नहीं है बल कभी एक मुकाम पर,
कितनी भी लंबी रात हो ढलती जरूर है। वो अब भी.....
रखते नहीं हैं देश से जो कोई वास्ता।
जिनको नहीं समाज पर थोड़ी भी आस्था॥
अपने लिए जीते हैं वे, अपने लिए मरें।
परमार्थ, परोपकार की चर्चा नहीं करें॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उल्टे हैं जो सीधा उन्हें करना जरूर है। वो अब भी.....
तो साथियों ये आखरी चेतावनी सुन लो,
जिस रास्ते पर चल पड़े वो रास्ता बदलो।
भगवान के इस काम से जो जुड़ ना सकेंगे,
प्रभु के सुरक्षा चक्र में वो आ ना सकेंगे।
कुदरत का कहर उन पर बरसना जरूर है। वो अब भी.....

इस प्रकार युग परिवर्तन की विशेषता बताते हुए भगवान कहते हैं कि गीदड़ वेशधारी अनेक व्यक्ति समाज में बैठे हैं। अतः हे देवर्षि ! इस कार्य में आपको भी मेरा सहयोगी बनना होगा। ***तुम सरीखे संत प्रिय मोरे। धरहुँ देह नहिं, आन निहोरे॥*** निराकार होने के कारण मैं केवल प्रेरणा ही दे सकता हूँ। कार्य करने के लिए आपको **वरिष्ठ आत्माओं को जाग्रत करना होगा, क्योंकि संयुक्त प्रयास ही हमेशा सफल होते हैं।**

एक गाँव में आग लग गई। सभी आदमी तो सुरक्षित भाग निकले, पर दो वृद्ध ऐसे थे जो भाग नहीं सकते थे–एक अंधा, एक पंगा। दोनों ने एकता स्थापित की, अंधे ने पंगे को कंधे पर बैठा लिया, पंगा रास्ता बताने लगा और अंधा तेज दौड़ने लगा। दोनों सकुशल बाहर आ गए। सहयोग से आदमी संकट से भी उबर सकता है। रामकृष्ण परम हंस तथा विवेकानंद, समर्थ गुरु रामदास तथा शिवाजी, श्रीकृष्ण तथा अर्जुन, राम और हनुमान, स्वामी विरजानंद तथा दयानंद ऐसे प्रयास के ही उदाहरण हैं, जिन्होंने समाज को संकटों से उबारा। **भगवान की शक्ति जब भक्त को मिलती है, तो वह शक्तिहीन होने पर भी शक्तिशाली बन जाता है।** इस स्थान पर गुरुदेव संदेश देना चाहते हैं कि शिष्य जब गुरु के प्रति समर्पित हो जाते हैं, तो संसार उन्हें हमेशा याद



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करता है। वे ऐसे कार्य कर दिखाते हैं, जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

एक संत दस शिष्यों समेत सघन वन में रहते थे। एक रात्रि को उन्होंने एक विशेष साधना कराई। शिष्यों को पंक्तिबद्ध होकर ध्यान करने के लिए बिठा दिया। रात्रि के तीसरे प्रहर गुरु ने धीमे से आवाज दी–राम ! राम उठा, गुरु ने उसे चुपके से दुर्लभ सिद्धि प्रदान की। अब दूसरे की बारी आई। पुकारा–श्याम ! पर श्याम तो सो रहा था। इस बार भी राम ही आया और दूसरी सिद्धि भी लेकर चला गया। समर्पित शिष्य ही सब कुछ पा सकता है। गुरु कृपा से नरेन्द्र विवेकानंद बनकर विश्व को भारतीय संस्कृति का संदेश देते हैं, साधारण सा व्यक्ति छत्रपति शिवाजी बनता है, सुग्रीव के पीछे पीछे भागने वाले हनुमान बजरंगवली बनकर समुद्र पार करते हैं, मोहग्रस्त अर्जुन विजयी बनते हैं तथा मूलशंकर जैसा बालक ऋषि दयानंद बनकर संसार को जागरण का संदेश देता है। हे नारद ! आप जाग्रत आत्माओं के सहयोग से आगे का कार्य करिए। गुरु के वचनों को पालने से ही स्वर्ग का आनंद लिया जा सकता है।

*सुन मधुर वचन ये श्रीहरि के, नारद जी ने कर जोड़ कहा।*
*हे देव, विवेक ना मुझ में है, मुझ को है इतना बोध कहाँ ?*
*अब तक के सभी पुराणों में, अवतार कथा ही आती है।*
*प्रज्ञा पुराण की कथा नाथ, कुछ नहीं समझ में आती है।*
*उन अवतारों की मधुर कथा, सब को सम्मोहित करती है।*
*सब तन्मय होकर सुनते हैं, आँखों से धारा झरती है।*
*प्रज्ञा पुराण में हे भगवन, अवतार कथा किसकी होगी ?*
*क्या रूप धरेंगे आप प्रभो, जग में चर्चा जिसकी होगी ?*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*नाथ पाप के बोझ से, धरती व्याकुल आज।*
*दूर करो संकट सभी, पूर्ण करो सब काज॥*

**प्राह नारद इच्छायाः स्वकीयाया भवान् मम।**
**जिज्ञासायाश्च प्रस्तौति यं समन्वयमद्भुतम्॥ १।१।४६॥**
**आत्मा मे पुलकितस्तेन स्पष्टं निर्दिश भूतले।**
**प्रतिगत्य च किं कार्यं येन सिद्ध्येत्प्रयोजनम्॥ १।१।४७॥**

श्रीहरि के ये मधुर वचन सुनकर देवर्षि कहने लगे कि हे प्रभो ! मैं आपकी सहायता कैसे करूँ, आप ही कुछ बताइए ? आप युग व्यास से प्रज्ञा पुराण की रचना कराने के लिए कह रहे हैं, परंतु इस प्रज्ञा पुराण में मैं किसकी कथा लिखवाऊँ ? सभी पुराणों में भगवान के अवतारों की कथाएँ आती हैं, जिस रूप में उन्होंने अवतार लिया है, उसी के नाम पर पुराण का नाम रखा गया। जैसे कच्छप पुराण, वाराह पुराण, नृसिंह पुराण आदि, पर आप मुझे बताइए कि प्रज्ञा पुराण में मैं आपके किस रूप का वर्णन करने के लिए कहूँ। आप मुझे बताइए कि आप किस रूप को धारण कर विश्व का उद्धार करेंगे, व्यक्ति का चिंतन बदलेंगे।

प्रभु बोले–''हे देवर्षि! जब दसों दिशाओं में रावण का आतंक फैला था। कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि उसका विरोध–प्रतिरोध किया जा सकता है। अनीति जब चरम सीमा पर पहुँची, तो हम राम के रूप में जन्म लेने की तैयारी करने लगे। तब हमारी सहायता के लिए देवताओं को एकत्र कर ब्रह्माजी ने भिन्न–भिन्न रूपों में धरती पर जन्म लेकर अवतार प्रयोजन की पूर्ति हेतु व्यवस्था की। रीछ, वानर, गिद्ध इन जाग्रत वरिष्ठ आत्माओं के रूप में उभरे और अपने शौर्य–साहस का परिचय देते हुए धर्म–युद्ध में सहायक हुए।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हे देवर्षि ! जब भी आतंक को चीरते हुए अप्रत्याशित रूप से सत्साहस उभरे, समझना चाहिए कि दैवी चेतना काम कर रही है। चेतना प्रवाह का प्रत्यक्ष प्रमाण यह होता है कि आदर्शवाद को सदैव अपनाना और दुस्साहस का परिचय देते हुए अनीति के विरुद्ध संघर्ष करना, चाहे यह घाटे का सौदा ही लगे।

हे ऋषिराज ! आप बहुत भोलेपन के साथ हमारे अवतार के रहस्य को जानना चाहते हैं। आप सचमुच बहुत चतुर हैं, पर मैं इस बार आप को अपने अवतार लेने का स्थान नहीं बताऊँगा, क्योंकि द्वापर में मैंने आप को बता दिया था कि मैं देवकी पुत्र बनकर पृथ्वी पर आऊँगा, तो आपने यह भेद कंस को बता दिया और आप जानते हैं, इससे मेरी माता देवकी तथा पिता वसुदेव को कितना कष्ट हुआ था ? इसलिए मैं आप को केवल इतना ही बता सकता हूँ कि मैं इस बार किसी साधारण ग्राम में साधारण व्यक्ति के रूप में जन्म लूँगा और इस बार मेरे हाथ में कोई अस्त्र शस्त्र नहीं होगा। मैं तो बस प्रेम और करुणा का संदेश लेकर आऊँगा, क्योंकि अस्त्र शस्त्र का प्रयोग आपकी माता जगदंबे को पसंद नहीं है।'' यह सुनकर दुःखित हृदय नारदजी ने कहा–हे प्रभु ! आप कृपा करके मुझे यह तो बताइए कि अब कहाँ अवतार लेंगे ?

*ऋषि की विनीत वाणी सुन कर, करुणानिधि ने यह बात कही।*
*जिस भाँति जगत का हित होगा, ऋषिराज करूँगा कार्य वही।*
*तुम समाधिस्थ अब हो जाओ, तुम को सब कुछ समझाता हूँ।*
*आयोजित जहाँ पर प्रज्ञा सत्र, मैं वहीं तुम्हें ले जाता हूँ।*
*जो महाप्राज्ञ ने समझाया, उस ब्रह्म विद्या का सार गहो।*
*फिर उस को हृदयंगम करके, जन–जन में उसे प्रचार करो।*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*साधारण जन भी सुन उस को, एक नई दिशा पा जाएगा।*
*अपने स्वरूप को समझ सभी का, मन हर्षित हो जाएगा।*
*समाधिस्थ नारद हुए, हरि चरनन धर ध्यान।*
*परा वाणी में दिया प्रभु ने, तब प्रज्ञा का ज्ञान॥*

**तं प्रसंगं स्मारयामि ध्यानेन हृदये कुरु।**
**प्रज्ञापुराणरूपे च योजितं यत्नतस्तु तम्॥ १।१।५८॥**
**समाधिस्थो नारदोऽभूत्तस्मिन्नेव क्षणे प्रभुः।**
**प्रज्ञापुराणमेतत्तद्हृदयस्थमकारयत् ॥ १।१।६०॥**

भगवान ने कहा–''हे देवर्षि ! अगर आप प्रज्ञा पुराण कथा को जानना ही चाहते हैं, तो आप समाधिस्थ हो जाइए और सुनिए। मैं आप को उस उत्तराखण्ड के हिमाच्छादित आरण्यक में ले चलता हूँ, जहाँ महाप्राज्ञ पिप्पलाद के तत्त्वावधान में सप्त दिवसीय सत्र हुआ था, वे ही समस्याओं के समाधान हेतु ज्ञान के पुंज हैं। आप स्वयं उसे हृदय में धारण करें तथा दूसरों को भी समझाएँ। विवेकरूपी ज्ञान की ज्योति के जग जाने पर साधारण मनुष्य को भी सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलेगी, वह आत्मस्वरूप को समझ सकेगा और अपने जीवन को धन्य बना सकेगा।

एक संत ने गणिका को साध्वी बनने का पाठ पढ़ाना आरंभ किया। पढ़ाते–पढ़ाते गणिका के अंदर भाव जागने लगा और उसका जीवनक्रम इतना बदल गया कि उसने धर्म संस्कृति के उत्थान में स्वयं को समर्पित कर दिया। अतः व्यक्ति को जब समझ आती है, तो वह सही राह पर स्वयं चल पड़ता है। हे देवर्षि ! व्यक्ति को उन तथ्यों को समझाने के लिए आप स्वयं समाधिस्थ होकर सुनें, समझें और पृथ्वी पर जाकर प्रज्ञा पुराण कथा लिखवाने की प्रेरणा दें। देवर्षि ने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाधिस्थ होकर उस प्रज्ञा पुराण कथा को सुना और वे समझ गए कि भगवान की कृपा से ही मनुष्य माया मुक्त होकर जीवन को धन्य बना सकता है।''

*प्रज्ञा पुराण में ऋषिवर तुम, महाप्रज्ञा का गुण गान करो।*
*जाग्रत आत्माओं को संग ले, नूतन प्रज्ञा अभियान करो।*
*जो धर्मधारणा शुष्क हुई, तुम फिर से उसको सरसाओ।*
*युग चेतनता को महामेघ की, भाँति सभी पर बरसाओ।*
*आतप अनास्था से सूखे, जन मानस को फिर हरषाओ।*
*दें समयदान और अंशदान, यह वृत्ति सभी में विकसाओ।*
*अवतरित होंगी वे दुर्गा बन, जन शक्ति बनेंगी सच मानो।*
*आ गया समय परिवर्तन का, उन के स्वरूप को पहचानो।*

*आस्था वंचित हो मनुज, खो बैठा है विवेक।*
*श्रद्धा प्रज्ञा जब जगें, बनें सभी जन नेक॥*

**उवाच च महामेघमण्डलीव समन्ततः।**
**कुरु त्वं मूसलाधारं वर्षां तां युगचेतनाम्॥ १।१।६१॥**
**अनास्थाऽऽतपशुष्कां च महर्षे धर्मधारणाम्।**
**जीवयैतदिदं कार्यं प्रथमं ते व्यवस्थितम्॥ १।१।६२॥**

सचमुच भगवान की यह माया बहुत विचित्र है। यह भाँति–भाँति से मनुष्य को नचाती है। इसके चक्र में पड़कर ही मनुष्य चौरासी लाख योनियों में भटकता है। यदि मनुष्य को छोटी सी वस्तु से भी मोह हो जाए, तो वह मुख्य लक्ष्य को भूलकर उसी में फँस जाता है।

एक व्यक्ति बहुत अशांत रहता था। उसने एक महात्मा जी से शांति पाने का मार्ग पूछा। महात्मा जी ने उसे गीता देकर कहा–''तुम इसे पढ़ो, इससे मन को शांति मिलेगी।'' उसने गीता को ले लिया,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसकी पूजा रोली चावल से की, सोचा कल से इसे पढ़ूँगा। सुबह उठकर देखा तो चूहों ने गीता को कई जगह से कुतर दिया। वह बहुत चिंतित हुआ। चूहों से बचाने का उपाय पूछा तो किसी ने कहा–एक बिल्ली पाल लो। उसने बिल्ली पाल ली। कुछ दिन तो बिल्ली ने चूहे पकड़े, फिर भूख से मरने लगी। एक व्यक्ति ने कहा– बिल्ली को तो दूध चाहिए, एक गाय पाल लो। गाय की तलाश में वह व्यक्ति चला, तो पड़ोस के एक दोस्त ने राय दी कि मेरे मित्र की बहन शादी के योग्य है, वह शादी में गाय दान में देगा। तुम शादी कर लो, गाय भी मिलेगी और गाय की सेवा करने वाली भी। बस विवाह हो गया, उसके एक वर्ष बाद एक बेटा भी हो गया। संयोगवश वे पंडित जी मिले, जिन्होंने गीता दी थी। पूछने लगे–क्यों बेटा ! गीता को पढ़ा, मन को शांति मिली या नहीं। यह सुनकर वह कहने लगा–''पंडित जी ! अभी तो बस चार पाठ पढ़े हैं। बिल्ली, गाय, पत्नी और बेटा, गीता को पढ़ने का तो समय ही नहीं मिला।'' कहने का तात्पर्य है कि इस मायाचक्र से निकलने के लिए सद्प्रज्ञा के जागरण की आवश्यकता है और इसके लिए भगवान की कृपा की आवश्यकता है। समाधि की स्थिति में प्रज्ञा पुराण कथा को हृदय में धारण कर देवर्षि नारद जी ने फिर भगवान से पूछा–''हे प्रभो ! अब मैं किस प्रकार इस कार्य को प्रारंभ करूँ ?'' भगवान ने कहा–हे ऋषिवर ! आप प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से माँ गायत्री, जो महाप्रज्ञा हैं, उन्हीं की पूजा करने का संदेश सब को दें।

*ये माँ गायत्री कामधेनु, इसकी गौरव–गरिमा जानो।*
*यह कल्पवृक्ष और पारसमणि, इस तत्त्व ज्ञान को पहचानो।*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*ये ही विवेक की जननी हैं, जो महाप्रज्ञा कहलातीं हैं।*
*निज दयादृष्टि से माँ सब का, सोया सौभाग्य जगाती हैं।*
*उपासना साधना पूजा का, क्रम सब को अपनाना है।*
*इनके आराधन से ही तो धरती को स्वर्ग बनाना है।*
*ये माता वेदों देवों की, जब विश्वमातृ बन जाएँगी।*
*आस्था जन मन में जगा जगा, ज्ञानामृत रस बरसाएँगी।*
*गायत्री महामंत्र का, करें सभी जन जाप।*
*अनास्था संकट कटे, मिटें सभी संताप॥*

**तुलना कल्पवृक्षेण मणिना पारदेन च।**
**यस्य जाता सदा तत्त्वज्ञानं तत्ते वदाम्यहम्॥ १।१।४१॥**
**तत्त्वचिन्तनतः प्रज्ञा जागर्त्यात्मविनिर्मितौ।**
**प्राज्ञः प्रसज्जते चात्मविनिर्माणे च संभवे॥ १।१।४२॥**

यह गायत्री ब्रह्मविद्या है, यही कल्पवृक्ष है, यही कामधेनु है और यही पारसमणि है। स्वर्ग के देवता इसी का पयपान करते हैं, इसी कल्पवृक्ष की छाया में बैठकर समस्त सुखों का उपभोग करते हैं तथा इसी पारसमणि के द्वारा अजस्र अनुदान पाते हैं। इसकी शरण में आने वाले का कभी विनाश नहीं होता। यही ऋतंभरा अर्थात् श्रेष्ठ बुद्धि का निर्माण कर मनुष्य को देवता बनाने वाली है। महर्षि वसिष्ठ ने इसी गायत्री रूपी कामधेनु को पाकर विश्वामित्र को पराजित किया था। विश्वामित्र राजा थे, एक बार वे अपनी सेना के साथ शिकार को गए, तो रात्रि में वसिष्ठ जी के आश्रम के निकट रुके। वसिष्ठ जी ने षट्रस व्यंजन से इनका सम्मान किया, तो ये आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने पूछा–आश्रम में इतना स्वादिष्ट भोजन कहाँ से आया ? पता चला, एक कामधेनु गाय है, उससे जो माँगो वही मिल जाता है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने वसिष्ठ जी से गाय को माँगा। उनके मना करने पर उन्होंने जबरदस्ती गाय को ले जाना चाहा, तो कामधेनु ने अपनी हुंकार से सैकड़ों सैनिक उत्पन्न कर दिए। विश्वामित्र की सेना पराजित होकर भाग गई। विश्वामित्र को बहुत आत्म ग्लानि हुई, उन्होंने राजपाट छोड़कर माँ गायत्री की साधना से ब्रह्मत्व को प्राप्त किया। आनंद स्वामी, स्वामी विवेकानंद, महामना मालवीय जी, महात्मा गांधी सभी ने इस महामंत्र के बल पर सिद्धि प्राप्त की है। अतः देवर्षि को समझाते हुए भगवान विष्णु कहते हैं–हे ऋषिवर ! तुम इस समय इस महाप्रज्ञा की उपासना, साधना और आराधना का संदेश जग को दो। ये वेदमाता हैं, ये ही देवमाता हैं और इन्हीं की आराधना कर इन्हें विश्वमाता के पद पर आसीन करना है। मनुष्य को समयदान और अंशदान का पाठ पढ़ाना है। तब ही इस अनास्था से पीड़ित संसार का कल्याण हो सकेगा। आचार्य पं० श्रीराम शर्मा जी ने भी इन्हीं माँ गायत्री की उपासना कर वह दिव्य–शक्ति प्राप्त की है, कि विश्वव्यापी गायत्री परिवार बनाकर युग निर्माण का महान कार्य करने का संकल्प लिया। उन्होंने २४ वर्ष तक निरंतर २४–२४ लाख के जपकर २४ पुरश्चरण केवल जौ की रोटी एवं गाय की छाछ पीकर किए थे।

*यह असुर अनास्था का देखो, हर जन जीवन में छाया है।*
*प्रभु मुक्ति दिलाने को इससे, प्रज्ञावतार बन आया है।*
*बुद्धावतार का पूरक है, यह प्रज्ञावतार है निराकार।*
*बन सद्बुद्धि सत्कर्म प्रखर, इस की लीला होगी उदार।*
*जब आता है तूफान किसी को, पता नहीं चल पाता है।*
*पर क्षणभर में ही वह सब कुछ, बस उलट पलट कर जाता है।*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*है समय विभीषिकाओं का पर, इससे ना अब घबराना है।*
*संग ले जाग्रत आत्माओं को, बस स्वर्ग धरा पर लाना है।*
*आँधी या तूफान हो, या हो झंझावात।*
*अंधकार के बाद ही, आता सुखद प्रभात॥*

**वर्षाणां, सुप्रभातस्य वेलाऽऽवर्तन हेतुका।**
**अवांछनीयताग्लानिः सदाशयविनिर्मितिः॥ १।१।७५॥**
**विभीषिकास्तु विश्वस्य दूरीकुर्तुं पुनर्भुवि।**
**स्वर्ग्यवातावृतिं कर्तुं क्षमानां देवतात्मनाम्॥ १।१।७६॥**

हे नारद ! मूढ़ता की माया से आदमी अनायास कब छूट जाए, नहीं मालूम। अशोक का कलिंग विजय के बाद जीवन ही बदल गया। अंगुलिमाल ने महानता के साथ जुड़कर क्रूरता छोड़ी और भिक्षु बना। आम्रपाली ने पतित गर्हित जीवन बदला और शेष जीवन धर्म संस्कृति के प्रसार विस्तार में लगा दिया।

आज अनास्था का भस्मासुर जन जीवन को भस्म कर रहा है। इससे मुक्ति दिलाने के लिए स्वयं महाप्रज्ञा प्रज्ञावतार के रूप में अवतरित हो रही है। उनके स्वागत की तैयारी करो। उनका यह अवतार बुद्धावतार का पूरक है। ये करुणा, ममता, प्रेम का दिव्य संदेश देकर मनुष्य को दुष्कर्मों से हटाकर सत्कर्मों की ओर अग्रसर करेंगी। अनास्था से धरती सूख गई है। ये अमृतधार की वर्षा कर फिर धरती को सरस एवं शस्य श्यामला बना देंगी। यह संकट का समय है, पर घबराने की बात नहीं है, बस केवल जाग्रतात्माओं को साथ लेकर इस अभियान को शुरू करो और धरती को स्वर्ग बना दो।

इस प्रकार देवर्षि को आश्वस्त करते हुए भगवान विष्णु ने कहा–



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हे ऋषिवर ! अब आप शोक को छोड़कर कार्य में लग जाइए। मैं स्वयं भी आदि शक्ति के साथ शीघ्र ही धरती पर आऊँगा। मुझे अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार आना ही होगा और अब दुर्बुद्धिग्रस्त मानव की प्रज्ञा जगाने के लिए प्रज्ञावतार के रूप में मेरा यह जन्म होगा। आप जन जागरण का कार्य प्रारंभ करें। जो देवतागण मेरे साथ त्रेता युग में भालू–वानर बने थे, द्वापर में गोप–ग्वाले बन कर जिन्होंने गोवर्धन पर्वत को उठाया था, जो महात्मा बुद्ध के साथ परिव्राजक बन कर देश विदेश गए थे, उन्हीं को आप फिर से संदेश दें कि वे अब प्रज्ञा पुत्र बनकर आएँ और मेरे सहयोगी बनें। असुरता के विनाश के लिए ऋषिगणों ने अपना रक्त एकत्र कर घड़ा भरा, जिससे सीता की उत्पत्ति हुई। वही राम अवतरण तथा राम राज्य की स्थापना का निमित्त कारण बनी। यह संघशक्ति का ही चमत्कार था। आज पुनः संघ शक्ति की आवश्यकता है।

एक पिता के चार पुत्र थे चारों का झगड़ा बना रहता था। इससे उनकी शारीरिक और आर्थिक ही नहीं मानसिक और बौद्धिक अवनति भी होती जा रही थी। इसे देखकर पिता को बहुत दुःख हुआ। पिता ने मरते समय अपने पुत्रों को बुलाया और उन्हें एक लकड़ी का गट्ठर दिया और कहा, तोड़ो इसे। लड़कों ने बहुत प्रयत्न किया, परंतु तोड़ न सके। आखिर में एक–एक लकड़ी तोड़ने को दी, तो वह आराम से टूटने लगी। तब पिता ने कहा, यदि तुम में आपस में फूट रही तो इसी प्रकार नष्ट हो जाओगे, जिस प्रकार कि एक–एक लकड़ी टूट गई। उस दिन से लड़के मिलकर रहने लगे। अतः आज त्यागी और बलिदानी मनुष्यों का संगठन बनाने की आवश्यकता है।

हे देवर्षि ! आप जाग्रत आत्माओं तक मेरा संदेश पहुँचा दें कि इस



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शुभ अवसर पर मेरे सहयोगी बनें। **नवसृजन में अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले कभी घाटे में नहीं रहते।**

एक बार विदर्भ देश में जोर का अकाल पड़ा। एक गाँव में किसी के पास कुछ भी नहीं बचा। केवल एक किसान के पास एक कोठी भरा धान था। वह उससे कई महिनों तक अपने परिवार का भरण पोषण कर सकता था, लेकिन उसे ध्यान आया कि अगले वर्ष मौसम के समय खेतों में बोने के लिए बीज न मिलेगा तो फिर से अकाल का सामना करना पड़ेगा। धान को खर्च न कर सपरिवार सहर्ष मृत्यु की गोद में सो गया। लोगों ने सोचा कि इतना अन्न होते हुए भी किसान का परिवार क्यों मर गया ? उसने अपनी वसीयत में लिखा कि मेरा समस्त अन्न फसल बोने के समय गाँव में बीज के लिए बाँट दिया जाए। वर्षा हुई नई फसल बोई गई, लहलहाती फसल को देख कर लग रहा था कि किसान मरा नहीं, असंख्य जीवधारियों के रूप में धरती पर उतर आया है। त्याग–बलिदान की परंपरा संस्कृति को धन्य बनाती है। जो इस समय मेरे सहयोगी बनेंगे, उनकी गाथाएँ युग युग तक गाई जाएँगी। उन्हें इस जीवन में आत्म संतोष तो मिलेगा ही, लोक सम्मान भी मिलेगा और वे ईश्वर की कृपा के अधिकारी बनेंगे। इतिहास के पृष्ठों में उन्हीं का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है जो दूसरों के लिए, देश के लिए कुछ बलिदान करते हैं।

पन्ना धाय की कहानी तो आपने सुनी होगी। बनबीर को कुछ समय के लिए राजा बनाया गया था, किंतु उसके मन में सत्ता का लोभ समा गया था। उसने राजकुमार उदय को मार डालने का षड्यंत्र रचा। पन्नाधाय जिस पर उदय की रक्षा का भार था, उसने अपने बच्चे को उदय की जगह पर लिटा दिया। उसके बच्चे की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हत्या हो गई, पर पन्नाधाय के इस उत्कृष्ट आदर्श और त्याग भावना ने मेवाड़ वासियों को नई चेतना प्रदान की। उन्होंनें बनबीर के शासन को उखाड़ फेंका। त्यागी और बलिदानियों को ही विश्व पूजता और याद रखता है। समय आ गया है कि जाग्रत आत्माओं को झकझोर कर उठाना पड़ेगा, वे ही अनास्था के संकट को संगठित होकर मिटा सकेंगे। प्रज्ञा अवतार का अर्थ यही है कि व्यक्ति विवेकवान बने। यह समय संकट का है, विभीषिकाओं का है, पर इससे घबराने की आवश्यकता नहीं। अंधकार के बाद सुखद प्रभात अवश्य आएगा। प्रभु अवतार अवश्य लेंगे।

*हे महामुने ! अब शोक तजो, करना मन में कुछ सोच नहीं।*
*जो कुछ होता विधि इच्छा से, इस में जग का कुछ दोष नहीं।*
*आदि शक्ति के सहित शीघ्र, अवतार भूमि पर मैं लूँगा।*
*सब की इच्छा पूरी करके, मैं देवों को ही सुख दूँगा।*
*धरती का कष्ट मिटाने को, मैं प्रज्ञावतार बन आऊँगा।*
*सुंदर नर तन धारण कर के, मैं शीघ्र धरा पर आऊँगा।*
*त्रेता युग में जो मेरे संग, भालू वानर बन आए थे।*
*सागर पर पुल बनवाने में, पत्थर जल पर तैराए थे।*
*बन गोप ग्वाल द्वापर युग में, गिरि गोवर्धन उ ठवाया था।*
*धर रूप ग्वालिनों का जिनने, तब माखन मुझे खिलाया था।*
*उन देवों को संदेशा दो, नर नारी रूप धर कर आएँ।*
*सम्मान आत्म संतोष प्राप्त कर, जीवन सफल बना जाएँ।*
*अनगिन दैवी वरदानों का, वे लाभ सहज ही पाएँगे।*
*उनकी सुंदर गाथाओं को, युग युग तक सब जन गाएँगे।*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*यह कहकर के श्रीहरि, हो गए अंतर्ध्यान।*
*देवर्षि नारद चले, करते हुए गुणगान॥*

यह कहकर भगवान विष्णु अंतर्ध्यान हो गए और देवर्षि नारद नारायण नारायण कहते हुए पृथ्वी लोक पर शुभ संदेश देने के लिए चल दिए। गुरुदेव इस अध्याय में देवर्षि के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि उनके समस्त शिष्य, प्रज्ञा पुत्र देवर्षि की भाँति युग निर्माण का संकल्प लेकर देश विदेश में इस अभियान को सफल बनाने में सहयोगी हों। अतः आइए ! हम सब भी देवर्षि के साथ युग निर्माण का संकल्प लेकर उन्हीं की भाँति यह संदेश, विश्व भर में फैलाने चल दें।

**इतिश्री मत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययो:,**
**युगदर्शन युगसाधनाप्रकटीकरणयो: श्री विष्णु–नारद–सम्वादे**
**''लोककल्याणजिज्ञासे'' ति प्रकरणो नाम**
**प्रथमोऽध्याय: ॥१॥**

**आरती श्री प्रज्ञा पुराण की**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा-पुराण-कथामृतम्

## द्वितीय दिवस

### आत्मज्ञान एवं अजस्र अनुदान प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

## गुरु वंदना

शत्–शत् तुमको प्रणाम सद्गुरु॥
हम आए हैं शरण तुम्हारी।
शक्ति जाग्रत करो हमारी॥
परम शक्ति के धाम, सद्गुरु॥ १॥
ज्ञान रश्मि में ज्योति जगा दो।
उर में भक्ति का दीप जला दो॥
तृप्ति होय जप नाम, सद्गुरु॥ २॥
जन कल्याण हो कर्म हमारा।
मानव सेवा धर्म हो प्यारा॥
सेवा हो निष्काम, सद्गुरु॥ ३॥
माया तम को दूर भगा दो।
अंतर ज्योति अखण्ड जला दो॥
उर में आठों याम, सद्गुरु॥ ४॥

## प्रज्ञा गीत

सीख नहीं पाए चादर ओढ़ने का ढंग रे,
मैली चादर पर, कैसे चढ़ पाए रंग रे॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमें मिली चादर उजली, मैली कर डाली।
जिधर गए हमने उसमें कालिमा लगा ली॥
मैला अब अंतरंग है, मैला बहिरंग रे। मैली चादर....
आओ हर कल्मष मन के, सेवा से धो लें।
सबको अपना लें मन से, हम सबके हो लें॥
सेवा है सच्ची पूजा, सेवा सत्संग रे। मैली चादर....
सबका दुःख दर्द बँटाएँ, अपना सुख बाँटें।
हृदय–हृदय की खाई को हँस कर के पाटें॥
किए नहीं तीर्थ चाहे नहाए न गंग रे। मैली चादर....
परहित में अपने साधन समय हम लगाएँ।
मन का हर मैल धुले फिर पुण्य कमाएँ॥
हर कोना हो फिर उजला उजला हर अंग रे। मैली चादर....
जीवन में शेष रहेगी फिर नहीं निराशा।
पल भर आलस न होगा फिर कभी जरा सा॥
होगा उत्साह अनौखा नित नई उमंग रे। मैली चादर....

(प्रथम दिवस की भाँति कथा व्यास द्वारा पूजन)

## कीर्तन

जय अंबे जय जगदंबे, शांतिदायिनी शक्तिदायिनी।
भक्तिदायिनी हे अंबे, जय अंबे जय जगदंबे॥
सर्वश्रेष्ठ यह मानव जीवन, बने परमपद का यह साधन।
प्रभु को देखे घट–घट व्यापी, वह सेवक कैसे हो पापी॥
यही दृष्टि दो हे अंबे, जय अंबे जय जगदंबे।
शांतिदायिनी शक्तिदायिनी, भक्तिदायिनी हे अंबे॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो अनीति करते वे रोते, वही काटते जैसा बोते।
ममता, समता शुचिता लाएँ, इस जीवन को धन्य बनाएँ॥
यही भावना दो अंबे, जय अंबे जय जगदंबे।
शांतिदायिनी शक्तिदायिनी, भक्तिदायिनी हे अंबे॥

आत्मीय परिजनों, भाइयों तथा बहनों ! वैसे तो आज कथा का दूसरा दिन है, किंतु प्रज्ञा पुराण कथा आज से प्रारंभ करेंगे। कल तो प्रज्ञा पुराण का परिचय मात्र था, प्रज्ञा पुराण क्या है ? आज के युग में इसकी क्या उपयोगिता है? यही बताया गया था।

पूज्य गुरुदेव ने देवर्षि नारद के माध्यम से जन–जागरण का जो संदेश दिया, उसका तात्पर्य है कि हम लोग भी देवर्षि नारद की भाँति समर्पित होकर उनके इस संदेश को घर–घर पहुँचाए, अपने हृदय में धारण करें तथा इसी प्रकार दूसरों को भी सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें। कल कथा में बताया गया था कि श्रीहरि ने देवर्षि को हिमाच्छादित वन खंड आरण्यक में ले जाकर प्रज्ञा पुराण की कथा को हृदयंगम कराया था। श्री नारदजी ने समाधिस्थ स्थिति में उस कथा को सुना था। चलिए हम लोग भी आज उसी आरण्यक में चलते हैं, जहाँ प्रज्ञा पुराण कथा का सात दिन का सत्र चल रहा है।

## प्रज्ञा–पुराण गीत

सुनो, हृदय–पट खोल, सब जन यह प्रज्ञा–पुराण है।
यह प्रभु का संदेश है इसमें युग–ऋषि का तप प्राण है॥ सुनो.....
जब जब बढ़ी असुरता–तब तब प्रभु ने उसे मिटाया है।
प्रभु के संग–संग युग दूतों ने निज कर्त्तव्य निभाया है॥
जाग्रत हों युग दूत जिससे यह ऐसा अभियान है। सुनो.....



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस युग में बनकर अनास्था, भीषण दानव छाया है।
करने दमन दुष्टता का प्रभु, प्रज्ञा बनकर आया है॥
पलट असुरता जाए जो, ऐसा प्रबल तूफान है॥ सुनो.....

आज महर्षि पिप्पलादजी ही कथा सुना रहे हैं और शंकाओं का समाधान भी कर रहे हैं। प्रश्नकर्त्ता ऋषि ब्रह्मज्ञानी अष्टावक्र जी हैं, वे अष्टावक्र जिन्होंने जन्म से पहले ही अपनी विद्वता का परिचय दिया था। किंबदंती हैं कि एक बार इनके पिता शिष्यों को पढ़ा रहे थे, माता जी भी पास ही बैठीं थीं, पिताश्री के मुख से कुछ अशुद्ध शब्द निकल गये तो ये गर्भ से ही बोल पड़े, आप अशुद्ध बोल रहे हैं । उस सूत्र में आठ गलतियाँ थीं। अतः ऋषि अपने पुत्र की विद्वता पर तो प्रसन्न हुए, पर अभद्रता पर क्रोधित हो गए और उन्होंने शाप दिया–''तू अभी से ही अपनी विद्वता दिखा रहा है, तू आठ जगह से टेढ़ा मेढ़ा होजा।'' जब, ये पैदा हुए थे तो आठ जगह से इनके हाथ पैर टेढ़े–मेढ़े थे, पर इनकी विद्वता का लोहा सभी मानते थे। इनकी विद्वत्ता के बारे में एक कथा प्रसिद्ध है।

एक बार राजा जनक ने सपना देखा कि वे स्वप्न में भिखारी हो गए हैं, बहुत भूख लगी है, खाने को कहीं कुछ नहीं मिला है। भिक्षा माँगने पर किसी ने जली हुई खिचड़ी दी। उसे खाने ही वाले थे कि ठोकर लगी और वह खिचड़ी भी गिर गई, उसे कुत्ते ने खा लिया, तब तक आँख खुल गई। वे बड़े दुःखी हुए। उन्होंने सभी पंडितों को बुलवाया और पूछा, ''यह सच है या वह सच है ?'' राजा ने सभी पंडितों को बुलाकर यह प्रश्न किया। कोई भी पंडित राजा जनक के उस प्रश्न को नहीं समझ सका। अंत में अष्टावक्र जी वहाँ आए, तो राजा ने उनसे भी वही प्रश्न पूछा। इसे सुनकर अष्टावक्र जी ने कहा–



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

''हे राजन् ? न यह सच है, न वह सच है। सत्य तो केवल ब्रह्म है। यह जगत् मिथ्या है।'' यह सुनकर राजा ने उन्हें सम्मानित किया। सभी पंडित आश्चर्यचकित थे कि उनकी समझ में तो प्रश्न भी नहीं आ रहा था, उत्तर की तो बात ही क्या ? अतः उन्होंने अनुरोध किया कि इस कथन के रहस्य को हमें भी समझाइए। यह सुनकर अष्टावक्र जी ने पहले राजा के स्वप्न को बताया और फिर कहा–''वास्तव में ये न भिखारी हैं और न राजा। ये सब तो माया के विविध रूप हैं। सत्य केवल यह है कि आत्मा ब्रह्म का ही अंश है, वह न राजा है न भिखारी। अतः उसी ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होने पर संशय से छुटकारा मिलता है।'' ऐसे ब्रह्मज्ञानी अष्टावक्र जी आज पिप्पलाद जी से प्रश्न पूछ रहे हैं, आइए ! हम सब भी उसी कथा को सुनें और हृदयंगम करें।

**एकदा तु हिमाच्छन्ने ह्युत्तराखण्डमण्डने।**
**अभयारण्यके ताण्ड्यशमीकोद्दालकस्तथा॥ १। २। १॥**
**पिप्पलादं पप्रच्छातो महाप्राज्ञमृषीश्वरम्।**
**अष्टावक्रो ब्रह्मज्ञानी लोककल्याणहेतवे॥ १। २। ४॥**

हिमालय हमारा पिता है, हमारे ऋषियों ने हिमगिरि की कंदराओं में प्रकृति की गोद में बैठकर दिव्य ज्ञान की प्राप्ति की थी। प्राचीन काल से यह परंपरा रही है कि ऋषिगण वन में जंगलों में नगर से दूर आश्रम बना कर रहते थे। वहीं पर कुंभ मेलों अथवा पर्वो पर ऋषियों का समागम होता था, जहाँ विचार मंथन चलता था। वहाँ सद्गृहस्थ भी पहुँचते थे। आज भी तीर्थ स्थानों पर मेले लगते हैं, आज भी गंगा नहाने या मंदिरों के दर्शन के लिए भक्तजन जाते हैं पर आज की तरह तब मेले में झूले नहीं लगते थे, चाट–पकौड़ी की दुकानें नहीं लगती



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थीं, सर्कस में शेर खेल नहीं दिखाते थे, बल्कि शेर बकरी एक ही घाट पर पानी पीते हुए देखे जाते थे। ऐसा ही सत्र चल रहा था हिमाच्छादित उत्तराखंड के अभयारण्यक में जहाँ तांड्य, शमीक, उद्दालक ऐतरेय आदि ऋषि ब्रह्मविद्या के गहन तत्त्व पर विचार करने के लिए एकत्रित हुए थे। उस समय ये सत्र प्रकृति की गोद में वृक्षों के नीचे चलते थे। ऋषियों का जीवन एकांत वन प्रदेशों एवं वृक्षों से जुड़ा रहता था। भारद्वाज जी ने पीपल के पेड़ के नीचे ही कथा सुनाई थी, गौतम बुद्ध को पीपल के नीचे ज्ञान प्राप्ति हुई थी। श्री शुकदेव जी ने भी वट वृक्ष के नीचे बैठकर राजा परीक्षित को भागवत कथा सुनाई थी। पीपल, तुलसी, वटवृक्ष दिन रात प्राण वायु आक्सीजन देते रहते हैं इसलिए ऋषि इन वृक्षों से विशेष शक्ति पाकर, उनकी छत्रछाया में बैठकर दिव्य ज्ञान का संदेश देते थे। जनता लोककल्याण के लिए और मन के विकारों को दूर करने के लिए सुरम्य वातावरण में कथा सुनती थी, परंतु आज कथा का उद्देश्य मनोरंजन हो गया है। रामचरितमानस में भी पार्वती जी महादेव जी से उसी कथा को सुनाने के लिए कहती हैं, जिसका उद्देश्य मन के विकारों को दूर करना और लोक कल्याण हो।

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥

अतः आइए हम सब इस अमृतरस में डूबकर आगे की कथा सुनें, जहाँ गुरुदेव महर्षि पिप्पलाद जी के माध्यम से शंका समाधान कर रहे हैं।

*यह सच्चिदानंद का अंश जीव, जो निर्विकार अविनाशी है।*
*यह जो सृष्टि का मुकुटमणि, और चेतन अमल सुखराशि है॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*सारी विभूतियाँ पाकर भी, क्यों हर पल रोता रहता है।*
*प्रभु का सहयोगी होकर भी, गौरव से वंचित रहता है॥*
*सतयुग में सभी समुन्नत थे, सब सुखमय जीवन जीते थे।*
*था स्वर्ग धरा पर ही उतरा, सब प्रेम सुधारस पीते थे॥*
*पर आज हुआ क्या यह मानव, दानव सा जीवन जीता है।*
*यह अमृत–पुत्र होकर भी फिर, क्यों गरल हलाहल पीता है॥*
*हे महाप्राज्ञ ! हे युग द्रष्टा ! इस गुत्थी को सुलझाओ तो।*
*क्या कारण इसके रोने का, यह कुछ रहस्य समझाओ तो।*
*यह कह कर मुनि अष्टावक्र के, आँसू भर आए लोचन में।*
*यह दशा देख पिप्पलाद ऋषि,तब व्याकुल हुए अधिक मनमें।*
*यह प्रश्न तुम्हारा महाभाग, जग हित के लिए सुखकारी है।*
*सब सुनें और सब चलें श्रेयपथ, इच्छा यही हमारी है।*
*ध्यान लगा कर सुन लो सब, यह कथा लोक हितकारी है।*
*इस भवसागर से तरने को, जलयान यही सुखकारी है।*
*भटक रहा क्यों आदमी, सुन लो धर कर ध्यान।*
*धर्म–कर्म को भूलकर, बन बैठा नादान॥*

**ईश्वरः भूपतिः साक्षाद् ब्रह्माण्डस्य महामुने।**
**मानवं राजपुत्रं स्वं कर्तुं सर्वगुणान्वितम्॥ १।२।५॥**
**विभूतीः स्वा अदाद् बीजरूपे सर्वा मुदान्वितः।**
**सृष्टि संचालकोऽप्येष श्रेयसा रहितः कथम् ?॥ १।२।६॥**

इस समय मुख्य आसन पर महाप्राज्ञ पिप्पलाद जी विराजमान हैं तथा प्रश्न कर्त्ता के रूप में ब्रह्मज्ञानी अष्टावक्रजी पूछते हैं कि हे महाप्राज्ञ ! आज ये श्रोतागण उपस्थित हैं इन सब के मनमें एक ही बात है, एक ही उलझन है कि मनुष्य ईश्वर का राजकुमार है, सृष्टि



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के प्राणियों में मुकुटमणि है, फिर भी वह हमेशा इस प्रकार क्यों परेशान रहता है ? भगवान ने उसे सब प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की हैं, फिर भी वह दीनहीन जीवन क्यों व्यतीत कर रहा है ? इस शंका का समाधान करने की कृपा करें।

यह सुनकर युग ऋषि ने शंका समाधान करते हुए कहा–हे साधको ! एक कथा के माध्यम से मैं तुम्हें समझाता हूँ, तुम ध्यानपूर्वक सुनो। एक राजा वन में भ्रमण को गया, रास्ता भूल जाने पर एक वनवासी की झोंपड़ी में पहुँचा। उसके पास जो कुछ रूखा सूखा था, उसी से उसने राजा का आतिथ्य किया। चलते समय राजा ने कहा– ''तुम्हारी सज्जनता के कारण हम तुम से प्रसन्न हैं, अतः शेष जीवन बिताने लिए, चंदन का एक बाग तुम्हें देते हैं।'' चंदन का बाग क्या होता है उसे इसका महत्त्व पता न था। वह चंदन के वृक्ष को काट कर कोयला बनाता और बाजार में बेचता था और अपना गुजारा करता था। एक बार वर्षा के कारण वह लकड़ी को जलाकर कोयला न बना सका। उसने चंदन की लकड़ी वैसे ही बाजार में जा कर बेच दी। सुगंधि के प्रभाव से लोगों ने उस लकड़ी का अधिक दाम दिया। आश्चर्यचकित वनवासी ने कारण पूछा, लोगों ने कहा कि तुम्हारे पास यदि और चंदन की लकड़ी है तो तुम उसका अधिक मूल्य ले सकते हो। वनवासी अपनी नासमझी पर बहुत पछताया कि उसने चंदन की लकड़ी को कोयला बना कर कौड़ी के मोल बेच दिया। आज मनुष्य भी इस जीवन संपदा के महत्व को ना समझकर अंत में पछताता है। बहुत कुछ गँवा कर भी अंत में जो सँभल जाता है, वही बुद्धिमान कहलाता है।

अमृत पुत्र होकर भी मानव इस विष का पान क्यों करता है ?



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसका उत्तर एक ही है कि मनुष्य धर्म के वास्तविक स्वरूप को भूल गया है, वह इस समय श्रेय मार्ग को छोड़कर भौतिक चकाचौंध से आकर्षित हो गया है। पुराणों के माध्यम से इस मोह माया से व्यक्ति को मुक्त करने के लिए ही कथाएँ लिखीं और सुनाई जाती हैं, जिससे स्वयं आत्मबोध हो सके।

भागवत पुराण की कथा, सत्य नारायण की कथा तथा एकादशी कथा, सभी कथाएँ इसी उद्देश्य को लेकर लिखी गईं हैं। यह प्रज्ञा पुराण कथा भी इसी उद्देश्य को लेकर लिखी गई जो आज आप लोगों को सुनाई जा रही है, किंतु समस्या यह है कि आज कथा भी लोग मनोरंजन के लिए अथवा धर्म लाभ के लिए सुनते हैं।

वीतराग शुकदेव जी के मुख से राजा परीक्षित ने भागवत पुराण की कथा सुनकर मुक्ति प्राप्त की थी। यह बात एक धनवान व्यक्ति ने सुनी तो उसके मन में भागवत पर बड़ी श्रद्धा हुई और वह भी मुक्ति पाने के लिए किसी ब्राह्मण से कथा सुनने के लिए आतुर हो उठा। खोज की तो भागवत के एक बहुत बड़े विख्यात पंडितजी मिले। कथा–आयोजन का प्रस्ताव किया तो पंडितजी बोले–''यह कलियुग है। इसमें धर्मकृत्यों का पुण्य चार गुना कम हो जाता है, इसलिए चार बार कथा सुननी पड़ेगी।'' चार बार कथा–आयोजन की सलाह देने का कारण था, पर्याप्त दान–दक्षिणा। पंडितजी को फीस देकर धनी व्यक्ति ने चार बार भागवत सप्ताह सुने, परंतु लाभ कुछ नहीं हुआ। धनी फिर उच्चकोटि के संत से मिला और पूछा–भागवत सुनने का लाभ परीक्षित कैसे ले सके और मुझे क्यों नहीं मिला ? उन्होंने इसका कारण बताया कि राजा परीक्षित मृत्यु को निश्चित जानकर, संसार से पूर्णतया विरक्त होकर कथा सुन रहे थे और मुनि शुकदेव सर्वथा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्लोभ रहकर कथा सुना रहे थे। आज यदि कथा सुनते समय विमान आ जाए, तो सब उसे देख कर भाग खड़े होंगे। कथा सुनने का समय आज किसी के पास नहीं है।

जिस किसी को भी ज्ञान की बातें, उपदेश अथवा सत्परामर्श के रूप में सुनने को मिली हैं, वही श्रेय पथ पर चल सका है। केवल कथा के सुनने से ही लाभ कैसे हो सकता है ? जब तक कथा को जीवन में नहीं उतारेंगे, तब तक लाभ कैसे होगा ? कथा सुनने का लाभ तभी होगा, जब उसके आदर्श को समझेंगे। एक बार संत ज्ञानेश्वर कथा सुना रहे थे कि ज्ञान, विवेक, शक्ति और भक्ति परमात्मा सत्पात्रों को देता है, संत ज्ञानेश्वर के ऐसा कहने पर एक महिला नाराज हो उठी। वह बोली–''तो इसमें भगवान की क्या विशेषता रही ? उसे तो सबको समान अनुदान देना चाहिए।'' संत उस समय तो चुप हो गए। उस दिन की बात समाप्त हो गई। दूसरे दिन प्रातःकाल संत ने मुहल्ले के एक मूर्ख व्यक्ति को बुलाकर कहा कि अमुक स्त्री से जाकर आभूषण माँग लाओ। मूर्ख गया और आभूषण माँगे। उस महिला ने झिड़क कर उसे बिना आभूषण दिए भगा दिया।

थोड़ी देर बाद संत ज्ञानेश्वर स्वयं उस महिला के यहाँ पहुँचे और बोले–''आप एक दिन के लिए अपने आभूषण दे दें। आवश्यक काम करके लौटा देंगे।'' महिला ने बिना कोई प्रश्न पूछे संदूक खोला और सहर्ष अपने आभूषण सौंप दिए। आभूषण हाथ में लिए संत ने पूछा–'अभी–अभी दूसरा व्यक्ति आया था। आपने उसे आभूषण क्यों नहीं दिए ?' महिला बोली–'उस मूर्ख को कैसे अपने मूल्यवान आभूषण दे देती ?' संत ज्ञानेश्वर मुस्कराए और बोले–'बहन ! जब आप अपने सामान्य से आभूषण बिना सोचे–विचारे कुपात्र को



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं दे सकतीं, तो फिर परमात्मा अपने दिव्य अनुदानों को कुपात्रों को कैसे सौंप सकता है ? वह तो बारंबार इस बात की परीक्षा करता है कि जिसको अनुदान दिया जा रहा है, उसमें पात्रता है अथवा नहीं।'

*उन महाप्राज्ञ तपस्वी की, यह पावन वाणी सुनकर के।*
*सद्ज्ञानी ऋषिवर ने पूछा, मन में आनंदित होकर के॥*
*हे नाथ ! विमल अमृत वाणी, मन में उत्साह जगाती है।*
*पात्रत्व करें कैसे विकसित, ये बात समझ नहीं आती है।*
*हे वत्स ! पात्रता पाने के, ऋषि तीन सूत्र बतलाते हैं।*
*है एक उपासना ही जिससे, प्रभु के दर्शन पा जाते हैं॥*
*दूसरा साधना का विधान, ऋषियों ने जिसे बताया है।*
*जिसकी अग्नि में तप मानव, सच्चा मानव कहलाया है॥*
*निःस्वार्थ आराधन करता जो, वह मनुज देवता बनता है।*
*तब स्वयं देवताओं का भी, उस पर अनुदान बरसता है॥*
*इन तीनों के ही संगम से, करो आत्म निर्माण।*
*दिव्य गुणों को ग्रहण कर, बनता मनुज महान्॥*

**अनुरूपत्वमेवैतदनुकूलत्वमेव च।**
**उच्यते पात्रता तां च प्राप्तुमेवाप्तपूरुषाः॥ १। ३। १९॥**
**उपासनासाधनानां विधानानि व्यधुर्न तु।**
**स्तवनोपक्रमस्यास्ति प्रभोर्वोपहृते रतिः॥ १। ३। २०॥**

एक संत मधुरवाणी से प्रभु की शरण में जाने के सत्परिणाम एवं दुष्कर्मों के प्रतिफल की चर्चा कर रहे थे। सुनने वालों में एक डाकू भी बैठा हुआ था, जिसने कथा के तुरंत बाद पंडितजी को तथा आए हुए धनी व्यक्तियों को लूटने की योजना बना रखी थी। वह कथा सुनने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के उद्देश्य से नहीं आया हुआ था, परंतु जब उसने तुलसीदास, अजामिल, गणिका, बिल्वमंगल का जीवन बदलने व भवसागर तरने की कथाएँ सुनीं, तो तुरंत ही उसका हृदय परिवर्तन हो गया। जिन मार्मिक शब्दों में कथा सुनाई गई थी, उन शब्दों ने डाकू को उसके दुष्कर्मों पर चिंतन व पश्चाताप करने को प्रेरित किया। कथा समाप्त होते ही वह पंडितजी के चरणों में गिर गया और क्षमा माँगने लगा, तथा आगे जीवन सुधारने के लिए उपाय पूछा। पंडित जी ने उसे समझाते हुए कहा–हे वत्स ! मनुष्य को ईश्वर ने अपनी इच्छानुसार कर्म करने की छूट दे रखी है इसीलिए मनुष्य भौतिक चकाचौंध से भटक जाता है। यह जीवन क्रम अनादि काल से चला आ रहा है। मनुष्य को ईश्वर ने अपनी दिशाधारा, जीवन क्रम और गतिविधि अपनी इच्छानुसार अपनाने की छूट दे रखी है, मनुष्य को वही कार्य करना चाहिए जिससे सब का हित हो। यह सुनकर डाकू ने अपने जीवन की दिशा ही बदल दी और वह सत्कर्मों में लग गया।

*प्रज्ञा–पुराण की वही कथा, संतो मैं तुम्हें सुनाता हूँ।*
*मानव–जीवन को धन्य करे, वह राह तुम्हें बतलाता हूँ॥*
*मानव की देह बहुत दुर्लभ, सब वेदशास्त्र बतलाते हैं।*
*है जन्म लिया सत्कर्म हेतु, हमको यह भान कराते हैं॥*
*हे महामुने ! तुमने पूछा, मानव क्यों कष्ट उठाता है।*
*होकर ईश्वर का राजपुत्र, क्यों दीन–हीन बन जाता है॥*
*सब सुनो ध्यान देकर इसका अब भेद तुम्हें बतलाता हूँ।*
*क्यों भटका है मानव होकर, यह तथ्य तुम्हें समझाता हूँ॥*
*यह जीव विशुद्ध बूँद जल की, बनकर धरती पर आता है।*
*पर माया में फँस कर के फिर, अधोगमन कर जाता है॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*इंद्रियासक्त होकर परवश मन, जहाँ जहाँ भी जाता है।*
*करता है भोगों की इच्छा, माया के वश हो जाता है॥*
*इस माया के चक्र में, भटके मनुज अनेक।*
*श्रद्धा–प्रज्ञा जब जगे, बनें सभी जन नेक॥*

**महाभाग ! न ते प्रश्नः केवलं दीपयत्यहो।**
**अध्यात्मतत्वज्ञानस्य सारतथ्यान्युतापि तु॥ १। २। २१॥**
**अस्याः स्वतन्त्रतायास्तूपयोगं कः कथं मुने।**
**करोति सम्मुखे सेयं परीक्षा पद्धतिः स्थिता॥ १। २। २६॥**

महाप्राज्ञ ने मनुष्य के कष्टों का कारण बताते हुए कहा–हे महाभाग ! ईश्वर ने मनुष्य को इतनी शक्ति और साधन दिए हैं जितने संसार के किसी प्राणी के पास नहीं। शक्ति और शरीर बल तो पशुओं के पास भी है, पर बुद्धि कौशल तथा अपना मार्ग चुनने की छूट ने मानव को सब प्राणियों से विशिष्ट विभूति संपन्न बना दिया है। ईश्वर ने उसे प्रत्येक मार्ग में स्वतंत्र रूप में कार्य करने की छूट दे दी है।

हे महामुने ! इस स्वतंत्रता का उपयोग कौन किस प्रकार करता है ? यही परीक्षा का विधान सभी के सामने हैं। जो व्यक्ति इस छूट का दुरुपयोग करता है, वह इस जीवन में कष्ट ही कष्ट उठाता है और जो इसका सदुपयोग करता है, वह सुखी संपन्न जीवन व्यतीत करता है। अर्जुन ने कृष्ण का वरण किया, वे विजयी हुए, नचिकेता ने अमरता का वरण किया, परंतु भस्मासुर व श्रुतायुध ने गलत रास्ता चुना, वे मृत्यु को प्राप्त हुए। हे ऋषिवर ! आज मनुष्य अपने स्वरूप को भूल गया है। शेर का बच्चा गीदड़ के बच्चों में मिलकर अपने को गीदड़ समझ रहा है। एक गीदड़ ने सिंह के बच्चे को नवजात अवस्था में कहीं पड़ा देखा। उठाकर उसे अपने बच्चों के



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साथ पालने लगा। सिंह का शावक गीदड़ के बच्चों के साथ पलते–पलते बड़ा हो गया, लेकिन कभी स्वयं को नहीं पहचान पाया। एक बार वह परिवार शिकार को गया। मरे हाथी पर जैसे ही खाने के लिए टूटे, वैसे ही वहाँ पर वन का राजा सिंह पहुँच गया। उन्हें देखते ही गीदड़ परिवार भाग गया, परंतु सिंह की पकड़ में सिंह शावक ही आ गया। सिंह ने उससे पूछा–''तू उनके साथ कैसे था ? और तू भयभीत क्यों होता है ? सिंह का बच्चा समझ ही नहीं रहा था कि यह सब क्या है ? उसे डर से काँपते हुए देखकर सिंह सब समझ गया । उसे पानी में अपनी परछाईं दिखाई और फिर स्वयं का अपना चेहरा भी दिखाया। सिंह दहाड़ा और उसे भी दहाड़ने को कहा। तब जाकर उस बच्चे को अपने भूले हुए आत्मस्वरूप का भान हुआ और वह सिंह बिरादरी में शामिल हो निडर होकर विचरण करने लगा। आज समाज में भी ऐसे लोगों की संख्या अधिक देखने को मिल जाती है, जिन्हें आत्मबोध नहीं है। यदि राजा स्वप्न में अपने को भिखारी समझता है, तो यह आत्मस्वरूप की विस्मृति है।

इसी प्रकार एक और कथा है । एक युवक ने स्वप्न देखा कि वह किसी बड़े राज्य का राजा हो गया है। स्वप्न में मिली इस आकस्मिक विभूति के कारण उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। प्रातःकाल पिता ने काम पर चलने को कहा, माँ ने लकड़ियाँ काट लाने की आज्ञा दी, धर्मपत्नी ने बाजार से सौदा लाने का आग्रह किया, पर युवक ने कोई भी काम न कर एक ही उत्तर दिया–'मैं राजा हूँ, मैं कोई भी काम कैसे कर सकता हूँ ?' घर वाले बड़े हैरान थे, आखिर किया क्या जाए ? तब कमान सँभाली उसकी छोटी बहिन ने। एक–एक कर उसने सबको बुलाकर चौके में भोजन करा दिया, अकेले खयाली



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महाराज ही बैठे के बैठे रह गए। शाम हो गई, भूख से आँतें कुलबुलाने लगीं। आखिर जब रहा नहीं गया तो उसने बहन से कहा– 'क्यों री ! मुझे खाना नहीं देगी क्या ?' बालिका ने मुँह बनाते हुए कहा–'राजाधिराज ! रात आने दीजिए, परियाँ आकाश से उतरेंगी तथा वही आपके लिए उपयुक्त भोजन प्रस्तुत करेंगी। हमारे रूखे–सूखे भोजन से आपको संतोष कहाँ होगा ?' तब उस युवक की चेतना लौटी और अपनी भूल को पहचाना।

आत्मा के जागरण से जब मनुष्य अपने स्वरूप को समझता है, तो मूर्ख काली से महाकवि कालीदास, रामबोला से तुलसीदास, रत्नाकर डाकू से ऋषि वाल्मीकि बनते देर नहीं लगती। हे ऋषि श्रेष्ठ ! यह सब सद्प्रज्ञा के जागरण पर निर्भर करता है।

विवेकवान कभी दुःख नहीं उठाता। भाइयो और बहनो ! एक राज्य का यह नियम था कि जन साधारण में से जो राजा चुनकर गद्दी पर बिठाया जाए उसे दस वर्ष बाद ऐसे निविड़ एकाकी द्वीप में छोड़ दिया जाए, जहाँ अन्न जल उपलब्ध न हो। कितने ही राजा इसी प्रकार अपने प्राण गँवा चुके थे। जो अपना राज्यकाल बिताते थे, उन्हें अंतिम समय में अपने भविष्य की चिंता दुःखी करती थी, तब तक समय पूरा हो चुका होता था।

एक बार एक बुद्धिमान व्यक्ति जानबूझकर उस समय गद्दी पर बैठा, जब कोई भी उस पद को लेने के लिए तैयार न था। उसे भविष्य का ध्यान था। उसने पूछा–''मुझे केवल यह बता दीजिए कि मुझे कहाँ जाना है ?'' यह जानकर उसने उस द्वीप को अच्छी तरह देखा व वहाँ खेती कराने, जलाशय बनाने, पेड़ लगाने तथा व्यक्तियों को बसाने का कार्य आरंभ कर दिया। दस वर्ष में वह



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नीरव एकाकी प्रदेश अत्यंत रमणीक बन गया। अपनी अवधि समाप्त होते ही राजा वहाँ गया और सुखपूर्वक शेष जीवन व्यतीत किया। यह उसकी सूझबूझ के कारण ही हुआ।

इसी प्रकार जीवन के थोड़े दिन 'स्वतंत्र चयन' के रूप में हर व्यक्ति को मिलते हैं। इसमें वर्तमान का सुनियोजन और भविष्य की सुखद तैयारी जो कर लेता है, वह दूरदर्शी राजा की तरह सुखपूर्वक जीता है।

*उस मायापति की लीला ने, कैसा सबको भरमाया है।*
*इस भूल–भुलैया में भटका, मानव कुछ समझ न पाया है॥*
*है आँख–मिचौली खेल रहा, वह कैसा चतुर विधाता है।*
*जग की यह रीत सदा से है, हर व्यक्ति कर्म–फल पाता है॥*
*अधिकार उसे निज शक्ति का, जैसा चाहे उपयोग करे।*
*चाहे कल्याण करे जग का, चाहे उसका उपभोग करे॥*
*है छूट कर्म करने की पर, परिणाम हाथ में रखता है।*
*जो जैसा कर्म करे जग में, वह वैसा ही फल चखता है॥*
*मक्खी बैठी चासनी, पंख लिए लिपटाय।*
*हाथ मले और सिर धुने, पर कुछ किया न जाए॥*

**आत्मज्ञानं नरस्यास्ति गौरवं महदुन्मुखः।**
**यो दिशां तां प्रति, प्रैतिगतिमन्तर्मुखीं स तु॥ १। २। ३२॥**
**पदे पदे तिरस्कारं सहन्ते यन्त्रणा भृशम्।**
**नारक्यःप्राप्नुवन्त्येव न यान्ति परमां गतिम्॥ १। २। ३५॥**

इसी प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए महाप्राज्ञ कहते हैं, ''हे जागृतात्माओ, अपने को पहचानो। यह मनुष्य जन्म ईश्वर का दिया हुआ उपहार है, यह बार बार नहीं मिलता। रामचरित मानस में कहा भी है–



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**बड़े भाग मानुष तन पावा, सुरदुर्लभ सद्ग्रंथहि गावा॥**

और कहा है–

**मानुष जनम अमोल है, मिले न बारम्बार।**
**पक्का फल जो गिर पड़ा, लगे न दूजी बार॥**

जीवन प्रत्यक्ष देवता है, इसकी पूजा से ही सब कार्य पूरे हो सकते हैं, पर इसकी उपयोगिता को समझो, ईश्वर ने जहाँ मनुष्य को सुंदरतम मानव शरीर प्रदान किया है, वहीं उसके भीतर दिव्य विभूतियों का भंडार भर दिया है, किंतु उसने इन्हें सात तालों में बंद कर दिया है। मनुष्य अपने बाह्य चक्षुओं से केवल बाहरी संपदा को ही देख पाता है, अंतर की विभूति को देखने का प्रयास ही नहीं करता। अंतर के पट खोल री, तोहे पिया मिलेंगे।''

इस आत्मज्ञान को पाना आवश्यक है और इसे सद्प्रज्ञा माँ गायत्री की साधना से ही पाया जा सकता है। प्रज्ञा का तात्पर्य है वह उत्कृष्ट ज्ञान, वह सद्बुद्धि जो कभी विचलित न हो, इसके जागरण से ही मनुष्य महान बनता है। विवेकबुद्धि द्वारा भौतिकवादी प्रपंचों से छुटकारा मिलता है और मनुष्य प्रेय पथ को छोड़कर श्रेय पथ पर चलता है। इसे इस प्रकार समझ सकते हैं कि कर्मक्षेत्र में प्रवेश करते ही मनुष्य को दो रास्ते दिखाई पड़ते हैं। एक सुख सुविधाओं से भरपूर राज मार्ग चौड़ी सुंदर सड़क रंग बिरंगी रोशनी। फौब्बारों से परिपूर्ण, इसे प्रेय मार्ग कहते हैं, दूसरा कंकरीला पथरीला संकीर्ण रास्ता काँटों से भरा हुआ, परंतु जिसका अंत सुखदायी होता है।

राजा उदावर्त्त बहुमूल्य रत्नराशि लेकर महर्षि कणाद के आश्रम पर पहुँचे और उनसे ब्रह्मविद्या का उपदेश देने की प्रार्थना की। महर्षि ने धन को अस्वीकार कर उनसे एक वर्ष बाद पुनः आने पर उपदेश



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देने का आश्वासन दिया और कहा–'इस बीच आप अंतर्मुखी होने की साधना करें। वृत्तियों से अपना मुँह मोड़ें।'

राजा निराश लौटे, बुरा भी लगा और क्षुब्ध भी थे। मंत्री द्युतकीर्ति ने उनकी खिन्नता दूर करते हुए कहा–''राजन् ! भूखे को ही अन्न पचता है। जिज्ञासु को ही ज्ञान का लाभ मिलता है। ऋषि ने एक वर्ष की साधना का समय देकर आपकी जिज्ञासा को परखा है। अनधिकारी में ज्ञान को पचाने की सामर्थ्य नहीं होती। मनोरंजन के लिए कुछ कहने में समय की बर्बादी समझकर ऋषि ने आपको लौटाया है। उसमें बुरा न मानें।'' ऋषि का अभिप्राय उदावर्त्त की समझ में आया। एक वर्ष ब्रह्मचर्य पालन कर, अपनी वृत्तियों पर नियंत्रण कर, आत्मिक ज्ञान के अधिकारी बन कर वे आश्रम पहुँचे तो कणाद ने उन्हें गले से लगा लिया। वे बोले–'धैर्यवान, श्रद्धावान जिज्ञासु ही ब्रह्मज्ञान के अधिकारी होते हैं। अब आप ब्रह्मविद्या का लाभ उठा सकेंगे।'

हे महाभाग ! विद्वान इस रास्ते को श्रेय मार्ग कहते हैं। चौराहे पर खड़ा पथिक थोड़ी देर सोचता है, फिर सुख––––सुविधाओं के मार्ग पर चल पड़ता है। इस पथ का पथिक बनकर वह अपनी ही सुख सुविधाओं की प्राप्ति में इतना खो जाता है कि दूसरों की सुविधाओं का या भलाई का ध्यान भी नहीं आता। इसके विपरीत जो साधक आत्मज्ञान की ज्योति जगाकर श्रेय मार्ग को अपनाता है, वह दूसरों के लिए त्याग, बलिदान कर अलौकिक आनंद की अनुभूति कर सकता है और परमात्मा का राजकुमार बन कर परम पद का अधिकारी बन सकता है। आत्मज्ञान ही सच्चा धन होता है।

एक व्यक्ति एक संत के पास आया व उनसे याचना करने लगा कि वह निर्धन है, वे उसे कुछ धन आदि दे दें, ताकि वह जीविका चला



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सके। संत ने कहा–'हमारे पास तो वस्त्र के नाम पर यह लंगोटी व उत्तरीय है। लंगोटी तो आवश्यक है, पर उत्तरीय तुम ले जा सकते हो। इसके अलावा और कोई ऐसी निधि हमारे पास है नहीं।' वह व्यक्ति बराबर गिड़गिड़ाता ही रहा, तो वे बोले–'अच्छा, झोंपड़ी के पीछे एक पत्थर पड़ा होगा, कहते हैं, उससे लोहे को छूकर सोना बनाया जा सकता है। तुम उसे ले जाओ।' प्रसन्नचित्त वह व्यक्ति भागा व उसे लेकर आया, खुशी से चिल्ला पड़ा–'महात्मन् ! यह तो पारस मणि है। आपने इसे ऐसे ही क्यों फेंक दिया ?'

संत बोले–'हाँ बेटा ! मैं जानता हूँ, पर मैं यह भी जानता हूँ कि यह नरक की खान है। मेरे पास प्रभु कृपा से आत्मसंतोष रूपी धन है जो मुझे निरंतर आत्मज्ञान प्राप्त करने को प्रेरित करता है। मेरे लिए इस क्षणिक उपयोग की वस्तु का क्या मूल्य?' वह व्यक्ति एकटक देखता रह गया। उसने उस पत्थर को फेंक दिया तथा आत्मज्ञान प्राप्त करने में लग गया।

असल में उस लीलापति की लीला ने सबको इतना भ्रम में डाल दिया है कि कर्म करने की तो छूट दे दी, पर फल अपने हाथ में रखा है। सृष्टि का यह नियम है कि जो जैसा बोता है वैसा ही फल पाता है।

*भौतिक आकर्षण में प्राणी जब, इसी भाँति फँस जाता है।*
*काँटे में फँसकर मछली सा, वह अपने प्राण गँवाता है॥*
*यदि झूँठ बोलते मानव की, जिह्वा मुख में ही गल जाती।*
*चोरी करते कट जाते हाथ, तो बात समझ में आ जाती॥*
*दुर्जन, अत्याचारी मानव, जब ऊँचा पद पा जाता है।*
*क्या करे सदाचारी बनकर, यह सोच–सोच अकुलाता है॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*परहित चिंतन तज कर प्राणी, फिर स्वार्थ वृत्ति अपनाता है।*
*शोषक, उत्पीड़क बन कर के, वह नर पिशाच बन जाता है॥*
*प्रभु की निश्छल भक्ति से, मिटता सब अज्ञान।*
*माया से हो मुक्त नर, करता अमृत पान॥*

**बहिर्मुखाः जनाः सर्वे भ्रमजालेषु पाशिताः।**
**अंतर्मुखाश्च तथ्यज्ञा सत्यं श्रेयः श्रयन्त्यलम्॥ १।२।४८॥**
**सफलं मानवं जन्म स्वं करोति तथा च सः।**
**कल्याणमार्ग जगतः प्रशास्ति च महामुने॥ १।२।५१॥**

बहिर्मुखी व्यक्ति का चिंतन हर वस्तु के प्रति एवं अपने जीवन क्रम के प्रति भी एकांगी होता है। वे आत्म–शोधन से अधिक बाह्य उपचारों को प्रधानता देते देखे जाते हैं।

किसी ने जन्मांध अंधों के समूह से पूछा–''सामने खड़े हाथी को छूकर बताओ हाथी कैसा होता है, एक ने हाथी की पूँछ पकड़ी, दूसरे ने कान, तीसरे ने पैर, चौथे ने दाँत और पाँचवें ने पीठ को स्पर्श किया। पूँछ को पकड़ने वाले ने रज्जु जैसा, कान को स्पर्श करने वाले ने सूप जैसा, पैर के संपर्क में आने वाले ने खंभे जैसा, दाँत वाले ने दण्ड जैसा, पीठ को स्पर्श करने वाले ने विशालकाय पत्थर जैसा बताया।'' नेत्र दृष्टि संपन्न व्यक्ति उनकी बात सुनकर हँसा। सभी अंधों ने एक–एक अंग का स्पर्श करके यह समझ लिया कि उन्होंने हाथी देख लिया, पर समग्र हाथी का स्वरूप किसी को विदित न हो सका। इसी प्रकार बहिर्मुखी व्यक्ति ब्रह्म के वास्तविक रूप को नहीं पहचान सकता।

''असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय।'' प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए कि मेरे अंतःकरण के अंधकार को नष्ट



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर दो। समस्या यह है कि कर्मों का फल तुरंत ही नहीं मिलता, यदि झूठ बोलते ही जीभ गल जाती, चोरी करते ही हाथ कट जाते, तो मनुष्य दुष्कर्म न करता, किंतु इसके विपरीत जब कोई दुष्ट व्यक्ति ऊँचा पद पा जाता है और सत्यनिष्ठ व्यक्ति को कष्ट मिलता है तो मनुष्य सोचता है कि हम सत्यवादी बन कर क्यों कष्ट उठाएँ ? वह यह नहीं समझ पाता कि ईश्वर के यहाँ देर हो सकती है, अंधेर नहीं। कर्मों के फल से कोई बच नहीं सकता। कहा भी है–

**कर्म प्रधान विश्व करि राखा,**
**जो जस करहि सो तस फल चाखा।**

भगवान राम ने छिपकर बालि का वध किया था तो उन्हें अगले जन्म में कृष्ण बन कर एक भील के हाथों मरना पड़ा। दैव दैव तो आलसी पुकारा करते हैं। जो कर्म को छोड़कर भाग्य पर निर्भर रहता है, उसकी दुर्दशा होती है। इसीलिए गीता में निष्काम कर्म की महत्ता प्रतिपादित की गई है। जो भगवान को समर्पित कर निष्काम कर्म करते हैं, वे कमल के पत्ते की भाँति निर्लिप्त रहते हैं।

## गीत

कर्मों के फल से न बचोगे, चलना बहुत सँभाल के।
अभी समय है अभी बदल लो, तेवर अपनी चाल के॥
एक काम बस तन चमकाना, तरह–तरह के वेष बनाना,
वैसे तो तू बड़ा सयाना–पर न स्वयं को ही पहचाना।
रोएगा जब दर्शन होंगे– अपने ही कंकाल के,
अभी समय है अभी बदल लो, तेवर अपनी चाल के॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कभी एक क्षण दया न आई, निर्बल को पीड़ा पहुँचाई,
पटरी लेकर नाप ऊँचाई–कितनी कर ली पाप कमाई।
तड़पेगा जब खौलाएगा, काल कढ़ाही डाल के,
अभी समय है अभी बदल लो, तेवर अपनी चाल के॥
कोई रहा कुकर्म न बाकी–खाए झूठी कसम खुदा की,
डींग मारता यहाँ–वहाँ की–नस–नस में तेरी चालाकी।
कर्मों के फल भूल न जाना–होते बड़े कमाल के,
अभी समय है अभी बदल लो, तेवर अपनी चाल के॥

कर्मफल के विषय में संतों को व्याकुल देखकर बहुत ही विनम्र स्वर में जिज्ञासु बन कर श्री अष्टावक्र जी ने ऋषि से पूछा–हे तत्वज्ञानी, ऋषि ! आपकी यह सब बातें मन को उत्साहित तो करतीं हैं, किंतु यह बताइए कि मनुष्य को इस महाठगिनी माया से कैसे छुटकारा मिले ? हे देव ! मनुष्य कैसे इस कल्याणकारी मार्ग को अपनाएँ, जिससे वह अपना जीवन सफल बना सकें ? इस जिज्ञासा को शांत करते हुए महाप्राज्ञ ने कहा–''हे वत्स ! इस माया जाल से बचने के लिए मनुष्य को महाप्रज्ञा की शरण में जाना चाहिए। सत्यवादी हरिश्चंद्र नाटक देखकर मोहनदास के अंतःकरण में सत्य प्रतिष्ठापित हो गया। मनोरंजन के लिए तो कईयों ने उसे देखा होगा व अभिनय करने वालों ने भी उसे कई बार दोहराया होगा, पर ऐसे प्रसंग जब अंदर तक प्रवेश करते हैं, तभी व्यक्ति को श्रेय पथ की ओर अग्रगामी बनाते हैं। मोहनदास ने सत्य का आश्रय लिया, तो महात्मा गाँधी बन गए, यह सर्वविदित है।

सद्बुद्धि की प्राप्ति से ही मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से बच सकता है, यही सब मनुष्य के महान शत्रु हैं और इनके



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वशीभूत होकर मनुष्य दुर्बुद्धि ग्रस्त होकर नीच काम करता है। देवासुर संग्राम इसी का परिणाम है। अहंकार के कारण रावण की सोने की लंका जलकर खाक हो गई, मोह के वशीभूत होने के कारण धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को इतनी छूट दे दी कि वह धर्म–अधर्म को भूल गया और परिणाम स्वरूप महाभारत का युद्ध हुआ।

प्रगति और दुर्गति के दो उदाहरण महाभारत में देखने को मिलते हैं। युधिष्ठिर व दुर्योधन दोनों के कर्म ही उनके भविष्य बन गए। धर्मराज ने जुआ खेला तो उन्हें वनवास भोगना पड़ा। अपनी धर्मनिष्ठा बनाए रख कर पत्नी व भाईयों सहित उन्होंने उसे भोगा, श्रीकृष्ण को भगवत् स्वरूप माना तथा उनके निर्देश पर धर्म युद्ध लड़ा। सारे पराक्रमी एक ओर होते हुए भी विजय नीति की, आदर्शों की हुई। दुर्योधन ने तपस्विनी माँ गांधारी, ब्रह्मज्ञानी भीष्म व द्रोण के सत्परामर्शों की अवहेलना की, अपने ही भाइयों से युद्ध लड़ा व अंत में पतन को प्राप्त हुआ और सारे कुरुवंश को ले डूबा।

शक्ति मिल भी जाए, परिस्थितियाँ अनुकूल भी बना दी जाएँ तो भी सदाशयता का नियोजन न होने से मानवी कर्तृत्व उसे दुर्गति की ओर ही ले जाता है।

एक चित्रकार ने एक सुंदर बालक का चित्र बनाया। वह चित्र इतना पसंद आया कि उसकी लाखों प्रतियाँ बिक गईं। पंद्रह वर्ष के बाद वह दुष्टता के भाव प्रकट करने वाला एक चित्र बनाना चाहता था। कारागार जाकर एक खूँखार कैदी से बोला–''मैं तुम्हारा चित्र बनाना चाहता हूँ।'' कैदी ने पूछा–''क्यों ?'' चित्रकार ने अपना विचार बताते हुए उसे बालक का चित्र दिखाया। कैदी उस चित्र को देखकर रोने लगा और बोला–''यह चित्र मेरा ही है।'' चित्रकार हतप्रभ रह



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गया और कहने लगा यह परिवर्तन कैसे हुआ ? कैदी बोला–''सांसारिक आकर्षणों में भटककर अपना जीवन लक्ष्य भूलने से।''

कुछ पतन के गर्त में जाकर भी महामानवों का अवलंबन ले अपने आपको सुधार लेते हैं और मँझधार में अपनी नाव भी खे ले जाते हैं। आवश्यकता जीवन को उत्कृष्टता की ओर मोड़ देने भर की है।

काम के वशीभूत होकर विश्वामित्र जैसे ऋषि भी मेनका के आकर्षण में फँसकर अपनी तपस्या नष्ट कर बैठे, लोभ के वशीभूत होकर आज मनुष्य अपनी सब मर्यादाएँ भूल गया है, चारों तरफ भौतिक आकर्षण दिखाई दे रहा है आज अधिकांश व्यक्ति हिरण्याक्ष बन गए हैं, जिनकी दृष्टि सोने पर ही रहती है, झूठ, धोखाधड़ी, मिलावट, रिश्वत का बाजार गर्म हो रहा है। किसी समय एक सोने के मृग ने सीता को आकर्षित किया था, आज वही सोने का हिरण प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में छलांग लगा रहा है। हे देवात्माओ ! इन सब असुरों से बचने के लिए माँ गायत्री की शरण में जाकर संसार की नश्वरता को तथा आत्मा की अमरता को समझो, तब ही इससे छुटकारा पा सकोगे।

जिस दिन महाकाल का बुलावा आएगा उस दिन सब ठाठ–बाट यहीं पड़े रह जाएँगे, इसलिए समय रहते जागो, क्योंकि कहा है– फिर पछताने से होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।

*यद्यपि ईश्वर का अंश जीव, सबके शरीर में रहता है।*
*पर अहंकार के वश हो जब, अपने को ईश्वर कहता है॥*
*अपने स्वरूप को बिसराकर, जब मृगतृष्णा में फँसता है।*
*तब काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह का, अजगर इसको डसता है॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*कहती श्रुति उसे अविद्या है, जिससे सब जग भरमाया है।*
*अध्यात्मवाद के द्वारा ही, मानव उससे बच पाया है॥*
*इस कर्मक्षेत्र में आकर नर, जब कर्म करने को चलता है।*
*तब सोने का मायावी मृग, उसका चंचल मन हरता है॥*
*लख चर्म चक्षु से चमक–दमक मन भौतिकता में फँसता है।*
*कोई बस ब्रह्मज्ञान द्वारा, अंतर की निधि को लखता है॥*
*मृग–तृष्णा में भटकता, यह सारा संसार।*
*जो भी बच पाया हुआ, भव सागर के पार॥*

**सामान्यास्तु जनाः सर्वे गृह्णन्तो दूरदर्शिताम्।**
**विवेकं संत्यजन्तश्चाकर्षणेषु भ्रमद्धियः॥ १। २। ५५॥**
**द्रष्टुं नैव तु शक्ष्यामो दृष्टा मग्नास्तु यत्र ते।**
**समाप्तिं नरकस्यायं हाहाकारो गमिष्यति॥ १। २। ५८॥**

सामान्य जन अदूरदर्शिता अपनाते, विवेक को छोड़ आकर्षणों में भटकते हैं। कुमार्गगामी बनकर दुरूह दुःख सहते हैं, यदि उन्हें इस मूढ़ता की माया से छूटने का और विवेकवान् आत्मावलंबियों जैसा साहस मिल सके तो कहीं भी उन विपत्ति–विभीषिकाओं के दर्शन न हों, जिनमें वे बुरी तरह धँसे–फँसे दृष्टिगोचर होते हैं, साथ ही नारकीय वातावरण का यह हाहाकार समाप्त हो जाए।

वासवदत्ता अपने समय की श्रावस्ती की अनिंद्य सुंदरी नगर वधू थी। सारा कुलीन समुदाय उसे पाने को भौंरे की तरह मँडराता। भिक्षु उपगुप्त उन दिनों महान् तपस्वी ही नहीं सौंदर्य और सौष्ठव की प्रतिमूर्ति भी थे। वासवदत्ता केवल उन्हें ही चाहती थी, किंतु आत्मा के उपासक उपगुप्त पर उसका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। जीवन के उत्तरकाल में वृद्धा वासवदत्ता बीमार हो गई। तब एक दिन उपगुप्त उधर पहुँचे।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वासवदत्ता उन्हें देखकर बोली–'तात् ! आप अब आए हैं, जब मेरे पास आपके लिए कुछ बचा नहीं।'

आत्मज्ञानी उपगुप्त की आँखें उमड़ पड़ीं। उन्होंने अत्यंत आदर और स्नेह पूर्वक वासवदत्ता से कहा–'भद्रे ! सौंदर्य तो आत्मा का होता है और वह अविनाशी है।' यह कहकर वे उसकी सेवा में जुट गए।

हे संतो ! यदि मनुष्य संसार की नश्वरता को समझ ले तो वह दुष्कर्मों से बच सकता है, किंतु संसार में यही देखने में आता है कि मनुष्य अपने शरीर को भी अजर अमर समझता है। ''सामान सौ बरस के हैं पल की खबर नहीं।'' यक्ष ने जब युधिष्ठिर से पूछा कि संसार में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है ? तो उन्होंने यही कहा कि सबसे बड़ा आश्चर्य यही है कि नित्यप्रति लोगों को मृत्यु के मुख में जाते हुए देखकर भी मनुष्य अपने को अमर समझता है। यह संसार सेंबल की फूल की भाँति है, दूर से आकर्षक लगता है, पर निकट आने पर फूल की डण्डियाँ ही रह जाती हैं। झूठी मृगतृष्णा में पड़कर मनुष्य भौतिक वस्तुओं के आकर्षण में फँस जाता है और चमकते हुए बालू कण को पानी समझकर मूर्ख मृग की भाँति अपना मुख जला लेता है। यदि अमरता को जानना है तो आत्मा की अमरता को समझो।

एक बार की बात है कि शरीर तथा आत्मा में परस्पर संवाद चल रहा था। शरीर ने कहा–'मैं कितना सुंदर हूँ, आकर्षक व बलवान हूँ।' आत्मा बोली–'तुम अपनी अपेक्षा मुझे अधिक सुंदर, आकर्षक व बलवान बना दो, तुम्हारी ये विशेषताएँ मेरे सुंदर हुए बिना क्षणिक ही हैं। मुझे सुंदर बनाकर तुम भी शाश्वत सौंदर्य से युक्त हो जाओगे' किंतु शरीर की समझ में कुछ न आया। वह आकर्षणों में उलझा जीवन समाप्त करता रहा। शरीर से आत्मा के विच्छेद का समय आ



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहुँचा, अब शरीर को ज्ञात हुआ कि यदि आत्मा को भी उसने सुंदर बनाया होता, शक्ति दी होती, तो उसका स्वरूप भी निखर गया होता, मरने के बाद भी उसे याद किया जाता। चलते समय आत्मा बोली– 'मैं तो जाती हूँ। यदि तुम पहले से चेते होते, प्राप्त अधिकार का सदुपयोग कर अपने अंतःकरण को सुंदर बनाते तो अमर हो जाते और महामानव कहलाते।' शरीर सिर धुनता रहा, विदा हो गई आत्मा, नया शरीर पाने को।

सौंदर्य देखना है तो आत्मिक सौंदर्य को देखो। बाह्य सौंदर्य तो बीमारी में वृद्धावस्था में नष्ट हो जाता है, पर मन का सौंदर्य तो दिन प्रति बढ़ता जाता है। कोई व्यक्ति देखने में बहुत सुंदर है, किंतु व्यवहार में कर्कश है तो उसकी कटुवाणी एक क्षण में ही उसके आकर्षण को समाप्त कर देगी। कोयल काली होती है, पर उसकी मृदु वाणी सबका मन हर लेती है। बगुला देखने में सुंदर होता है, पर उसकी चालाकी को देखकर सब उसे बगुला भगत कहते हैं, क्योंकि एक पैर पर भक्त की भाँति खड़ा रह कर वह धोखे से मछलियों का शिकार करता है। इसी प्रकार सर्प बहुत सुंदर होता है, पर उसका बाह्य सौंदर्य किसे आकर्षित करता है ? उसका काटा पानी भी नहीं माँगता, इसलिए सब उससे दूर भागते हैं, अतः सुंदरता शरीर की नहीं आत्मा की देखो। फूलों की सुगंधि और अग्नि की उष्मा की तरह आनंद तो तुम्हारे भीतर ही छिपा है, उसे खोजो, खिलो और फूलों की सुगंधि की तरह अपनी हँसी सबको बाँट दो।

ऐसा ही बोध तुलसीदास जी को रत्नावली ने कराया था। इससे पूर्व वे साधारण मानव थे, जो पत्नी के प्रति आसक्तिवश



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कामातुर हो उसके नैहर पहुँच गए। विवेक इतना खो बैठे कि उससे छिपकर मिलने का प्रयास किया तथा रत्नावली ने धिक्कारते हुए कहा–

**अस्थि चर्म मय देह मम, या में इतनी प्रीति।**
**होती जो श्रीराम में, होत न तब भव–भीति॥**

यह सुनकर रामबोला तुलसीदास बन गए।

इसलिए हे जिज्ञासु साधको ! इस आनंद स्रोत को खोजो। स्वयं उसमें डूब जाओ और दूसरों को भी हर्षित कर दो। अपने सुख को दूसरों को बाँट दो और दूसरों के दुःख को स्वयं बाँट लो। यही सुखमय जीवन का रहस्य है, यही गुरुदेव का संदेश है।

*गोकर्ण, धुंधकारी प्रसंग, भागवत् पुराण में आता है।*
*जो प्रेय मार्ग और श्रेय मार्ग के अंतर को समझाता है॥*
*ऋषि आत्मदेव ने पूजा से, सुत धुंधकारी को पाया था।*
*उसने कुकर्मों में फँसकर, अपना सर्वस्व गँवाया था॥*
*गोकर्ण, महाज्ञानी पंडित था, भागवत् भजन किया करता।*
*पर धुंधकारी था महादुष्ट, दुर्व्यसनों में ही रत रहता॥*
*चंगुल में फँस वेश्याओं के, निज माता को भी मार दिया।*
*वेश्याओं ने धन छीन लिया, उस नर पशु का संहार किया॥*
*इस प्रेय मार्ग पर चल करके, वह प्रेत–योनि में भटक रहा।*
*गोकर्ण दयालु ने ही फिर, उस संकट से उद्धार किया॥*
*मैंने तुमसे यह कहा, गूढ़ ज्ञान विस्तार।*
*चाहे तुम जिस पथ चलो, करलो सोच–विचार॥*

**पात्रतायां विकासोऽयं ह्यनेकानेकसम्पदाम्।**
**उपलब्धेर्विभूतीनां पन्थाश्च केवलः स्मृतः॥ १। २। ६१॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**आत्मनिरीक्षणं चात्मनिर्माणं सर्वतो महान्।**
**पुरुषार्थो मतो नास्ति साधना याचनाऽथ च॥ १। २। ६२॥**

अच्छाई और बुराई, प्रेय और श्रेय के अंतर को और अधिक स्पष्ट करते हुए तत्त्वज्ञानी ऋषि कहते हैं कि हे जिज्ञासु महात्माओ ! पात्रता का विकास ही अनेक विभूतियों और संपदाओं की प्राप्ति का एक मात्र मार्ग है। हमारे वेद पुराणों में सत्कर्म एवं दुष्कर्म के परिणाम को बहुत बार अनेक दृष्टांतों द्वारा समझाया गया है। भागवत पुराण में गोकर्ण एवं धुंधकारी की कथा आती है। धुंधकारी दुष्ट था, उसने पिता आत्मदेव को जूता मारा तथा माता धुंधली को जलाकर कुँए में डालकर मार दिया। पाँच वेश्याओं के चक्कर में पड़कर अपना सब धन नष्ट कर दिया। उन पाँच वेश्याओं ने उसका गला घोंट कर मार डाला। तब वह प्रेत योनि में भटकता रहा। अंत में गोकर्ण ने ही उसका श्राद्ध तर्पण कर उसे इस योनि से मुक्ति दिलाई। हे संतो ! ये सब कथाएँ अलंकृत रूप में वर्णित हैं, मानव को समझाने के लिए। धुंधकारी का तात्पर्य है, स्वार्थपरक मनुष्य। आत्मदेव आत्मा–जो अपने को भूलकर पुत्र मोह में व्याकुल है।

माता धुँधली स्वार्थ बुद्धि, पुत्र मोह में ग्रस्त, पुत्र का समर्थन करती है। पाँच वेश्याएँ, पाँच तन्मात्राएँ, शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध, इन्हें तुष्ट करने के लिए धुँधकारी अपने पिता आत्मदेव अर्थात् आत्मा की आवाज को नहीं सुनता, अतः इन्हीं के हाथों नष्ट हो जाता है। धुंधकारी की भाँति ही स्वार्थी जीव का दुःखद अंत होता है। वासनाएँ जीव को ऐसी ही पीड़ा देती हैं, जो समय पर चेत जाए, वही इस कष्ट से छुटकारा पा सकता है।

राजा विक्रमादित्य के राज्य में एक सदाचारी, संतोषी ब्राह्मण



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहता था। वह निर्धन था। स्त्री की प्रेरणा से धन प्राप्ति के निमित्त घर से निकला तो जंगल में एक महात्मा से भेंट हुई। उन्होंने उसे चिंतित देख आश्वासन दिया और विक्रमादित्य को पत्र लिखा कि तुम्हारी इच्छा पूर्ति का अब समय आ गया है। अपना राज्य इस ब्राह्मण को देकर यहाँ चले आओ।

वह पत्र विक्रमादित्य ने पढ़ा तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और ब्राह्मण को राज्य सौंपने की तैयारी की। ब्राह्मण ने राजा को राज्य–त्याग के लिए इतना उत्सुक और अत्यंत आनंदविभोर देखा तो सोचने लगा कि जब राजा ही राज्य सुख को लात मार कर योगी के पास जाने में विशेष आनंद अनुभव कर रहे हैं तो योगी के पास अवश्य ही कोई राज्य से भी बड़ा सुख है। अतः उसने राजा से कहा कि– ''महाराज ! मैं अभी महात्माजी के पास पुनः जा रहा हूँ, लौटकर राज्य लूँगा।'' यह कह कर योगी के पास पहुँचकर बोला कि 'भगवन् ! राजा तो राज्य–त्याग कर आपके पास आने के लिए नितांत उतावले और हर्ष विभोर हो गये हैं। इससे जान पड़ता है कि आपके पास राज्य से भी बड़ी कोई वस्तु है, मुझे वही दीजिए।'

महात्मा ने प्रसन्नचित्त हो ब्राह्मण देवता को आत्मविद्या सिखाई और उसे वह वैभव दे दिया जो उसे मोक्ष दिला गया। उस सुख की तुलना में सारे सांसारिक सुख नगण्य हैं। जो आत्मावलंबी बहुरंगीय दुनिया के सुख–आकर्षणों को ठुकराता है, अंततः वही इस श्रेय का भागी बनता है।

स्वामी रामतीर्थ के जीवन की एक घटना है। भ्रमण एवं भाषणों से परिश्रांत स्वामी जी अपने निवास स्थान पर लौटे। उन दिनों वे एक महिला के यहाँ ठहरे थे। वे अपने ही हाथों भोजन बनाते थे। अपने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वभाव के अनुसार वे भोजन की तैयारी ही कर रहे थे कि कुछ बच्चे पास में आकर खड़े हो गए। उनके पास बहुत बच्चे आया करते थे।

बच्चे भूखे थे। स्वामी जी ने अपनी सारी रोटियाँ एक–एक करके बच्चों में बाँट दी। महिला वहीं बैठी सब देख रही थी। बड़ा आश्चर्य हुआ उसे। आखिर पूछ ही बैठी–'आपने सारी रोटियाँ तो उन बच्चों को दे डालीं, अब आप क्या खाएँगे ?'

स्वामी जी के अधरों पर मुस्कान दौड़ गई। उन्होंने प्रसन्न होकर कहा–'माता, रोटी तो पेट की ज्वाला शांत करने वाली वस्तु है। यदि इस पेट में न सही, तो उस पेट में सही।' देने का आनंद पाने के आनंद से बड़ा है।

जो क्षणिक सुख लाभ के मोह में उन्हीं में लिप्त हो जाते हैं, वे अंततः त्रास ही पाते हैं, भले ही उन्हें उसमें तात्कालिक दृष्टि से सुख मिलता हो। उनकी उपमा तो उस बालक से ही दी जा सकती है, जो खिलौनों से खेलकर सामयिक आनंद पाने में ही रुचि लेता है। आयु की दृष्टि से बड़े होने पर भी ऐसे मंद बुद्धि बालकों का अनुपात जन समुदाय में अधिक ही होता है।

*ये सभी कथाएँ, हे संतो ! मानव–मन को समझाती हैं।*
*संकीर्ण स्वार्थरत मानव की, सोई चेतना जगाती हैं॥*
*मानव–जीवन को पाकर तुम, कुछ तो नेकी के काम करो।*
*स्वार्थ वृत्ति को अपनाकर, तुम मत इसको बर्बाद करो॥*
*सुनकर ऋषि की प्रेरक वाणी, सब संतों के मन हरषाए।*
*कुछ भावुक भक्तजनों की तो, आँखों में आँसू भर आए ॥*
*हे देव ! कृपा करके कहिए, पथ कौन वहाँ पहुँचाता है ?*
*है कौन भाग्यशाली नर जो, इस श्रेय मार्ग को पाता है ?*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*नम्र विनय संतों की सुन, ऋषि बोले मुस्काय।*
*श्रेय मार्ग का पथ कठिन, सुनलो ध्यान लगाय॥*

तत्त्ववेत्ता महर्षि के ये वचन सुनकर जिज्ञासु ऋषि ने पूछा–हे महामनीषी ! कृपया बताइए कि श्रेय मार्ग को प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? उनकी जिज्ञासा को शांत करते हुए महाप्राज्ञ ने कहा–''हे ऋषिगण ! इसके लिए अपने आपको उपासना, साधना, आराधना द्वारा इस योग्य बनाना पड़ता है कि प्रभु कृपा हमें मिल सके।

एक बार एक ब्राह्मण ने किसी सेठ के यहाँ अपनी राशि जमा कर दी ताकि कन्या के ब्याह के समय ब्याज समेत वे रुपए उसे मिल जाएँ। बहुत वर्ष बीत गए। आवश्यकता पड़ने पर वह ब्राह्मण अपने रुपए वापिस लेने पहुँचा, पर सेठ की नीयत में बदी आ गई। उसने उस ब्राह्मण को पहचानने तक से इंकार कर दिया और कहा–'हमारे यहाँ आपका कोई पैसा नहीं है।'

ब्राह्मण राजा के पास पहुँचा। उसने पुकार की। प्रमाण के अभाव में राजा कुछ कर तो नहीं सकते थे, पर उन्हें एक युक्ति सूझी और दूसरे दिन अपनी शोभा–यात्रा नगर में निकालने की घोषणा कर दी। ब्राह्मण से कह दिया कि–'आप उस सेठ के मकान से कुछ पहले ही खड़े रहना।' शोभा–यात्रा निकली। सभी नागरिक अभिवादन करने खड़े थे। सेठ के मकान के पास से जब सवारी निकली तो राजा ने सवारी रोककर नियत स्थान पर खड़े ब्राह्मण को अपने पास बिठा लिया और उसे गुरुदेव कहकर संबोधित किया। कुछ आगे चलकर उस ब्राह्मण को सवारी से उतार दिया।

सेठ का हृदय काँपने लगा। राजा का गुरु यह ब्राह्मण है। मेरी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिकायत कर देगा तो न जाने क्या दण्ड मिले ? सेठ ने उस ब्राह्मण की तलाश में सेवक दौड़ाए। कुछ दूर आगे जाने पर ही वे मिल गए। सेठ ने उसका बहुत सम्मान किया और कहा–'बहीखातों में आपका धन जमा था, हमें स्मरण नहीं रहा था, उसके लिए क्षमा करें।' सेठ ने ब्याज समेत सारा रुपया चुका दिया और उसकी कन्या के विवाह के लिए कुछ विशेष दान देकर विदा किया।

ब्राह्मण मन–ही–मन सोचने लगा–'राजा के पास थोड़ी देर बैठने का यह परिणाम होता है, तो राजाओं के राजा ईश्वर के पास बैठने, उसकी उपासना करने का तो न जाने कितना बड़ा प्रतिफल होगा ?' चिंतन में यह परिवर्तन भक्त की विचारणा, क्रिया व निष्ठा में कायाकल्प कर देता है जो उसे ऊँचाई पर ले जाकर ही छोड़ता है।

ईश्वर के पास बैठने से पात्रता का विकास होता है। जो व्यक्ति स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों के दुःखों को दूर करता है, जो दूसरों के सुखों से सुखी होता है, वही ईश कृपा का अधिकारी बनता है। गंगा माता के निकट जाकर भी एक व्यक्ति जिसके पास पात्र नहीं है, प्यासा ही रह जाता है, दूसरा व्यक्ति कलश भर कर जल ले आता है और दूसरों की भी प्यास बुझाता है। ईश कृपा तो बादलों की तरह सब पर बरसती है। आँगन में दो घड़े रखे हैं, किंतु एक घड़ा जिसका मुख ऊपर की तरफ है जल से भर जाता है, किंतु जो घड़ा उल्टा रखा हुआ है उसमें एक बूँद पानी भी नहीं ठहरता, इसमें किसका दोष है, आप ही बताइए ? हे ऋषिवर ! पात्रता वह पारस है जो अनगढ़ सी लोहे की वस्तु को स्वर्ण बना देती है। इसके बदले दैवी अनुदान बिना माँगे ही मिलते हैं। वास्तविकता तो यह है कि ईश्वर कृपा उनको नहीं मिलती जो मंदिर में जाकर फूल



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मालाएँ, जल और बताशे चढ़ाते हैं, अपितु उन्हें मिलती है, जो भगवान के पुत्रों की, उनके बनाए हुए प्राणियों की सहायता करते हैं।

संत चिदंबरम् उन दिनों सिद्ध पुरुष माने जाते थे। कितने ही लोग उनके पास सहायता हेतु वरदान माँगने जाते। एक दिन एक स्त्री संतान प्राप्त होने का आशीर्वाद माँगने आई। संत ने उसे भुने चने दे दिए और संतोषपूर्वक बैठकर पेट भर लेने को कहा। स्त्री चने खाती रही। कई छोटे बच्चे उधर खेल रहे थे, उन्होंने चने पाने के लिए स्त्री को निहारा, पर उसने आँखें फेर लीं, किसी को दिए नहीं। विदाई का प्रणाम करने वह स्त्री पहुँची तो संत ने कहा—देवी ! जब तू बच्चों को तनिक से चने तक देने की उदारता न दिखा सकी तो भगवान तुझे वेश कीमती बच्चा मुफ्त में कैसे देगा ?

अतः हे ऋषियो ! अब आप ही चुनाव कीजिए कि आप किस पथ पर जाना चाहते हैं ?''

*प्रियवर, इस दुर्गति सद्गति का, यह मनुज स्वयं निर्माता है।*
*है तथ्य यही, है सत्य यही, वह अपना भाग्य—विधाता है॥*
*जो आत्मज्ञान को अपनाकर, अध्यात्म आत्म पथ लेता है।*
*पर पीड़ा से विचलित होता, परसुख जिसको सुख देता है॥*
*वह महामनीषी ज्ञानी नर, औरों को राह दिखाता है।*
*पात्रता स्वयं की विकसित कर, वह स्वर्ग धरा पर लाता है॥*
*वह ही सच्चा सन्यासी है, उसका जीवन ही जीवन है।*
*इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर, रहता उसका ही वर्णन है॥*
*जिसका यश संसार में, वह नर जीवित जान।*
*उसका जीवन व्यर्थ है, जो जग में बदनाम॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**आत्मनस्तु विकासं यः कर्तुं शक्तः स एव हि।**
**सुसंस्कृतश्च सफलस्तथ्यस्यास्य महामुने॥ १। २। ६४॥**
**अध्यात्मामृतपानस्य सीम्नि बद्धा भवेम तु।**
**उपलब्धिभिरेताभिर्बोद्ध्याः सर्वेजनाः सदा॥ १। २। ६६॥**

समस्त शंकाओं का समाधान करते हुए महाप्राज्ञ ने कहा–हे जागृतात्माओं ! मैंने आज आपको जो आत्मज्ञान का संदेश दिया है, वही ब्रह्मविद्या का सार है। जो व्यक्ति इस की उपेक्षा कर सुख साधनों में मस्त रहते हैं, वे खिलौनों से खेलने वाले बच्चों की तरह नादान हैं, किंतु अंतर्मुखी होकर आत्मस्वरूप को पाने वाले भाग्यशाली होते हैं, वे ही प्रभु कृपा के सच्चे अधिकारी हैं, उन्हें आत्मसंतोष, लोक सम्मान तथा ईश कृपा के त्रिविध लाभ स्वयं ही मिल जाते हैं। अब आप स्वयं ही निर्णय करें कि आपको क्या करना चाहिए ?

एक तालाब में तीन मछली रहती थीं। एक का नाम था यद् भविष्यति, दूसरी का नाम प्रति उत्पन्नमति, तीसरी का नाम दूरदर्शी। एक दिन मछुआरे आए वे बोले–''कल यहाँ जाल डालेंगे काफी मछलियाँ हैं।'' पहली मछली ने कहा–''यहीं रहने में भला है। कल ये लोग आएँगे ही, यह आवश्यक नहीं।'' दूसरी बोली–''भला इसी में है कि आज रात में इसमें से निकल जाएँ।'' और वह तालाब से जुड़ी दूसरी पोखर में चली गईं। तीसरी बोली–''कल जब ये लोग आएँगे तभी परिस्थिति के अनुसार निर्णय लिया जाएगा।'' अगले दिन मछुआरे आए, जाल डाला गया और पहली मछली पकड़ी गई। तीसरी मछली ने मरने का ढोंग रचा। मरा समझकर मछुआरों ने उसे जाल से निकाल दिया। वह उचक कर गहरे पानी में तैरती हुई दूसरी ओर धारा को पार करती हुई चली गई। पहली वाली पकड़ी गई और भाग्य



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का अवलंबन लेने के कारण रोती रही। इसी प्रकार दूरदशी, समय पर तुरंत निर्णय लेने वाले व भाग्य पर विश्वास कर हाथ पर हाथ धरे रहने वाले तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं।

यह प्रेरणादायक संदेश सुनकर सभी श्रोतागण मन में प्रसन्न हो रहे थे, किंतु उनके मन में कुछ और भी जानने की इच्छा शेष थी। अतः उन्होंने सकुचाते हुए पूछा–हे भगवन् ! यद्यपि आप की मधुर वाणी से हमें दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई है, किंतु मन में एक शंका शेष है, कृपया उसका समाधान करें। आप यह बताइए कि जब भगवान ने मनुष्य को कर्म करने की स्वतंत्रता दे दी है तो उसे कर्म के बंधन से कैसे छुटकारा मिल सकता है ? कोई ऐसा उपाय बताइए कि वह प्रेय मार्ग को छोड़कर सदैव श्रेय मार्ग पर ही चलता रहे।

महाप्राज्ञ पिप्पलाद आत्मतत्व की व्याख्या कर उसे विकसित करने की विद्या का ज्ञान कराने के उपरांत जिज्ञासु ऋषियों से कहते हैं कि ज्ञानी का ज्ञानार्जन तभी सार्थक है, जब वह इसे अपने तक सीमित न रख चारों ओर फैला दे। इसी में उनकी महानता है व उपदेश–श्रवण की सार्थकता भी। मात्र बुद्धि चातुर्य और मानसोल्लास के लिए किए गए सत्संग–ज्ञानसत्र किस काम के ? ज्ञान प्राप्त करके उसे जब तक जन साधारण के लिए उपयोग में न लाया जाएगा, तब तक उसका क्या लाभ ?

भाइयो और बहनो ! एक बार एक शिष्य ने आत्मज्ञान का शिक्षण लिया। वह अपने गुरु से बोला–''एकांत में बैठकर आत्म चिंतन करने में जो आनंद है, वह और कहीं नहीं। हे गुरुवर ! उच्चस्तरीय साधना हेतु पहाड़ों जैसी शांति चाहता हूँ।'' गुरु ने कहा–''बेटे ! पहाड़ों पर परमार्थ कैसे कर पाएगा ? तू उन क्षेत्रों में जा, जहाँ अज्ञान फैला हुआ



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। जहाँ व्यक्ति दीनहीन स्थिति में अपना जीवन यापन कर रहे हैं। तू नगरों में जा जहाँ अज्ञान के कारण मानव–मानव के बीच भेदभाव, छलकपट और विषमता बढ़ती जा रही है।'' शिष्य बोला–''मुझसे तो वहाँ का कोलाहल और यातनाएँ सुनी और देखी नहीं जाएँगी। गुरुदेव ! मुझे तो हिमालय से दूर न जाने दें।'' गुरुदेव की आँखें छलछला उठी और बोले–''जो अंधकार में भटक गए हैं, उन्हें ज्ञान का प्रकाश देना आवश्यक है। ईश्वर को पाना है तो जो अर्जित संपदा है, उसे बिखेर दो।'' शिष्य चल पड़ा अपना मोह तोड़कर और टोली में सम्मिलित हो गया।

*हे ऋषि संतानो जागो तुम, अब कुछ तो आत्म विस्तार करो।*
*तुम स्वयं प्रेम अमृत पीकर, इस जग का भी उपकार करो।*
*अंतर की खोई निधि खोजें, सत्संग से यह समाधान हुआ।*
*सुन महाप्राज्ञ के मधुर वचन, श्रोताओं को सद्ज्ञान हुआ।*
*पर और अधिक हो समाधान, सब के मन की अभिलाषा थी।*
*कैसे पाएँ कुछ और ज्ञान, यह ही मन की जिज्ञासा थी।*
*लख उनकी यह जिज्ञासा, बोले तब ऋषिराज।*
*संतों ! अब विश्राम करो, समय हो गया आज।*
*जो समझाया आज है, उस पर करो विचार।*
*सभी भक्तजन विदा हुए, करते जय–जयकार॥*

शंका समाधान करते हुए ऋषि श्रेष्ठ ने कहा–''हे तात् ! जब मानव स्वार्थ वृत्ति को छोड़ कर शुभ मार्ग पर चलता है तो उसे ईश्वरीय सहायता स्वयं ही मिलने लगती है। कभी कभी तो एक छोटा सा पुण्य कर्म भी जीवन का वरदान बन जाता है। महाप्राज्ञ ने कहा–हे पुण्यात्माओ ! अब संध्या वंदन का समय हो गया है, कल के ज्ञान सत्र



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में आपकी जिज्ञासाओं का समाधान करेंगे। अभी आप लोग आज की कथा और उसके उद्देश्य को हृदय में उतार लें, आत्मज्ञान की ज्योति जगाकर इस ब्रह्मविद्या का प्रसाद सभी को बाँटने का संकल्प लेकर जाएँ, तभी कथा का सुनना सार्थक है।

जिज्ञासु ऋषि समझ गए थे कि मानव के पतन का कारण परिस्थितियाँ नहीं अपितु उनके मन के विकार हैं। जो साधक अपने उत्तरदायित्व को छोड़कर आए थे, वे अपनी अशांति का कारण समझ गए थे। उन्होंने अपनी कमी को पूरा करने का तथा जन जागृति का संकल्प लिया। उनके मन में एक जिज्ञासा थी कि ईश्वर से माँगने योग्य क्या वस्तु है ? उन्होंने साहस करके महाप्राज्ञ से पूछा कि हे भगवन् ! कृपा कर बतलाइए कि यदि प्रभु से कुछ माँगना चाहें तो क्या माँगें ?

यह सुनकर महाप्राज्ञ ने कहा कि हे संतो ! भगवान से माँगने योग्य केवल एक ही वस्तु है–वह है आत्मज्ञान। हे देवात्माओ ! अब समय अधिक हो गया है। अतः इस पर चर्चा कल करेंगे।'' सभी श्रोतागण आनंदित हृदय से नित्यनैमित्तक कार्य के लिए गुरुदेव को प्रणाम कर जय जयकार करते हुए चल दिए। अतः हे आत्मीय बंधुओ ! आप ने इतने धैर्य से कथा सुनी उसके लिए आप सब का अभिनंदन है, अब आज की कथा पर विचार कीजिए, आत्मशक्ति को जगाने का प्रयास कीजिए और घर–घर में यह संदेश पहुँचाइए।

**इतिश्री मत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययोः,**
**युगदर्शन युगसाधनाप्रकटीकरणयोः श्री पिप्पलाद–श्वेतकेतु ऋषि संवादे**
**''ब्रह्मक्षेत्रादजस्रमनुदानोपलब्धि''**
**इति प्रकरणो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥**

**आरती श्री प्रज्ञा पुराण की**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा-पुराण-कथामृतम्

## तृतीय दिवस

### संयमशीलता, कर्त्तव्यपरायणता प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

## गुरु वंदना

गुरु तेरे चरणों में स्वर्ग पा लिया है।
जमीं तो जमीं आसमां पा लिया है॥ गुरु तेरे.....
जो माँगा था हमने दिया वही तुमने।
जो चाहा था हमने किया वही तुमने॥
मरुस्थल में हमने चमन पा लिया है। गुरु तेरे.....
सत शिव सुंदर तुम्हीं हो मनीषी।
सबेरे का सूरज तुम्हीं हो मनीषी॥
अँधेरी अमावस में चाँद पा लिया है। गुरु तेरे.....
हँसाया बहुत अब रुलाना नहीं है।
बीच भँवर में डुबाना नहीं है॥
तुमसे ये हमने वचन पा लिया है। गुरु तेरे.....

## प्रज्ञा गीत

क्या तन माँजता है रे, एक दिन माटी में मिल जाना।
बना ठना घूमा जीवन भर, तन को खूब सजाया॥
नाशवान को सब कुछ माना, सत्य समझ नहीं पाया।
क्रूर काल झपटा तब रोया, साथ नहीं कुछ जाना॥ क्या...



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मा का संतोष न खोजा, खोजा सुख काया का।
अंत समय तक समझ न पाया, ये चक्कर माया का॥
कितना भी हो मोह लाश से, होगा उसे जलाना। क्या...
काया और माया ही भायी, ईश्वर को बिसराया।
प्राण बिलखते चले गए, सब धरी रह गई माया॥
ईश्वर से साझा करता तो, क्यों पड़ता पछताना। क्या...
पुण्य साथ जा सकता था, पर वह तो नहीं कमाया।
लक्ष्य न समझा भ्रम में भटका, हीरा जन्म गँवाया॥
माटी के टुकड़े में बेचा, क्यों अनमोल खजाना। क्या...

(प्रथम दिवस की भाँति कथा व्यास द्वारा पूजन)

## कीर्तन

नटवर नागर नंदा, भजो रे मन गोविन्दा।
करो नाम जप रोज प्रेम से, मन को धोओ नित्त नैम से।
निर्मल मन प्रभु को पसंद है, मत कर इसको गंदा॥
भजो रे मन गोविन्दा। नटवर नागर नंदा॥
भटके बहुत नहीं कुछ पाया, सत्य मार्ग को समझ न पाया।
अब तो मत ठोकर खा बंदे, बन जा प्रभु का बंदा॥
भजो रे मन गोविन्दा। नटवर नागर नंदा॥

**तृतीये दिवसे ऋषिः स तु।**
**शृंगी पूर्वं प्रसंगं तं स्मारयत्राह्निकं ततः॥ १। ४। १॥**
**प्रारब्धौषीत् स्वां नवीनां तां जिज्ञासां नतिपूर्वकम्।**
**का सा देवता यस्या नरस्तूपासनेन हि॥ १। ४। २॥**

आत्मीय परिजनो, देवी स्वरूपा बहनो, माताओ, युग ऋषि की लेखनी चल रही है, प्रज्ञा पुराण में आज के मानव की समस्याओं का



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाधान प्रस्तुत करने का प्रयत्न है। यह परमात्मा का राजकुमार क्यों भटक गया, भटका हुआ देवता है यह। इसे देवत्व से सजाना है, क्या करें ? अपने स्वरूप को पहचानो, स्वार्थवृत्ति को छोड़कर परमार्थ को अपनाओ, तो ईश्वर की सहायता मिलेगी, कल तक की कथा में यही बताया गया है, फिर भी कुछ माँगना ही हो, तो ईश्वर से ही माँगो। तो फिर ईश्वर से क्या माँगें ? अपने लिए पुत्र, धन, नौकरी, मकान, शरीर बल, उससे जो माँगो मिलेगा, पर इस परमशक्तिशाली से ये छोटी–छोटी वस्तुएँ माँगने से क्या लाभ ? ये तो उसने बिना माँगे ही दे रखी हैं। क्या राष्ट्रपति से आप एक किलो जलेबी माँगेंगे ? योग्यता के अनुरूप ही माँगना शोभा देता है। तो फिर क्या माँगें, यह प्रश्न ऋषि शृंगी करते हैं, पिप्पलाद जी से। ये ऋषि वे ही हैं, जिन्होंने राजा परीक्षित को शाप दिया था। श्रीमद्भागवत पुराण की समस्त कथा का आधार शृंगी ऋषि के शाप पर ही आधारित है। राजा परीक्षित अर्जुन पुत्र वीर अभिमन्यु के पुत्र थे। महाभारत युद्ध की समाप्ति होने पर जब पांडवों ने पर्वतारोहण किया, तो युवराज परीक्षित को राज्य सौंप दिया। ये बहुत कुशल प्रशासक थे। इनके राज्य में प्रजा संतुष्ट थी, किंतु काल की गति विचित्र है। द्वापर युग का अंत हो रहा था और कलियुग का आगमन। कलियुग ने राजा परीक्षित से प्रार्थना की कि मैं सपरिवार आ गया हूँ। कृपया मुझे रहने के लिए स्थान दीजिए।

राजा स्वभाव से दयालु थे। उन्होंने कहा–''तुम कहाँ रह सकते हो ?'' कलियुग ने कहा–''हे राजन् ! मैं वहीं रह सकता हूँ, जहाँ चोर, जुआरी, व्यभिचारी और दुष्ट लोभी व्यक्ति रहते हों।'' राजा ने कहा–''तब तो तुम्हें यहाँ जगह नहीं मिल सकती, क्योंकि मेरे राज्य में कोई भी दुष्ट लोभी, चोर, जुआरी, व्यभिचारी नहीं है।'' यह सुनकर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कलियुग ने हाथ जोड़कर कहा–''हे राजन् ! मुझ पर दया करो। अब मैं वापस तो जा नहीं सकता, आपके राज्य में स्वर्ण तो है, मैं उसी में रह लूँगा।'' दयालु राजा ने उसे स्वर्ण में रहने की अनुमति दे दी। वह दुष्ट कलियुग तो इसी की प्रतीक्षा में था। राजा परीक्षित ने स्वर्ण मुकुट पहना हुआ था, वह उसी में घुस कर बैठ गया और राजा की बुद्धि को भ्रमित कर दिया।

एक बार राजा शिकार खेलने गए थे। भूख–प्यास से व्याकुल राजा एक ऋषि के आश्रम में गए। ऋषि ध्यान मग्न थे। राजा ने पानी माँगा, किंतु उन्होंने ध्यानस्थ होने के कारण नहीं सुना। कलियुग के सिर पर सवार होने के कारण राजा की बुद्धि भ्रमित हो गई थी, अतः राजा ने क्रोध में आकर पास पड़े एक मरे हुए सर्प को ऋषि के गले में डाल दिया और चले आए। थोड़ी देर बाद ऋषि पुत्र शृंगी ऋषि आए और अपने पिता के गले में मरा सर्प देखा तो क्रोध से व्याकुल हो गए और हाथ में जल लेकर शाप दे दिया कि जिस व्यक्ति ने इस सर्प को मेरे पिता के गले में डाला है, उसे तक्षक सर्प आज से सातवें दिन डस लेगा और इसी के काटने से उसकी मृत्यु होगी।

इसी बीच में उनके पिताश्री की समाधि खुल गई। उन्होंने सब कुछ सुनकर दिव्य दृष्टि से देखा, तो पता चला कि राजा परीक्षित ने यह सर्प उनके गले में डाला है। उन्होंने बहुत खेद प्रकट करते हुए पुत्र से कहा–''तुमने यह क्या किया ? वह राजा तो ईश्वर स्वरूप है, ऐसे राजा को इतना भयंकर शाप दे दिया।'' यह सुनकर शृंगी ऋषि को भी दुःख हुआ, किंतु अब शाप तो वापस नहीं हो सकता था। उन्होंने राजा के पास एक शिष्य को भेजा कि राजा को शाप ग्रस्त होने का समाचार सुना दो।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उधर राजा घर पहुँचा तो भूख–प्यास से व्याकुल तो था ही मन भी बहुत खिन्न था। वहाँ जाकर जैसे ही मुकुट सिर से उतारा, वैसे ही सद्बुद्धि जाग गई। वह सोचने लगा, अब मैं क्या करूँ ? कैसे अपने पाप का प्रायश्चित्त करूँ ? उसने सोचा सुबह आश्रम में जाकर ऋषिवर से क्षमा माँग लूँगा। ऋषि तो दयालु होते हैं, अतः क्षमा कर देंगे, पर उसी समय उन्हें आश्रम के आए हुए व्यक्ति से सूचना मिली कि ऋषि पुत्र शृंगी ने उन्हें शाप दे दिया है कि सातवें दिन तक्षक नाग डस लेगा।

राजा बहुत ही व्याकुल हो गए। दूसरे दिन ऋषि के पास पहुँच कर कहा–''मुझे मरने का भय नहीं है, किंतु आप बताइए कि सर्प के काटने से तो अकाल मृत्यु होगी, उससे मैं मुक्ति कैसे प्राप्त कर सकता हूँ ?'' ऋषि ने सोचकर उत्तर दिया कि यदि कोई ब्रह्मज्ञानी तुम्हें श्रीमद्भागवत कथा सुनाए, तो तुम मुक्ति पा सकते हो। सौभाग्यवश श्री शुकदेव जी वहाँ पधारे और राजा की स्थिति देखकर कथा सुनाने को तत्पर हो गए। राजा ने दत्तचित्त होकर कथा सुनी और जब सातवें दिन शुकदेव जी ने राजा से पूछा कि हे राजन् ! तुम्हारे मन में अब कोई संशय तो नहीं है, तब राजा ने कहा–''हे गुरुदेव ! आपकी कृपा से मेरे सब संशय दूर हो गए हैं। अब तो तक्षक नाग में भी मुझे श्रीभगवान के ही दर्शन होंगे।'' कहते हैं उसी समय विमान आया और तक्षक नाग भी। तक्षक नाग ने परीक्षित के शरीर को डस लिया और शरीर जलकर भस्म हो गया। राजा परीक्षित की आत्मा विमान में बैठकर वैकुंठ धाम पहुँच गई। वे ही शृंगी ऋषि आज प्रश्नकर्त्ता के रूप में विराजमान हैं और पिप्पलाद जी समाधान करते हुए कहते हैं कि ये कथाएँ भटके हुए मानव को मुक्ति की राह बताती हैं। प्रज्ञा पुराण भी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी उद्देश्य को लेकर लिखा गया है, किंतु कथा का लाभ उन्हीं को होता है, जो उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करते हैं और आत्मज्ञानी बनकर जीवन बिताते हैं। अतः उसी प्रज्ञा पुराण को आप ध्यानपूर्वक सुनिए।

## प्रज्ञा पुराण गीत

सुनिए कथा यह कान लगाकर, स्थिर होकर ध्यान से।
यह प्रज्ञा पुराण अति पावन, मुक्त करे अज्ञान से।
बिना ज्ञान के जप, तप, पूजा करती है कल्याण नहीं।
गंगा, गोदावरी सरिस यह मुक्त करे अज्ञान से।
यदि प्रमाद में रहा मनुज तो, जीवन भर पछताएगा।
समय सुनहरा निकल गया तो, काम न कोई आएगा।
प्रभु का यह संदेश सुनो, सब इस प्रज्ञा पुराण से।
यह प्रज्ञा पुराण अति पावन मुक्त करे अज्ञान से।

इसी कथा के प्रसंग में शृंगी ऋषि ने प्रथम दिन का स्मरण दिलाते हुए विनम्रता पूर्वक कहा–''हे देव ! कल आपने बताया था कि पात्रता का विकास होने पर ईश्वरीय अनुकंपा स्वयं बरसने लगती है, फिर भी कुछ माँगना है, तो ईश्वर से माँगो। तो आप बताइए कि उस परम प्रभु से क्या माँगें।''

समाधानी तपोमूर्ति पिप्पलाद जी ने कहा–''हे ब्रह्मज्ञानी शृंगी जी ! आप स्वयं महान् तपस्वी हैं फिर भी आपने दूसरों की भलाई के लिए यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछा है। हे महात्मन् ! सुनिए, यद्यपि संसार में धनबल, आत्मबल, ब्रह्मबल, शरीरबल जैसे अनेक बल हैं, किंतु आत्मिक जगत् में माँगने योग्य एक ही वस्तु है और वह है आत्मज्ञान। ईश्वर से यदि माँगना है, तो इसी ज्ञान को माँगना चाहिए।''



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऋषि द्वारा आत्मज्ञान का महत्त्व सुनकर शृंगी ऋषि ने कहा–''हे महाप्राज्ञ ! ईश्वर की पूजा भी अनेक रूपों में की जाती है। आप बताइए कि आत्मज्ञान पाने के लिए भगवान की पूजा किस रूप में करें ?'' महर्षि पिप्पलाद जी ने कहा–''हे तात् ! मनुष्य का जीवन ही वह प्रत्यक्ष देवता है, अन्य देवताओं की कृपा तो परलोक में मिलती है, पर जीवन देवता की उपासना का फल तो इसी लोक में मिल जाता है। हे तपस्वियो ! ये शरीर वैज्ञानिकों की दृष्टि में लोहे, चूने, अभ्रक, गंधक, शीशा, चर्बी, नमक पदार्थों से मिलकर बना है। इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। डाक्टर इसे मशीन कहते हैं, किंतु व्यासजी ने महाभारत में कहा है कि मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। अथर्ववेद में इसे देवपुरी तथा यजुर्वेद में ऋषि भूमि कहा गया है। वेद–उपनिषद् इसे ब्रह्मपुरी कहते हैं। वेदों में इसे दैवी नाव तथा रथ भी कहा है, जिस पर चढ़कर यह रथी (आत्मा) संसार यात्रा पूरी करता है। इसीलिए शव को अरथी कहा जाता है। ऋग्वेद के आरण्यक इसे दैवी वीणा कहते हैं। जिसने इस वीणा को बजाना सीख लिया, उसके अंदर ऐसे स्वर झंकृत होते हैं कि मानव तो क्या देवता भी मुग्ध हो जाते हैं। यही अयोध्या नगरी है जिसमें दस इंद्रियों पर सवार राजा दशरथ राज्य करते हैं। इसी में सात लोक हैं। भगवान विष्णु तथा लक्ष्मी जी का क्षीरसागर, भगवान शिव–पार्वती का कैलाश तथा मानसरोवर भी यही है। माँ गायत्री, वीणा–वादिनी सरस्वती तथा ब्रह्मा जी का ब्रह्मलोक तथा समस्त देवताओं का निवास स्थान भी यही है। इसलिए हे साधको ! मानव शरीर में जो भी आत्मदेवता है, उसी की पूजा करनी चाहिए। विधाता ने मनुष्य के शरीर में अनेक विशषताएँ कूट–कूटकर भर दी हैं। जानकारी के अभाव में



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुमूल्य वस्तुओं को भी निरर्थक समझ लिया जाता है। पारसमणि को कपड़े में लर्पेट कर रखने से उसका लाभ नहीं उठाया जा सकता है।''

भाइयों और बहनो ! एक ऋषि तपोवन में कुटी बनाकर रहते थे। बहुत से मनुष्यों को यह पता था कि उनके पास पारसमणि है, जिसे छूकर लोहा सोना बन जाता है, किंतु उनकी दीन–हीन स्थिति को देखकर मनुष्य आश्चर्य करते थे कि वे उस पारसमणि का उपयोग क्यों नहीं करते ? उनके कई शिष्य उनकी सेवा भी इसी लालच में कर रहे थे, पर किसी की हिम्मत पूछने की नहीं होती थी। आखिर एक शिष्य ने एक दिन पूछ ही लिया–''गुरुदेव ! सुना है आपके पास पारसमणि है। क्या मैं उसे देख सकता हूँ ?'' ऋषि ने कहा–''हाँ, जाओ वह लोहे की संदूकची उठा लाओ।'' शिष्य लोहे की संदूकची लाकर आश्चर्य से बोला–''पारस का स्पर्श करके भी यह संदूकची सोने की क्यों नहीं हुई ?'' गुरुदेव ने कहा–''वत्स, इसे खोलकर देखो। पारसमणि और संदूकची के बीच में कपड़ा लिपटा हुआ है, अतः इसका असर नहीं हो रहा है।'' इसी प्रकार जब मानव का मन काम, क्रोध, लोभ आदि विकार रूपी वस्त्रों से ढँक जाता है, तो परमात्मा के अंश आत्मा रूपी पारसमणि को पाकर भी मनुष्य लोहा ही रह जाता है, स्वर्ण नहीं बन पाता।'' हीरे की कीमत जौहरी ही समझ सकता है। अतः मनुष्य भी इस देव दुर्लभ देह का मूल्य न समझकर असंयम के कारण इसे व्यर्थ खो रहा है। इसका सदुपयोग करने भर से उत्साहवर्द्धक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। भाइयो और बहनो ! आपने ऋषि दयानंद, महाराणा प्रताप आदि का नाम तो सुना होगा, उन्होंने भी योग प्राणायाम द्वारा महान् शक्ति प्राप्त की थीं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक कहानी आती है कि एक माली के लड़के बड़े आलसी थे। वे कामकाज से जी चुराते थे और व्यर्थ की बातों में अपना समय नष्ट करते रहते थे। जब माली मरने लगा, तो उसने लड़कों को बुलाया और कहा–''तुम आलस्य में पड़े रहकर घर में जो कुछ है, सबको अवश्य बर्बाद कर लोगे, पर मैंने तुम्हारे भविष्य का ध्यान रखा है और बाग में प्रत्येक पेड़ के नीचे थोड़ा–थोड़ा सोना गाढ़ रखा है। जब जरूरत हो तब निकाल लेना। यह कहकर माली मर गया। घर में जो थोड़ी–सी पूँजी थी वह भी समाप्त हो गई। लड़के भूखों मरने लगे। उन्होंने सोचा कि चलो पेड़ों के नीचे से सोना निकालें। खुदाई करने में जुट गए और एक–एक करके सभी पेड़ों को खोदते गए, पर किसी के नीचे कुछ भी न निकला। लड़के जानते थे कि हमारा बाप कभी झूठ नहीं बोलता था, फिर भी उनकी वह सोने वाली बात कैसे झूठ निकली, इसका उन्हें आश्चर्य था। कुछ दिन बाद वर्षा हुई, पेड़ों के नीचे की जमीन खुद जाने के कारण जड़ों में काफी पानी पहुँचा और हर पेड़ ने भारी संख्या में फल दिए। आमदनी इतनी हुई कि हर पेड़ के नीचे सोना निकलने वाली बात ही सच हो गई।'' अतः श्रम और संयम से ही मनुष्य अपना जीवन सफल बना सकता है।

*सुन महाप्राज्ञ की मधुर वाणी, सब संतों के मन हरषाए।*
*पर कैसे हो पूजन इसका, यह विधि वे समझ नहीं पाए॥*
*धूप दीप नैवेद्य चढ़ा, जो पूजा हम कर पाते हैं।*
*उसको ही कर स्वीकार देव, मन में प्रसन्न हो जाते हैं॥*
*देवता समझ कर जीवन को, कैसे इसका सम्मान करें।*
*सब कुछ तो इसको है अर्पित, फिर क्या इसको हम दान करें॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*महाप्राज्ञ कहने लगे, होकर कुछ गंभीर।*
*बतलाता हूँ विधि तुम्हें, रख लो मन में धीर॥*
*मानव शरीर है शक्ति स्रोत, बस इसको ही पहचानो तुम।*
*इसमें सोई चेतना शक्ति को, ही विकसित कर डालो तुम॥*
*काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह का, पर्दा इस पर पड़ा हुआ।*
*है इसमें पीयूष कलश, पर मुख सोने से मढ़ा हुआ॥*
*है यह अमूल्य निधि अंतर में, पर तुम इसकी पहचान करो।*
*तजकर स्वार्थभाव को तुम, बस औरों का कल्याण करो॥*
*आत्मदेव का नित करो, तुम अभिनव शृंगार।*
*सारे कल्मष दूर कर, भरो प्राण संचार॥*

**जिज्ञासवः इह शृङ्गियुता मान्या मनीषिणः।**
**ध्यानेन श्रूयतां देवः जीवने फलदायकः॥ १। ४। १२॥**
**निम्बुकं च्युतनीरं तेऽनुगच्छन्तस्तथैव च।**
**कंकालशेषकामास्ते दारिद्र्यं दूषयन्ति तु॥ १। ४। १८॥**

जीवन देवता का महत्त्व सुनकर जिज्ञासु भक्त सोचने लगे, कि जीवन देवता की उपासना कैसे करें ? उनकी जिज्ञासा को देखते हुए शृंगी ऋषि ने पूछा कि हे महाप्राज्ञ देवताओं की पूजा तो उनके स्वरूप के अनुसार की जाती है। कृपया बताएँ कि जीवन देवता की पूजा कैसे करें ?

मुस्कराते हुए महामनीषी ने कहा–''वत्स, इस देवता की पूजा रोली चावल व पुष्पों से नहीं की जाती। इस की पूजा, संयम के द्वारा की जाती है। असंयम के छिद्रों से जीवन रस को बहाकर मनुष्य निचोड़े हुए नींबू की भाँति छूँछ रह जाता है और दरिद्रता का रोना रोता है। रोग और दुःखों का कारण भी मनुष्य का असंयम ही है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अन्य प्राणी अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करते, पशु भूख लगने पर भोजन करते हैं, अस्वस्थ होने पर भोजन करना बंद कर देते हैं। मनुष्य तो जिह्वा के स्वाद के वशीभूत होकर ही न जाने कितने रोगों को निमंत्रण देता है। जो प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करता है, वह पग–पग पर ठोकरें खाता है। आज तो बाजार में दुकानों पर देखिए, मिठाइयों पर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं, पर लोग खाते चले जा रहे हैं। विवाह शादी में देखिए, कितनी तरह के व्यंजन बनते हैं, इन्हें खाकर मनुष्य रोग को ही तो निमंत्रण देता है। हमारे ऋषियों ने संयम को महत्त्व दिया था और उसी के कारण वे सौ वर्ष से भी अधिक आरोग्य पूर्वक जीवन जीते थे।'' हे ऋषि संतानो ! आप उन्हीं ऋषियों की संतान हैं, अतः शरीर शक्ति–स्रोत को पहचानो और इसमें सोई हुई चेतना को विकसित कर दो। इसके अंदर अमृत कलश भरा है, पर उसका मुख सोने से मढ़ा हुआ है। तुम्हारे अंतर में शक्ति स्रोत छिपा है, उसे प्रवाहित कर दो। नवयुग के व्यास आचार्यश्री ने अनेक कथाओं के माध्यम से इस रहस्य को समझाया है।

आदमी जब असंयम अपनाता है तो पतनोन्मुख हो डूब जाता है, यह एक शाश्वत नियम है, इसे समझाते हुए तीर्थंकर महावीर ने दो कमण्डल एक साथ जल धारा में छोड़े। एक जिसमें छेद था, धीरे–धीरे पानी भरने के कारण वहीं डूब गया एवं दूसरा जो सही सलामत था, दूर तक तैरता चला गया। मनुष्य इसी प्रकार जीवन धारा में बहकर अपनी नाव भी पार लगा सकता है और डूब भी सकता है। इसमें परिस्थितियों का कहीं कोई हस्तक्षेप नहीं। मन ही है, जो इंद्रियों को इस प्रकार गुलाम बना देता है कि जीवन क्रम ही अस्त–व्यस्त हो



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि असंयम ही मनुष्य के कष्टों का कारण है।

एक तपस्वी थे । वन में रहकर घोर तप करने लगे। इंद्र घबराया, इतना कठोर तप करने वाला इंद्रासन का हकदार बन सकता है। ऐसा उपाय करना चाहिए कि तपस्वी का व्रत खंडित हो। इंद्र ने फुसलाने के लिए अप्सराएँ भेजीं, डराने को राक्षस भेजे, पर तपस्वी ज्यों की त्यों रहे, वे जरा भी डगमगाए नहीं। अब की बार इंद्र को दूसरी सूझ सूझी। वे परी का रूप धारण कर पकवान, मिष्ठान्न लेकर पहुँचने लगे। तपस्वी ने पहले तो उपेक्षा दिखाई, पीछे उनकी जीभ चटोरी हो गई। रोज उस भक्त की प्रतीक्षा करने लगे।

एक दिन वनपरी अपने घर छप्पन भोग पकवान खिलाने का निमंत्रण देने आई। उसे खाकर तपस्वी बहुत प्रसन्न हुए। परी ने कहा–''आप मेरे घर ही निवास करें। इससे भी बढ़कर भोजन कराया करूँगी।'' तपस्वी सहमत हो गए। रोज–रोज पकवान खाते थे। परी पर मुग्ध हो गए और उसके साथ गांधर्व विवाह करने पर सहमत हो गए। तप भ्रष्ट हुआ, इंद्र बहुत प्रसन्न हुए, बोले–''अन्य रस छोड़े जा सकते हैं, पर स्वाद बड़े बड़ों की साधना चट कर जाता है।''

*जैसे छलनी में दूध दुह, मूरख खुद ही पछताता है।*
*वैसे असंयमी बन मानव, जीवन रस व्यर्थ गँवाता है॥*
*फिर दीन दरिद्री बन करके अपना दुर्भाग्य बुलाता है।*
*जीवन संपदा लुटा करके, अति दुःखद पंथ अपनाता है॥*
*फिर दुःखित हृदय शृंगी बोले, हे नाथ कृपा कर बतलाएँ।*
*यह मन तो है अति ही चंचल, कैसे संयम को अपनाएँ॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*संयम को धारण करने का, कोई सरल मार्ग अब बतलाएँ।*
*सब संकट जिससे मिट जाएँ, धरती पर स्वर्ग उतर आएँ॥*
*चंचल है यह मन बहुत, भटके चारों ओर।*
*इस मृगतृष्णा का कहीं, पाता ओर न छोर॥*

**जीवनं कामधेनुर्गौः पातुं दुग्धं तदीयकम् ।**
**काठिन्यं नो सरन्ध्रेषु पात्रेषु यदि दुह्यते ॥ १। ४। १९॥**
**तर्हि सौभाग्यलाभस्तु कथं तस्याप्तुमिष्यते ।**
**असंयमस्य छिद्राणि रोद्धुं शक्यानि चेत्तदा॥ १। ४। २०॥**

हे साधको ! दुःख की बात यह है कि भ्रांतिवश मनुष्य संयम के महत्त्व को नहीं समझते। यह जीवन कामधेनु गौ है; किंतु यदि इस के दूध को छलनी में दुहोगे तो बताओ कि तुम्हें उस दूध का लाभ कैसे मिलेगा ? इस समय मनुष्य भोग विलास में जीवन बिता कर इस अमूल्य संपत्ति को नष्ट कर रहा है। प्राचीन काल में ऋषि संयमित रहते थे। हमारे गुरुदेव ने भी हिमालय जाकर साधना की थी तथा चौबीस वर्ष तक जौ की रोटी और छाछ पर रहकर जिह्वा का संयम किया। यह आप विश्वास रखिए कि जितनी शक्ति मनुष्य के भीतर है, उतनी किसी के पास नहीं है। मनुष्य को ईश्वर ने महान शक्तियाँ दी हैं। पशु नीचे को मुँह करके भोजन करते हैं, मनुष्य सिर उठाकर चलता है। ईश्वर का यही संदेश है, हे मनुष्य ! उन्नति की तरफ बढ़ो, सिर ऊँचा करके चलो, किंतु आज मनुष्य पतन की ओर जा रहा है। जितनी चालाकी, बेईमानी, भ्रष्टाचार, दुराचार आज मनुष्य में दिखाई दे रहा है, उतना पशुओं में नहीं होगा। पशु भी भूख लगने पर दूसरों को मारते हैं या भयभीत हो कर अपने प्राण बचाने के लिए हिंसा करते हैं, पर आज तो मनुष्य ही आतंकवादी हो गया है। पहले जंगल में जाते



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुए पशुओं से भय होता था। अब आदमियों का भय है। कौन जाने कब कोई किसी का अपहरण कर ले, कब सामान लूट कर मार डाले। आज व्यभिचार तथा बलात्कार की जितनी घटनाएँ दिखाई देती हैं, वे सब असंयम का दुष्परिणाम हैं। ईश्वर ने मनुष्य को आँखें दीं, इधर–उधर ऊपर, नीचे ही नहीं देखे, अपितु उसे दूरदर्शिता प्रदान की है, दिव्य दृष्टि दी कि वह भूत भविष्यत् को देखकर चले, किंतु आज तो मानव केवल आज की सोचता है। पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित होकर वह केवल खाओ, पिओ, मौज उड़ाओ का सिद्धांत ही अपना रहा है। वह अपने स्वाभिमान को भूल गया है। आज मनुष्य शरीर को ही सब कुछ समझ कर इंद्रियों के सुखों को महत्त्व देकर अपमानित, लांछित और दुःखित हो रहा है। यह जीवन पारसमणि है, कामधेनु है, कल्पवृक्ष है, इसके महत्त्व को समझो।

दो संत तीर्थयात्रा पर जा रहे थे। एक विशालकाय वृक्ष के नीचे उन्होंने आश्रय लिया और आगे बढ़े। पर्यटन के उपरांत अगले वर्ष जब वे वापस लौटे तो उन्होंने पाया कि जिस सघन वृक्ष की छाया में उन्होंने भोजन किया था, विश्राम किया था, गिरा पड़ा है। पहले ने अपने से वरिष्ठ संत से पूछा–''महात्मन् ! यह कैसे हुआ ? इतनी अल्प अवधि में यह वृक्ष कैसे गिर गया ?'' संत बोले–''तात ! यह वृक्ष छिद्रों के कारण गिरा है। प्राण था–इसका जीवन रस, जो गोंद रूप में सतत् बहता रहा। उसे पाने की लालसा में मनुष्य ने उसमें छेदकर उसे खोखला बना दिया। खोखली वस्तु कभी खड़ी नहीं रह सकती। झंझावातों को सहन न कर पाने के कारण ही इसकी यह गति हुई है।'' इस दृष्टांत के द्वारा गुरुदेव ने प्रेरणा दी है कि हे मनुष्यो, संयम सीखो।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इंद्र को असुरों से अनेक बार परास्त होना पड़ा। भगवान् की विशेष सहायता से ही ये बड़ी कठिनाई के साथ अपना इंद्रासन लौटाने में सफल हो सके। एक दिन इस बार–बार की पराजय का कारण प्रजापति से पूछा, तो उन्होंने कहा कि ऐश्वर्य की रक्षा संयम से होती है। जो वैभव पाकर प्रमाद में फँस जाते हैं, उन्हें पराभव का मुँह देखना पड़ता है। वे तुम विलासी देवताओं की तरह ठोकरें खाते रहते हैं। यह मानव शरीर अपरिमित ऐश्वर्य पूर्ण है। जो इसका संयमपूर्वक सदुपयोग कर लेते हैं, वे ही पराभव का मुँह देखने से बच जाते हैं।

देवता यदि कहीं हैं, तो हमारे ही अंदर सत्प्रवृत्तियों के रूप में व असुर हैं, तो वे भी हमारे ही अंदर पाशविक प्रवृत्तियों के रूप में हैं। जो समर्थ विवेकशील होते हैं, वे विलास उपभोग के माया जाल में न पड़कर पाशविक प्रवृत्तियों को हावी नहीं होने देते, परंतु जन साधारण तो उस मूढ़ समुदाय के समान हैं जो सब कुछ स्वयं करते हुए भी अनजान बना हुआ है और अपने दुःख–पराभव का कारण बाहर ढूँढ़ता फिरता है। ऐसों का समाधान समग्र रूप में हो सके, वे उन छिद्रों की जानकारी पा सकें, जिससे जीवनी शक्ति क्षरित होती है, तो फिर कारणों को जानकर रोकथाम की योजना भी बनाई जा सकनी संभव है।

यह सुनकर तपस्वी शृंगी ऋषि ने कहा–''भगवन ! साधारण मनुष्य संयम को कैसे अपनाएँ, क्योंकि मन बहुत चंचल है, अतः आप इसे संयम से रहने का सरल उपाय बताइए।''

यह सुनकर महाप्राज्ञ ने समझाते हुए कहा–

*हर मानव को परमेश्वर ने, जो चार शक्ति दे डाली हैं।*
*ये महाशक्तियाँ जन–जन का सौभाग्य बनाने वाली हैं॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*इंद्रिय संयम है सर्वप्रथम, जिससे यह नर सुख पाता है।*
*इसके अभाव में तो मानव, बस नर पशु ही बन जाता है॥*
*है समय संयम भी आवश्यक, जो इसको समझ न पाता है।*
*अनमोल समय को खो करके, वह अंत समय पछताता है॥*
*साधन संपत्ति पाकर भी, जो इसको व्यर्थ गँवाता है।*
*मिलता न उसे सम्मान कहीं, वह नर पशु ही कहलाता है॥*
*हैं चार प्रकार के ये संयम, जो नर इनको अपनाते हैं।*
*देवत्त्व जगाकर जीवन में, धरती को स्वर्ग बनाते हैं॥*
*उन चार निधि को पाकर के, बना मनुज धनवान।*
*इनके संयम से सदा, करता वह उत्थान॥*

**प्रसन्नमुद्रयोवाच सम्पदो जीवनस्य तु।**
**क्षेत्राणि संति चत्वारि श्रूयतां तन्मुनीश्वराः॥ १। ४। २७॥**
**शक्तिरिन्द्रियसम्बद्धा शक्तिः समयसंयुता।**
**विचारशक्तिस्तुर्या च शक्तिः साधनरूपिणी॥ १। ४। २८॥**

श्रोताओं की जिज्ञासा को शांत करते हुए प्रसन्न मुद्रा में महाप्राज्ञ ने कहा–''हे देवताओ ! जीवन में चार प्रकार की शक्ति ईश्वर ने प्रत्येक मानव को दी हैं। १. इंद्रिय शक्ति, २. समय शक्ति, ३. विचार शक्ति तथा ४. साधन शक्ति । इनमें से तीन ईश्वर प्रदत्त हैं तथा चौथी शक्ति को अर्जित किया जाता है, और इन चारों शक्तियों का सदुपयोग करना ही संयम कहलाता है। इन चारों में सबसे पहले इंद्रिय संयम है। हे संतो ! परमपिता परमात्मा ने यह मानव शरीर कितना सुंदर बनाया है, जरा सोचिए, आदमी की एक आँख आगे और एक पीछे होती तो ? एक कान सिर के ऊपर और दूसरा पीछे होता तो ? नाक हाथी की सूँड़ जैसी होती और बंदर की पूँछ के समान पूँछ होती, तो कैसा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगता ? यह तो रही बाहर की बात और अंदर देखिए। मनुष्य की दो आँखें झील के समान पारदर्शी, कैमरे के समान दूर तक की वस्तुओं को हृदय पटल पर अंकित करने में समर्थ हैं। अब से दस–बीस वर्ष पहले की भी सब बातें सोचने पर ऐसे सामने आ जाती हैं जैसे कल ही उन्हें देखा हो। ये कान टेलीफोन की भाँति सबकी बातें सुनते हैं और किसी की मधुर वाणी, किसी की कर्कश वाणी को मस्तिष्क के कैसेट में ऐसे टेप करके रख देते हैं कि भूलना चाहें, तो भी न भूल सकें। ये नासिका के दो छिद्र दिन–रात फेंफड़ों को ऑक्सीजन देते रहते हैं। कौन–सी ऐसी मशीन है जो किसी व्यक्ति को दिन–रात इस तरह जीवन देती रहती हो। यह मस्तिष्क कितना बड़ा टेप रिकार्डर है। यदि मानव योग शक्ति द्वारा सिद्धि प्राप्त कर ले, तो सात जन्मों की बात याद रहती है तथा भविष्य में अगले जन्मों का होना बता सकते हैं। ये दो हाथ छोटी से छोटी सुई को भी पकड़ सकते हैं और बड़ी से बड़ी वस्तु को भी। ये पैर ऊपर–नीचे, अंदर–बाहर और चलते–चलते कहीं से कहीं पहुँचा दें, न पेट्रोल चाहिए और न डीजल। ये बिना पहियों की गाड़ी कितनी अनमोल है और यह हृदय भगवान का मन मंदिर, शिव का मान सरोवर, कैलाश पर्वत, विष्णु धाम, उनका क्षीरसागर, भगवान कृष्ण का वृंदावन, राम की नगरी अयोध्या है। इसी में भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम्, सात लोक सजाए हैं, भू में कुंडलिनी की सुप्तावस्था का रूप जब जागता है, तो सात चक्र पार कर मस्तिष्क में सहस्त्र चक्र में जा मिलती है, जहाँ शिव समाधिस्थ हैं। जहाँ सहस्त्र दल कमल विकसित होकर नर को नारायण बना देता है। इस अमूल्य संपत्ति को पाकर भी जो इसे पहचान नहीं सकता, वह अभागा ही कहा जाएगा। जैसे किसी संत के पास एक व्यक्ति पहुँचकर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहने लगा–मैं बहुत गरीब हूँ, मुझे कहीं से कुछ दिलवा दीजिए। महात्मा जी ने कहा–''देखो ! एक राजा का बेटा अंधा है, तुम अपनी दोनों आँखें उसे दे दो, तो वह तुम्हें बीस लाख दे सकता है।'' यह सुनकर वह आदमी बोला–''लेकिन अंधा होकर मैं क्या करूँगा ? यह नहीं हो सकता।'' महात्मा ने कहा–एक सेठ का बेटा गूँगा है, उसे अपनी जीभ दे दो, वह बदले में मालामाल कर देगा। अगर वह भी नहीं दे सकते, तो अपने हाथ किसी लूले को, पैर किसी लँगड़े को दे दो। आजकल तो दिल और किडनी भी बिकने लगे हैं। अखबार में विज्ञापन निकलते हैं। बोलो, तुम क्या दे सकते हो ? यह सुनकर वह व्यक्ति बोला–''यह सब तो मैं नहीं दे सकता।'' महात्मा जी ने कहा–''अरे मूर्ख, तेरे पास हाथ, पैर, आँख, कान, नाक, हृदय ये सब ईश्वर की दी हुई अनमोल निधि हैं। तू लखपति नहीं करोड़पति है, फिर भी भीख माँगता फिर रहा है।'' कहने का तात्पर्य यह है कि हम ईश्वर प्रदत्त इन वस्तुओं का मूल्य नहीं समझते और अपने को दीन–हीन कहकर लांछित होते हैं। दुर्भाग्य ही है कि हमने इस अनमोल खजाने को लूटने वाले काम, क्रोध, लोभ, मोह के पहरेदार बिठा दिए हैं, दूध, मलाई की रखवाली के लिए बिल्ली को ही बिठा दिया है और फिर रोना रोते हैं । मानवी उन्मत्तता ने मनुष्य को पशु से भी बदतर बना दिया है।

विधाता ने मनुष्य को सर्व साधन संपन्न बनाकर धरती पर भेजा है, पर उसे शांति न मिली। अशांति के अनेक कारण उसे त्रास देने लगे।

मनुष्य फिर से विधाता के पास पहुँचा और कहा–''कृपा कर कुछ देवदूत भेज दीजिए, जिससे हमारी व्यथा दूर हो।'' विधाता ने देवता



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भेजे, वे शांति करने के उपाय संयम और कर्त्तव्य के रूप में समझाते रहे। किसी ने उनका परामर्श न सुना और अपनी ही बात कहते रहे। देवता दुखी होकर लौट गए। मनुष्य फिर पहुँचा और देवताओं से सहायता करने के लिए इस बार और भी विनयपर्वूक अनुरोध किया।

विधाता ने सशर्त सहायता प्रतिबंध लगा दिया, जो संयमशीलता, कर्त्तव्यपरायणता अपनाएँगे, उन्हीं को देवताओं की सहायता मिल सकेगी। तब से वही क्रम चला आ रहा है, जो शर्त पूरी करते हैं, उन्हें ही देवता सुख–शांति प्रदान करते हैं। वे दुर्भाग्यशाली हैं, जो प्रभु के संदेश की अवहेलना करके जीवन रूपी अक्षय संपदा को सतत् लुटाते और आँसू बहाते रहते हैं।

*भोजन के असंयम के कारण, मानव रोगी हो जाता है।*
*संस्कार बदलते हैं मन के, चोरी का अन्न यदि खाता है॥*
*कटु वचन, असत्य भाषण से तो, अच्छा है बस चुप ही रहना।*
*तूफान की भीषण आँधी में, मुश्किल है दीपक का जलना॥*
*कटु वचनों के उच्चारण से, जब घाव हृदय में बनता है।*
*तब द्रौपदी चीर–हरण होता, सीता को रावण हरता है॥*
*कटु वचनों को बोलकर, जो दे सबको त्रास।*
*उसकी सब निन्दा करें, जग में हो उपहास॥*

**इन्द्रियेषु दशस्वेव प्रधाने द्वे तथेन्द्रिये।**
**जिह्वोपस्थेति संज्ञे चाऽऽहारे जिह्वा विवेकता:॥ १। ४। ३०॥**
**जिह्वाऽसंयमजोऽजीर्णो दौर्बल्यं वर्धते यत:।**
**रतिकर्मणि तथाऽऽतुर्यमयोग्यां संततिं तथा॥ १। ४। ३३॥**

इंद्रिय संयम का महत्त्व बताते हुए युग ऋषि कहते हैं कि हे संतो ! इन दस इंद्रियों में जिह्वा सबसे महत्त्वपूर्ण है। हाथ, पैर, आँख,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कान सभी दो हैं, पर उनका काम एक ही है, लेकिन जिह्वा एक ही है, पर उसके काम दो हैं, एक भोजन का आस्वादन और दूसरा बोलना। इन दोनों का संयम ही मनुष्य के जीवन को प्रभावित करने वाला है। भोजन का असंयम शरीर को अस्वस्थ बनाता है, तो दूसरी और मन के विचार को भी प्रभावित करता है। जैसा होगा अन्न, वैसा होगा मन। जैसा पीओ पानी, वैसी बोलो वाणी। इस समय मनुष्यों के रोगी होने का मुख्य कारण भोजन का असंयम है। हमें क्या खाना चाहिए ? किस प्रकार खाना चाहिए ? भोजन जीवित रहने के लिए करें अथवा भोजन के लिए ही जीवित रहें, यह प्रश्न विचारणीय है। आज भोजन केवल स्वाद के लिए किया जाता है। पेट बेचारे के मना करने पर भी जीभ ललचाती रहती है कि एक रसगुल्ला तो और खा लें। एक पंडित जी भोजन का निमंत्रण पाकर भोजन के लिए गए और आए तो पेट में बहुत दर्द था। वैद्य जी को बुलाया तो उन्होंने एक गोली खाने को दी। गोली देखकर पंडित जी बोले–''यदि गोली की ही जगह होती तो एक रसगुल्ला और न खा लेता।''

यह सुनकर सब हँसने लगे। शृंगी ऋषि ने कहा–''हे तपोनिधे ! आप पीपल के पत्तों और फलों पर जीवन निर्वाह कर लेते हैं, किंतु सर्वसाधारण के लिए तो यह संभव नहीं है, अतः आप कुछ ऐसा उपाय बताएँ कि जिससे प्रत्येक मानव को लाभ हो।''

मृदुल हास्य बिखेरते हुए ब्रह्मनिष्ठ महर्षि जी ने कहा–''हे ऋषि शृंगी जी ! तपस्या तो आपकी भी कम नहीं है, किंतु फिर भी आपने सर्वसाधारण की दृष्टि से बहुत सुंदर प्रश्न पूछा है। भोजन करते समय जिन बातों का ध्यान रखना चाहिए, वह मैं आपको कथा के माध्यम से बताता हूँ।''



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धनवंतरि एक बार पक्षी बनकर काशी में वाग्भट्ट को उपदेश देने आए थे। जब उन्होंने पूछा–'कोऽरुक्' स्वस्थ कौन रहता है? तो पक्षी रूप में धनवंतरि बोले–मित्भुक्, ऋत्भुक्, हितभुक् अर्थात् कम, ऋतु के अनुकूल और उपयोगी भोजन करने वाला स्वस्थ रहता है।

मिताहार की महत्ता आरोग्य विज्ञान एवं अध्यात्म विद्या दोनों में ही समान है। आहार उतना ही करें जितना शरीर निर्वाह के लिए जरूरी है। आहार से रक्त–माँस ही नहीं विचार संस्थान और अंतःकरण भी प्रभावित होते हैं। चित्त की चंचलता, मनोविकार उभारने, अनीति की ओर बढ़ाने में अनुपयुक्त आहार की प्रधान भूमिका रहती है।

एक सेठ जी खाँसी से परेशान थे। वैद्य जी के पास गए, तो वैद्य जी ने परहेज करने को कहा। सेठ जी ने कहा–''आप दवा चाहे जितनी कड़वी दे दें, पर मैं परहेज नहीं कर सकता।'' वैद्य जी ने कहा–फिर आप परहेज भी मत कीजिए, दवा भी मत लीजिए, क्योंकि खाँसी से तीन लाभ तो आपको होंगे ही। एक लाभ तो यह है कि रात भर आप खाँसते रहेंगे, तो घर में चोर नहीं आएँगे। दूसरे आपको कुत्ते नहीं काटेंगे, क्योंकि कमजोरी के कारण आप बिना लाठी नहीं चल सकेंगे। तीसरा लाभ यह है कि बुढ़ापा नहीं आएगा, क्योंकि खाँसी के कारण जीवन जल्दी ही समाप्त हो जाएगा। यह सुनकर सेठ जी की समझ में बात आ गई और उन्होंने खाने–पीने पर नियंत्रण कर अपने को स्वस्थ कर लिया। हकीम लुकमान कहते थे कि भोजन का असंयम कर मनुष्य अपनी जीभ से अपनी कब्र खोदता है।

**प्रज्ञा गीत**

कर रहा है मनुज पाप किनके लिए।
जिंदगी है अरे चार दिन के लिए॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तृप्त होती कभी भी न ये इंद्रियाँ,
चाट जाती सभी भोग सामग्रियाँ।
ये न छकती भले सौ बरस भी जिए।
जिंदगी है अरे चार दिन के लिए॥

लाड़ले पुत्र ये लाड़ली पुत्रियाँ,
और अनुचित उचित माँग की पूर्तियाँ।
व्यर्थ कोल्हु बनें आप उनके लिए।
जिंदगी है अरे चार दिन के लिए॥

एक दिन शक्ति का स्रोत चुक जाएगा।
श्वाँस का सिलसिला जबकि रुक जाएगा॥
फूँक देंगे जिए आप जिनके लिए।
जिंदगी है अरे चार दिन के लिए॥

यह मनुज जन्म क्या इसलिए ही मिला।
भोग का वासना का चले सिलसिला॥
क्या विचारा कभी एक क्षण के लिए।
जिंदगी है अरे चार दिन के लिए॥

और भी हैं कोई चाहते प्यार जो,
चाहते आपके स्नेह की धार को॥
बूंद भी क्या नहीं दीन जन के लिए।
जिंदगी है अरे चार दिन के लिए॥

दीन को आपका यदि सहारा मिले,
डूबते को सहज ही किनारा मिले।
अंश ही दान दें युग सृजन के लिए।
जिंदगी है अरे चार दिन के लिए॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भोजन का प्रभाव केवल शरीर पर ही नहीं, मन पर भी पड़ता है, अतः यह ध्यान रखना आवश्यक है कि क्या खाएँ, क्यों खाएँ, कहाँ खाएँ, कब खाएँ, कितना खाएँ और किसका खाएँ ? गुरुदेव कहते थे कि कम खाओ और गम खाओ। भूख से एक रोटी कम खाओ। रोटी पियो और सब्जी खाओ। भोज़न का प्रभाव मन पर अवश्य पड़ता है ?

एक बार एक बड़े त्यागी महात्मा कहीं धर्मोपदेश करने गए और वहाँ से एक सोने का हार चुरा लाए। तीसरे दिन वे बड़े दुःखी मन से वहाँ पहुँचे और हार लौटाते हुए क्षमा माँगी। गृहस्थ को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने त्यागी और विद्वान होते हुए भी क्यों इन्होंने हार चुराया और क्यों लौटाने आए ?

महात्मा जी ने बताया कि उस दिन उन्होंने जिस व्यक्ति के यहाँ से भिक्षा ली थी, वह चोर था। उसका अन्न भी चोरी से लाया हुआ था। उसे खाने से मेरी बुद्धि में चोरी के संस्कार पैदा हुए। इसके बाद दस्त शुरू हो गए और अन्न पेट से बाहर निकल गया। तब सुबुद्धि लौटी तथा आपके हार को लौटाने आया हूँ।

जिह्वा का दूसरा कार्य है—वार्तालाप। वाणी के संयम से बोले हुए प्यार के दो शब्द मनुष्य को अपना बना लेते हैं। इसके विपरीत कटु वाणी अपनों को भी बेगाना बना देती है। आज वाणी के द्वारा माँ सरस्वती का बहुत अपमान हो रहा है। खुशामद तथा चापलूसी का बोलबाला है। सत्य वचन कहने से मनुष्य को डर लगता है। पहले लोग झूठ बोलते डरते थे कि भगवान के घर जाना है, झूठ कैसे बोलें, आज सत्य बोलते डरते हैं, गुण्डों के खिलाफ गवाही दे दी तो वे हमारे ही पीछे पड़ जाएँगे।

अतः इस संसार में सारे झगड़ों की जड़ जिह्वा है। द्रोपदी के



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठोर वचनों के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ। विश्वकर्मा ने हस्तिनापुर में पांडवों के लिए जो भवन बनवाया वह अद्वितीय था। उसमें जहाँ भूमि थी वह तालाब जैसी प्रतीत होती थी और जहाँ जल से भरा सरोवर था, वहाँ पर भूमि जैसी प्रतीत होती थी। जब दुर्योधन अपने भाइयों के साथ उस महल को देखने आया तो जहाँ भूमि थी उसे सरोवर समझकर उसने अपनी धोती को संभाला और जहाँ जल का तालाब था उसे भूमि समझकर वह चला तो धड़ाम से उसमें गिर गया। द्रोपदी ऊपर के झरोखों से यह देख रही थी। वह खिलखिलाकर हँस पड़ी और उसने कहा कि अंधों की संतान भी अंधी ही होती है। यह बात दुर्योधन को चुभ गई और उसने तभी द्रोपदी और पांडवों से इस अपमान का बदला लेने का निश्चय कर लिया। संभवतः इसी अपमान का बदला लेने के लिए उसने द्रोपदी का चीरहरण करवाया। अतः कटु वचन संसार का सबसे भयानक शस्त्र है, जिसका घाव कभी नहीं भरता। सीता जी पंचवटी में लक्ष्मण को अपशब्द न कहतीं, तो वे कुटी छोड़कर न जाते और न सीता को रावण हरण कर ले जाता। अतः जिह्वा पर नियंत्रण आवश्यक है। इसीलिए कहा है–

**ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।**
**औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय॥**

भाइयों और बहनों ! यह जिह्वा वाणी की भी भूमिका संपन्न करती है। वाणी का स्तर ही मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव का परिचायक होता है। वाणी सुसंस्कृत हो तो जीवन देवता का शृंगार कर देती है।

वन विहार के लिए आए हुए राजा का जहाँ पड़ाव था, उसी के पास एक कुएँ पर एक अंधा कुएँ से जल निकाल कर यात्रियों को पिलाया करता था। राजा को प्यास लगी, उसने सिपाही को पानी लाने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के लिए भेजा। सिपाही वहाँ जाकर बोला–''ऐ अंधे, एक लोटा जल इधर दे।''सूरदास ने कहा–''जा भाग, तुझ जैसे मूर्ख नौकर को पानी नही देता।'' सिपाही खीझ कर वापस लौट गया। अब प्रधान सेनापति स्वयं वहाँ पहुँचे और कहा–''अंधे भाई, एक लोटा जल शीघ्रता से दे दो।'' अंधे ने सोचा–''कपटी मीठा बोलता है, लगता है पहले वाले का सरदार है। उसने कहा–'मेरे पास तेरे लिए पानी नहीं।'' दोनों ने राजा से शिकायत की, महाराज ! बुड्ढा पानी नहीं देता। राजा उन दोनों को लेकर स्वयं वहाँ पहुँचा और नमस्कार कर कहा–''बाबा जी ! प्यास से गला सूख रहा है। थोड़ा जल दें, तो प्यास बुझाएँ।'' अंधे ने कहा–''महाराज ! बैठिए, अभी जल पिलाता हूँ।''

राजा ने पूछा–''महात्मन् ! आपने चक्षुहीन होकर भी यह कैसे जाना कि एक नौकर, दूसरा सरदार और मैं राजा हूँ।''

बुड्ढे ने हँसकर कहा–''व्यक्ति की वाणी से उसके व्यक्तित्व का पता लग जाता है।''

वाणी के बाद दूसरी इंद्रियों में वासनात्मक प्रवृत्ति प्रमुख है, जिस पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। वासना पर नियंत्रण रखने वाला समाज में पूज्य होता है तथा वासना के वशीभूत होने वाले व्यक्ति पशुवत् जीवन बिताते हैं। इतिहास साक्षी है कि इंद्रियों को वश में रखने पर ही मनुष्य महान् बनते हैं। हमारे ऋषि संयम से रहते थे। ब्रह्मचर्य की महत्ता इसीलिए बताई गई है कि शरीर की शक्ति तथा मनोगत प्रतिभा शक्ति को विकसित किया जा सके। शक्ति स्रोत संयमी ही पा सकते हैं।

शिवाजी के सैनिक शत्रु पक्ष की एक युवा विवाहिता को पकड़ कर लाए और उसे शिवाजी के सामने प्रस्तुत किया। सोचा बदला चुकाने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिए वही तरीका अपनाना चाहिए, जो शत्रु अपनाता रहता है। यह सोचकर वे उसे लाए थे।

शिवाजी ने ध्यानपूर्वक युवती को देखा, मुस्काए और ससम्मान उसके घर तक पहुँचा आने की सैनिकों को आज्ञा दी। विदा करते हुए शिवाजी ने अपने दरबारियों से कहा–''काश, मेरी माता जीजाबाई इतनी सुंदर होतीं, तो आज मैं भी इतना ही सुंदर होता।''

महात्मा गाँधी ने अपनी पत्नी को बा कहकर संबोधित किया तथा पूज्य गुरुदेव भी वंदनीया माताजी को माताजी ही कहकर पुकारते थे। समस्त स्त्री जाति के प्रति श्रद्धाभाव एवं मातृवत् दृष्टिकोण रखना ही सच्चा संयम है। परमहंस माँ शारदा को माँ कहकर पुकारते थे। अतः ये सब महापुरुष अपने इस स्वस्थ दृष्टिकोण के कारण ही विश्ववंद्य बन सके हैं।

*आलस प्रमाद में पड़ करके, जो व्यर्थ समय को खोते हैं।*
*वे जीवन व्यर्थ गँवा करके, फिर अंत समय में रोते है॥*
*उपयोग समय का जो करते, जग उनकी पूजा करता है।*
*वे महापुरुष बन जाते हैं, सौभाग्य उन्हीं का जगता है॥*
*उनके जीवन में सुख–सुविधा, और पुण्य सदा ही बढ़ते हैं।*
*वे सिद्ध योगियों के समान, अपनी मंजिल पर चढ़ते हैं॥*
*जन्म सफल यदि चाहो तो, रखो समय का ध्यान।*
*कर्त्तव्यों की पूर्ति से, जग का करो कल्याण॥*

**संयमे समयस्यापि शैथिल्ये मानवस्ततः ।**
**अलसश्च प्रमादी च भवत्येतदवेहि तु ॥ १।४।३५॥**
**क्रियतेऽनियमितं यत्तदपूर्णं शिष्यते ध्रुवम्।**
**समयस्योपयोगस्तु योजितेन श्रमेण हि ॥ १।४।३६॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दूसरा संयम समय का है। समय ईश्वर की दी हुई अनमोल संपत्ति है, प्रत्येक व्यक्ति को भगवान ने निश्चित समय दिया है। समय व्यर्थ खोने वाला जीवन व्यर्थ खो देता है। गया हुआ समय हजार लाख प्रयत्न करने पर भी वापिस नहीं आता। समय का तात्पर्य है, अवसर। अवसर को पहचानने वाले अमर हो जाते हैं। कौन व्यक्ति कितने दिन जिया, इस बात का महत्त्व नहीं, महत्त्वपूर्ण तो यह है कि उसने अपने थोड़े से जीवन में कितना काम किया, शंकराचार्य केवल ३२ वर्ष के थे, विवेकानंद ने मात्र ३६ वर्ष की स्वल्प आयु पाई, स्वामी रामतीर्थ तैंतीस वर्ष की आयु में ही चले गए, शहीद भगतसिंह एवं झाँसी की रानी केवल २३ वर्ष की अल्पायु में ही शहीद हो गए, किंतु इस कम आयु में समय का सदुपयोग कर अमर हो गए। हमारे गुरुदेव ने ८० वर्ष की आयु में ४०० वर्ष का जीवन जिया है। महापुरुष जीवन का एक क्षण भी नष्ट नहीं करते, इसीलिए वे महान बनते हैं। अतः सावधान हो जाओ, मृत्यु का हिमपात होने वाला है। इस समय महाकाल की आवाज को सुनो। युग की पुकार सुनकर कर्म क्षेत्र में कुछ करो और अपना जीवन सफल बना लो। समय की पुकार सुनकर मरने वाले कभी नहीं मरते। हनुमान, अर्जुन, कृष्ण के गोप ग्वाले, गांधी जी के स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने अवसर को पहचाना, वे सब अमर हो गए। आइए हम भी लक्ष्य के प्रति समर्पित हो जाएँ। सतयुग की वापसी निकट है।

सतयुग धरती की ओर बढ़ रहा था। यह देखकर कलियुग ने अपने सहायकों की सभा बुलाई। किसी ने कहा–''मैं पृथ्वी पर जाकर धन का लालच फैला दूँगा।'' किसी ने कहा–''हम लोगों को कामनाओं में फँसा देंगे।'' पर कलि को संतोष न हुआ। एक बुड्ढा सहायक एक



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कोने में बैठा था। वह बोला–मैं जाकर लोगों में निराशा और आलस्य पैदा कर दूँगा, उनके साहस को नष्ट कर दूँगा, बस फिर वे किसी काम के न रहेंगे। न वे किसी बुराई को दूर करने के लिए संघर्ष कर सकेंगे और न किसी अच्छाई को उपार्जित करने का साहस उनमें रहेगा। इस वृद्ध सहायक की बात कलि महाराज को बहुत पसंद आई और उसे अपना प्रधानमंत्री बना दिया। आज के निराश और आलसी लोग कलि महाराज की प्रजा बने हुए हैं। इन परिस्थितियों में बेचारा सतयुग ठहरता ही कहाँ ?

*दूध–दही के मंथन से, नवनीत विज्ञ जन पाते हैं।*
*प्राणों का मंथन कर योगी, कुण्डलिनी शक्ति जगाते हैं॥*
*करते हैं अरणि मंथन तो, यज्ञाग्नि प्रकट हो जाती है।*
*चिंतन का मंथन चलता है, तो बात समझ में आती है॥*
*यदि मन में ही हो दुश्चिंतन, तो देव दनुज बन जाते हैं।*
*पर सत्चिंतन के कारण ही, तो मनुज देव कहलाते हैं॥*
*हैं विश्वंभर मानव ऐसे, सब उनका ही यश गाते हैं॥*
*जो दीन दुःखी के सम्बल बन, भूलों को राह दिखाते हैं।*
*सागर मंथन जब हुआ, निकले रत्न अनेक।*
*मंथन करो सुविचार का, जाग्रत करो विवेक॥*

**सूक्ष्मस्तरस्य कर्मास्ति विचारः कार्यरूपकः।**
**युज्यात्सत्सु विचारणां प्रवाहं समयं यथा॥ १।४।४२॥**
**उपयोगिनां विचाराणामुत्कृष्टानां च सीम्नि चेत्।**
**चिन्तनं सीमितं याति ह्युद्देश्ये सृजनात्मके॥ १।४।४३॥**

विचार संयम का महत्त्व समझाने के लिए युग ऋषि कहते हैं कि विचार ही कार्य का मूल रूप है। जो जैसा सोचता है, वैसा कार्य करता



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है और वैसा ही बन जाता है। इंद्रिय संयम तथा समय संयम भी विचार संयम पर ही निर्भर है। विचारों की निकृष्टता ही असंयम का तीसरा छिद्र है।

देव शर्मा के घर में पुत्र ने जन्म लिया। उसी दिन एक नेवली ने भी नेवले को जन्म दिया। दयावश ब्राह्मणी ने उस बच्चे को पाल लिया। दोनों बच्चों में बड़ा प्रेम था। एक दिन ब्राह्मणी पानी भरने चली गई। बच्चा सो रहा था। नेवला भी पास ही बैठा था। दैवयोग से एक सर्प निकला और बच्चे को काटने के लिए लपका। नेवले ने यह देखा तो साँप के टुकड़े–टुकड़े कर डाले। उसके मुँह में खून लग गया। वह इसी अवस्था में मालकिन को दिखाने के लिए कुँए की ओर दौड़ा। द्वार पर ही ब्राह्मणी मिल गई। नेवले के मुँह में खून लगा देखकर उसने सोचा, यह बच्चे को काटकर आया है। यह विचार आते ही उसने भरा हुआ घड़ा नेवले के ऊपर दे मारा, नेवला मर गया। घर जाकर ब्राह्मणी ने सारी बात समझी तो उसे बड़ा पश्चाताप हुआ। इसलिए बिना विचारे कोई काम नहीं करना चाहिए।

अविवेक समस्त आपत्तियों का जन्मदाता है। इस समय गुरुदेव ने विचार क्रांति अभियान शुरू किया है, विचार की क्रांति से युग निर्माण होगा। जब तक मन में दृढ़ संकल्प नहीं होगा, मनुष्य हाथ पर हाथ रखकर बैठा रहेगा या अशुभ चिंतन से गलत कार्य करेगा तो पृथ्वी पर अत्याचार–अनाचार ही बढ़ेगा। आज का आतंकवाद–भ्रष्टाचार, दुर्विचारों का ही दुष्परिणाम है। विचारों को संयमित करने के लिए उन्हें किसी उद्देश्य से जोड़ देना चाहिए। लक्ष्य पूर्ति के लिए अर्जुन की भाँति केवल मछली की आँख पर ही ध्यान रखने की आवश्यकता है। विचारशक्ति के चमत्कार तभी दिखाई देते हैं,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसके लिए मन का संयम आवश्यक है। विचार अपने आप में चिकित्सा है, विचारों के द्वारा ही मन के रोग दूर किए जा सकते हैं।

विचार यदि अस्त–व्यस्त हों तो उसके क्या परिणाम होते हैं, इसे समझाते हुए संत एकनाथ ने एक कथा सुनाई–

एक मनुष्य किसी गाँव को जा रहा था। धूप–प्यास का मारा वह एक पेड़ के नीचे विश्राम करने को लेट गया। पेड़ की ठंडी छाया में उसका मन बड़ा प्रसन्न हुआ। वह कल्पना करने लगा ''काश ! यहाँ पीने के लिए पानी होता।'' इतने में ही उसने देखा कि एक ठंडा पानी का झरना फूट पड़ा। उसने पानी पिया, प्यास बुझाई। फिर उसने सोचा कुछ खाने को होता, तो कितना अच्छा होता ? इतने में ही एक स्वादिष्ट पदार्थों से भरा हुआ थाल आ गया। उसने भोजन करके सोने के लिए शैय्या की कल्पना की तो एक पलंग वस्त्र बिछा हुआ दिखाई दिया। इन सब घटनाक्रमों से उसे भय हुआ कि कहीं यहाँ कोई मायावी राक्षस तो नहीं है। इतने में ही एक राक्षस सामने आ खड़ा हुआ। 'यह मुझे खा न जाए' इस विचार के साथ ही वह राक्षस उस यात्री को खा गया। वस्तुतः वह वृक्ष कल्पवृक्ष था, जो मन की इच्छा के अनुसार फल देता था। मनुष्य का चिंतन एवं मनोबल एक प्रकार से कल्पवृक्ष ही है। उसका सदुपयोग करने वाला जीवन लक्ष्य की प्राप्ति का अभीष्ट उद्देश्य पूर्ण कर सकता है।

*प्रभुता की चाह बहुत भारी, पर प्रभु से जुड़ा नहीं जाता।*
*देने से दुःख होता जिनको, केवल लेना ही है आता॥*
*वे दुश्चिंतन से प्रेरित हो, भीषण अनीति अपनाते हैं।*
*शोषण, उत्पीड़न कर जीवन भर, नर पिशाच बन जाते हैं॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*ऐसे मानव धरती माँ को, केवल पीड़ित ही करते हैं।*
*उनसे तो पशु ही अच्छे हैं, जो मानव का हित करते हैं॥*
*कर्त्तव्यपरायण मानव ही, बस कर्मयोगी कहलाते हैं॥*
*प्रभु दीनबंधु, करुणासिंधु, उन्हें स्वयं ढूँढ़ने आते हैं।*
*दुष्कर्मों को छोड़ कर, करो धर्म से प्रीत।*
*तो निश्चित हो जाएगी, मानवता की जीत॥*

**धनार्जने यथा बुद्धिरपेक्षः व्ययकर्मणि।**
**ततोऽधिकैव सापेक्ष्या तत्रौचित्यस्य निश्चये॥ १। ४। ५४॥**
**उपेक्षा नार्जने कार्या न चानीतिर्व्यये तथा।**
**सामान्यता–साधुता–सत्परिणामान् विचिन्तयेत्॥ १। ४। ५५॥**

साधन संपदा पर प्रकाश डालते हुए पूज्यश्री ने कहा–हे भद्रजनो ! इंद्रिय शक्ति, समय शक्ति तथा विचार शक्ति तो ईश्वर प्रदत्त है, किंतु साधन संपदा स्वयं इन तीनों के सामूहिक प्रयत्न से पुरुषार्थ द्वारा अर्जित करनी पड़ती है। इस पुरुषार्थ का प्रत्यक्ष फल धन है, अतः धन का सदुपयोग करना ही मानव का परम धर्म है। परिश्रम तो गधे, घोड़े व चोर भी करते हैं, किंतु कोई उनकी प्रशंसा नहीं करता। आज के दूषित वातावरण में धन का बहुत दुरुपयोग किया जा रहा है। आज के युग में भ्रष्टाचार का मुख्य कारण धन का दुरुपयोग ही है। भाई–भाई के झगड़े, पारिवारिक कलह, सामाजिक अपराध धन को लेकर ही होते रहते हैं। धन को कमाने में जितनी बुद्धिमत्ता की आवश्यकता है, उससे कहीं ज्यादा अधिक बुद्धिमानी उसे खर्च करने में लगानी पड़ती है।

तीन चोरों को एक जगह चोरी करने पर काफी धन मिला। जंगल में जाकर उसे बाँटने का विचार किया, लेकिन तीनों ही कई दिनों के



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूखे–प्यासे थे, इसलिए बँटवारा करने से पूर्व भोजन की बात तय हुई। एक व्यक्ति पास के नगर से खाद्य पदार्थ लेने गया, दूसरा पास के सरोवर से जल। एक धन की रखवाली के लिए ठहर गया। तीनों के मन में लोभ की दुर्भावना बढ़ी, प्रत्येक सोचने लगा–''क्यों न दो का सफाया करके मैं स्वयं ही धन का मालिक बन जाऊँ।'' अब क्या था–एक ने भोजन में विष मिला दिया, दूसरे ने पानी में और तीसरे ने शस्त्र का सहारा लिया। उसने एक–एक करके भोजन और पानी लाने वाले साथी को आते ही तलवार से मौत के घाट उतार दिया। वह स्वयं भोजन करने लगा और कुछ ही समय में विष के प्रभाव से मर गया। तीनों मर गए, धन पड़ा ही रहा गया।

अपने लिए आवश्यकता के अनुसार धन रखकर बाकी सब समाज के हित में लगाने वाले ही महान् कहलाते हैं।

मथुरा के समीप एक छोटे गाँव की बाल विधवा ने सारे दिन चक्की चलाकर दो आना रोज कमाने और गुजारा करने का नियम बनाया था। वह जीवन भर निभा। उन दिनों के दो आनों की कीमत आज की अपेक्षा कई गुना मानी जा सकती है। दो पैसे रोज उसने इसी दो आने में से नियमित रूप से परमार्थ के लिए बचाए और वृद्धावस्था तक इस एक हजार की राशि से मथुरा–देहली मार्ग पर एक पक्का कुआँ बनवा दिया। मधुर, शीतल, आरोग्यवर्द्धक जल वाला यह कुआँ 'पिसनहारी का कुआँ' नाम से प्रख्यात है, जो इसका इतिहास सुनता है, शीतल जल पीता है, उसकी अंतरात्मा अनायास ही उस स्वर्गस्थ उदार देवात्मा की स्मृति में भाव भरी श्रद्धांजलि पुलकित मन से चढ़ाती चली जाती है। यदि भावना हो, अंतः से उदारमना वृत्ति प्रकट हो सके, तो परमार्थ के लिए क्या कुछ नहीं किया जा सकता।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकृति भी यही संदेश दे रही है। समुद्र का जल पानी बन कर बरसता है, तो नदियाँ दूना जल लेकर पुनः उसे जल से भर देती हैं। भौतिक उन्नति हो या आत्मिक दोनों ही क्षेत्र में धन के अपव्यय करने की तनिक भी छूट नहीं है। धन की सार्थकता इसी में है कि उसे गरीब दीन–दुखियों की आवश्यकता के लिए खर्च किया जाए। उसका दुरुपयोग करने से वह घातक बन जाता है।

एक धनपति था। वह नित्य ही एक घृत दीप जलाकर मंदिर में रख आता था। एक निर्धन था। वह सरसों के तेल का दीपक जलाकर नित्य अपनी गली में रख देता था। वह अंधेरी गली थी। दोनों मर कर यमलोक पहुँचे, तो धन कुबेर को निम्न स्थिति की सुविधाएँ दी गईं और निर्धन को उच्च श्रेणी की। यह व्यवस्था देखी तो धन कुबेर ने धर्मराज से पूछा–''यह भेद क्यों, जब कि मैं भगवान के मंदिर में दीपक जलाता था, वह भी घी का।''

धर्मराज मुस्कराए, बोले–''पुण्य की महत्ता मूल्य के आधार पर नहीं, कार्य की उपयोगिता के आधार पर होती है। मंदिर तो पहले से ही प्रकाशवान था। उस व्यक्ति ने ऐसे स्थान पर प्रकाश फैलाया, जिससे हजारों व्यक्तियों ने लाभ उठाया। उसके दीपक की उपयोगिता अधिक थी।''

नाव में छोटा–सा भी छेद हो तो वह नाव को डुबो देता है। जीवन भी एक यात्रा है, इसमें पग–पग पर कठिनाइयों के महासागर पार करने पड़ते हैं। यहाँ इंद्रिय शक्ति, समय तथा साधनों का उपयोग करने वाले ही इस भवसागर से पार होते हैं।

*है ध्वंस सरल उसको जग में, कोई भी नर कर सकता है।*
*पर जो करता है सृजन उसे ही, सृष्टा का पद मिलता है॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*जिस मानव का चिंतन प्रयास, नव सृजन कार्य में लगता है।*
*वह ही है सच्चा कर्मवीर, जग उसकी पूजा करता है॥*
*जिसने अपने श्रम–कर्मों से, सींचा इस जगती का उपवन।*
*उस का जीवन ही जीवन है, वह महकेगा बनकर चंदन॥*
*कर्म वही जो दूर करे, जीवन के सब शोक।*
*यह लोक सुधरे बिना, कब सुधरा परलोक॥*
*हे मनुज ! आज देवत्व तेरा, किस गहन गुफा में सोता है।*
*किस पतन गर्त में गिरकर तू, यह मानव जीवन खोता है॥*
*जिस देह को देव तरसते हैं, वह तन नर तूने पाया है।*
*पर कँकड़ पत्थर के बदले, यह हीरा जनम गँवाया है॥*
*जीवन में सब कुछ क्षणभंगुर, किस पर घमंड तुम करते हो ?*
*सब यहीं धरा रह जाएगा, किस लिए कुकर्म ये करते हो ?*
*रे मानव ! अब जाग तू, अपनी आँखें खोल।*
*अमृतघट तुझको मिला, उसमें विष मत घोल॥*

**ध्वंशःसरल एनं च लघुरग्निकणोऽपि सः ।**
**ग्लपितं कीलकं चापि कर्तुं तत्प्रभवेदलम्॥ १।४।७८॥**
**प्रयोजनेषु निरतः सदा स्याज्जीवनस्य तु।**
**गरिम्णोऽनुमितिस्तत्र निकषोपमिते भवेन्न्॥ १।४।८०॥**

महाप्राज्ञ की वाणी सुनकर सभी संतजन प्रसन्न थे, किंतु मन में एक जिज्ञासा और थी कि इन चारों प्रकार के संयम का निर्वाह करने से क्या कर्त्तव्य की पूर्ति हो सकेगी ? इस शंका का समाधान करते हुए युग ऋषि कहते हैं कि हे संतो ! समाज में रहकर मनुष्य को बहुत से उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना होता है, इसी का नाम कर्त्तव्य परायणता है। आप लोग बताइए कि अपने दुखी, निर्धन,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बेसहारा, बीमार माता–पिता को छोड़कर यदि कोई जंगल में जाकर शांति की खोज करे, तो क्या उसे शांति मिल सकती है ? अपने परिवार को बेसहारा छोड़कर जंगल में शांति कैसे मिलेगी ? जीवन और कर्त्तव्य एक–दूसरे के पूरक हैं। कर्म को मनोयोग पूर्वक करने पर ही वह कर्म सफल माना जा सकता है। कर्म में सृजन की भावना होनी चाहिए। तोड़–फोड़ तो कोई भी कर सकता है। यह कार्य बहुत सरल है, किंतु किसी वस्तु का निर्माण बहुत कठिन है और प्रशंसा निर्माणकर्त्ता की ही होती है, तोड़ने वाले की नहीं। साहस तो चोर–डाकू भी बहुत दिखाते हैं, पर उनकी प्रशंसा कौन करता है ?

भगवान बुद्ध एक बार निविड़ वन को पार करते हुए कहीं जा रहे थे। रास्ते में उनकी भेंट अंगुलिमाल डाकू से हो गई। वह सदैव अनेक निर्दोषों का वध करके उनकी उँगलियों की माला अपने गले में धारण किया करता था। आज सामने आए हुए साधु को देखकर उसकी बाँछें खिल उठीं। ''आज आप ही मेरे पहले शिकार होंगे।'' अंगुलिमाल ने बुद्ध से कहा, और अपनी पैनी तलवार म्यान से बाहर निकाली।

तथागत मुस्कराए, उन्होंने कहा–''वत्स ! तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा। मैं कहीं भागने वाला नहीं हूँ। दो क्षण का विलंब सहन कर सको, तो मेरी एक बात सुन लो। सामने वाले वृक्ष से एक पत्ता तोड़कर जमीन पर रख दो।'' डाकू ने वैसा ही कर दिया। उन्होंने फिर कहा–''अब इसे पुनः पेड़ में जोड़ दो।'' डाकू ने कहा–''यह कैसे संभव है ? तोड़ना तो सरल है, पर उसे जोड़ा नहीं जा सकता।''

बुद्ध ने गंभीर मुद्रा में कहा–''वत्स ! इस संसार में मारकाट, तोड़–फोड़, उपद्रव और विनाश यह सभी सरल हैं। इन्हें कोई तुच्छ



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति भी कर सकता है। फिर तुम इसमें अपनी क्या विशेषता सोचते हो और किस बात का अभिमान करते हो ?' बड़प्पन की बात निर्माण है, विनाश नहीं। तुम विनाश के तुच्छ आचरण को छोड़कर निर्माण का महान् कार्यक्रम क्यों नहीं अपनाते ?''

ये शब्द अंगुलिमाल को तीर की तरह वेध गए। बुद्ध की करुणा व सत्परामर्श ने उसका जीवन बदल दिया। दस्यु कर्म छोड़कर उसने प्रव्रज्या ले ली।

विनाश तो घास के ढेर में डाली गई एक छोटी सी चिनगारी भी कर देती है। विषाणु एक छोटी–सी शारीरिक चोट से शरीर में पहुँच कर फैल जाते हैं व मृत्यु का संकट सामने आ खड़ा होता है। आणविक अस्त्रों से आज की दुनियाँ में क्षण मात्र में जन–समुदाय का संहार संभव है, पर यह तो मनुष्य को सौंपा गया कर्त्तव्य नहीं था, फिर भटकाव क्यों ? उसे तो अपनी गरिमा के अनुरूप सृजन में लगना चाहिए। किसने कितना श्रम किया, यह महत्त्वपूर्ण नहीं बल्कि यह महत्त्वपूर्ण है कि किसका श्रम सत्प्रवृत्तियों के विस्तार में नियोजित हुआ। पसीने की बूँदें तो भार ढोने वाले मजदूर भी बहाते हैं, पर जो लोक कल्याणकारी प्रयोजनों में पसीना गिराते हैं, उनका जीवन ही सफल माना जाता है।

*सुन महाप्राज्ञ की दिव्य वाणी, संतों को हर्ष अपार हुआ।*
*कर्त्तव्य निबाहें हम अपना, सबके मन में सुविचार हुआ॥*
*अपने जीवन में अब हम सब, संयम को ही अपनाएँगे।*
*पर देव आनंद की अनुभूति, क्या इससे हम कर पाएँगे॥*
*हँसकर बोले पिप्पलाद ऋषि, हम यह कल तुम्हें बताएँगे।*
*कल आनंद की गंगोत्री में, स्नान तुम्हें करवाएँगे॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*मौन हुए महाप्राज्ञ फिर, देकर शुभ संदेश।*
*युग ऋषि का संदेश यह, पहुँचे देश–विदेश॥*
*हर्षित थे सब भक्तजन, गुरु को क्रिया प्रणाम।*
*पुलकित होकर मुदित मन, करते चले गुण गान॥*

साधकों को इन समाधानों से एक नई दृष्टि मिली, जो घर–परिवार छोड़कर आए थे, वे समझ गए कि सुख, शांति के लिए घर छोड़ने की आवश्यकता नहीं है, अपितु कर्त्तव्य पूर्ति द्वारा ही मनुष्य को आनंद की प्राप्ति हो सकती है। फिर भी उनके मन में एक जिज्ञासा शेष थी कि इस संयमशील जीवन को अपनाकर कर्म करने वाले का जीवन तो बिल्कुल नीरस हो जाएगा। क्या कोई ऐसा साधन नहीं है, जिससे जीवन में आनंद की अनुभूति हो ? इस प्रश्न की गंभीरता को देखते हुए, तत्त्वज्ञानी महाप्राज्ञ ने कहा–हे सद्ज्ञानी साधको ! कर्म के साथ आनंदानुभूति न हो तो कर्म भार स्वरूप हो जाते हैं। मैं इस विषय में स्वयं बताना चाहता था। क्या आपने नही सुना–''भक्ति बिना सब सून'' पर इस विषय की चर्चा कल करेंगे, क्योंकि अब विश्राम का समय हो गया है। यह सुनकर सभी ने महाप्राज्ञ को प्रणाम किया और गुनगुनाते हुए अपने–अपने स्थान को चले गए।

**इतिश्री मत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययो:, युगदर्शनयुगसाधनाप्रकटीकरणयो: श्री पिप्लाद–श्वेतकेतु ऋषि–सम्वादे ''संयमशीलताकर्त्तव्यपरायाण्ता चे,'' ति प्रकरणो नाम तृतीयोऽध्याय: ॥१॥**

## आरती श्री प्रज्ञा पुराण की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा-पुराण-कथामृतम्

## चतुर्थ दिवस

### ज्ञान-कर्म-भक्ति भावना प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

## गुरु वंदना

आज आपके लिए दिलों में, उमड़ रहा अनुराग।
फिर से जाग रे कबीरा जाग, जाग रे कबीरा जाग॥
यह दुनियाँ तो आना–जानी, गहरी नदिया नाव पुरानी।
बहुत सुनाई कथा–कहानी, मगर किसी ने बात न मानी॥
सब अपनी सफेद चादर में, लगा रहे हैं दाग। फिर से....
छापा–तिलक लगाने वाले, पोथी पाठ पढ़ाने वाले।
जग को ज्ञान सुनाने वाले, तन के उजले मन के काले॥
हंस बने बैठे ऊपर से, भीतर विषधर नाग। फिर से....
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, पारसी, बुद्ध, बहाई।
आपस में सब भाई–भाई, लेकिन इनको समझ न आई॥
खेल रहे हैं एक दूसरे से सब खूनी फाग। फिर से....
ऊँचे कुल में जन्म लिया पर, करनी नीच किया जीवन भर।
सोने कलश वारुणी भरकर, कौन सराहे वह नर पामर॥
उससे तो वह हरिजन सुंदर, दिए दोष सब त्याग। फिर से....
गुरु परमेश्वर, गुरु ही प्यारे, गुरु ही पार लगावन हारे।
गुरु बिन कौन जगत् को तारे, ज्ञानरूप गुरुदेव हमारे॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सद्गुरु बिना नहीं हो सकती, युग की पूरी माँग।
फिर से जाग रे कबीरा जाग, जाग रे कबीरा जाग॥

## प्रज्ञा गीत

सत्संग ने कई का जीवन बदल दिया है।
ऋषियों मनीषियों ने इस पर ही बल दिया है॥
थे वाल्मीकि डाकू परिवार पालते थे।
है पुण्य–पाप कैसा वे यह न जानते थे॥
ऐसे ही महर्षियों को रोक लिया उनने।
तो वाल्मीकि से था प्रश्न किया ऋषि ने॥
परिवार बटाएगा क्या दुष्कर्म जो किया है। सत्संग ने.....
उत्तर मिला नहीं तो आँख खुल गई फिर।
इस सत्य से विचारों की गर्द धुल गई फिर॥
जीवन बदल ही डाला ऐसी उठी व्यथा फिर।
ऋषि तुल्य लेखनी से लिखी राम की कथा फिर॥
सुविचार के सहारे जीवन अमर किया है। सत्संग ने.....
मोहन ने बालपन में हरिश्चंद्र खेल देखा।
बस खिंच गई हृदय में सत्य की अटूट रेखा॥
गाँधी बने महात्मा था सत्य को न छोड़ा।
सत्याग्रही बने वे अनुगामियों को मोड़ा॥
नाटक को देखकर ही जीवन बदल लिया है। सत्संग ने.....
रत्ना के प्रेम में थे कामांध हुए तुलसी।
मुरदे को नाव समझे थे सर्प बना रस्सी॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रत्ना ने वासना की व्यर्थता बताई।
तो आँख खुल गई फिर श्री राम कथा गाई॥
सत्संग ने महात्मा तुलसी हमें दिया है। सत्संग ने.....

(प्रथम दिवस की भाँति कथा व्यास द्वारा पूजन)

## कीर्तन

हमने आँगन नहीं बुहारा, कैसे आएँगे भगवान्।
मन का मैल नहीं धोया तो, कैसे आएँगे भगवान्॥
हर कोने कल्मष कषाय की, लगी हुई है ढेरी।
नहीं ज्ञान की किरण कहीं है, हर कोठरी अँधेरी॥
आँगन चौबारा अँधियारा, कैसे आएँगे भगवान्॥
हृदय हमारा पिघल न पाया, जब देखा दुखियारा।
किसी पंथ भूले ने हमसे, पाया नहीं सहारा॥
सूखी है करुणा की धारा, कैसे आएँगे भगवान्॥
अंतर के पट खोल देख लो, ईश्वर पास मिलेगा।
हर प्राणी में ही परमेश्वर, का आभास मिलेगा॥
सच्चे मन से नहीं पुकारा, कैसे आएँगे भगवान्॥
निर्मल मन हो तो रघुनायक शबरी के घर जाते।
श्याम सूर की बाँह पकड़ते, शाक विदुर घर खाते॥
इस पर हमने नहीं विचारा, कैसे आएँगे भगवान्॥

**चतुर्थे दिवसे तत्र सङ्गता ऋषयः पुनः।**
**आरण्यकस्य सत्रे तु ब्रह्मविद्यात्मकेऽन्वहम् ॥ १।५।१॥**
**समयोपयोगे यः प्रोक्तो महाभागाऽत्र कर्मणा।**
**तत्रैकोदेव ! सन्देहः सर्वेषां समुदेति यत्॥ १।५।४॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परम पूज्य गुरुदेव के प्रज्ञा पुत्रो, माताओ तथा बहनो ! परम सौभाग्य हम सबका कि आज हम युग ऋषि द्वारा लिखित प्रज्ञा पुराण की पावन कथा को सुनने–सुनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। हम तो केवल संदेश वाहक हैं गुरुदेव के चलिए आप सबको आरण्यक में ले चलते हैं, जहाँ ब्रह्मविद्या सत्र महर्षि पिप्पलाद के तत्त्वावधान में चल रहा है। आज सूक्ष्म बुद्धि के धनी ऋषि उद्दालक जी प्रश्न कर्त्ता हैं। वही आज प्रश्न पूछने के लिए सबसे आगे बैठे हैं–उन्होंने श्रोताओं की कल की जिज्ञासा को देखते हुए प्रश्न पूछा–''हे तपोनिधे ! कल आपने संयमशीलता एवं कर्त्तव्यपरायणता का वर्णन करते हुए चार प्रकार के संयम द्वारा कर्त्तव्य पालन करने का सरल मार्ग बताया था, किंतु मन में एक जिज्ञासा है कि समय के अनुसार कर्म तो मोहग्रस्त महत्त्वांकाक्षी भी कर लेते हैं, किंतु कर्म में आनंद की अनुभूति भी हो ऐसा नहीं हो पाता। अधिकांश व्यक्ति जो कर्म करते हैं उनमें अहंकार प्रदर्शन की भावना अधिक होती है। हे देव ! आपने कहा है कि श्रम और प्रयास तो पशु–पक्षी, गधे–घोड़े भी करते हैं, चोर भी करते हैं, किंतु इससे मनको वास्तविक आनंद की अनुभूति तो नहीं होती, अतः आप उस रहस्य को समझाइए जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति सब कुछ बलिदान कर देता है सब कुछ देकर भी आनंद की अनुभूति हो वह कौन सा तत्त्व है कृपया इस शंका का समाधान कीजिए।''

## प्रज्ञा पुराण गीत

प्रज्ञा पुराण सुनिए दुःख नाशिनी कथा है।
दुःख द्वंद्व दूर होते मिटती सभी व्यथा है॥ प्रज्ञा....



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हर ओर छा रहा है, दुर्बुद्धि का अंधेरा।
संकीर्ण अहंता ने हर आदमी को घेरा॥
साधन बहुत बढ़े हैं, पर मन हुआ विकल है।
मन को जो शांति दे–दे, पावन यही कथा है॥ प्रज्ञा....
इस पावनी कथा से आत्मिक विकास होता।
सुख और शांति मिलती, भ्रम का विनाश होता॥
दुःख का अंधेरा छटता ऐसा प्रकाश होता।
संसार का कोई दुःख मन को न सालता है॥ प्रज्ञा....

प्रश्न की गंभीरता को देखते हुए समाधान कर्त्ता महाप्राज्ञ ने कहा– ''हे तपस्वी ऋषि उद्दालक जी, आपने लोक कल्याण की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछा है। कर्म तो संसार में सभी जीवधारियों के लिए आवश्यक है। स्वयं भगवान ब्रह्माजी, विष्णुजी तथा महेश्वर भी बिना कर्म किए नहीं रह सकते, तो फिर मनुष्य की तो बात ही क्या ? उसे कर्म करके दूसरों के प्रति कर्त्तव्य पूर्ति के लिए ही ईश्वर ने भेजा है, किंतु यह अवश्य है कि भाव संवेदना के अभाव में वह कर्म बोझ बन जाता है, इसी के कारण कर्म दुष्कर्म भी बन जाते हैं, जिसका फल मनुष्य को भोगना पड़ता है। भाव संवेदना रूपी गंगोत्री सूख जाने पर व्यक्ति निष्ठुर बनता जाता है। आज सब से बड़ा दुर्भिक्ष इन्हीं भावनाओं का है।

एक बार महात्मा आनंद स्वामी के पास एक धनपति आए। कई कारखाने थे उनके। सभी लड़के अपने काम में लगे थे। पत्नी का स्वर्गवास पहले ही हो चुका था। वैभव का साम्राज्य चारों ओर था, पर वे अंदर से एक बड़ा अभाव अनुभव करते थे। उनकी भूख चली गई व रात की नींद भी। अपनी यह व्यथा, जीवन गाथा उन्होंने महात्मा जी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को सुनाई। महात्मा आनंद स्वामी जी ने कहा–''आपने जीवन में कर्म व श्रम को तो महत्त्व दिया, पर भावना को नहीं। सत्संग, कथा श्रवण इत्यादि से तो विचारों को पोषण भर मिलता है। अंदर की शुष्कता कम करने के लिए अब प्रेम, धन, श्रम लुटाना आरंभ कीजिए। सबको स्नेह दीजिए, अनाथों, निर्धनों के बीच जाइए, उन्हें स्वावलंबी बन सकने योग्य सहायता दीजिए, अपना शरीर श्रम भी जितना इस पुण्य कार्य में लगा सकें, लगाइए। फिर देखिए आपकी भूख लौट आएगी तथा नित्य चैन की नींद सोएंगे।'' सेठजी ने ऐसा ही किया व चमत्कारी परिवर्तन ने उन्हें जो शांति, प्रसन्नता दी वह पहले कभी नहीं मिली थी।

मनुष्य संवेदनहीन होकर दुष्कर्म कर रहा है। आज भरत–राम और राम–लक्ष्मण जैसा भाई–भाई का प्यार, दशरथ जैसा पिता का स्नेह, सीता जैसा पत्नी का समर्पण कहाँ है ? स्वार्थ के वशीभूत होकर सब एक दूसरे को परेशान करने के लिए बेचैन रहते हैं। काम कम करें लाभ अधिक हो यही भावना मन में रहती है, इसी कारण धोखा देना, मिलावट करना, भ्रष्टाचरण का बोल बाला है।''

एक स्थान पर कुछ मजदूर ईंट तोड़ रहे थे। एक व्यक्ति ने पूछा–''भैय्या क्या कर रहे हो ?'' एक मजदूर ने कहा–''देखते नहीं–इन ईटों से सिर फोड़ रहा हूँ, हाथ में छाले पड़ गए हैं गला सूख रहा है पर भाग्य को क्या करें।'' वह व्यक्ति आगे गया। दूसरे मजदूर से भी वही प्रश्न पूछा। उसने कहा–''भैया, देखो सामने भगवान का मंदिर बन रहा है। बस मैं भी उसी में सहयोग दे रहा हूँ, समय भी बीत जाता है और दो पैसे भी मिल जाते हैं और भगवान की सेवा भी हो जाती है।'' कहने का तात्पर्य यह है कि एक ही काम को करने में जब मनुष्य



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की भावना जुड़ती है तो वह काम पूजा बन जाता है, जब भावना नहीं होती तो वह बोझ बन जाता है। अवतारी चेतना जब भी आती है, वह अंदर के उस गंगोत्री के प्रवाह को खोल देती है और मनुष्य को ध्वंस (तोड़–फोड़) से हटाकर सृजनात्मक कार्यों में लगा देती है।

*रात दिवस का मिलना ज्यों, संध्या वेला कहलाती है।*
*यों ब्रह्म और भौतिकी माया, मिल जीवात्मा बन जाती है॥*
*चेतना जगत में भी सत्‌चित आनंद की गंगा बहती है।*
*मानव मन में भी ज्ञान, कर्म, भक्ति की धारा बहती है॥*
*अभाव एक का भी हो यदि, तो जीवन नीरस हो जाता।*
*इन तीनों के मिलने से ही मन, आनंद से है भर जाता॥*
*इन तीनों को धारण कर नर, जब गुरुद्वारे पर जाते हैं।*
*तब कृपासिंधु वे गुरुवर ही, भव सागर पार कराते हैं॥*
*ज्ञान, कर्म और भक्ति से, बने संगम सुखधाम।*
*इन तीनों के मिलन से, मिलता है मुक्तिधाम॥*

**त्रिधात्मिकायां विश्वस्य व्यवस्थायामृषीश्वराः।**
**प्रकृतीश्वरजीवानामिव क्षेत्रे चितेरपि ॥ १। ५। १९॥**
**तिस्रोनिर्धारणाः सन्ति प्रगतेस्तु क्रमस्य ताः ।**
**ज्ञानं कर्म च भक्तिश्च नाम्नोच्यन्ते मनीषिभिः॥ १। ५। २०॥**

इस प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए युग दृष्टा कहते हैं कि हे ऋषियो ! इस सृष्टि में तीन की संख्या बहुत महत्त्वपूर्ण है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन देवता मुख्य हैं। तीन देवियाँ हैं, तीन लोक हैं, गंगा, यमुना, सरस्वती तीन नदियाँ मुख्य हैं, परब्रह्म की तीन विशेषताएँ प्रसिद्ध हैं, सत्–चित्–आनंद। उसकी प्राप्ति के लिए ऋषियों ने तीन सूत्र बताएँ हैं, ज्ञान, कर्म और भक्ति। त्रेता युग में तीन असुर थे, रावण, कुंम्भकर्ण,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेघनाथ, द्वापर के तीन असुर कंस, जरासंध और शिशुपाल, कलियुग के तीन राक्षस हैं अज्ञान, अभाव, अनीति। तीनों ने समाज को घेर रखा है–चारों तरफ इनका साम्राज्य है, त्रिपुरासुर को मारने के लिए भगवान शंकर का त्रिशूल उठा था, उसी प्रकार इन राक्षसों को मारने के लिए ज्ञान, कर्म तथा भक्ति की गंगा बहानी पड़ेगी। हे संतो ! सृष्टि में दो वस्तुओं के मिलने से तीसरी वस्तु बनती है जैसे दिन और रात्रि की मिलन वेला को संध्या कहते हैं, रात्रि की समाप्ति तथा सूर्योदय के मिलन के समय को उषा कहा जाता है, उसी प्रकार जीव भी परब्रह्म परमात्मा तथा पंच भौतिक प्रकृति के सम्मिश्रण का रूप है। सृष्टि की इसी व्यवस्था के अनुसार चेतना जगत् में सत् चित् आनंद रूपी ब्रह्म की विशेषताएँ ज्ञान, कर्म व भक्ति के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। ये तीनों एक दूसरे के बिना अधूरी हैं।

मरने के बाद एक व्यक्ति की आत्मा को मृत्युदूत धर्मराज के सामने ले पहुँचे। दूतों ने बताया–''यह एक बड़ा महात्मा है। भरी युवावस्था में अपने माता–पिता और स्त्री–बच्चों को छोड़कर यह जंगल में चला गया और जीवन भर तप करता रहा।''

धर्मराज ने कहा–''कर्तव्यों का त्याग कर कोई व्यक्ति धर्मात्मा नहीं बन सकता। परिवार के लोगों के साथ विश्वासघात करके इसने अधर्म ही कमाया, ऐसा भजन किस काम का जो कर्तव्यों को भुलाकर किया जाए। इसे पुनः धरती पर भेजो और कर्तव्यपालन के साथ भजन करने का आदेश करो, तभी इसे स्वर्ग में स्थान मिलेगा।''

यमदूतों ने एक–दूसरे व्यक्ति की आत्मा उपस्थित की और कहा–''यह व्यक्ति बड़ा कर्त्तव्यपरायण है। काम को ही सब कुछ समझता है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसकी स्त्री बीमार पड़ी और मर गई, पर यह उसकी कुछ भी परवाह न करके अपने कर्तव्य में ही लगा रहा।''

धर्मराज ने कहा–''ऐसे हृदयहीन का स्वर्ग में क्या काम ? भावनापूर्वक किया गया कर्तव्य ही प्रशंसनीय हो सकता है। जिसे अपने नैतिक कर्तव्यों का ज्ञान नहीं, उसकी शारीरिक दौड़–धूप क्या महत्व रखेगी। इसे पृथ्वी पर भेजो और कहो कि भावनापूर्वक जीवन जिए और दूसरों से प्रेम करना सीखे, तभी उसे स्वर्ग में स्थान मिलेगा।''

एक तीसरे व्यक्ति की आत्मा लाई गई। यमदूतों ने कहा–''यह एक साधारण गृहस्थ है। सदा आस्तिक रहा, पवित्र जीवन जिया, प्रेमपूर्वक परिवार को सुविकसित किया और दूसरों के उत्थान के लिए निरंतर प्रयत्न करता रहा।'' धर्मराज ने कहा–''स्वर्ग ऐसे ही लोगों के लिए बनाया गया है, इसे आदरपूर्वक ले जाओ और आनंदपूर्वक यहाँ रहने की व्यवस्था कर दो।''

अतः जो व्यक्ति इन में से एक ही मार्ग को अपनाते हैं, वे जीवन में असफलता तथा अशांति ही पाते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस सत्य को देखा जा सकता है। कर्म और भक्ति के अभाव में ज्ञानी, अहंकारी बन सकते हैं, ज्ञान के अभाव में मनुष्य के कर्म दुष्कर्म हो सकते हैं और ज्ञान और कर्म के अभाव में केवल भक्ति अंधविश्वासी तथा अकर्मण्य बना सकती है, अतः इन तीनों का समन्वय जीवन में हो तभी सुख शांतिमय जीवन बीत सकेगा। स्वर्ग का अधिकारी वही हो सकता है जिसने जीवन में इन तीनों को अपनाया हो–''यद्यपि भक्ति बिना सब सूना'' है, किंतु भक्ति भी ज्ञान तथा कर्म से युक्त होनी चाहिए।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान, कर्म, भक्ति का समुच्चय जीवन के समग्र विकास के लिए अनिवार्य है। बहुसंख्य व्यक्ति भ्रम में पड़े रहकर एकांगी मार्ग पकड़ते हैं व स्वयं को जंजाल में उलझा लेते हैं। महाराजा अज के यहाँ यज्ञायोजन था। एक दिन महर्षि वसिष्ठ जब प्रधान पुरोहित का कार्य सँभालने जा रहे थे, तो मार्ग में उन्हें मंकी नामक व्यक्ति मिला उसने अपना दुःख प्रकट करते हुए कहा–''देव ! मैंने श्रमशीलता में कोई कमी नहीं छोड़ी, सदैव सदाचरण किया तथा ज्ञानार्जन हेतु सभी ग्रंथों का स्वाध्याय भी कर डाला, परंतु फिर भी अपने अंदर अपूर्णता ही पाता हूँ। न तो मेरी कोई प्रशंसा करता है, न मुझे कोई स्नेह ही देता है।'' मुनिवर बोले–''तात् ! तुमने कर्म व ज्ञान की दो धाराओं की तो उपासना कर ली, पर भाव पक्ष को तो भूल ही गए। तुम स्नेह बाँटो, बदले में दस गुना पाओगे। सब जीवधारियों में अपनी ही आत्मा समाई मानकर स्वयं को भक्ति प्रवाह में सरावोर कर डालो। अपनी धारा को परमात्मा के अक्षय आनंद रूपी गंगा से मिला दो, तो तुम सम्मान, श्रेय तो पाओगे ही, उस अभाव की पूर्ति भी होगी, जो तुम्हें त्रास दे रही है।'' शीतल वचन सुनकर मंकी को दिशा मिली। वह अर्जित ज्ञान, धन तथा स्नेह बाँटने लगा और उसकी अपूर्णता समाप्त हो गई।

*अध्यात्म क्षेत्र में सर्वप्रथम, यह आत्मज्ञान ही आता है।*
*इसके अभाव में तो मानव, भव बंधन में बंध जाता है॥*
*जब गुरु कृपा से भाव जगे, तब आत्मबोध हो जाता है।*
*भक्तों पर होती अनुकंपा, तब प्रगति मार्ग खुल जाता है॥*
*गुरु कृपा दृष्टि होती जिन पर, वे भाग्यवान कहलाते हैं।*
*सौभाग्य प्राप्त करने के भी, ऋषि तीन सूत्र बतलाते हैं॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*साधन सुविधाओं के बल पर, मिलता वह अवसर कभी नहीं।*
*श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा तीनों ही, हैं इसके आधार सही॥*
*तीन ही बंधन जगत के, राग, द्वेष, अभिमान।*
*तीन ही साधन मुक्ति के, श्रद्धा, निष्ठा, ज्ञान॥*

**अध्यात्मनस्तु क्षेत्रस्य विकासक्रम पद्धतौ।**
**सर्वप्रथममध्यात्मज्ञानस्यास्ति हि भूमिका॥ १। ५। २२॥**
**आत्मप्रेरणयोदेति कृपया च गुरोरयम्।**
**यो हि जीवनक्षेत्रस्य प्रथमा भूतिरुच्यते॥ १। ५। २७॥**

कथा क्रम को बढ़ाते हुए युग ऋषि कहते हैं, हे साधको ! अध्यात्म क्षेत्र में सबसे पहिले आत्मज्ञान की आवश्यकता है जिसके विषय में आप को पहले दो दिनों में बताया जा चुका है। सांसारिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में ज्ञान की भूमिका अलग अलग है। सांसारिक क्षेत्र में व्यावहारिक ज्ञान को ज्ञान कहते हैं। माता–पिता, गुरु, समाज तथा शिक्षा के द्वारा यह ज्ञान प्राप्त किया जाता है, किंतु आध्यात्मिक जगत में ज्ञान वह प्रकाश है जिसके द्वारा मनुष्य आत्मसाक्षात्कार कर अपने स्वरूप को पहचानता है कि वह शरीर नहीं सच्चिदानंद प्रभु का अंश है। इसे ही आत्मबोध कहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि वह सुषुप्ति को छोड़कर जागृति में प्रवेश करता है। मनुष्य का मन तराजू है, जब संसार की ओर झुकता है तो वह भोग विलास में लिप्त होता है, जब भगवान् की ओर झुकता है तो वैराग्य जागता है, तब वह सत्कर्म करता है और संतुलित मार्ग पर चलता है।

महात्मा रामानुज से एक गृहस्थ ने प्रश्न किया–''महात्मन्! क्या कोई ऐसा मार्ग नहीं कि मुझे यह संसार भी न छोड़ना पड़े और स्वर्ग भी पा सकूँ ?' रामानुज हँसे और बोले–'वत्स ! स्वर्ग कहीं और



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं है। तुम अपने अंदर झाँको व सोई आत्मा को जगाओ, अपने यथार्थ स्वरूप को पहचान कर मनुष्य जैसा व्यवहार करोगे, तो स्वर्गीय आनंद पा सकोगे।'' गृहस्थ ने संदेह व्यक्त करते हुए कहा– ''भगवन् ! कहा जाता है कि यह सब तो गृहस्थ को छोड़कर संन्यास लेने पर ही संभव है।'' रामानुजाचार्य बोले–''बेटा ! जिसे आत्मकल्याण की सच्ची लगन होती है, वह गृहस्थाश्रम निबाहते हुए भी नर–पशु सा नहीं, नर–नारायण का जीवन जी सकता है। नारकीय यातनाओं से बचने की इच्छा का अभ्युदय ही आत्मजागृति है।'' यह आत्मबोध गुरुकृपा से प्राप्त होता है।''

**गीत–**

नर से नारायण बन जाएँ, प्रभु ऐसा ज्ञान हमें देना॥
दुःखियों के दुःख हम दूर करें, श्रम से कष्टों से नहीं डरें।
उर में सबके प्रति प्यार भरें, जल बनकर मरुथल में बिखरें॥
बाधाओं से टकरा जाएँ, प्रभु ऐसा ज्ञान हमें देना॥
आलस में दिवस न कटें कभी, सेवा के भाव न मिटें कभी।
पथ से ये चरण न हटें कभी, जन हित के कार्य न छुटें कभी॥
दैवी क्षमताएँ विकसाएँ, प्रभु ऐसा ज्ञान हमें देना॥
यह विश्व हमारा ही घर हो, उर में स्नेह का निर्झर हो।
मानव के बीच न अंतर हो, बिखरा समता का मृदु स्वर हो॥
पूरब की लाली बन–छाएँ, प्रभु ऐसा ज्ञान हमें देना॥

गुरु के महत्त्व का वर्णन नहीं किया जा सकता। माता पिता बच्चे को जन्म देते हैं, वे मनुष्य के शारीरिक विकास करने में सहायक होते हैं, परंतु गुरु जिस व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, वह अनुपम है। आत्मज्ञान गुरुकृपा से ही प्राप्त होता है। इस आध्यात्मिक जगत में



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मार्गदर्शक की भूमिका बहुत बड़ी है। जब मनुष्य सद्मार्ग से भटकता है और उसकी जीवनरूपी नौका भवसागर में डूबने लगती है तब गुरु ही उस को पार लगाते हैं। गुरुकृपा आत्मप्रेरणा को जगाती है कि अब हमें क्या करना चाहिए ? गुरुकृपा होते ही आत्मप्रगति का द्वार खुलता है। भीगी बिल्ली की तरह सुग्रीव के पीछे–पीछे चलने वाले हनुमान बजरंगवली बनकर समुद्र को पार कर अकेले ही सोने की लंका को जलाकर भस्म कर देते हैं। कबीर ने भी गुरुकृपा को कुछ इस प्रकार कहा है–

**सात समुद्र की मसि करौं, लेखनी सब वन राय।**
**सब धरती कागद करहुँ, गुरु गुन लिख्यो न जाय॥**

तब गुरु ईश्वर से भी अधिक महत्त्वशाली बन जाते हैं। अब उस मोह को क्या कहा जाए, जो मनुष्य को मूर्च्छना में डाले रहता है। जब बोध होता है तो स्थिति बदल जाती है। गौतमी का इकलौता पुत्र मर गया, शोक से विह्वल होकर वह लाश को लिए हुए भगवान बुद्ध के पास पहुँची। उसे आशा थी कि तथागत बालक को पुनः जीवित कर देंगे। बुद्ध ने गौतमी को सांत्वना देते हुए कहा–''किसी ऐसे घर से थोड़ा जल माँग लाओ, जिसके घर में कभी कोई मृत्यु नहीं हुई हो। उस जल को अभिमंत्रित करके तुम्हारे पुत्र का अभिसिंचन करूँगा और वह पुनः जीवित हो उठेगा।'' गौतमी जल प्राप्त करने के लिए द्वार–द्वार पर घूमने लगी, पर कोई घर ऐसा न मिला, जहाँ किसी की मृत्यु न हुई हो। निराश होकर वह वापस लौट आई।

तथागत ने कहा–''भद्रे ! तुमने देखा इस संसार में कोई घर ऐसा नहीं जिसमें किसी की मृत्यु न हुई हो। इसी प्रकार कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जिसे मरना न पड़े। आज या कल सभी अपने–अपने समय पर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मरते हैं, अतः इस अपरिहार्य प्रकृति के फंदे में फँसे हुए हम लोगों को किसी के लिए शोक नहीं करना चाहिए।'' गौतमी का बोध जग पड़ा। वह मृत पुत्र का संस्कार करके घर लौट गई। शोक को उसने आत्मज्ञान द्वारा शांत कर दिया। गुरु ज्ञान द्वारा शोक मोह को भी दूर कर देते हैं।

गुरु वह पारसमणि है जो लोहे जैसे कठोर व्यक्ति को भी स्वर्ण जैसा बना देते हैं।

**गीत–**

हम लोह खण्ड ही हैं, पारस हमें छुला दो।
हैं आप सिद्ध पारस, सोना हमें बना दो॥
नीरस हुआ है जीवन, संवेदना नहीं है।
हैं प्राण, पर उछलती, सद्प्रेरणा नहीं है॥
अमृत कलश छलककर, अमृत हमें पिला दो। हम लोह....
मृग–सा भटक रहे हैं, हो कामना ग्रसित हम।
हे आप्त काम गुरुवर, हो कामधेनु ही तुम॥
पय–तृप्ति का पिलाकर निष्काम ही बना दो॥ हम लोह....
हम कल्पना जगत में, रहे सदा भटकते।
मिलती न शांति–छाया, रहते हैं सिर पटकते॥
हे कल्पवृक्ष ! अपनी छाया, सुखद दिला दो।
हम लोह खण्ड ही हैं, पारस हमें छुला दो॥

गुरुकृपा पाकर मुरादासी का पुत्र चंद्रगुप्त चक्रवर्ती सम्राट बनता है, बुद्ध की शरण में जाकर अंगुलिमाल डाकू भिक्षु बन जाता है रत्नाकर वाल्मीकि ऋषि बनते हैं। समर्थ गुरु को पाकर शिवाजी छत्रपति बनकर औरंगजेब जैसे शक्तिशाली सम्राट के छक्के छुड़ा देते



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं मूलशंकर जैसे सरल बालक महर्षि दयानंद बनकर वैदिक धर्म की पताका फहरा देते हैं।

स्वामी विरजानंद अपनी कुटिया में ध्यानस्थ थे। इसी बीच बाहर आहट हुई। मूल शंकर (बाद में स्वामी दयानंद) बाहर खड़े थे। अंदर से आवाज आई–''कौन है ?'' बाहर से उत्तर आया–''मैं कौन हूँ, यही तो जानने आया हूँ।'' विरजानंद ने कहा–''आओ ! कब से तेरा इंतजार था।'' प्रज्ञा चक्षु संपन्न गुरु ने ऐसे जिज्ञासु शिष्य को अंदर बुला लिया और यही वह पल था जब स्वामी दयानंद का जन्म हुआ। गुरु ने उनकी हर तरह से परीक्षा ली आत्मबोध कराया और फिर निर्देश दिया कि समाज में व्याप्त अनाचार कुरीतियों, धर्म के नाम पर छाए आडंबर को मिटाने अकेले निकल जाओ। गुरु की शक्ति लेकर शिष्य चल पड़ा और धीरे–धीरे दयानंद सारे समाज पर छा गए।

नरेन्द्र जैसा निरीह बालक स्वामी विवेकानंद बनकर समस्त विश्व में भारतीय संस्कृति के ज्ञान का दीप जलाकर भारत को गौरवान्वित करते हैं। केवल १५ वर्ष की अवस्था में परम पूज्य गुरुदेव ने भी अपने दादागुरु को स्वयं को समर्पित कर दिया और उनके मार्ग दर्शन में ८० वर्ष की आयु में जो महान कार्य किए उसका श्रेय वे दादागुरु को ही देते हैं जिन्हें उन्होंने मास्टर कहा है। गुरुदेव ने सामाजिक धार्मिक पारिवारिक व्यावहारिक साहित्यिक तथा कला के क्षेत्र जो महान क्रांति की वह गुरु कृपा द्वारा संभव हुई। आज उन्होंने युग निर्माण का संकल्प लिया है हम सब भी उनके मार्ग दर्शन में अपने को समर्पित कर दें तो रीछ–वानर, गोप–ग्वालों की तरह अपने को भाग्यशाली बना सकते हैं। गुरुदेव द्वारा रचित प्रज्ञा पुराण जिसे आप सुन रहे हैं यह मानव को देवता बनाकर उसकी इच्छाओं



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को पूरा करने वाला कल्पवृक्ष है। मनुष्य इसकी शीतल छाया में बैठकर सांसारिक तापों से मुक्ति पा सकते हैं। हे संतो ! यह गुरु कृपा अनायास ही नहीं मिलती, इसके तीन सूत्र हैं, जिनके द्वारा गुरु की कृपा पाई जा सकती है, श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा। संसार में ये तीनों ही मुक्ति के साधन हैं, तथा राग, द्वेष और अभिमान ये तीनों ही बंधन में बाँधने वाले हैं। श्रद्धा अर्थात् सद्भाव, प्रज्ञा अर्थात् सद्ज्ञान और निष्ठा अर्थात् सत्कर्म। तीन शरीर हैं–स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण। खेती के लिए–खेत, बीज तथा किसान, मकान के लिए–जमीन, सामान तथा कारीगर, जीवन के लिए हवा, पानी और अन्न की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार श्रद्धा, निष्ठा तथा प्रज्ञा के द्वारा ही मुक्ति मिल सकती है। जब ये तीनों जागती हैं तो मीरा के साथ गिरधर नाचते हैं, काली परमहंस के हाथ से भोजन करती है। गुरुदेव से गायत्री माता पूछती है–तेरे लिए क्या करूँ ? गुरुदेव ने इसी श्रद्धा के बल पर इतने बड़े गायत्री परिवार की स्थापना की।

नरेंद्र स्वामी रामकृष्ण परमहंस के पास दक्षिणेश्वर अक्सर जाते थे। त्रिकालज्ञ परमहंस तो नरेंद्र का भावी स्वरूप जानते थे, पर अपने शिष्य को सांसारिक जाल से निकाल कर आत्मबोध कराने में उन्हें कुछ समय लगा। जब समय आ ही पहुँचा, तो उन्हीं की प्रेरणावश नरेंद्र ने अपनी नौकरी की समस्या उनके समक्ष रखी। परमहंस ने उन्हें काली की शरण में जाने का निर्देश दिया। काली के समक्ष जाकर उनका विराट् स्वरूप साक्षात् सामने देखकर वे मात्र आत्मशक्ति व भक्ति की याचना के और कुछ नहीं माँग सके। काली के इस साक्षात्कार व रामकृष्ण के मार्गदर्शन ने नरेंद्र को विवेकानंद उसी दिन बना दिया था, शक्ति भले ही गुरु से उन्होंने अवसान के पूर्व पाई हो।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह एक तथ्य है कि सद्गुरु की प्राप्ति एक बहुत बड़ा सौभाग्य है, यह जिस–जिस को मिली है, वह परमलक्ष्य की ओर बढ़ सकने में सफल हुआ है, मार्ग में आने वाले अवरोधों से मोर्चा लेने की सामर्थ्य उसे उनकी ही मिलती रही है।

*जो कर्मशील बनकर जीता, वह जीवन सफल बनाता है।*
*कर्त्तव्यनिष्ठ, बनकर ही, नर इस जग में गौरव पाता है॥*
*इस कर्मयोग को तजकर जो, विपरीत मार्ग अपनाता है।*
*वह मानो अमृत कलश छोड़, दारुण विष को पी जाता है॥*
*मुख से दोहराते ज्ञान सूत्र, पर कर्म और कुछ करते हैं।*
*जब इच्छापूर्ण न हो पाती, तब सब जन दुःख ही सहते हैं॥*
*सद्ज्ञान, कर्म और भक्ति का, जब मधुर मिलन हो जाता है।*
*बन पाता तब ही मनुज देव, और स्वर्ग धरा पर आता है॥*
*मानव जीवन को धन्य करो, यह भक्ति मार्ग बतलाता है।*
*है मिला जन्म सत्कर्म हेतु, यह हमको भान कराता है॥*
*श्रद्धा, प्रज्ञा, भक्ति की बहे त्रिवेणी धार।*
*जो जन इसमें डूबते, वे ही उतरें पार॥*

**आत्मप्रगतिसोपानं द्वितीयं कर्मचोच्यते।**
**कर्मार्थात् कर्मयोगोऽयं कर्मयोगश्च सोऽर्थतः॥ १। ५। २९॥**
**ज्ञानस्य कर्मणो भक्तेस्त्रिवेणी सेदृशं मता।**
**गंगायमुनायोर्योगे यथा शुभ्रा सरस्वती॥ १। ५। ३६॥**

हे संतो ! आत्मिक प्रगति का द्वितीय सोपान कर्म है। कर्म तो संसार में सभी करते हैं, जैसे प्रातः उठकर नित्यकर्म से निवृत्त होना, भोजन करना, शयन करना सभी कर्म हैं, किंतु ये सब कर्म तो पशु भी करते हैं। मनुष्य के लिए कर्म के साथ–साथ योग को जोड़ दिया



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गया है। कर्मयोगी बनकर मनुष्य केवल अपने लिए न करके दूसरों के लिए जो कर्म करता है, सारा संसार उसे हमेशा याद करता है। जब मनुष्य दुष्कर्म करता है तब राक्षस कहलाता है, जब सत्कर्म करता है तो देवता बनता है।

एक बार एक व्यक्ति अकाल से पीड़ित अपने प्रांत को छोड़ सपरिवार दूसरे प्रांत पहुँचा। एक बगीचे के मालिक ने उसको भली–भाँति परखकर आमों के वृक्षों की रखवाली हेतु नियुक्त कर दिया। जैसी ईमानदारी और श्रम से वह बगीचे का ध्यान रखता था, उससे मालिक भी संतुष्ट था। रखवाली करने वाले ने उसी काम में वर्षों गुजार दिए।

एक दिन मालिक ने उस से कहा–''कुछ मेहमान आए हैं, मीठे आम तोड़कर लाओ।'' वह गया और कुछ बड़े–बड़े पके आम एकत्र कर लाया। आम खट्टे निकले। मालिक बोला–''तुम्हें यहाँ वर्षों हो गए, तुम यह भी नहीं जानते कि किस पेड़ के आम खट्टे हैं, किसके मीठे।'' उस ने विनीत भाव से कहा–''मालिक ! मैं तो रखवाली करने वाला नौकर हूँ। किसी दूसरे को इसका एक फल भी चोरी नहीं करने देता तो स्वयं बिना किसी अधिकार के फल कैसे चख सकता हूँ ?''

मालिक ने गद्‌गद् भाव से कहा–''ईमानदार तो मैंने बहुत देखे हैं, पर तुझ जैसा कर्मनिष्ठ, निर्लोभी मैंने पहली बार ही देखा है।''

सृष्टि को सुव्यवस्थित बनाने और जो भी कुछ दिया गया है उसे कर्मयोगी के नाते संभाल–सँजोकर रखने का दायित्व हर मनुष्य का है। जो इसमें सफल होता है, वह उतना ही श्रेय का भागी होता है, सम्मान पाता एवं दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बनता है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान के अभाव में कुकर्म भी सुकर्म जैसे लगते हैं। आज मनुष्य भटक गया है। वह देवता है, किंतु भटका हुआ। आज की शिक्षा भी मानव को सही दिशा देने में असमर्थ है। एक व्यक्ति को किसी ने बताया 'कु' माने बुरा, 'सु' माने अच्छा। बस उसने सोचा कि जो शब्द 'कु' से बोले गए वे बुरे जो 'सु' से बोले जाएँ वे अच्छे। अतः कुकर्म, कुरूप, कुख्यात, कुमार्ग सब को छोड़ कर 'कु' की जगह 'सु' कहने लगा। किसी ने उससे पूछा शादी करोगे, सुसराल जाना होगा, सुसर जी मिलेंगे, साले, साली, सासु भी मिलेंगी, बहुत खुश हुआ। सुसराल, सुसर भी सब 'सु' से शुरू। कहा फिर ठीक है। शादी हुई। राजस्थान में दामाद को कुंवर जी कहते हैं। जब वह द्वार पूजा पर पहुँचा तो किसी ने कहा–''अरे देखो कुंवर जी आ गए।'' यह सुनकर वह बोला–''अरे कुंवर जी कह रही हो ! कुंवरजी नहीं सुवर जी कहो, सुवर जी।'' यह सुनकर सब हँस पड़े अतः यह अधूरा ज्ञान और भी कष्टदायक है। कभी–कभी जानते हुए मनुष्य गलत कार्य करता है, एक प्रकार का वह व्यक्ति है जिसको सही ज्ञान ही नहीं है, जैसे उपरोक्त दृष्टांत का व्यक्ति। एक होता है जो जानता है, पर मानता नहीं, उसका अहंकार उसे सही कार्य नहीं करने देता। दुर्योधन ने कहा–''मैं एक इंच जमीन भी नहीं दूँगा। मैं जानता हूँ कि यह अधर्म है, पर मेरी धर्म में प्रवृत्ति नहीं है।'' एक मनुष्य का पतनाला दूसरे के आँगन में गिरता था। सबने पंचायत बिठाई कहा कि पतनाले का मुँह अपने आँगन की तरफ कर लो। वह बोला–''पंचों की राय सिर पर, पर पतनाला यहीं रहेगा।'' ऐसी हठ धर्मी के कारण आज बहुत समस्याएँ सामने आ रही हैं । भाइयो और बहनो ! कितना ही समझाया जाए, परंतु आज मनुष्य सद्धर्म की ओर अग्रसर नहीं हो रहा है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक ब्राह्मण ने चार यज्ञ किए, पर अंतिम समय उसकी अवस्था बड़ी दयनीय हो गई। वह धर्मराज के पास अपना एक यज्ञ फल बेचने चल दिया। रास्ते में एक जगह वह भोजन करने बैठा, उसी जगह कई दिन का भूखा एक संत बैठा था, ब्राह्मण ने आधा भोजन उसे दे दिया, पर इससे उसकी संतुष्टि नहीं हुई। इस पर ब्राह्मण ने उसे सारा भोजन खिलाया और धर्मराज के पास चल दिया। धर्मराज ने पूछा–''तुम्हारे चार यज्ञ और एक अक्षय यज्ञ जमा हैं, इसमें से कौन–सा यज्ञफल बेचते हो ?'' ब्राह्मण पाँचवे यज्ञ की बात सुनकर आश्चर्यचकित हुआ। जब धर्मराज ने बताया कि स्वयं कष्ट सहकर दूसरों की सहायता करना यज्ञ नहीं, वरन् अक्षय यज्ञ है, तभी से ब्राह्मण ने शेष जीवन को परोपकार में लगाने का निश्चय कर लिया। वस्तुतः पिछड़े हुए और दुखियों की सहायता करना, गिरे हुए को उठाना, सबसे बड़ा यज्ञ कार्य है।

*प्रभु निराकार बन भक्तजनों के अंतःकरण में रहता है।*
*प्रभु जब पधारते हैं मन में, तो स्रोत प्रेम का बहता है॥*
*किस किस को यह प्रेमामृत दूँ, यह सोच भक्त अकुलाता है।*
*यह प्रेमपात्र है छलक रहा, एकाकी पिया न जाता है॥*
*श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा का जब, मन में संगम बन जाता है।*
*तब हरि का पावन विष्णुधाम, मन, क्षीर सिंधु बन जाता है॥*
*है प्रेमरूप परमेश्वर का, वह प्रभु आनंद प्रदाता है।*
*जब जागृत होता, सघन प्रेम, सब जग अपना बन जाता है॥*
*वसुधैव कुटुंबकम् महामंत्र, मानव मन में जब जगता है।*
*सबसे होता है प्यार और जग सियाराम मय लगता है॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*'सोऽहम्' भाव को धारण कर, सब भेदभाव मिट जाता है।*
*मानव समझे सबको अपना, तो जग कुटुंब बन जाता है॥*
*प्रेमपात्र से प्रेमामृत, छलक रहा भरपूर।*
*पास आए सबने पिया, कोई रहा ना दूर॥*

**प्रेमेव परमेशोऽस्ति स आनंदस्वरूपधृक् ।**
**जड़ो वा चेतनो वाऽपि प्रियतां याति प्रेमतः ॥ १। ५। ५४॥**
**ईश्वरं प्रति प्रेम्णैति श्रद्धाऽऽदर्शान् प्रति ध्रुवम्।**
**आत्मवत् सर्वभूतेषु दृष्टिकोणो भविष्यति॥ १। ५। ५५॥**

गुरु कृपा द्वारा जब भक्तों के हृदय में उस प्रभु का अवतरण होता है तो मनुष्य के हृदय का कालुष्य मिट जाता है और मानव हृदय में प्रेम का स्रोत बहने लगता है। वह उस प्रेम रस का पान कर स्वयं तो तृप्त होता ही है, पर साथ ही सोचता है कि मैं अपने सभी प्रियजनों को भी यह अमृत बाँट दूँ। उस समय मन में सर्वस्व समर्पण की इच्छा जाग उठती है और मनुष्य की वह प्रेमधारा गंगा की भाँति निरंतर गतिशील रहकर सब की प्यास बुझाती हुई आगे बढ़ती जाती है। यह कोई आवश्यक नहीं कि मनुष्य धन से ही गरीबों की सहायता करे। देने के लिए हर मनुष्य के पास समय है, सद्विचार हैं, श्रम है, कला कौशल भी है। चिंतन के माध्यम से लोगों में विचार क्रांति लाकर समाज का कल्याण किया जा सकता है। श्रमदान द्वारा अशक्त रोगी की सेवा तथा सहायता की जा सकती है। गांधी जी ने चित्तरंजनदास, मोतीलाल नेहरू, जमनालाल बजाज, मौलाना आजाद जैसे कितने ही व्यक्तियों का जीवन बदल दिया। रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा बंकिम चंद्र जी ने साहित्य के द्वारा समाज की जो सेवा की उसे भुलाया नहीं जा सकता। सच्चा भक्त पथप्रदर्शक होता है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस विषय में पुराणों में कथा आती है कि एक बार जय–विजय अपना विमान लेकर धरती पर आए। विधाता के इस आदेश के साथ कि धरती पर से सच्चा स्वर्ग का अधिकारी ढूँढ़कर लाओ। धर्म–कर्म में लगे कई साधक उन्होंने देखे। पूछा–''आप यह क्यों कर रहे हैं ?'' उत्तर मिलता है–''यह संसार नश्वर है–हम यह भक्ति इसलिए कर रहे हैं कि मुक्त हो जाएँ। नित्य कुछ न कुछ पाप कर्म तो होते ही रहते हैं । उनकी शुद्धि भी इसी से कर लेते हैं।'' उनके आचरण व वाणी दोनों में कोई सामंजस्य न देख वे आगे बढ़े। एक स्थान पर उत्सुकतावश वे रुक गए। रात्रि हो गई थी। एक अंधा दीपक जलाए बैठा था। आने वालों की पदचाप सुनकर वह उन्हें राह बताता था। कीचड़ में सने व्यक्तियों के हाथ–पैर धुलाकर उन्हें अपने पास विश्राम के लिए बिठाता था व भूखे–प्यासे को यथासंभव खिलाता–पिलाता। दिन होने पर थोड़ी देर विश्राम कर वह बगीचे में काम करने लगा, ताकि कुछ सब्जी बेच कर गुजारे लायक जुटा सके। जय–विजय यह दृश्य देखकर उससे पूछ बैठे–''आप ईश्वर उपासना नहीं करते। सुबह का समय तो इसीलिए होता है।'' अंधा बोला–''मुझे तो मात्र रात्रि में लोगों को राह बताना, उनकी सेवा करना व दिन में श्रम करना ही उपासना का स्वरूप समझ में आया है। इससे अधिक मैं नहीं जानता।'' अपना निरीक्षण पूरा कर जय–विजय लौटे। प्रजापति ने उनके लिखे विवरण पर दृष्टि दौड़ाई । उनकी दृष्टि सब पढ़कर उस अंधे के विवरण पर ही जाकर टिकी। वे बोले–''तुम्हारा विवरण देखकर मुझे लगता है कि वर्तमान में शेष सभी तो आडंबर व समयक्षेप में लगे हैं। मात्र यही एक अधिकारी है जिसे स्वर्ग लाया जाना चाहिए।'' जय–विजय के मानसिक ऊहा–पोह को पढ़कर वे आगे बोले–''तात् ! उपासना



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मात्र जप–तप नहीं। आदर्शवादिता से भरे अंतःकरण में ही ईश्वर निवास करते हैं।''

सच्चे भक्त सारे संसार को अपना समझते हैं। आत्मवत् सर्व भूतेषु को अपनाकर वह सब के दुःखों को दूर करता है। उसके लिए सारी धरती अपना कुटुंब बन जाती है, 'जो तू वही मैं' साऱा संसार मेरा परिवार है। यह समझकर सबकी भलाई के लिए प्राण भी दे देता है। दधीचि ऋषि ने परोपकार के लिए अपनी अस्थियाँ दान कर दी। कर्ण ने दरवाजे फाड़ कर दे दिए। सच्चा सुख चाहने वाले बाहरी संपदा में न उलझ कर प्रसन्नता व संतोष का अनुभव करते हैं। सच्चा सुख जिसे चाहिए, वह बाहर की संपदा में नहीं उलझता, जो उलझता है, वह प्रसन्नता खो बैठता है व आत्मसंतोष भी।

एक राजा बहुत दुःखी, उदास और चिंतित रहते, जिससे रात को गहरी नींद तक नहीं आती थी। राज्य के मंत्री तथा निजी चिकित्सक उसे प्रसन्न रखने के लिए तरह–तरह के प्रयत्न करने लगे। प्रयत्न क्यों न करते, राजा जो ठहरा राज्य का। किसी ने कहा–''यदि राज्य के सबसे सुखी और प्रसन्न व्यक्ति को खोजकर उसका उत्तरीय वस्त्र राजा को पहना दिया जाए, तो उसकी खोई हुई प्रसन्नता लौट सकती है।'' अनेक मंत्री तथा नौकर चाकर सुखी व्यक्ति की खोज में निकल पड़े। सब सोचते कि यह कार्य जो सबसे पहले कर दिखाएगा, उसकी कार्यक्षमता का प्रभाव राजा पर पड़ेगा। अगर राजा खुश हो गया, तो मुँह माँगा पुरस्कार मिलेगा।

एक दिन सड़क के किनारे अपने आराम में मस्त एक सज्जन मिल गए। यद्यपि उन्होंने राजा के सम्मुख जाने में बहुत आना–कानी की, पर विवश थे, जाना पड़ा। राजा के सम्मुख उपस्थित हुए। जब राजा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने राज्य के सबसे प्रसन्न व्यक्ति से मिले तो उनकी भी खुशी का ठिकाना न रहा। वह चिल्ला पड़े–''अच्छा, तुम हो सबसे सुखी व्यक्ति ! फिर तो कितने ही लोग तुमसे ईर्ष्या करते होंगे। लाओ ! लाओ !! तुम्हारा उत्तरीय वस्त्र कहाँ है ? मैं भी उसे पहनकर अपनी उदासीनता और चिंताओं से मुक्त हो जाऊँ।''

''राजन् ! आप उत्तरीय वस्त्र की बात कहते हैं, मेरे पास तो ओढ़ने–पहनने की एक धोती के सिवाय कुछ नहीं। रमता जोगी और बहता पानी जैसा मेरा जीवन है।'' राजा समझ गया कि सुख वस्तुओं में नहीं संतोष में है। अतः हे साधको ! अंदर की शुष्कता को कम करने के लिए प्रेम का स्रोत बहा दो। प्रेम ही परमेश्वर है, वही आनंद स्वरूप है, सुख बाँटों और दुःख बँटाओ। इसी से प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है। आत्मीयता से भरा हुआ हृदय ही भगवान का मंदिर है।

संत रामदास एक दिन अपने शिष्यों के साथ धर्म प्रचार के लिए जा रहे थे। रास्ते में निर्जन प्रदेश पड़ा। दूर तक कोई गाँव दिखाई न देता था। भोजन की समस्या उत्पन्न हुई, तो उन्होंने कहा–''जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे इकट्ठा कर लो और मिल–बाँटकर खाओ।''

शिष्यों के पास कुल मिलाकर पाँच रोटी और दो टुकड़े तरकारी निकली। शिष्यों ने भरपेट खाया और जो भूखे भिखारी उधर से निकले, वे भी उसी से तृप्त हो गए।

भानुवा नामक शिष्य ने पूछा–''''गुरुवर ! इतनी कम सामग्री में इतने लोगों की तृप्ति का रहस्य क्या है ?'' संत ने कहा–''हे शिष्यो ! धर्मात्मा वह है, जो खुद की नहीं सबकी बात सोचता है। अपनी बचत सबके काम आए, इस विचार से ही तुम्हारी पाँच रोटी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अक्षय अन्नपूर्णा बन गईं। जो जोड़ते हैं, वे ही भूखे रहते हैं। जिसने देना सीख लिया है, उसके लिए तृप्ति के साधन आप ही आ जुटते हैं।''

*है भक्ति समर्पण जीवन का, यह बच्चों का कोई खेल नहीं।*
*ईर्ष्या, छल और अहंकार से, इसका कोई मेल नहीं॥*
*अर्जुन ने किया समर्पण था, तन, मन, धन अपने प्राण सभी।*
*फिर क्या था बन गए सारथि, स्वयं कृष्ण भगवान तभी॥*
*मीरा ने किया समर्पण तो, बन गया अमृत विष का प्याला।*
*मालन ले आई साँप पिटारी, बन गई फूलों की माला॥*
*करता है भक्त समर्पण जब, अद्वैत भाव तब जगता है।*
*मैं तुम में हूँ, तुम मुझमें हो, बस यह स्वरूप ही रहता है॥*
*इस सुख को वही जानता है, जिसने इस सुख को पाया है।*
*इस सुखद अनुभव को कोई, नहीं शब्दों में कह पाया है॥*
*श्वाँस–श्वाँस हर शब्द से, झरता मधुमय प्यार।*
*प्रभु का बस पावन दरश, हो जाए एक बार॥*

**तस्या अभ्यास एकान्त ईश्वरायात्मनो मुने।**
**समर्पणस्य श्रद्धाया उदयाय विधीयते॥ १।५।५२॥**
**परिपक्वामवस्थां सा श्रयते तु यथा–यथा।**
**उदारात्मीयतारूपे व्यापके समुदेति च॥ १।५।५३॥**

हे जिज्ञासु साधको ! भक्ति समर्पण का नाम है। सच्चा भक्त कभी छल कपट का व्यवहार नहीं कर सकता। प्रभु केवल प्रेम के भूखे हैं। जब तक हृदय में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का बसेरा है, तब तक वे प्रभु मन मंदिर में नहीं आ सकते। प्रेम गली अति साँकरी तामें दो न समाय। समर्पण किया था हनुमान ने वे भगवान राम से अधिक



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूज्य हो गए; समर्पण किया था अर्जुन ने बस फिर क्या था, स्वयं भगवान उनके सारथि बन गए। समर्पण किया था निर्जीव बाँस की बाँसुरी ने जो कृष्ण के ही अधरामृत का निरंतर पान करती रही। गोपियों को भी बाँसुरी से ईर्ष्या होती थी।

अर्जुन ने एक बार बाँसुरी से पूछा–'''शुभगे ! तुम्हें कृष्ण स्वयं हर समय होठों से लगाए रहते हैं, हम सब उनकी कृपा पाने के लिए बहुत प्रयत्न करते हैं, परंतु सफल नहीं होते, जब कि तुम बिना प्रयत्न किए ही उनके अधरों पर रहती हो।''

''बिना प्रयत्न किए नहीं अर्जुन !'' मुरली बोली–''मैंने भी प्रयत्न किया है। जानते हो मुझे मुरली बनने के लिए अपना मूल अस्तित्व ही खो देना पड़ा है।''

अर्जुन को बात तब समझ में आई। बाँसुरी अपने आप में खाली थी। उसमें स्वयं का कोई स्वर नहीं गूँजता था। बजाने वाले के ही स्वर गूँजते थे। बाँसुरी को देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि यह कभी बाँस रह चुकी है, क्योंकि न तो उसमें कोई गाँठ थी और न कोई अवरोध। अर्जुन को भगवान का प्यार पाने का अनूठा सूत्र मिल गया।

सच्चा समर्पण तो किया था मीरा ने, भगवान उसके साथ नाचते गाते थे, उसका विष का प्याला भी अमृत हो गया, सर्प पिटारी फूलों की माला बन गई। समर्पण किया तुलसी, सूर, कबीर ने भगवान ने रामबोला को तुलसीदास बनाया, चक्षुहीन सूर को प्रज्ञा चक्षु मिले । जब समर्पण भाव जगता है तो द्वैत भाव समाप्त हो जाता है और भक्त भगवान एकाकार हो जाते हैं। यह अनिर्वचनीय आनंद केवल अनुभूति का विषय है, इसे वाणी द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। स्वाध्याय



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं सत्संग के द्वारा व्यक्ति को समर्पण की प्रेरणा मिलती है। जैसे जैसे मानव हृदय में समर्पण का भाव जगता है, संकीर्ण स्वार्थपरता, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का विनाश होने लगता है। कण–कण में भगवान के दर्शन होने लगते हैं, और फिर भगवान भक्त के वश में होकर उसके आगे पीछे घूमने लगते हैं।

एक बार अनंतशयन तीर्थ में विष्णु विग्रह पर चोल नरेश ने आभूषण चढ़ाए। इसी बीच दरिद्र भक्त विष्णुदास ने आकर उन पर तुलसी पत्र और जल डाल दिया। राजा व रंक में विवाद छिड़ गया कि सच्चा पुजारी कौन है, इसकी परीक्षा होनी चाहिए।

चोल राजा ने विष्णु भगवान की प्रसन्नता हेतु कोटि मुद्राओं का व्यय करके विराट् यज्ञ का आयोजन किया। उधर रंक विष्णु पूजा में लीन हो गया। महीनों बीत गए। राजा का यज्ञ और रंक की भक्ति अबाध गति से चलती रही। तभी विष्णुदास के समक्ष एक संकट उपस्थित हुआ। एक सप्ताह से लगातार कोई उसका भोजन चुरा ले जाता था। वह भगवान को भोग न लगा पाता और स्वयं भी भूखा रहता। आठवें दिन वह चोर को पकड़ने के लिए छुप कर बैठ गया। नियत समय पर चोर आया एक दीन, अस्थि शेष, क्षुधित, कंपित चांडाल। वह सूखी रोटियाँ लेकर जाने लगा। विष्णुदास के अंतर का वैष्णव मन द्रवित हो उठा–बेचारा दीन, न जाने कितने दिनों से भूखा है। वह आड़ से निकल कर बोला–''रुको अतिथि ! यह घृत भी ले जाओ। रूखी रोटियों से तुम्हारी क्या तृप्ति होगी ? भयभीत न होओ, मैं तुम्हारा सेवक हूँ।'' और अगले ही क्षण चाण्डाल ने भगवान विष्णु का रूप धारण कर लिया। भगवान ने भक्त विष्णुदास को विमान पर बैठा लिया और उसको अपने धाम वैकुण्ठ ले गए। यज्ञ मंडप में बैठे



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चौल राजा ने विमान देखा तो स्तंभित हुए और बोले–''मैं पराजित हुआ, भगवन् संपन्न के वैभव पर नहीं, अकिंचन की सरल भक्ति पर रीझे।''

भगवान भक्तों के इसी गुण पर सदा रीझते रहे हैं। चाहे वे निषादराज, शबरी तथा जंगल में धूम मचाने वाले चपल चंचल रीछ–वानर हों अथवा गोपियों का मक्खन चुराने वाले बाल–गोपाल ग्वाले। भगवान ने सदा उनके हृदय की निर्मलता देखी है और दुर्योधन की तुलना में विदुर के आतिथ्य को वरीयता दी है। यह भावना मन की निष्कपटता पर निर्भर है। अतः हे तात् ! आत्म चेतना की सघन भावनाओं का प्रत्येक अंश, मन की सारी शक्ति जब विश्व उद्यान को सुंदर बनाने में लग जाए, तब समझो कि समर्पण की प्रक्रिया शुरू हो गई है। इसके बिना भगवान के दर्शन नहीं हो सकते।

आद्यशंकराचार्य, भज गोविंदम् का नारा लगाते हुए निकल पड़े और भगंदर के फोड़े के बावजूद संस्कृति रक्षा हेतु भारत भर में भ्रमण किया, धर्म संबंधी विकृतियों का खंडन किया तथा धनाध्यक्षों के वैभव को भी जनहित की ओर मोड़ने में सफल हुए। अपने कष्ट की चिंता न कर दूसरों का ही भला सोचने वाले हमेशा पूजे जाते हैं।

*नैवेद्य, रोली और चावल से, प्रभु को जो भी बहलाते हैं।*
*मन में श्रद्धा विश्वास नहीं, वे ढोंगी ही कहलाते हैं॥*
*भगवान भाव के भूखे हैं, जब भक्त समर्पण करते हैं।*
*तब कृष्ण कन्हैया बनकर वे भक्तों के दुःख को हरते हैं॥*
*आते हैं नंगे पैर दौड़, द्रौपदि का चीर बढ़ाते हैं।*
*तीन मुट्ठी लेकर चावल, वे तीन लोक दे जाते हैं॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*मानव का जीवन मिला, मिले प्रभु अनमोल।*
*इस अवसर को मत गँवा, अपने बंधन खोल॥*
*यह विश्व उन्हीं की बगिया है, वे माली हैं इस उपवन के।*
*हर हृदय उन्हीं का मंदिर है, वे स्वामी हैं इस जीवन के॥*
*एक लघु बीज के भीतर भी, जैसे वट वृक्ष छिपा रहता।*
*जैसे छोटी सी वीणा में, मादक संगीत भरा रहता॥*
*जैसे सृष्टि के कण–कण में, वह ही विराट इठलाता है।*
*वैसे ही मानव के तन में, अविनाशी प्रभु मुस्काता है॥*
*जैसे एक बीज को तोड़ फोड़, फल–फूल न कोई पा सकता।*
*वैसे वीणा को झटक पटक, मृदु गीत न कोई गा सकता॥*
*रोम–रोम में है रमा, सर्वव्यापी भगवान।*
*जैसे छोटे बीज में, छिपा है वृक्ष महान॥*

**भक्तिर्भावुकता नैव तत्रोच्चादर्शता मता।**
**सरलं ये तु जीवन्ति तेषामेषा तु सम्भवेत्॥ १।५।७६॥**
**अन्ये तात्कालिकान् भावावेशान् भक्तिं वदन्ति तु।**
**भ्रमन्ति तै भ्रमावर्ते पराँश्च भ्रामयन्त्यपि॥ १।५।७७॥**

भक्ति के वास्तविक रूप का महत्त्व बताते हुए महाप्राज्ञ कहते हैं कि हे मनीषियो ! भक्ति केवल कर्मकांड नहीं है। देवता को नैवेद्य चढ़ाना, रोली, चावल से तिलक करना, ये सब बाहरी आडंबर हैं, इससे कभी–कभी अहंकार भाव जागता है कि हमने भगवान की पूजा में इतना खर्च कर दिया। बिना श्रद्धा–विश्वास के इन सबसे भगवान को प्रसन्न नहीं कर सकते। भक्ति मन की उदारता का नाम है। भगवान तो भाव के भूखे हैं।

एक प्रसिद्ध ज्ञानी नगर के शांत कोने में रहते थे और जब लेखन



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से समय बचता तो अपनी फूस की झोंपड़ी के बाहर बैठकर एकतारा बजाया करते थे। एक धनिक उनकी ख्याति सुनकर अपने रथ पर चढ़कर उनसे मिलने आया। रास्ता इतना सँकरा था कि उसे उतर कर पैदल जाना पड़ा। संत अतिथि का स्वागत करने द्वार पर आए। फटे वस्त्र, पत्तों की टोपी, फिर भी चेहरे पर एक दिव्य शांति व प्रफुल्लता। देखते ही धनिक ने कहा–''ओह ! संत आप इतने दुःखी, दरिद्र और संकटग्रस्त।''

संत मुस्कराए और बोले–''मैंने सुना है धन के अभाव में मनुष्य गरीब भर रहता है। दुःखी वे रहते हैं जो अज्ञानग्रस्त हैं। बताओ मैं गरीब, अच्छा या दुःखी ?'' धनिक सिटपिटाए से चुप खड़े रह गए।

संतों के पास देने को अपार आत्मिक संपदा है। वे किसी से धन संपदा नहीं चाहते, पर इच्छुकों को, पात्रों को बाँटते रहने में सदैव प्रसन्नता अनुभव करते हैं। जो याचक है, वह सच्चा भक्त नहीं। भक्त जब भी माँगता है सीधे ईश्वर से, पर अपने लिए नहीं, मानव मात्र के लिए, विश्व वसुधा के लिए।

आदर्शनिष्ठ, उदारमना स्वयं दीन–हीन परिस्थितियों में रहकर भी अपना कर्त्तव्य धर्म पूरा करते हैं। जब प्रभु को कोई निष्कपट भाव से पुकारता है, वे नंगे पाँव आकर द्रोपदी का चीर बढ़ाते हैं, गज की रक्षा करते हैं, सुदामा के तीन मुट्टी चावल के बदले तीन लोक दे डालते हैं।

बस प्रभु की छवि को जो एक बार देख लेता है, वह उन्हीं का हो जाता है, उसके लिए दुनिया की सारी वस्तुएँ मिट्टी के सदृश महत्त्वहीन हो जाती हैं। उसके हृदय में प्यार का प्याला लवालब छलकता है, तो वह सांसारिक कष्टों से पीड़ित व्यक्तियों की सहायता करने निकल



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़ता है। आनंद की अनुभूति में मगन वह व्यक्ति अपने भीतर ही स्वर्ग की सुखद अनुभूति करता है। भगवान ऐसे ही भक्तों की खोज में रहते हैं।

एक बार राजा शकुंत महर्षि तपोवन में गए। वहाँ उन्होंने सभी मुनियों के पैर छुए। संयोग से महर्षि विश्वामित्र रह गए। विश्वामित्र इसे अपमान जानकर बड़े ही क्रुद्ध हुए। विश्वामित्र ने अपने शिष्य महाराज राम से सारी बात कही, तो राम को भी यह बात ठीक नहीं जँची। राम ने प्रण किया कि आज सायंकाल तक या तो शकुंत को आपके चरणों में झुका दूँगा अन्यथा अपना शीश आपके पैरों में चढ़ा दूँगा। राजा शकुंत को जब यह समाचार मिला, तो भागकर माता अंजना के यहाँ शरण ली। माता अंजना ने उन्हें अभयदान दिया और अपने पुत्र हनुमान जी को उनकी रक्षा के लिए नियुक्त किया। श्रीराम वहाँ भी पता लगाने आए। उन्होंने भक्त हनुमान जी को अंदर जाने के लिए समझाया, परंतु हनुमान जी तो माता की आज्ञा और शरणागत की रक्षा में प्रतिबद्ध थे। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। सूर्य डूबने जा रहा था कि हनुमान जी की गदा से आहत होकर भगवान रामचंद्र भूमि पर गिर पड़े।

महावीर के पौरुष बल की सराहना करते हुए रामचंद्र जी ने अपनी हार मान ली। हनुमान जी तत्काल ही उनके चरणों में गिर पड़े और अपनी धर्म रक्षा की व्यवस्था बताते हुए क्षमा याचना करने लगे। तुरंत ही उन्होंने शकुंत को भी बुलाया और उनके चरणों में झुकाकर उसे भी धन्य किया।

इतने में ही विश्वामित्र जी भी आ पहुँचे। सबने उनको प्रणाम किया तथा शकुंत ने अपराध के लिए क्षमा याचना की। सभी ने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हनुमान जी की भरसक प्रशंसा की। प्रभु भक्तों के इन्हीं गुणों पर रीझते हैं। मनुष्य के इस आत्म विस्तार से अद्‌भुत चमत्कार होते हैं।

*पाकर बसंत स्पर्श बीज जब धरती में है गल जाता।*
*तब फूल, फलों, पत्रों से लद, वही सघन वृक्ष है बन जाता।*
*पाकर वादक का मधुर स्पर्श, जब वीणा झंकृत हो जाती।*
*तब अपनी मधुर रागिनी से, इस जग को सम्मोहित करती।*
*पाकर सद्‌गुरु की कृपा दृष्टि, यह जीवन धन्य बन जाता है।*
*सत्संग समुद्र में डूब मनुज, यह भवसागर तर जाता है।*
*है बहुत अभागा वही बीज, जो धरती में अंकुरा न सका।*
*है बहुत अभागा वह मानव, जो कृपा गुरु की पा न सका।*
*जीवन सारा खो दिया, करके वाणी–विलास।*
*बिना प्रेमरस के चखे, किसकी बुझती प्यास॥*

**अहम्मन्यतया सार्धमुदारा भक्तिभावना।**
**स्थातुं नैव समर्थास्ति द्वयोरेको विशिष्यते॥ १। ५। ७३॥**
**जीवनं सरलमुच्चविचारा इति भावनाम्।**
**भक्ता भजन्ति स्वल्पं च भुञ्जते भोजयन्त्यलम्॥ १। ५। ७४॥**

अहंकार और भक्तिभावना दोनों साथ–साथ नहीं रह सकते। अतः भक्त जन सादा जीवन ही अपनाते हैं। वे स्वयं न खाकर दूसरों को खिलाने में खुशी का अनुभव करते हैं। दूसरों से माँगते नहीं देने में विश्वास रखते हैं।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर तब किशोरावस्था में ही थे। उदारतापूर्वक बाँटते रहने की भावना का बचपन से ही उनके हृदय में स्थान था, पर उसे पोषण मिला वात्सल्यमयी माँ से। वे एक दिन एक साथी को लेकर आए। माँ से कहा–''यह फीस के पैसे न होने के कारण परीक्षा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं दे पा रहे है। क्या हम इनकी कुछ मदद कर सकते हैं ?'' माँ ने तुरंत अपना मंगलसूत्र निकाल कर दे दिया, उसे गिरवी रखकर फीस की व्यवस्था की गई। छात्र परीक्षा में बैठा, उत्तीर्ण हुआ। गिरवी रखा हुआ मंगलसूत्र लाकर उसने ईश्वरचंद्र की माँ के चरणों में रखा। ममता भरी डाँट लगाते हुए वे बोलीं–''बेटा ! इसका नाम ही मंगलसूत्र है। इसीलिए मंगल प्रयोजन में काम आ गया। तू इसे रख, बेचकर आगे की पढ़ाई की व्यवस्था बना।'' सांसारिक प्रलोभन तथा ईश्वर भक्ति एक साथ नहीं रह सकते।

एक बार एक नगर सेठ अपनी गुत्थियों के समाधान में सहायता प्राप्त करने के लिए मंदिर में पहुँचे। देवता को प्रसन्न करने के लिए वे थाल भर मोती और नैवेद्य लाए थे। झरोखे में से झाँक कर सेठ ने देखा तो एक फटे कपड़े वाला, अस्थि पिंजर जैसा कोई गरीब व्यक्ति था, पर वह कृतज्ञता व प्रसन्नता भरे अश्रु बिंदु देवता के चरणों पर चढ़ाता हुआ प्रार्थना कर रहा था कि धन्य है आपका वरदान कि मैं सुख की नींद सोता हूँ और कोई मुझसे ईर्ष्या नहीं करता।

सेठ ने पूजा तो की, पर इस पूरी अवधि में सेठ की मनःस्थिति हाहाकार से भरी थी। ''तीन बार सप्ताह में कथा और एक घंटा नित्य कीर्तन करने पर भी मुझे सुख–चैन नहीं मिल रहा है और यह गरीब व्यक्ति अपने अकिंचन से उपहार से प्रसन्न है ? ऐसा विरोधाभास क्यों ? मेरी उपेक्षा क्यों और दरिद्र पर अनुग्रह किस कारण ?'' वे अपना संदेह लेकर प्रधान याजक के पास पहुँचे। याजक ने तीसरे दिन देवता से पूछकर समाधान बताने को कहा। उन्होंने तीसरे दिन सेठ को बताया–''आपने मात्र भावावेश को ईश्वर की उपासना माना। देवता को आपके वैभव से कोई लेना–देना नहीं। उस गरीब ने ईश्वर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को अपना स्वामी मानकर उन्हें अपने हृदय में स्थान दिया। उसने वह चढ़ाया जो भगवान को प्रिय था–स्नेह, प्यार। बदले में उसे मिला है–शांति, संतोष। आप भी वही चढ़ाइए, वैभव से भगवान को मत रिझाइए।''

जैसे वसंत ऋतु आने पर जमीन में गड़ा बीज अंकुरित होकर पल्लवित पुष्पित होता है, जैसे गायक का स्पर्श पाकर वीणा झंकृत हो जाती है, उसी प्रकार सद्गुरु की कृपादृष्टि जब मानव पर हो जाती है, उसका जीवन धन्य हो जाता है, वह स्वार्थ छोड़कर दीन–दुःखियों में ही भगवान का दर्शन करता है।

भक्ति का सही स्वरूप बहुत कम लोग जानते हैं। तीर्थयात्रा, नदी स्नान का पुण्य किस कारण है, यह जाने बिना इन उपचारों में धन तो खर्च करते हैं, पर शिक्षा–प्रेरणा का ज्ञान न होने से वह लाभ नहीं मिलता, जो बिना जाए ही घर बैठे भी मिल सकता था।

एक गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। उसने तीर्थयात्रा के लिए कुछ पैसे जमा कर रखे थे। जब जाने का समय आया तो पता चला, पड़ौस के परिवार में धनाभाव के कारण उनके एक पुत्र की चिकित्सा नहीं हो पा रही है। वह मरणासन्न अवस्था में है। बुढ़िया गई व उन्हें जरूरतमंद समझकर सारी संचित पूँजी दे आई। बच्चा बच गया व स्वास्थ्य लाभ करने लगा। बुढ़िया ने धीरे–धीरे और धन एकत्र किया, तीर्थयात्रा की फिर से तैयारियाँ पूरी कीं, पर जब चलने को ही थी, एक अकाल पीड़ित परिवार सामने आ खड़ा हुआ। उसने अपना सारा धन उसे दे दिया। वह स्वयं फिर चक्की चलाकर आजीविका उपार्जन करने लगी। इसी में बुढ़िया को ऐसा सुख संतोष मिल रहा था, जो तीर्थ जाने से भी नहीं मिलता। अगले दिन एक संत वहाँ आए। उन्होंने कहा–''माँ ! भगवान ने तुम्हारे इन दो पुण्यों को तीर्थयात्रा से भी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अधिक महत्त्व दिया है, अब तुम्हें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं।'' तो श्रद्धालु भाइयो और बहनो ! परमार्थ ही सच्चा तीर्थस्थान है।

एक वृद्धा ने तीर्थयात्रा पर जाने के लिए कुछ धन इकट्ठा किया। वह जाने ही वाली थी कि उसने सुना कि उसके पड़ोस में कोई स्त्री अपनी सौतेली बेटी को किसी वृद्ध के हाथों बेच रही है। उसने कुछ सोचा और अपना वह संचित धन उस स्त्री को देकर उसकी लड़की की शादी अपने बेटे से कर दी। बिना यात्रा किए ही उसे जिस पुण्य की प्राप्ति हुई वह शायद तीर्थ यात्रा से भी न होती। लोकसेवी सच्चे भक्त को कैसा होना चाहिए, इसका सशक्त उदाहरण श्री कृष्ण के चरित्र में देखने को मिलता है। उन्होंने राजसूय यज्ञ में पत्तल उठाने का कार्य किया। अतः हे साधको ! ईश्वर प्राप्ति का रास्ता भक्ति समर्पण ही है, यही मानव को महामानव बनाती है तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से छुड़ाकर ईश्वर तुल्य बना देती है।

एक पतिव्रता के घर के सामने ही एक वेश्या रहती थी। पतिव्रता उसकी चेष्टाओं को लुकछिप कर देखा करती और समय–समय पर उसकी भरपेट निंदा करती। वेश्या देखती कि कुरूप, गुणहीन, अस्वस्थ और निर्धन पति की भी पतिव्रता एकाग्र भाव से कैसी सेवा करती है, तो उसका मन श्रद्धा से गद्‌गद् हो जाता। उसे वह साक्षात् देवी मानती और जब भी अवसर मिलता, उसकी भरपूर प्रशंसा करती।

कुछ दिन पश्चात् मृत्यु का समय आया। पतिव्रता की आत्मा स्वर्ग गई। संयोगवश दूसरे ही दिन वेश्या भी मर गई और उसकी आत्मा भी वहीं जा पहुँची।

पतिव्रता को निम्न श्रेणी का स्वर्ग मिला और वेश्या को ऊँचे स्वर्ग में ले जाने की आज्ञा हुई। इस न्याय को अनुचित बताते हुए



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पतिव्रता ने धर्मराज से कहा–''भगवन् ! वेश्या वृत्ति का पाप कर्म करते हुए भी उसे मुझसे उच्च श्रेणी की सद्गति क्यों ?''

अपनी बात समझाते हुए धर्मराज ने कहा–''वेश्या ने परिस्थितियों की विवशता में वह व्यवसाय तो अपनाया पर अपने पाप के लिए सदा दुःखी रही। तुम्हारे सत्कर्म को देखकर श्रद्धा से उसका मन भरा रहा और वैसी ही स्वयं बनने की प्रार्थना भगवान से करती रही, इसलिए उसे उच्चकोटि का स्वर्ग मिला। शरीर से मन बड़ा है और तुम्हारा मन उसकी चेष्टाओं को देख कर निन्दा करने में लगा रहा।''

क्रिया से भावना श्रेष्ठ है। स्वर्ग की संहिता के अनुसार मन के भी पुण्य–पापों की गणना की जाती है और उसी आधार पर फल का निर्धारण होता है।

*संकीर्ण स्वार्थपरता पर जब, मानव का अंकुश लगता है।*
*तब कर्मयोगी का मन उदार, परमार्थ परायण बनता है॥*
*जो प्रभु को ही सब कुछ दे दें, बस भक्त वही कहलाते हैं।*
*जब जन सेवा में लगते हैं, तो मन निर्मल हो जाते हैं॥*
*ऐसे अनुदानी भक्तों पर, प्रभु के अनुदान बरसते हैं।*
*वे आत्मतुष्टि पा ईशकृपा और यश के भागी बनते हैं॥*

*स्वार्थपरक संकीर्णता, करती सदा अनिष्ट।*
*लोभ, मोह और अहंता, इसके पुत्र बलिष्ठ॥*

**संकीर्णास्वार्थपरतैव विद्यते भवबन्धनम्।**
**लोभमोहावहंकार इति तस्यास्त्रयः सुताः॥ १। ५। ७८॥**
**इदं कुटुम्बं यत्रापि वासमाधास्यति ध्रुवम्।**
**तत्रेर्ष्याकलहद्वेषपातदुर्व्यसनानि च॥ १। ५। ७९॥**

ज्ञानयोग एवं कर्मयोग का महत्त्व बताकर युग ऋषि भक्ति का



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहस्य समझाते हुए कहते हैं–हे महामुने ! जब सद्ज्ञान प्राप्त कर मनुष्य सत्कर्म करने के लिए चलता है तो मनुष्य के हृदय में भाव संवेदनाओं का जागरण होता है, तभी वह शुभकर्म करके ईश्वर पुत्र होने का गौरव प्राप्त करता है। अवतारी चेतना जब मानव के मन में जाग उठती है, वह व्यक्ति को, उस भक्त को बैचेन कर उसके हृदय में आमूल–चूल परिवर्तन कर देती है और दुर्जन से दुर्जन भी नारायण बन जाता है।

बहुधा व्यक्ति अहंकार में यह भूल कर बैठते हैं कि वे स्रष्टा के उद्यान के माली नहीं, मालिक हैं। एक राजा को यह अभिमान था–''मैं ही राजा हूँ और जगत् का पालक हूँ, मनु आदि शास्त्रकारों ने व्यर्थ विष्णु को शास्त्रों में जगत्पालक कहकर संबोधित किया है।'' एक बार एक संन्यासी शहर के बाहर एक पेड़ के नीचे जा बैठा। लोग उसकी शांतिप्रद मीठी–मीठी बातें सुनने के लिए वहाँ जाने लगे। एक दिन राजा भी वहाँ गया और कहने लगा कि मैं ही सब लोगों का पालक हूँ। यह सुनकर संत ने पूछा–तेरे राज्य में कितने कौए, कुत्ते और मकोड़े हैं ? राजा चुप हो गया।

संत ने कहा–जब तू यही नहीं जानता, तो उनको भोजन कैसे भेजता होगा ? राजा ने लज्जित होकर कहा–तो क्या भगवान कीड़े–मकोड़ों को भी भोजन देते हैं ? यदि ऐसा है तो मैं एक कीड़े को डिबिया में बंद करके देखता हूँ। कल देखूँगा कि भगवान इसे कैसे भोजन देते हैं। दूसरे दिन राजा ने संत के पास आकर डिबिया खोली, तो वह कीड़ा चावल का एक टुकड़ा बड़े प्रेम से खा रहा था। यह चावल डिबिया बंद करते समय राजा के मस्तक से गिर पड़ा था। तब उस अभिमानी ने माना कि भगवान ही सबका पालक है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भक्ति का अर्थ है–श्रेष्ठता से स्नेह। सच्चरित्र कभी भी छोटे बड़े का भेदभाव नहीं करता। वह स्वार्थ की बात न सोचकर हमेशा परमार्थ की बात ही सोचता है। अंतर में बैठे आत्मदेवता के जागने पर मनुष्य बिना परोपकार किए रह ही नहीं सकता। साधन सुविधाएँ नहीं हैं, हम असहाय और असमर्थ हैं, ये सब बहाने अंगड़ाई लेते ही समाप्त हो जाते हैं। जरा सोचिए ईसामसीह के पास क्या था ? पिता यूसुफ गाँव के साधारण बढ़ई, माँ अशिक्षित, पालन पोषण गड़रियों के बीच हुआ था। सारे अभावों के बावजूद भी उनमें थी करुणा की धारा, स्वार्थ शून्यता, त्याग की भावना, इसी के कारण आज भी वे आत्म प्रकाश के संदेश वाहक माने जाते हैं। बीता हुआ समय उनकी छवि को मलिन नहीं कर पाया। सिद्धार्थ यदि राजभवन में राजकुमार ही बनकर रहते तो अन्य राजाओं की भाँति वे भी शासक बनकर भोग विलासमय जीवन बिता कर स्वर्ग सिधार जाते, किंतु मन की संवेदनशीलता, करुणा की भावना ने उन्हें भगवान बुद्ध बना दिया। जब अंतःकरण में लौ लगती है तो कई जन्मों का घना अंधकार समाप्त हो जाता है। शरीर की शक्तियाँ उस प्रकाश को बढ़ाने में सहायता देती हैं। टैगौर ने लिखा है, यदि प्रकाश न हो, झंझावात और मूसलाधार वर्षा की अंधेरी रात हो, कोई सहायक न हो, तो भी मनुष्य अपने हृदय में प्रकाश की ज्योति जगाकर अकेला चल सकता है। यह ज्योति मोहनदास करमचंद के मन में जगी, तो मिस्टर गांधी विश्ववंद्य महात्मा गांधी बन गए। यह क्षण प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आता है, यदि मनुष्य उस क्षण को समझकर अपने को बदल दे, तो दुष्ट व्यक्ति भी दूसरों के लिए आदर्श बन जाता है। क्रूर हृदय अशोक, अशोक महान बन गया। दूसरों का वध कर ने वाले रत्नाकर क्रौंच पक्षी के वध को देखकर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

द्रवित हो गए और उनके मुख से कविता फूट पड़ी तो वे आदिकवि वाल्मीकि के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने रामायण लिखी और सीता माता ने उनके आश्रम में लव–कुश जैसे प्रतापी पुत्रों को जन्म दिया।

हे साधको ! इस समय पृथ्वी पर इन भाव संवेदनाओं का अकाल पड़ गया है। इस भाव संवेदनाओं की गंगोत्री को फिर से धरती पर लाना होगा। इसके लिए भगीरथ जैसा परिश्रम करना होगा। पृथ्वी पर स्वर्ग का अवतरण महाकाल का निश्चय है, जो होकर रहेगा।

एक साधु तथा डाकू साथ–साथ यमराज की सभा में जा पहुँचे। यमराज ने उनके कृत्यों का अवलोकन किया व कहा–''यदि तुम दोनों को अपने लिए कुछ कहना हो, तो कह सकते हो। तुम्हारी करनी तुम्हारे सामने है। एक ने भक्ति की है तो दूसरे ने पाप।''

डाकू विनम्र स्वर में बोला–''महाराज ! मैंने जीवन में बहुत पाप किए हैं। जो भी विधान आपके यहाँ मेरे लिए हो, वही करें। मैं प्रस्तुत हूँ।'' फिर साधु बोले–''आप तो जानते ही हैं, मैंने जीवन भर भक्ति की है। कृपया मेरे सुख साधनों का प्रबंध शीघ्र करवाएँ।''

यमराज ने दोनों की इच्छा सुनकर डाकू से कहा–''तुम्हें यह दंड दिया जाता है कि तुम आज से इस साधु की सेवा किया करो।'' डाकू ने सिर झुकाकर आज्ञा शिरोधार्य की, परंतु साधु ने आपत्ति की–''महाराज ! इस दुष्ट के स्पर्श से में भ्रष्ट हो जाऊँगा। मेरी भक्ति तथा तपस्या खंडित हो जाएगी।''

अब यमराज बोल उठे–''कुकर्मी डाकू तो विनम्रता के साथ आपकी सेवा करने को तत्पर हो गया और आप साधु महाराज मात्र अपने इस कथन से अपनी दुर्गति स्वयं कर बैठे हैं। आपकी भक्ति अधूरी है,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसका परिचायक है–आपका चिंतन। आज से आप इसकी सेवा करेंगे।''

हे श्रोताओ ! इन दिनों हमारा एक ही कर्त्तव्य है। वह है अपनी दिव्य संवेदनाओं का जागरण। केवल यही एक उपाय है, जिससे हम भावी परिस्थितियों में रहने योग्य हो सकते हैं, क्योंकि संवेदनशील को सही दृष्टि मिलती है। जो व्यक्ति की पीड़ा को नहीं पहचानते, वे आँखों के रहते भी दृष्टि विहीन हैं। अतः आइए ! हम इस युग परिवर्तन की बेला में गुरुदेव के सहयोगी बनें, इस आस्था संकट के समय भटकने से बचने के लिए भावसंवेदनाओं के राज्य में रहने योग्य बनें। यही क्षण आत्मजागृति का क्षण है।

**गीत–**

मन के भटकावे छोड़ो, कुछ काम प्रभु का कर लो रे।
लुटा रहा युग पुरुष सिद्धियाँ, चाहे झोली भर लो रे॥
सुनो सुनो युग दूत बुलाता, मत उसको झुठलाओ।
भीतर से सद्भाव जगाता, उस पर ध्यान लगाओ॥
अलग–अलग मत भटको भाई, मिलकर कदम बढ़ाओ।
युग विचार, युग ऋषि से मिलकर, जन–जन तक पहुँचाओ॥
अवसर अनमोल पकड़ लो रे, अपना प्रयास तो कर लो रे।
थोड़ी हिम्मत तो कर लो रे। कर लो रे। मन के भटकावे....

यह कहकर महाप्राज्ञ मौन हो गए। महर्षि का दिव्य संदेश सुनकर सभी संतों का मन हर्षित हो रहा था। उन्होंने हाथ जोड़कर कहा कि हे देव ! आज आपने ज्ञान, कर्म, भक्ति का संदेश देकर त्रिवेणी संगम में स्नान कराया है। हम मृगतृष्णा में भटक रहे थे, अब हम संकल्प लेते हैं कि भगीरथ की भाँति पुरुषार्थ करके ज्ञान गंगा को भू पर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाएँगे और घर–घर जा कर यह संदेश देंगे, किंतु हे नाथ ! मन में एक शंका रह गई है कि आज धरती पर जो सर्वथा दुष्टता छाई हुई है, उन दुष्टों से अपने को कैसे बचाएँ ? विधाता की इस सुंदर सृष्टि में अधर्म का अस्तित्व क्यों बना है जो सारे जग को पीड़ित कर रहा है ? यह सुनकर महाप्राज्ञ बोले–हे संतो ! सत्साहस संघर्ष की शक्ति द्वारा भगवान भक्तों की परीक्षा लेते हैं। यह एक समस्या है, इसका समाधान कल करेंगे, अब आप जाकर विश्राम करें। यह सुनकर सभी साधक गुरुदेव को प्रणाम कर मन ही मन गुनगुनाते प्रसन्न चित्त विश्रामस्थल की ओर चल दिए। आइए, हम सब भी इस कथा पर विचार करते हुए इस ज्ञान गंगा को धरती पर बहाने का संकल्प लें।

**इतिश्री मत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययो:,**
**युगदर्शन युगसाधनाप्रकटीकरणयो: श्री पिप्पलाद–श्वेतकेतु**
**ऋषि–सम्वादे ''उदारभक्तिभावने'' ति प्रकरणो नाम**
**चतुर्थोऽध्याय: ॥५॥**

**आरती श्री प्रज्ञा पुराण की**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा-पुराण-कथामृतम्

## पंचम् दिवस

## सत्साहस संघर्ष प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

### गुरु वंदना

स्वयं भगवान हमारे गुरु, परम सौभाग्य हमारा है।
स्वयं नारायण नर तन धरे, हमारे बीच पधारा है॥
मनुजता फिर अकुलाई है, दनुज दल फिर इतराया है।
देव संस्कृति ने देवों को, विकल हो पुनः पुकारा है॥
दे सकें तो दें जीवन दान, अन्यथा समयदान तो करें।
न बन पाएँ यदि भामाशाह, अपेक्षित अंशदान तो करें॥
समर्पित करें उन्हें प्रतिभा, उन्हीं ने जिन्हें सँवारा है।
स्वयं भगवान हमारे गुरु, परम सौभाग्य हमारा है॥
गुरु के आह्वान पर आज हम, कुछ तो अर्पित करें।
बाँटने जन–जन में गुरु ज्ञान, स्वयं को हम संकल्पित करें॥
शिष्य हैं, तो सोचें कितना गुरु का कर्ज उतारा है।
स्वयं भगवान हमारे गुरु, परम सौभाग्य हमारा है॥
हमारे गुरु प्रज्ञावतार, चलो प्रज्ञा को धारण करें।
दुष्चिंतन करें निरस्त, मनुज का कष्ट निवारण करें॥
करें सद्चिंतन शर संधान, ज्ञान से ही तम हारा है।
स्वयं भगवान हमारे गुरु, परम सौभाग्य हमारा है॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

## प्रज्ञा गीत

आज दाँव पर लगा देश का स्वाभिमान सेनानी।
और पड़ा सोया तू कैसे, जाग वीर बलिदानी॥
विदेशियों के छद्म जाल में फँसा देश यह सारा।
है आतंकवाद से छलनी सारा देश हमारा॥
भाई को भाई से अपने लड़वाते कटवाते।
हाय ! हंत हम किंतु उनकी चाल समझ हैं नहीं पाते॥
अपने ही सब रिश्ते–नाते टूट रहे जिस्मानी।
और पड़ा सोया तू कैसे, जाग वीर बलिदानी॥
अपराधों का असुर चतुर्दिक झंडा गाढ़ रहा है।
बहन–बेटियों की इज्जत से हो खिलवाड़ रहा है॥
हाहाकार मचा धरती पर भारी मारा–मारी।
ऋषियों की संतानो तुम पर क्यों चढ़ रही खुमारी॥
जाग राष्ट्र के पौरुष जागे सोई हुई जवानी।
और पड़ा सोया तू कैसे, जाग वीर बलिदानी॥

(प्रथम दिवस की भाँति कथा व्यास द्वारा पूजन)

## कीर्तन

आ जाना बन ध्यान, हमारे कीर्तन में।
भर जाना माँ प्राण, हमारे कीर्तन में॥
आए गिर कर हमें संभलना,
आए भूली राह बदलना।
सीखें हम काँटों पर चलना,
ध्रुव प्रह्लाद समान न हारे जीवन में॥१॥ आ जाना...



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भेद मिटाना, भ्रांति मिटाना,
मन की मलिन, अशांति मिटाना।
क्रांति जगाना, शांति जगाना,
रह न सके अज्ञान, हमारे जीवन में ॥२॥ आ जाना...
प्रज्ञा माता प्राण जगाना,
ज्ञान जगाना ध्यान जगाना।
दया, क्षमा, उत्साह जगाना,
कर जाना कल्याण हमारे जीवन में ॥३॥ आ जाना...

**आरण्यकस्य सत्रस्य पञ्चमे दिवसे शुभे।**
**जिज्ञासुः स हि दुर्वासा महर्षिः प्रमुखोऽभवत्॥ १।६।१॥**
**स्थितःसोऽग्रिमपंक्तौ च जिज्ञासां स्वां च व्याहरन्।**
**ओजोगम्भीरया वाचा पिप्पलादमथाब्रवीत्॥ १।६।२॥**

पूज्य गुरुदेव के प्रज्ञा पुत्रो, मातृ शक्ति स्वरूपा देवियो और बहनो प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से अब तक के प्रसंगों में आपने सुना कि आत्मज्ञान प्राप्त कर मानव ईश्वर के अनुदान वरदान प्राप्त करता है। उसके लिए संयमशीलता को अपनाना पड़ता है फिर ज्ञान, कर्म और भक्ति की त्रिवेणी संगम में स्नान कर वह आनंद की अनुभूति करता है, किंतु आज आरण्यक सत्र में प्रश्नकर्त्ता ऋषि दुर्वासा जी आगे की पंक्ति में बैठे हैं। जो अनीति को सहन न कर पाने के कारण बहुत जल्दी आवेश में आ जाते हैं। वे प्रसन्न होकर वरदान देते हैं तो क्रोधावेश में शाप भी दे देते हैं। उनके मन में एक जिज्ञासा थी कि मनुष्य सत्कर्म तो करे, किंतु क्या दुष्टों पर बिना क्रोध किए भी काम चल सकता है ? अतः वे विनम्रतापूर्वक महाप्राज्ञ पिप्पलाद जी से पूछते हैं–''हे देव ! इस संसार में अच्छाइयों के साथ जो



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बुराइयाँ दिखाई दे रही हैं, जो चारों तरफ अपना विकराल रूप धारण कर मनुष्य को निरंतर परेशान करती रहती हैं, उनसे छुटकारा कैसे मिले ? विधाता की इतनी सुंदर सृष्टि में अधर्म–अन्याय का अस्तित्व क्यों बना हुआ है ? अत्याचारी और दुष्ट व्यक्ति यदि शांति की भाषा न समझें, तो उनके साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए ?

यह सुनकर महर्षि पिप्पलाद जी ने विहँसते हुए कहा–''हे तपोनिधे ! दुर्वासा जी, आपने अपनी साधना तथा रुचि के अनुसार यह प्रश्न पूछा है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। आप यह समझ लीजिए कि संसार की प्रत्येक सुंदर वस्तु की महत्ता असुंदर वस्तु से तुलना करके ही जानी जाती है। अंधकार न हो तो प्रकाश का क्या महत्त्व है ? रात्रि न हो तो दिन की महत्ता कौन समझेगा ? अतः अनीति से नीति, अज्ञान से ज्ञान, अधर्म से धर्म की महत्ता समझी जा सकती है।''

हे महामुने ! ध्यानपूर्वक आप सुनिए कि सृष्टि के आदिकाल से ही नीति–अनीति का संघर्ष चला आ रहा है। ब्रह्मा जी ने जब सृष्टि को बनाया, तो सबसे पहले मक्खी–मच्छर जैसे छोटे–छोटे जीव बनाए, और उनसे पूछा–''तुम कौन हो ?'' तो वे भिनभिना कर उड़ गए। हाथी, घोड़े, शेर बनाकर उनसे भी यही प्रश्न किया तो वे दहाड़ते, हिनहिनाते, गरजते हुए जंगल की तरफ भाग गए। फिर मनुष्य को बनाया तो उससे भी यही प्रश्न पूछा। उसने कुछ देर सोचा और कहा–''अहं ब्रह्माऽस्मि''। सुनकर पितामह प्रसन्न हो गए। अहो मेरा अंश कितना सुंदर है ? वे उसे शिवजी के पास ले गए। शिवजी ने भी जब मनुष्य से उसका परिचय पूछा तो उसने कहा–''शिवोऽहम्''



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान शिव ने उसे सिर से पैर तक देखा, उसके वाह्य रूप तथा आंतरिक बुद्धि की सराहना कर वे भी संतुष्ट हो गए। फिर वे विष्णु जी के पास गए। उन्होंने भी जब मनुष्य से यही पूछा तो उसने कहा– ''सच्चिदानंदोऽहम्''। यह सुनकर भगवान विष्णु भी संतुष्ट हो गए। फिर ब्रह्मा जी तप में लीन हो गए, शिव जी ने समाधि लगा ली और कार्य–भार जगदम्बा को सौंपा। भगवान विष्णुजी ने धन संपदा वितरण का कार्य माँ लक्ष्मी को सौंप दिया और क्षीरसागर में शयन करने चले गए। समस्त विश्व की सूचनाएँ देने का काम सौंपा देवर्षि नारद जी को।

कुछ दिन बाद कोलाहल सुनकर ब्रह्माजी की समाधि खुली तो देवर्षि को बुलाया। नारद जी ने कहा–''हे पितामह ! आपकी सर्वश्रेष्ठ कृति मानव ने इस समय काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के वशीभूत होकर अपने को ही भगवान घोषित कर दिया है। अपनी तपस्या के बल पर आप सब देवताओं से आशीर्वाद ले–लेकर उसने पृथ्वी पर आतंक मचा रखा है। ब्रह्माजी शंकरजी के पास गए और फिर वे दोनों मिलकर भगवान विष्णु जी के पास गए। अधर्म के विनाश तथा धर्म की स्थापना के लिए उनसे अवतार लेने की प्रार्थना की। बस यहीं से देवासुर संग्राम तथा अवतार की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। भगवान ने समय और परिस्थितियों के अनुरूप विभिन्न रूप धारण किए। कभी राम बनकर रावण का वध किया, तो कभी महाभारत में कृष्ण बनकर आए। कभी बुद्ध बने, परंतु इस समय जो विचारों में विकृतियाँ आई हुई हैं, उनको नष्ट करने के लिए प्रभु को प्रज्ञावतार के रूप में आना पड़ा। पुराणों में इसे कल्कि अवतार



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहा गया है। आइए, उसी कथा को हम प्रज्ञा पुराण के गीत के माध्यम से सुनें।

## प्रज्ञा पुराण गीत

ध्यान से सुन लो प्रज्ञा पुराण, दिव्य युग ऋषि की वाणी रे,
दिव्य युग ऋषि की वाणी रे, अखिल जग की कल्याणी रे॥
यही है इस युग की गीता, यही है संस्कृति की सीता।
मिटाती भेदभाव मन का, हटाती कल्मष है तन का॥
सुखी हो मानवता सारी, ऐसी सुख की कहानी रे।
ध्यान से सुन लो प्रज्ञा पुराण, दिव्य युग ऋषि की वाणी रे॥

**संसारेऽवाञ्छनीयत्वमतएव तु विद्यते।**
**सहानुभूतिं कुर्यात्तन्न्यायनिष्ठां प्रति सदा॥ १। ६। ११॥**
**अज्ञानजन्य हानिभ्य आत्मानं रक्षितुं वयम्।**
**मनीषिणः सदा ज्ञानसाधनां कर्तुमुद्यताः॥ १। ६।१५॥**

पिप्पलाद ऋषि के माध्यम से गुरुदेव कहते हैं कि हे संतो, प्रारंभ से लेकर अब तक के जितने भी अवतार हुए हैं, उनका उद्देश्य एक ही है–धरती पर अधर्म का विनाश करके धर्म की स्थापना करना।

ध्वंस और सृजन, सुधार तथा दुलार भगवतसत्ता के ये दो पक्ष सदा ही रहे हैं। भगवान चाहते हैं कि उनका प्रिय राजकुमार समर्थ बने, इसीलिए अनीति, अनाचार को फैलाकर उसकी परीक्षा लेते हैं।

यह सुनकर जिज्ञासु ऋषि ने पूछा–''हे देव, प्रभु अवतरित हों और धर्म की स्थापना करें, यह तो ठीक है, किंतु मानव इस अनीति रूपी राक्षस से कैसे बचे, कृपया इसका सरल उपाय बताएँ ?''

यह सुनकर महाप्राज्ञ ने कहा–''हे तत्त्व जिज्ञासुओ ! कल की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कथा में यह बताया था कि अज्ञान, अभाव तथा अन्याय ये तीन राक्षस त्रिपुरासुर की भाँति मनुष्य को परेशान करते हैं और इससे टक्कर लेने के लिए ज्ञान, कर्म और भक्ति (उदारता) तीन ही देवताओं का सहारा लेना पड़ता है। अतः अज्ञान को ज्ञान से, अभाव को कर्म से तथा अन्याय को भक्ति, उदारता से जीतना होगा, किंतु दुष्ट व्यक्ति यदि उदारता और प्रेम की भाषा नहीं समझते तो उसके लिए उन्हें सत्साहस संघर्ष द्वारा समझाना पड़ता है, इसके अतिरिक्त कोई और विकल्प नहीं है। विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि संसार संघर्ष का रंगमंच है, जिसमें व्यक्ति, समुदाय और राष्ट्र अपने सिद्धांत और आदर्शों की रक्षा के लिए संघर्षरत होकर अपना अस्तित्व, अपनी श्रेष्ठता बनाए रखते हैं। अन्यायी कितना भी शक्तिशाली हो, किंतु जीत धर्म और सत्य की ही होती है। इसी कारण सोने की लंका भस्म हुई, इसी कारण कंस और दुर्योधन का विनाश हुआ और माता दुर्गा ने अवतार लेकर अत्याचारी, अहंकारी शुंभनिशुंभ तथा महिषासुर का वध किया ।''

गीता का 'युद्धस्व' शब्द यही प्रेरणा देता है कि अत्याचारी से युद्ध करो। कहा भी है–**अधिकार खोकर बैठे रहना, यह महा दुष्कर्म है। न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है।** प्रज्ञा पुराण की अनेक कथाएँ मनुष्य को साहस पूर्वक संघर्ष करने की प्रेरणा देती हैं।

एक उपवन में गुलाब का फूल अपना सौंदर्य बिखेर रहा था। एक यात्री उधर से निकला, बोला–''कितना सुंदर फूल है, लेकिन काँटों से घिरा बैठा है।'' फूल ने उत्तर दिया–''आपका कथन उचित नहीं है तात् ! मेरी सुरक्षा उसी से है। जहाँ फूलों से सुषमा बढ़ती है, वहीं आक्रमणकारियों से रक्षा के



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिए इनका होना भी अनिवार्य है, नहीं तो मेरा अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाए।''

स्वामी रामतीर्थ से किसी ने पूछा–''भारत के पिछड़ेपन का क्या कारण है ?'' उन्होंने कहा–''भारतवर्ष की भौतिक संपदा इसलिए नहीं लुट गईं कि यहाँ के लोग धर्म और परमार्थनिष्ठ होते हैं, वरन् भारत की विकसित और हरी–भरी फुलवारियाँ मध्यकाल की विलासिता के कारण लुट गईं। उनके आस–पास काँटों और झाड़ियों की बाड़ें नहीं रहीं। कष्टों के काँटे और झंझावातों की झाड़ियों के बीच जीवन सुरभि का उद्यान विकसित होता है, इसलिए मेरे प्यारे काँटो और झाड़ियों ! तुम्हें मुबारक हो, धर्म और संस्कृति, जीवन के उच्चादर्शों और भौतिक उन्नतियों के तुम्हीं रक्षक हो। तुम दूर न होना ताकि मेरे देशवासी निरंतर फलते–फूलते रहें। तुम्हारी आड़ में उनका विकास सुरक्षित रहे। कष्ट उनके जीवन का अंग बना रहे।''

एक व्यक्ति ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस से पूछा–''अपनी सफलता का श्रेय आप किस को देते हैं ?'' उन्होंने उत्तर दिया–''हर असफल साधक को।'' ''सो कैसे'' उस व्यक्ति ने पुनः प्रश्न किया। परमहंस ने कहा–''मैंने जब भी देखा, तो यह मालूम करने की कोशिश की कि वह किन कारणों से असफल हुआ। पीछे उन अनुभवों का लाभ उठाकर मैं उन अवरोधों से बचता और साधना मार्ग पर आरूढ़ होता चला गया।''

द्रोणाचार्य कौरव सेना के सेनापति नियुक्त हुए। पहले दिन का युद्ध वीरतापूर्ण लड़े, तो भी विजयश्री अर्जुन के हाथ रही। यह देखकर दुर्योधन को बड़ी निराशा हुई। वह गुरु द्रोणाचार्य के पास गए और कहा–''गुरुदेव ! अर्जुन तो आपका शिष्य मात्र है, आप तो उसे क्षण



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भर में परास्त कर सकते हैं, फिर यह देर क्यों ?'' द्रोणाचार्य गंभीर हो गए और कहा–''आप ठीक कहते हैं, अर्जुन मेरा शिष्य है, मैं उसकी सारी विद्या से परिचित हूँ, किंतु उसका जीवन कठिनाई से संघर्ष करने में बीता है और मेरा सुविधापूर्वक दिन बिताने का रहा है। विपत्ति ने उसे मुझसे भी अधिक बलवान बना दिया है।''

जागरूकता और प्रखरता का एक अद्‌भुत समन्वय अंगद के चरित्र में देखने को मिलता है। वे रावण के दरबार में जा पहुँचे और उससे साहसपूर्वक वार्तालाप किया। रावण के मित्र बालि के पुत्र होने के नाते प्रभु ने उन्हें दूत के रूप में भेजा था। परस्पर उत्तेजक संवाद के बाद जब रावण अंगद के पैरों को भी हिला न पाया, उसने एक कूटनीतिक चाल चली।

बोला–''अंगद जिस राम ने तेरे पिता को मारा, तू उन्हीं की सहायता कर रहा है। मेरे मित्र का पुत्र होकर भी तू मुझसे बैर कर रहा है।'' अंगद हँसा और बोला–''रावण ! अन्यायी से लड़ना और उसे मारना ही सच्चा धर्म है, चाहे वह मेरा पिता हो अथवा आप ही क्यों न हों ?'' अंगद के ये तेजस्वी शब्द सुनकर रावण को उत्तर देते न बना।

विवाह वेदी से 'सावधान' सुनकर भागे रामदास, युग के अनुरूप साधना में रत हो गए। जब दूसरे संत महात्मा जनजीवन की दुर्दशा, यवनों के अत्याचार से आँख बंद कर 'ध्यान से मुक्ति' का प्रयोजन पूर्ण करने में लगे थे, रामदास ने दूसरा मोर्चा चुना। अनीति के विरुद्ध जनता में संघर्ष की भावना भरने के लिए वे गाँव–गाँव घूमने लगे। अनेक प्रतिभाशाली युवक उनके साथ हो गए, जिनके अगुआ थे मराठा युवक शिवाजी। धर्म सैनिकों के निवास, निर्वाह व प्रखरता



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संपादन हेतु उन्होंने जगह–जगह व्यायामशाला रूपी हनुमान मंदिर खुलवाए व अपनी इसीं विशेषता के कारण साधु होते हुए भी उन्हें 'समर्थ गुरु' के नाम से संबोधित किया गया।

*अज्ञान, अभाव, अन्याय भूमि पर, तीन असुर हैं कहलाते।*
*ज्ञान, कर्म, औदार्य तीन, हैं देव तुल्य पूजे जाते॥*
*देवासुर संग्राम मनुज के अंतर में चलता रहता।*
*मानव का अंतर्मन ही, इन असुरों से लड़ता रहता॥*
*जो इससे बचना चाहें वे, बस दीन हीन कहलाते हैं।*
*वे मोहग्रस्त अर्जुन के सम, प्रभु से धिक्कारे जाते हैं॥*
*ज्ञान, कर्म, औदार्य का, मन में लो संकल्प।*
*धर्म स्थापना के लिए, नहीं है अन्य विकल्प॥*

**अज्ञानं चाप्यभावश्च श्रेण्यामस्यां निरूपिते।**
**देवास्त्रयो ज्ञानकर्मौदार्यनामान एव ते॥ १। ६। २२॥**
**दैवासुरस्तु संग्राम एष एवास्य हे मुने।**
**धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे महाभारतकस्य तु॥ १। ६। २४॥**

अज्ञान तथा अभावों का विश्लेषण करते हुए गुरुदेव ने एक बात का विशेष ध्यान रखा कि मन केवल अपने बाह्य जगत् के शत्रुओं को देख पाता है। इन चर्मचक्षुओं से वह बाहरी संसार को ही देखता है, किंतु अंतर्जगत में जो शत्रु निरंतर मनुष्य को अंदर से खोखला कर रहे हैं उनकी तरफ उसका ध्यान ही नहीं जाता। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या ये शत्रु निरंतर इस ताक में रहते हैं कि कब इस दुर्बल मन को अपने वश में कर लें। विश्वामित्र जैसे तपस्वी, मेनका के रूप को देखकर अपनी तपश्चर्या को नष्ट कर बैठे, देवर्षि नारद मोह ग्रस्त होकर राजकुमारी विश्व मोहिनी से विवाह करने के लिए



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्याकुल हो गए और भगवान के पास पहुँच गए उनका रूप माँगने। जब ऋषि मुनियों को काम–मोह डिगा देता है, तो साधारण मानव की तो बात ही क्या ? नेत्रहीन धृतराष्ट्र तो पुत्र–मोह में अंधे हो ही गए थे, नीति–अनीति को भूल गए, गाँधारी ने भी आँख पर पट्टी बाँध ली। इस पुत्र–मोह का दुष्परिणाम हुआ, सौ पुत्रों का विनाश। लोभ का चश्मा जब आँख पर चढ़ता है, तो सब तरफ स्वर्ण ही स्वर्ण दिखाई देता है। आज का मानव काम, क्रोध, मोह, लोभ सभी में इतना खोया है कि अंदर की निधि को देखने का तो अवसर ही नहीं मिलता। हे समागत श्रोताओ ! एक सेठ ने एक साधु की सेवा की तो प्रसन्न होकर उन्होंने पूछा–''बोलो, क्या चाहिए तुमको, मैं तुम से बहुत प्रसन्न हूँ।'' सेठ बहुत लोभी था। बोला–''मैं जिस वस्तु को हाथ लगाऊँ वह सोना हो जाए।'' साधु तपस्वी था। 'तथास्तु' कहकर चला गया। सेठ ने अपने घर के सामान को छूना शुरू किया तो मेज, कुर्सी, घर, कपड़े, बर्तन सब सोने के हो गए। बहुत खुश हुआ। बाहर बगीचे में गया, फूलों को छुआ तो वे भी सोने के, सोने के वृक्ष सब बगीचा सोने का। अब उसकी प्रसन्नता का अंत न था। थोड़ी देर में भूख लगी तो, भाँति–भाँति के व्यंजन की थाली सामने आ गई। खांने को हाथ लगाया तो थाली समेत सारा भोजन सोने का हो गया। कुछ परेशान हुआ। सेठानी को बुलाया, कहने लगा, मुझे भोजन तुम खिलाओ। मेरे हाथों के छूने से तो सब सोना हो गया है। सेठानी ने बेटे को सेठ की गोद में दिया और खाना खिलाने बैठी, तो बेटा भी सोने का हो गया। यह देखकर सेठानी तो बेहोश होकर गिर गई। सेठजी ने सेठानी को उठाया तो वह भी सोने की हो गई। अब सेठजी के होश गुम हो गए। जल्दी से नौकर भेजा, कि वह साधुजी जहाँ भी हों, उन्हें बुला लाओ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधु के आने पर सेठ ने उनसे क्षमा माँगी और अपना वरदान लौटाने की प्रार्थना की। साधुजी ने उसको दुःखी देखकर अपना आशीर्वाद लौटा लिया और बच्चे और सेठानी पर जल छिड़क कर उन्हें फिर से जीवित कर दिया। सेठजी को समझाया कि सिर्फ धन से मनुष्य को शांति नहीं मिल सकती। इसके लिए कुछ नेक कर्म करो।

**गीत–**

बड़े भाग्य ये मनुज तन मिला था,
गँवाते गँवाते उमर पार कर दी।
खाने कमाने में आयु गँवाई,
यूँ ही जिंदगी तूने बेकार कर दी॥ बड़े भाग्य से....
है संसार सागर में जीवन की नैया,
है पतवार सत्कर्म–सद्गुरु खिवैया।
माया के चक्कर में फँसकर ओ प्राणी,
जीवन की नैया है मझधार कर दी॥ बड़े भाग्य से....
अगर चाहता अपना कल्याण प्राणी,
तो ले मान सच्चे सद्गुरु की वाणी।
लगा अपने जीवन को सत्कर्म में तू,
अरे व्यर्थ में उम्र बेकार कर दी॥ बड़े भाग्य से....

हे साधकों ! काम, मोह और लोभ की भाँति ही क्रोध और अहंकार भी मनुष्य के बहुत बड़े शत्रु हैं। ये दोनों ही अज्ञान के अंधकार में आकर जब सर्प की भाँति मनुष्य को डस लेते हैं तो मनुष्य विवेकहीन हो जाता है, फिर उसे अच्छे–बुरे, धर्म–अधर्म का ज्ञान नहीं रहता। सच तो यह है कि मनुष्य इस छोटे से संसार में कूपमंडूक की तरह अनभिज्ञ बने फिरते हैं। अहंकार के वशीभूत होकर यह



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझते हैं कि जो कुछ भी कर रहे हैं, हम कर रहें हैं। एक राजा किसी संत के सामने अपनी शेखी बघार रहा था और कह रहा था कि समस्त राज्य की भरण–पोषण की व्यवस्था मैंने बहुत अच्छी बना रखी है। संत ने पूछा–''तुम्हारे राज्य में अमीर, गरीब, सुखी–दुःखी, रोगी तथा निरोगी व्यक्ति कितने हैं ? जरा बताओ तो।'' राजा सकपका गया और उसे अपनी भूल का पता चल गया। अनावृष्टि में संकटग्रस्त जनता की सहायता के लिए छत्रपति शिवाजी एक बाँध बनवा रहे थे। मजदूरी करके सहस्त्रों व्यक्ति उदर पोषण हेतु आहार प्राप्त कर रहे थे। शिवाजी ने एक दिन उन्हें देखा, तो गर्व से फूले न समाए। सोचा कि वे ही उतने लोगों को आजीविका दे रहे हैं। यदि वह यह प्रयास न करते, तो उतने लोगों को भूखा मरना पड़ता।

समर्थ गुरु रामदास उधर से निकले। शिवाजी ने उनका सम्मान–सत्कार किया और अपने उदार–अनुदान की गाथा कह सुनाई। समर्थ उस दिन तो चुप हो गए, पर जब दूसरे दिन चलने लगे, तो शांत भाव से एक पत्थर की ओर संकेत करके शिवाजी से कहा–''इस पत्थर को तुड़वा दो।'' पत्थर तोड़ा गया, तो उसके बीच एक गड्ढा निकला। उसमें पानी भरा था और एक मेंढकी कल्लोल कर रही थी।

समर्थ ने शिवाजी से पूछा–''इस मेंढकी के लिए संभवतः तुमने ही पत्थर के भीतर यह जीवन रक्षा की व्यवस्था की होगी ?''

भाइयो और बहनो ! वास्तविकता यह हैं कि इस समय विश्वभर में जो अनाचार भ्रष्टाचार फैला हुआ है, वह सब मनुष्य के इन आंतरिक शत्रुओं की विजय का ही दुष्परिणाम है। मानव काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के कारण ही वह सब दुष्कर्म कर



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहा है, जो नहीं करने चाहिए। अतः इनसे बचने के लिए मनुष्य को अपने से ही संघर्ष करना पड़ेगा। **अपना अपना करो सुधार, तभी मिटेगा भ्रष्टाचार।** यह प्रज्ञा पुराण की कथा भी उस सद्प्रज्ञा को जगाने का ही प्रयास है। जप, तप, पूजा, पाठ, यज्ञ, संस्कार, सत्संगति, स्वाध्याय द्वारा ही इन दुर्गुणों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। पिछले दिनों की कथा में आत्मज्ञान, उपासना, साधना, आराधना, संवेदनशीलता, कर्त्तव्य पूर्ति, ज्ञान, कर्म, भक्ति के विषय में जो भी बताया गया है, वह सब इन दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करने के ही साधन हैं। एक बच्चे की टाफी घर में गिर गई। घर में अँधेरा था। वह बाहर जाकर रोशनी में उसे ढूँढ़ने लगा। किसी व्यक्ति ने पूछा–यहाँ क्या ढूँढ़ रहे हो ? उसने कहा–मेरी टाफी खो गई है। उस आदमी ने पूछा–''कहाँ गिरी थी ?'' उस बालक ने कहा–घर में गिरी है, घर में अँधेरा है। माँ ने कहा कि वह अँधेरे में नहीं रोशनी में मिलेगी। उस आदमी ने कहा–बेटे, तो फिर माँ से कहो कि वह घर में ही रोशनी करे, तभी टाफी मिलेगी। हम भी उस बालक की तरह घर में रखी वस्तु को बाहर की चकाचौंध में खोज रहे हैं, तो वह संपदा बाहर कहाँ मिलेगी। अतः मन के अंदर घुसे इन राक्षसों से जमकर टक्कर लो। तभी बाहर के शत्रुओं से जीत पाओगे।

*बहिरंग जगत में भी प्राणी, कुछ दुष्ट प्रकृति के होते हैं।*
*सर्प, बिच्छू, मक्खी, मच्छर, मानव को डंक चुभोते हैं॥*
*जैसे इनसे बचने के लिए, इनको दंडित करना पड़ता।*
*वैसे ही धर्म रक्षा के लिए, है दुष्ट दलन करना पड़ता॥*
*अपने अधिकारों को खोकर, जो चुप होकर बैठा रहता।*
*अपना अस्तित्त्व मिटाकर के, वह दीन हीन हो कर रहता॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*मानवता का नित करो, मानव बन शृंगार।*
*भव आतप को तुम हरो, बन सुरसरिता धार॥*

**मक्षिका मसका यूका मत्कुणा मूषकादयः।**
**वृश्चिकादय एतेऽस्मान् विवशान् कुर्वति भृशम्॥ १। ६। २७॥**
**आत्मरक्षां प्रकर्तुं तान् दूरीकर्तुं महामुने।**
**आक्रान्तॄन् साहसं ग्राह्यमित्थं सर्वत्र दृश्यते॥ १। ६। २८॥**

इस बाहरी संसार में विधाता ने मक्खी, मच्छर, सर्प, बिच्छू आदि ऐसे जीवों को बनाया है जो मनुष्य को हमेशा हानि पहुँचाते हैं, तो उनसे बचने के लिए भी आत्मरक्षा का प्रबंध करना पड़ता है। वैसे कुछ ऐसे बहुत उदार व्यक्ति भी हैं, जो साँपों को भी दूध पिलाते हैं, पर कभी वे आस्तीन के साँप बन कर उन्हें डंक भी मार देते हैं। खटमल, मक्खी, मच्छर को पालने वाले लोग कहाँ मिलते हैं ? यदि कोई खटमल, मच्छरों को खून पिलाने को कहे तो वह भावुक तो हो सकता है, पर उसे बुद्धिमान नहीं कह सकते। एक सेठजी थे पैसा बहुत था, पर संतान न थी। संपत्ति का क्या करें ? किसी ने सुझाव दिया, गरीबों के लिए एक ट्रस्ट बनवा दो। सोच रहे थे, किसके लिए ट्रस्ट बनवाएँ ? एक दिन मुनीम जी के साथ बैठे थे, देखा कि जिस गद्दी पर मुनीमजी बैठे हैं, उसमें से एक खटमल निकला। मुनीम जी ने उसे पकड़कर मार डाला। सेठजी के मन में दया उमड़ पड़ी। बेचारे छोटे से जीव को मार डाला। बस सोचा खटमल ट्रस्ट बनवा दूँ, जो खटमलों को खून पिलाए, उसे एक रात के २०) रुपया मिलेंगे। घोषणा करा दी। एक आदमी ने सोचा एक रात के खून पिलाने के २०) रुपए। चलो ठीक है। वह आदमी आया और खटमलों की चारपाई पर लेट गया। थोड़ी देर बाद जब डंक लगने शुरू हुए तो



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उठकर भाग गया। दूसरे दिन एक पहलवान आया। सेठजी के आदमियों ने सोचा कल आदमी भाग गया था, आज इसे चारपाई से बाँध दें, जिससे यह भाग न सके। उसे चारपाई से बाँध दिया। जब खटमलों की फौज निकली और उसने काटना शुरू किया तो चिल्लाया, बचाओ बचाओ खोलो, जब किसी ने नहीं सुना तो झटका मारा, रस्सी कुछ टूटी तो झटका मार कर उठा और चारपाई समेत दरवाजा खोलकर भाग लिया। यह तमाशा देखकर सेठजी के मित्रों ने उन्हें समझाया, ''सेठजी पैसे का सदुपयोग कीजिए। बहुत गरीब बच्चे हैं इस देश में, उनकी शिक्षा का प्रबंध करा दीजिए। तब उनकी समझ में कुछ आया। कहने का तात्पर्य यह है कि दुष्टों का समर्थन करके कोई व्यक्ति प्रशंसा का पात्र नहीं बन सकता। सर्प, बिच्छू की तरह डंक मारने वाले प्राणियों की भी इस संसार में कमी नहीं है, पर उनसे सचेत रहकर जम कर मोर्चा लेना ही उचित है। नहीं तो हानि उठानी पड़ सकती है।

सज्जन होना ठीक है, पर कृतघ्नों की पहचान रखना भी उतनी ही बड़ी आवश्यकता है। एक हंस उड़ता हुआ अपने निवास स्थान की ओर जा रहा था। साँझ का समय था। उसने देखा एक चूहा ठंड से ठिठुरकर अर्द्धचेतन हो गया है। उसे देखकर हंस को दया आ गई। सज्जनों का स्वभाव ही ऐसा होता है। वह नीचे उतरा, अपने पंख फैलाकर चूहे को ढक लिया। इससे सर्दी रुक गई और धीरे–धीरे चूहे के बदन में गर्मी आई। वह अपने आपको ठीक महसूस करने लगा। अब क्या था, वह अपने काम में लग गया और हंस के मुलायम–मुलायम परों को काट दिया। सबेरा हुआ, सूर्य की किरणें वसुधा पर फैलने लगीं। हंस ने उड़ने की तैयारी की, किंतु वह उड़ न सका। चूहे



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की कृतघ्नता पर उसे बड़ा दुःख हुआ और जब तक दूसरे पंख न उगे, वहीं घूम–फिरकर अपने दिन काटने पड़े ?

*अन्याय, अनीति के आगे, जो अपना शीश झुकाते हैं।*
*सब के द्वारा निन्दित होकर, वे नर कायर कहलाते हैं॥*
*अत्याचारी का कर विरोध, जो अपने प्राण गँवाते हैं।*
*जग में यश, कीर्ति, को पाकर, वे नाम अमर कर जाते हैं॥*
*इसलिए उठो आगे बढ़कर, अन्यायों का प्रतिरोध करो।*
*तुम हो अमृत संतान समझ लो, मरने से भी नहीं डरो॥*
*उठो, जगो, आगे बढ़ो, हे मनु की संतान।*
*प्रज्ञा सूरज बन उगो, दूर करो अज्ञान॥*
*आतंकवादी पशुओं की तरह, जो अपना जीवन जीते हैं।*
*जीवन का अमृतकलश छोड़, वे गरल हलाहल पीते हैं॥*
*अनुनय, विनती व धर्मोपदेश, दुर्जन को कहाँ सुहाते हैं।*
*वे तो केवल अंकुश की ही, भाषा से वश में आते हैं॥*
*समझाने से सुनता रावण, सोने की लंका जलती क्यों ?*
*महाभारत के महासमर में, रक्त की नदियाँ बहती क्यों ?*
*मानवता का शत्रु है, दुश्चिंतन अज्ञान।*
*इससे लड़ने के लिए, जागृत हो सद्ज्ञान॥*

**अनीत्याचरणं पापं यथा भीरुतया तथा।**
**तस्या अप्रतिरोधोऽपि पापमेवानुविद्यते॥ १। ६। ३२॥**
**परं साहसिका तेषां धर्मनिष्ठा तु या तया।**
**निर्दोषाणामसंख्यानां रक्षा भवति सर्वथा॥ १। ६। ३४॥**

हे साधको ! अनीति का आचरण करना जितना पाप है, कायरतावश उसका प्रतिरोध न करना उससे भी बड़ा पाप है। जो व्यक्ति अनाचार



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के सामने घुटने टेक देते हैं, या दुम दबाकर भाग जाते हैं वे भले ही उस समय अपने जीवन को या धन संपत्ति को बचा लें, परंतु समय बीतने पर कोई उनकी प्रशंसा नहीं करता। जो अत्याचारी बनकर दूसरों को कष्ट देते हैं, उनकी तो निंदा होती ही है, पर अत्याचार सहन करने वाले भी पशुओं की भाँति ही जीवन जीते हैं। इसके विपरीत जो अत्याचार का विरोध करने में अपना तन, मन, धन लुटा देते हैं, संसार उनकी उतनी ही प्रशंसा करता है। पंच तत्त्वों से बना यह शरीर तो एक दिन नष्ट होना ही है, फिर ये अन्याय किसलिए सहन करते हो ? उठो, अन्याय का सामना करो।

अतः हे प्रज्ञापुत्रो ! आगे बढ़ो और देश जाति के लिए अत्याचार का विरोध करने के लिए तन, मन, धन समर्पित कर दो। मृत्यु से क्या डरना ? मृत्यु तो एक विश्राम स्थल है, यहाँ से जीव नई शक्ति लेकर आगे बढ़ता है।

गुरु गोविंदसिंह चमकौर किले में आक्रमणकारियों से मोर्चा लेने के लिए सेना एकत्र कर रहे थे। किले में शरण लेते समय उनके दोनों पुत्र जोरावर व फतहसिंह पीछे छूट गए। सरहिंद से आए दो दूत गुरु गोविंदसिंह को समाचार सुना रहे थे–''बड़ी मुगल सेना चमकौर पर आक्रमण करने चल पड़ी है।'' इतना बोलकर वे चुप हो गए और रो पड़े। गुरुजी ने पूछा–''आगे बताओ। रुक क्यों गए ? जोरावर व फतहसिंह का क्या हुआ ? कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्होंने विधर्मी को समर्पण कर दिया हो, लोभ में आकर उनका धर्म स्वीकार कर लिया हो ?''

दूतों ने रोते–रोते कहा–''नहीं गुरुजी ! ऐसा न कहें। नवाब ने उन्हें धर्म न त्यागने व सेना के रहस्य न बताने के कारण जिंदा दीवार



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में चुनवा दिया है और वे सहर्ष शहीद हो गए। यह समाचार सुनकर आपकी माता ने कमरे से कूदकर अपनी जान दे दी।'' गुरुजी का मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया। वे बोले–''वे दोनों सच्चे धर्मवीर थे। सारी संस्कृति को उन पर नाज है। हम सबको उनसे शिक्षा लेनी चाहिए।''

निर्भय स्वागत करो मृत्यु का, मृत्यु तो है विश्राम स्थल।
जीव जहाँ से फिर चलता है, लेकर जीवन का नव संबल॥
मृत्यु एक सरिता है जिसमें, श्रम से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन धारण करता है, कायारूपी वस्त्र बहाकर॥

दूसरों के लिए जो जितना त्याग करता है, उसकी यश रूपी सुगंधि उसे विश्ववंद्य बना देती है। मनुष्यों की तो बात ही क्या है, जो पशु पक्षी भी दूसरों के लिए कुछ करते हैं, वे भी इतिहास में अमर हो जाते हैं। जटायु पक्षी गिद्ध जाति का था, जिसका दर्शन भी अशुभ माना जाता है, उसने भी सीताजी की रक्षा में जब रावण का विरोध किया, तो वह अमर हो गया। उसको दशरथ के समान ही सद्गति मिली। गिलहरी छोटा सा जीव है, पूँछ में बालू के कण लपेटकर जब उसने समुद्र को पाटने का प्रयत्न किया तो भगवान ने उसके शरीर को सुनहरी धारियों से सजा दिया। बंदर का मुख सुबह ही सुबह देखो तो शाम तक भोजन भी नहीं मिलता, यह कहा जाता है, किंतु सीता को खोज निकालने के कारण राम के सहायक बनकर वही वानर हनुमान प्रातः स्मरणीय बन गए। आज राम से भी अधिक हनुमान जी के मंदिर हैं। श्रीराम दरबार तो उनके बिना अधूरा ही है। अशिक्षित गोप–ग्वालों ने जब कंस के विरोध में कृष्ण की सहायता की तो वे अमर हो गए। अतः आइए, हम सब भी इस समय महाकाल की पुकार



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को सुनें और दुश्चिंतन रूपी राक्षसों से टक्कर लेकर अपने जीवन को धन्य बनाएँ।

आशा, उत्साह और गति का समन्वय ही जीवन है। जिसमें जीवन का अभाव है, वह इन तीन गुणों से रहित होता है। ऐसे कायर पुरुष जीवित अवस्था में भी मृतक के समान हैं। रामकृष्ण परमहंस कहा करते थे–''कुकर्म करने तथा बुराई को प्रश्रय देने वाला मनुष्य जीवित दीखता हुआ भी मृत ही है, क्योंकि कुकर्म और कुविचार मृत्यु के प्रतिनिधि है। इनको आश्रय देने वाला मृतक के सिवाय और कौन हो सकता है ?''

इसे एक उदाहरण के माध्यम से स्वामी विवेकानंद ने बड़े रोचक ढंग से समझाया–दुष्ट परिस्थितियों की तरह काशी के बंदर भी बड़े दुष्ट होते हैं। एक बार मैं काशी में किसी जगह जा रहा था। उस स्थान पर बहुत से बंदर रहते थे, जो आने–जाने वालों को अकारण ही तंग करने में बड़े विख्यात थे।

मेरे साथ भी उन्होंने वही किया। मेरा रास्ते से गुजरना उन्हें अच्छा न लगा, वे मेरी ओर दौड़े और पैरों में काटने लगे। उनसे छुटकारा पाना असंभव प्रतीत हुआ। तेजी से भागा, पर जितना भागता बंदर भी उतना दौड़ते और काटते। तभी एक अपरिचित स्वर सुनाई दिया– 'भागो मत सामना करो।' बस मैं खड़ा हो गया और ऐसी जोर की डाँट लगाई कि एक घुड़की में ही बंदर भाग खड़े हुए।

जीवन में जो कुछ भयानक है, उसका हमें साहसपूर्वक सामना करना पड़ेगा। परिस्थितियों से भागना कायरता है, कायर पुरुष कभी विजयी नहीं होता। भय, कष्ट और अज्ञान का जब हम सामना करने को तैयार होंगे, तभी वे हमारे सामने से भागेंगे।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आतंक अनीति से बढ़कर, अज्ञान अभाव दुःख देते हैं।
इन दोनों के कारण ही तो, नर महाकष्ट को सहते हैं॥
वह शासन से दंडित होता, जो कार्य अनैतिक है करता।
पर भावहीन, अज्ञानी को तो, कोई नहीं कुछ कह सकता॥
सामाजिक सुधार को तो केवल, साहसी वीर कर पाते हैं।
वे क्षीर नीर विवेकी बन, हंसों की नीति अपनाते हैं॥
दूरदर्शिता को धारण कर, सत्कर्मों पर मिट जाते हैं।
परित्याग कुरीतियों का करके, वे जग को राह दिखाते हैं॥
सत्कर्मों से मनुज के, मिटें कष्ट, भय, शोक।
सदाचरण से सुधरते, लोक और परलोक॥

**सामाजिकेषु बाहुल्यं कुरीतिनां विधिष्वलम्।**
**भवत्येव तथैकस्य कालस्य रीतयो मुने॥ १। ६। ६२॥**
**रीतीनां विषयेऽप्येवं जीर्णोद्धार इव क्रमः।**
**संशोध्या या अथ त्याज्यास्त्याज्याः साहसपूर्वकम्॥ १। ६। ६४॥**

जीवन में अनेक प्रकार के संघर्ष हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज में भी अनेक कुरीतियाँ हैं, उनसे टक्कर लेना भी संघर्ष है, अतः इस विषय पर विचार प्रकट करते हुए युग ऋषि कहते हैं कि हे श्रोताओ ! युद्ध क्षेत्र में धनुषवाण, तीर, तलवार से लड़ने वाले ही योद्धा नहीं कहलाते, बल्कि सामाजिक कुरीतियों से लड़ने वाले ही साहसी कहे जाते हैं। जो व्यक्ति अनैतिक कार्य करते हैं, चोरी, डकैती डालते हैं, भ्रष्टाचार फैलाते हैं, रिश्वत लेते व देते हैं, ऐसे व्यक्तियों को तो कानून भी सजा दे सकता है, किंतु जो व्यक्ति परंपराओं के कारण गलत आचरण करते हैं, उनसे भी समाज को बहुत हानि होती है। दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल–विवाह, बहु विवाह, नशाखोरी, मिलावट



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदि अनेक ऐसी कुरीतियाँ है जो व्यक्ति और समाज का बहुत अहित करती हैं। इन कुरीतियों को समाप्त करने के लिए भी पाखंडी और दुर्जनों से टक्कर लेनी पड़ती है। महापुरुष हमेशा ऐसे कट्टर पंथियों से टक्कर लेते रहे हैं। गौतम बुद्ध, आद्य शंकराचार्य, ईश्वर चंद विद्यासागर, शरद्चन्द्र, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद, महामना मालवीय, महात्मा गांधी आदि महापुरुषों ने इस युग में सामाजिक अंधविश्वास, कुपरंपराओं से संघर्ष करने में अपना जीवन लगा दिया। स्वयं पूज्य गुरुदेव ने नारी जागरण किया तथा नशा उन्मूलन, दहेज–प्रथा, मृतक–भोज जैसी कुप्रथाओं का विरोध कर समाज को नई दिशा दी है। उन्होंने अपना सारा जीवन इसी समाज तथा राष्ट्र को समर्पित कर आदर्श गायत्री परिवार की स्थापना देश विदेश में की है। आज अंधविश्वास के कारण न जाने कितनी मूढ़ मान्यताएँ चली आ रही हैं, जो इस समय अनावश्यक हैं। कुछ परंपराएँ तो अनायास ही अज्ञानता के कारण उत्पन्न होती हैं। इन कुप्रथाओं को व्यर्थ मानते हुए भी मनुष्य अनिष्ट के भय से नहीं छोड़ पाते।

एक घर में शादी हो रही थी। एक बिल्ली न जाने कहाँ से आ गई। उसने बड़ी उछल कूद मचा रखी थी और सब चीजों में मुँह डाल रही थी। गृह स्वामिनी ने उसे एक टोकरे के नीचे दबा दिया और फिर काम की अधिकता के कारण निकालना भूल गई। दूसरे दिन बारात आई तो गृह स्वामिनी को बिल्ली की याद आई। वह मर चुकी थी। उसने पहले मरी बिल्ली को बाहर फिंकवाया और घर की सफाई करवाई तब बहू को गृह–प्रवेश करवाया। बहू की तेज नजरों ने बिल्ली को बाहर फेंकते हुए देख लिया। वह समझी कि इस घर में यह परंपरा है कि बेटे की बहू को गृह–प्रवेश कराने से पहले मरी बिल्ली



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को घर से बाहर फैंका जाता है। समय बीतने पर भी उसे यह बात याद रही और जब उसके बेटे की शादी हुई तो उसने पहले बिल्ली को पकड़वाकर टोकरे में दबाया। उसके मर जाने पर घर से बाहर फिंकवाया तब अपने बेटे की बहू का गृह–प्रवेश किया। अतः हे मनीषियो ! सोचो कि इस प्रकार की परंपराएँ देश का हित कैसे कर सकती हैं ? प्रज्ञा पुराण में ऐसी अनेक कथाएँ अंध विश्वास तथा अंध परंपराओं का विरोध करने के उद्देश्य से संकलित है।

एक पंडितजी के पड़ौस में एक गधा रहता था। जब पूजा के समय पंडितजी शंख बजाते, तो गधा भी चिल्लाने लगता। एक दिन पता चला कि गधा मर गया है, सो पंडित जी ने उसकी स्मृति में बाल मुढ़वा दिए। शाम को वे बनिए की दुकान पर सौदा लेने गए। बनिए को जिज्ञासा हुई–''महाराज ! आज यह सिर घुटमुंड कैसा ?'' ''अरे भाई ! शंखराज की इहलीला समाप्त हो गई।'' बनिया पंडित का यजमान था। उसने भी अपना सिर घुटा लिया। बात जहाँ फैलती गई, लोग अपने सिर घुटाते रहे। एक सिपाही बनिए के यहाँ आया, उसने तमाम गाँव वालों को सिर मुँड़ाते देखा। पता चला कि शंखराज जी महाराज नहीं रहे, तो उसने भी सिर घुटाया। धीरे–धीरे सारी फौज सपाट–सिर हो गई। अफसरों को बड़ी हैरानी हुई। उन्होंने पूछा–''भाई, क्या बात हुई ?'' पता लगाते–लगाते पंडित जी के मकान तक पहुँचे और जब मालूम हुआ कि शंखराज कोई गधा था, तो मारे शर्म के सबके चेहरे झुक गए। आज हमारे समाज में इस प्रकार के अंधविश्वास की भरमार है।

*हैं बहुत शूरवीर ऐसे, जो बातें बहुत बनाते हैं।*
*पर जब सिद्धांत निभाने हों, तो वे पीछे हट जाते हैं॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संघर्ष नहीं होना है अब, धनुष, तीर, तलवारों से।
संघर्ष अनीति से कर लो, संघर्ष करो कुविचारों से॥
जो नीति पथ पर चलते हैं, वे आत्मशक्ति को पाते हैं।
'एकला चलो रे' कह करके, आगे ही बढ़ते जाते हैं॥
चाहे उनके मार्ग में, बाधा आएँ अपार।
किंतु वे हो जाते हैं, भवसागर से पार॥
क्रोध हो अत्याचारी पर, पर उसमें ईर्ष्याभाव न हो।
मद, लोभ, मोह या काम अहम्, जैसा कोई दुर्भाव न हो॥
जो अत्याचारी शोषक बन, जन–जन को पीड़ित करते हैं।
हो प्रतिरोध उनका डटकर, यह नीति शास्त्र सब कहते हैं॥
पर क्रोधाग्नि में जलकर के, मत औरों का अपकार करो।
अपनी तपशक्ति बढ़ाकर तुम, बस जन–जन का उपकार करो॥
पापों से तुम करो घृणा, पापी का उद्धार।
बस इससे हो जाएगा, जन–जन का उपकार॥

**शूरा अपि च वीराश्च विख्याता ये जनास्तु ते।**
**दृश्यन्ते दुर्बलाः प्रायः क्षेत्रे सैद्धांतिके सदा॥ १। ६। ७४॥**
**आत्मविश्वासिनो ये ते सदाऽऽदर्शसमर्थने।**
**एकाकिनःस्थिताःसन्तु सहायाः सन्तु वा न वा॥ १। ६। ७५॥**

आज की परिस्थितियों पर खेद प्रकट करते हुए युग ऋषि कहते हैं कि इस समय बहुत से ऐसे शूरवीर मिलेंगे जो बातें तो बहुत बढ़–चढ़ कर करते हैं, किंतु जब कार्य को सिद्धांत रूप में अपनाने की बात आती है तो पीछे हट जाते हैं। कथनी और करनी का अंतर समाज की बहुत बड़ी विडंबना है। महापुरुष वही होते हैं जो कहने से पहले किसी भी सिद्धांत को अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसे महामानवों



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की वाणी में वह शक्ति आ जाती है कि वे दूसरों को भी जो उपदेश देते हैं, जनता उनकी बात मानती है। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' के अनुसार दूसरों को उपदेश देना तो बहुत आसान है, पर उस सिद्धांत पर आचरण करना बहुत कठिन है।

एक बालक मिठाई बहुत खाता था। उसकी यह आदत उसके स्वास्थ्य को बिगाड़ रही थी। बालक मानता नहीं था। निदान के लिए उसकी माता उसे रामकृष्ण परमहंस की शिक्षा का अधिक प्रभाव पड़ने की आशा से उनके पास ले गई और प्रार्थना की कि आप इसे उपदेश देकर मिठाई खाना छुड़ा दें। परमहंस ने उसे एक सप्ताह बाद आने को कहा। महिला चली गई। एक सप्ताह बाद आई, तब उन्होंने बालक को उपदेश दिया और उसने मिठाई छोड़ भी दी।

महिला ने एक सप्ताह विलंब लगाने का कारण पूछा, तो परमहंस ने कहा–तब तो मैं मिठाई स्वयं खाता था। जब बालक को उपदेश देना आवश्यक प्रतीत हुआ, तो पहले मैंने स्वयं मिठाई छोड़ी, तब बालक को कहा। जो स्वयं करता है, उसी की शिक्षा का प्रभाव भी पड़ता है।

दहेज प्रथा, बाल विवाह, नशाबंदी पर भाषण तो बहुत दिए जा सकते हैं, पर जब अपने पुत्र के विवाह की बात आती है तो कहते हैं क्या करें गुरु जी हम तो दहेज लेना नहीं चाहते, पर लड़के की दादी और नानी नहीं मानतीं, कहती हैं एक ही नाती है तो सारे अरमान इसी पर पूरे करने हैं। दूसरों के अपराध करने पर मृत्युदंड देना बहुत आसान है, पर यदि अपना भाई, पुत्र, बहन, या कोई संबंधी अपराधी बनकर सामने आए तो मोह जाग उठता है, मन दस तरह के रास्ते निकालने लगता है, कैसे इसे बचा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लें, पर इस मोह बंधन को तोड़कर सब के साथ एक सा व्यवहार करने वाले अमर हो जाते हैं।

महारानी अहिल्याबाई अपनी न्याय निष्ठा के लिए प्रसिद्ध थीं, किंतु उनका पुत्र बहुत उद्दंड था। एक दिन उसने क्रोध में आकर एक नागरिक की हत्या कर दी, तो नागरिकों ने रानी के पास उसके विरुद्ध फरियाद की। रानी ने सारे मोह बंधन को ताक पर रखकर पुत्र को मृत्यु दंड दिया और हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया। ऐसे उदाहरण गिनने योग्य ही मिलते हैं, किंतु ऐसे महामानव दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बनकर अमर हो जाते हैं, अतः हे तत्त्व जिज्ञासुओ ! युद्ध केवल तीरों और तलवारों से ही नहीं होता। युद्ध का मोर्चा अनीति अत्याचार से भी लेना पड़ता है। स्वयं अपनी कुप्रवृत्तियों काम, क्रोध, लोभ, मोह आदिं पर भी विजय पाने के लिए निरंतर अपने से संघर्ष करने की आवश्यकता है। ये इंद्रियाँ बहुत चंचल होती हैं, ये मनुष्य को दुर्बल बना देती हैं, इसके लिए बहुत सावधानी की आवश्यकता है।

मराठा सरदार राघोवा पेशवा पर अपने भतीजे की हत्या का अभियोग था। जिस न्यायालय में उसका निर्णय होने वाला था, उसके न्यायाधीश श्रीराम शास्त्री थे। श्रीशास्त्री सत्यनिष्ठा के लिए दूर–दूर तक विख्यात थे, इसलिए राघोवा को भय था कि कहीं उसे सजा न मिल जाए।

राघोवा की धर्मपत्नी को एक उपाय सूझा। उन्होंने श्रीराम शास्त्री को भोज दिया और इस विचार से उनकी खूब आवभगत की कि उससे प्रभावित होकर श्रीशास्त्री उनके पक्ष में ही निर्णय देंगे। बात–बात में उन्होंने इस बात की चर्चा ही छेड़ दी, तो न्यायनिष्ठ श्रीराम



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शास्त्री ने कहा–न्याय की दृष्टि से तो सरदार को प्राण दंड मिलना ही चाहिए। राघोवा की पत्नी उनकी इस निर्भयता से प्रभावित तो हुईं, पर उन्होंने कहा–इस तरह का निर्णय देने का परिणाम जानते हैं आप क्या होगा ? हम जिंदा ही आपकी जीभ कटवा लेंगे और किसी गड्ढे में गढ़वा देंगे।

बिना उत्तेजित होते हुए श्रीशास्त्री जी ने उत्तर दिया–यह आप कर सकती हैं, पर उससे मुझे कोई दु:ख नहीं होगा। गलत निर्णय देने की अपेक्षा तो जीभ क्या सिर काट लिया जाना ही अच्छा है। अंतत: विजय न्याय की ही हुई।

यदि कोई साथी नहीं मिले तो 'एकला चलो रे' के सिद्धांत को अपना कर जब मनुष्य जीवन यात्रा में इस सत्पथ पर आगे बढ़ता है तो उसके पीछे–पीछे सब लोग चल देते हैं। ईसामसीह के अनुयायी, महात्मा बुद्ध के परिव्राजक, गांधीजी के सत्याग्रही, पूज्य गुरुदेव के गायत्री परिवार के करोड़ों परिजन इसी श्रेणी में आते हैं। अत्याचारी को दंड दो, पर बदले की भावना न हो। अपनी तपशक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

चंड कौशिक ने प्रचंड तप तो किया, पर उन्होंने क्रोध का शमन न किया। वह दुष्ट दुर्गुण उनमें ज्यों का त्यों बना रहा। एक दिन उनके पैर से मेंढक कुचल कर मर गया। साथी तपस्वी ने इस प्रमाद की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया,तो चंड कौशिक आग–बबूला हो गए। वे उस साथी को मारने दौड़े। क्रोध में मनुष्य अंधा हो जाता है। आवेश में उन्हें बीच में खड़ा खंभा भी न दीख पड़ा। दौड़ते हुए उसी से टकरा गए। यही चोट उनकी मृत्यु का कारण बन गई। मोहवश उन्होंने उसी आश्रम में फिर जन्म लिया



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और साधना के द्वारा उसी के संचालक बने, फिर भी उनका क्रोध गया नहीं।

एक बार कुछ भक्तजन उपहार और पूजा उपकरण लेकर उपस्थित हुए। भक्तों के व्यवहार और उपहार में उन्हें कुछ दोष दीखा, तो वे क्रुद्ध होकर मारने दौड़े। दौड़ तेजी से चल पड़ी। आवेश ने उन्हें पागल जैसा बना दिया था। रास्ते में व्यवधान भी उन्हें सूझ न पड़े। कुएँ में पैर पड़ा और उसी में उनकी मृत्यु हो गई।

तीसरी बार भी चंड कौशिक का जन्म उसी आश्रम में हुआ। अब की बार वे भयंकर विषधर सर्प की देह लेकर जन्मे। जो कोई उधर से निकलता, उसी का पीछा करते और जो पकड़ में आ जाता, डसकर उसका प्राण हरण कर लेते। भगवान महावीर एक बार उस आश्रम में पधारे तो उन्हें भी चंड कौशिक के क्रोध का भाजन बनना पड़ा। दंशन से उनका पैर क्षत–विक्षत हो चला, फिर भी करुणा की उस प्रतिमूर्ति के चेहरे पर क्रोध न आया। वे मुस्कराते रहे और उस क्षुद्र प्राणी को अपनी अनंत क्षमा का पात्र बनाए रहे। आश्रमवासी उस दुष्ट जीव को मारने आए, तो उन्होंने रोक दिया। भगवान की दिव्य सत्ता को पहचान कर सर्प–योनि में बैठे चंड कौशिक ने पश्चात्ताप व्यक्त किया। उन्हें भगवान के उपदेश सुनने के बाद मुक्ति मिली। फिर मानव देह में जन्म लेकर उन्होंने क्रोध के शमन हेतु तप किया और सिद्ध पुरुष बने। महापुरुष अपनी तपशक्ति के द्वारा दुष्ट व्यक्ति को भी वश में कर लेते हैं।

*सुन महाप्राज्ञ का संदेशा, सब संत मन ही मन हरषाए।*
*पर ऋषि दुर्वासा निज स्वभाव को, सोच–सोच कुछ सकुचाए॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*वे समझे अपने अवगुण को, क्यों क्रोध शीघ्र आ जाता है।*
*उससे शापित होकर मानव, जीवन में कष्ट उठाता है॥*
*बोले विनम्र स्वर में मुनि से, मैं अपनी भूल समझता हूँ।*
*पर जब आता है क्रोध मुझे, अपने को रोक न सकता हूँ॥*
*कृपाकर मुझे बताइए, कोई ऐसी युक्ति।*
*जिससे मिल जाए मुझे, महाक्रोध से मुक्ति॥*
*दुर्वासा जी को देख दुःखी, ऋषि पिप्पलादजी मुस्काए।*
*बोले बदलो अपना स्वभाव, यदि नीति तुम्हें यह मन भाए॥*
*क्रोधावेश में आ मानव, अपना विनाश ही करता है।*
*क्रोधी सर्प की भाँति सदा, फन पटक-पटक कर मरता है॥*
*क्रोधावेश में आ मानव, अपना ही ज्ञान गँवाता है।*
*फिर क्या करना है, वह अपना कर्त्तव्य समझ नहीं पाता है॥*
*क्रोधावेश में ग्रस्त नर, है बस मृतक समान।*
*है अज्ञानी, कर्महीन, सुख दुःख से अनजान॥*

**दुर्वासास्तु महर्षिः स मान्यतानां समर्थनम्।**
**श्रुत्वा स्वानां प्रसन्नोऽभूद्विवशोऽचिन्तयत्तथा॥ १। ६। ८७॥**
**संशोधनविधौ भावं गृहीत्वा सर्वदैव तु।**
**चिकित्सकस्य रुग्णस्य स्निग्धं परुषमाचरेत्॥ १। ६। ८९॥**

दुर्वासा जी यह सुनकर प्रसन्न हुए कि महाप्राज्ञ ने क्रोध करने को उचित बताया है, पर वे समझ गए कि अनावश्यक क्रोध करना भी उचित नहीं है। उन्होंने विनम्र स्वर में पूछा-''हे आचार्य प्रवर ! आप ही बताइए कि अनैतिक कार्यों को देखकर क्रोध न करें तो क्या करें, फिर इस क्रोध पर कैसे विजय प्राप्त करें ? कृपया यह समझाने का कष्ट करें।''



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मुस्कराते हुए महामनीषी ने कहा–''हे संतो ! विधाता की सृष्टि में कुछ भी अनावश्यक नहीं है। क्रोध न हो तो दुष्टों का संहार कैसे हो ? क्रोधित होने पर ही भगवान शिव का तीसरा नेत्र खुलता है। वेदों में ''मन्युरसि मन्युमयि देहि'' मंत्र में भगवान से क्रोध को माँगा गया है। इस के अभाव में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को क्लीव कहकर पुकारा है, परंतु क्रोध करने से पहले परिस्थितियों पर विचार करना आवश्यक है।''

निडर साहसी किसी भी परिस्थिति में मनोबल न खोकर आत्मरक्षा तो करते ही हैं, अपने ही जैसे उन अनेक व्यक्तियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन जाते हैं, जो आए दिन अनीति के शिकार हो त्रस्त होते रहते हैं।

एक दिन पंडित जी की कथा सुनने एक डाकू भी आया। पंडित जी समझा रहे थे–''क्षमा और अहिंसा मनुष्य के भूषण हैं। इनका परित्याग नहीं करना चाहिए।'' कथा समाप्त हुई। पंडित्त जी दक्षिणा आदि लेकर गाँव की ओर चल पड़े। बीच में जंगल पड़ता था। वहाँ डाकू आ धमका और पंडित जी को सारा धन रख देने को कहा। पंडित जी थे निडर, पास में लाठी थी, सो प्रहार करने के लिए डाकू की ओर दौड़े। डाकू घबरा गया और विनयपूर्वक बोला–''महाराज ! आप तो कह रहे थे कि क्षमा और अहिंसा मनुष्य के भूषण हैं, इन्हें नहीं त्यागना चाहिए।'' पंडित जी बोले–''वह तो सज्जनों के लिए था। तेरे जैसे दुष्टों के लिए तो यह लाठी ही उपयुक्त है।'' पंडित जी का रौद्र रूप देखकर डाकू वहाँ से भाग गया।

राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद चार उपाय बताए गए हैं। पहले शांति पूर्वक वार्तालाप करो फिर धन, पुरस्कार दे करके



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कार्य सिद्ध करने की कोशिश करो, इसके बाद दंड व्यवस्था होनी चाहिए।

जो अपने साथ जैसा बर्ताव करे, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए–यही नीति धर्म है। कपट का आचरण करने वाले के साथ कपटपूर्ण बर्ताव करे और अच्छा बर्ताव करने वालों के साथ साधु भाव का ही बर्ताव करना चाहिए। महात्मा विदुर ने भी यही नीति अपनाने का उपदेश दिया है।

श्रीकृष्ण महाभारत में नीति उपदेश देते हुए युधिष्ठिर से कहते हैं–

**मायाविनं इमां जनं मायया जहि भारत।**
**मायावी माययाा वध्यः सत्यमेतद् युधिष्ठिर॥**

अर्थात् मायावी दुर्योधन की इस माया को आप माया द्वारा ही नष्ट कर डालिए। हे युधिष्ठिर ! मायावी का वध माया से ही करना चाहिए। यही सच्ची नीति है।

अंत में युग निर्माण तथा जागरण का संदेश देते हुए महाप्राज्ञ कहते हैं कि हे देवात्माओ ! उठो, जागो और चलो अपने लक्ष्य की ओर। प्रज्ञा पुराण के सारांश ग्रहण कर देवर्षि नारद की भाँति इस संदेश को देश विदेश में फैलाने का संकल्प लो। हे ऋषि संतानो ! इस समय माँ की पीड़ा को समझो और भारतीय संस्कृति रूपी सीता जो इस समय आसुरी प्रवृत्तियों द्वारा अपहृत की गई है उसका उद्धार करने का निश्चय करो। आज आवश्यकता है इस सीता की खोज करने वाले हनुमान की, द्रोपदी का चीर बढ़ाने वाले कृष्ण कन्हैया की। उस समय एक सीता का अपहरण हुआ था, किंतु इस समय तो न जाने कितनी सीता बिलख रहीं हैं। उस



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय एक द्रोपदी का चीर हरण हुआ था, आज न जाने कितनी द्रोपदी इस अत्याचार का शिकार बन रहीं हैं। तुम हनुमान की भाँति अपने सोए हुए पौरुष को जगाओ और शुभ कर्म के लिए आगे बढ़ो। यदि हनुमान और कृष्ण नहीं बन सकते तो गिद्ध और गिलहरी की भूमिका का ही निर्वाह करो। गोप ग्वालों की तरह अपनी लाठी की टेक लगा कर इस कठिन कार्य को पूरा करने में सहयोगी बनो। सारे विश्व को फिर से शांति का संदेश दे दो, जिससे समस्त विश्व में मानवता की विजय की घोषणा की जा सके।

यह कहकर युग ऋषि तो मौन हो गए, किंतु सब श्रोतागण बहुत उत्साहित थे। सब के मन में एक ही विचार तरंगित हो रहा था कि हम सब युग निर्माण का संकल्प लेते हैं। हम अभी तक अज्ञान के अंधकार में भटक रहे थे, आज हमें प्रकाश मिला है। हम अब गुरुजी के बताए रास्ते पर चलकर जीवन को धन्य बनाएँगे। आपने हमारी शंकाओं का समाधान कर दिया है, अब हम यह लाल मशाल लेकर समयदान और अंशदान का व्रत लेकर समस्त विश्व को आलोकित करने का प्रयास करेंगे। आप हमें आशीर्वाद दें कि हम अपना संकल्प पूरा कर सकें।

हे प्रज्ञा पुत्रो ! आपने भी यह कथा ध्यानपूर्वक सुनी है, इसके लिए आप सब धन्यवाद के पात्र हैं, इस कथा को सुनकर इस पर विचार करके इसको अपने आचरण में उतारने का प्रयास करें, तभी कथा का सुनना और सुनाना लाभ दायक हो सकेगा। माँ गायत्री आपको सद्बुद्धि दे तथा पूज्य गुरुदेव तथा वंदनीया माता जी का आशीर्वाद आपके साथ रहे। आप सबका मंगल हो।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥

बोलो प्रज्ञा पुराण की जय

इतिश्री मत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययोः,
युगदर्शन युगसाधनाप्रकटीकरणयोः श्री पिप्पलाद–दुर्वासा ऋषि–
सम्वादे ''पराक्रम–प्रतिरोध साहस–संघर्षश्चे'' ति प्रकरणो नाम
पंचमोऽध्यायः ॥५॥

आरती श्री प्रज्ञा पुराण की

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा-पुराण-कथामृतम्

## षष्ठ दिवस
## परिवार प्रकरण

ॐ भर्भ्वः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

### गुरु वंदना

गुरुवर तुम्हीं बता दो, किसकी शरण में जाएँ।
किसके चरण में गिरकर, अपनी व्यथा सुनाएँ॥
अज्ञान के तिमिर ने, चारों तरफ से घेरा।
क्या रात है प्रलय की, होगा नहीं सबेरा॥
पथ औ प्रकाश दो तो, चलने की शक्ति पाएँ॥ गुरुवर....
जीवन के देवता का, करते रहे निरादर।
कैसे करें समर्पित; जीवन की जीर्ण चादर॥
यह पाप की गठरिया, क्या खोल कर दिखाएँ॥ गुरुवर....
दुष्प्रवृत्तियों ने हमको, घेरा कदम–कदम पर।
कभी काम, क्रोध बनकर, कभी लोभ मोह बनकर।
इन दानवों से कैसे, अपना गला छुड़ाएँ॥ गुरुवर....
माना कपूत हैं हम, क्या रुष्ट रह सकोगे।
मुस्कान प्यार अमृत, क्या दे नहीं सकोगे॥
दाता तुम्हारे दर से, जाएँ तो किधर जाएँ॥ गुरुवर....

### प्रज्ञा गीत

इतने रत्न दिए हैं कैसे, जिससे देश महान है।
भारत की परिवार व्यवस्था, ही रत्नों की खान है॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी खान के रत्नों के, इतिहास चाव से पढ़े गए।
अध्यायों की अंगूठियों में, यही नगीने जड़े गए॥
सजे हुए हैं यही रत्न तो, जन मंगल के थाल में।
दमक रहे हैं ये हीरे ही, मानवता के भाल में॥
इसी खान के रत्नों की तो, सदा निराली शान है॥

भारत की परिवार व्यवस्था.....

इसी खान में ध्रुव निकले थे, माँ ने उन्हें सँवारा था।
इस हीरे को नारद जी ने, थोड़ा और निखारा था॥
तप की चमक लिए जा बैठा, परम–पिता की गोद में।
कितनों का बचपन कट जाता, है आमोद प्रमोद में॥
नभ में ध्रुव परिवार कीर्ति का, शाश्वत अमर निशान है॥

भारत की परिवार व्यवस्था.....

जाना था वनवास राम को, लक्ष्मण सीता साथ गए।
कीर्तिमान स्थापित सेवा, स्नेह, त्याग के किए नए॥
सौतेली माँ का मुख उज्ज्वल, किया सुमित्रा माता ने।
था सौहार्द्र सगे भाई से, ज्यादा भ्राता भ्राता में॥
वह संस्कारित परिवारों का, ही अनुपम अनुदान है॥

भारत की परिवार व्यवस्था.....

ऐसे ही परिवार चाहिए, फिर से नव निर्माण को।
जहाँ देव संस्कार मिल सके, धरती के इंसान को॥
राम, भरत का स्नेह चाहिए, घर–घर कलह मिटाने को।
दशरथ जैसा त्याग चाहिए, राष्ट्र धर्म अपनाने को॥
हो परिवार जहाँ नंदन वन, वह भू स्वर्ग समान है॥

भारत की परिवार व्यवस्था.....



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(प्रथम दिवस की भाँति कथा व्यास द्वारा पूजन)

## कीर्तन

प्रभु के सुंदर हैं सब नाम, सारा जग है उनका धाम।
जप लो राम राम राम, भज लो श्याम श्याम श्याम॥
कोई नाम रूप अपना लो,पर उसका अनुशासन पालो।
राम रहीम पुकारो कुछ भी, करो नहीं बदनाम॥
जप लो राम राम राम, भज लो श्याम श्याम श्याम॥ प्रभु....
उसने सुंदर बाग सजाया, मानव को माली ठहराया।
सब मानव उसके बेटे हैं, करें उसी का काम॥
जप लो राम राम राम, भज लो श्याम श्याम श्याम॥ प्रभु....

प्रज्ञापुराण कथामृत का पान करने के लिए उत्सुक प्रज्ञा सत्र में उपस्थित देवियो, देवतुल्य भाइयो और दूर–दूर से आए निष्ठावान साधको ! अब तक आप प्रज्ञा पुराण कथा प्रसंग में जीवन को सफल बनाने वाले संयमशीलता, उदार भक्ति भावना के मार्मिक प्रसंग सुन चुके हैं। आज का विषय परिवार प्रणाली से संबंधित है। आज ऐसे विषय को लिया गया है, जो हमारे दैनिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसकी उपेक्षा के कारण चारों ओर कलह, क्लेश और अशांति का वातावरण उत्पन्न हो रहा है। गृहस्थ जीवन तथा पारिवारिक आदर्शों की धुरी पर ही विश्व परिवार का ढाँचा विनिर्मित है। यदि मनुष्य को बचपन में अच्छे संस्कार दिए जा सकें, तो मनुष्य देवता बन सकता है और धरती पर स्वर्ग का वातावरण उत्पन्न हो सकता है, क्योंकि परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है, तथा राष्ट्र का समूह ही विश्व है। यदि अपने परिवार के प्रति जो स्नेह–प्यार है,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वही विश्व के समस्त प्राणियों के लिए उत्पन्न हो जाए, तो सारी वसुधा ही कुटुंब बन जाएगी। इसी भावना से ओत–प्रोत हो प्रज्ञा पुराण की कथा सुनें।

## प्रज्ञा पुराण गीत

सुनो, हृदय पट खोल सब जन, यह प्रज्ञा पुराण है।
यह प्रभु का संदेश है, इसमें युग ऋषि का तप प्राण है॥ सुनो.
जन–मन में जो घुसी असुरता, उसका जल्दी नाश हो।
हृदय बुद्धि में फिर स्थापित, शुभ श्रद्धा विश्वास हो॥
रोके नहीं रूकेगा यह तो, प्रभु का अटल विधान है। सुनो.
जिनको प्रभु का प्यार चाहिए, वे सब इसका वरण करें।
अपनाकर आदर्श उन्हीं का साहसमय आचरण करें।
जागे सुख–सौभाग्य सभी का, यह ऐसा वरदान है॥ सुनो.

**एकदा तु हरिद्वारे कुम्भपर्वणि पुण्यदे ।**
**पर्वस्नानस्य सञ्जातः समारोहोऽत्र धार्मिकः॥ ३। १। १॥**
**देशान्तरादसंख्यास्ते सद्गृहस्थाश्च संगताः ।**
**अवसरे च शुभे सर्वे पुण्यलाभाप्तिकाम्यया॥ ३। १ । २॥**

गुरुदेव ने प्रज्ञा पुराण के तृतीय खण्ड को परिवार खण्ड का नाम दिया तथा इसको प्रारंभ किया गया गंगा तीर पर बसे हरिद्वार के पुण्य क्षेत्र में कुंभ पर्व पर एकत्रित सद्गृहस्थों के प्रशिक्षण से। गंगा के किनारे तीर्थस्थानों पर मेले आयोजित होने की परंपरा बड़ी प्राचीन है। इन तीर्थस्थानों पर ऋषियों के आश्रम होते थे और वहाँ गृहस्थीजन समय–समय पर जाकर धर्म लाभ करते थे। यह परंपरा आज भी है, किंतु आज उस का स्थान मनोरंजन ने ले लिया है। तीर्थस्थान की पवित्रता भी आज समाप्त हो रही है। साधुओं की भीड़ तो इन स्थानों



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर दिखाई देती है, पर सच्चे ऋषि संतों का अभाव हो गया है। आज तो इन तीर्थों पर दान–पुण्य के नाम पर गुमराह किया जाता है। ''चढ़ा लो पेठा, मिलेगा बेटा'' कहकर दान पुण्य कराए जाते हैं। बहिनो और भाइयो ! तीर्थ ऐसे नहीं होते थे जैसे आजकल हैं। वहाँ पर जागृति के गीत गाए जाते थे, मनुष्य की सोई चेतना को जगाया जाता था। आज तीर्थस्थानों की दुर्दशा को देखकर ही आचार्यश्री ने गायत्री तपोभूमि, आँवलखेड़ा तथा हरिद्वार में शांतिकुंज जैसे आश्रम की स्थापना की, जहाँ मनुष्य को संस्कार दिए जा सकें। जहाँ स्वावलंबन, संगीत, उद्योग–धंधे, योग, व्यायाम की शिक्षा देकर जन चेतना को जगाया जा सके। ऐसे ही आश्रम प्राचीनकाल में होते थे। ऐसा ही आश्रम गंगा किनारे धौम्य ऋषि का था। वहाँ पर एक बार कुंभ पर्व पर गृहस्थियों की भीड़ एकत्रित हुई। उसे देखकर ऋषि धौम्य ने सोचा कि इस बार के इस मेले का लाभ गृहस्थियों को मिलना चाहिए। यही सोचकर उन्होंने शंखनाद कर घोषणा कर दी कि इस बार अध्यात्म की चर्चा को छोड़कर गृहस्थजनों की पारिवारिक–सामाजिक समस्याओं का समाधान करते हुए जीवन को सफल बनाने के लिए उनका मार्गदर्शन किया जाएगा, क्योंकि आधुनिक काल की समस्याएँ प्राचीनकाल की समस्याओं से अलग हैं। पहले परिवार सुसंस्कृत होते थे। आज तो रहन–सहन, खान–पान, शिक्षा प्रणाली सभी में विकार आ गए हैं। दूरद्रष्टा ऋषि ने यही सोचा कि जब सारा देश विसंगतियों में फँसा है, परिवार में कलह हो रहे हैं, व्यक्ति का आचरण भ्रष्ट हो रहा है, तो ऐसे समय में आध्यात्मिक चिंतन की अपेक्षा गृहस्थीजनों को उनके कर्त्तव्यों की शिक्षा देना ही आवश्यक है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति संत, समाज सुधारक, इंजीनियर, डॉक्टर, कलेक्टर, मास्टर बाद में है,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पहले वह किसी परिवार का सदस्य है। यह सोचकर उन्होंने शिविर की घोषणा कर सद्गृहस्थों को सत्र में सम्मिलित होने का निमंत्रण दे दिया। गृहस्थीजन भी अपनी समस्याओं का समाधान चाहते थे। उन्होंने भी ऋषि के सम्मुख जाकर अपनी समस्याएँ रखीं और उनका समाधान करने की प्रार्थना की।

*सुनकर सबकी आतुर वाणी, बोले ऋषिवर मुस्का करके।*
*हे भद्र जनो ! चिन्ता छोड़ो, तुम सुनलो ध्यान लगा करके॥*
*चारों आश्रम में सर्वश्रेष्ठ, यह गृहस्थाश्रम कहलाता है।*
*यदि है परिवार सुसंस्कृत तो, परिवार स्वर्ग बन जाता है॥*
*वेदशास्त्र उपनिषद सभी इसकी महिमा को गाते हैं।*
*है धन्य गृहस्थ आश्रम कहकर, इसे देव ऋषि अपनाते हैं॥*
*यही गृहस्थ आश्रम जीवन का, है पुनीत अनुष्ठान।*
*यह परिवार परंपरा, है रत्नों की खान॥*

**गृहस्थाश्रमधर्मस्य परिपालनमप्यहो ।**
**योगभ्यास इवास्तीह संयमादात्मनः सदा॥ ३। १। १४॥**
**यथाकालं तु ये चैनं धर्मं सम्पादयन्त्यलम्।**
**परलोकेऽथ लोकेऽपि सुखं संतोषमेव च ॥ ३। १ । १५॥**

गृहस्थियों की विनम्र विनय सुनकर ऋषि सबको समझाते हुए कहते हैं कि हे सद्गृहस्थो ! यह गृहस्थाश्रम जीवन का पवित्र आवश्यक और उपयोगी अनुष्ठान है। इसमें रहकर ही आत्मीयता का विस्तार होता है। स्वार्थ पर अंकुश लगता है। आत्मसंयम, परोपकार, त्याग की भावना का उदय होता है। माता–पिता, पति–पत्नी तथा संतान के प्रति जो श्रद्धा, समर्पण, स्नेह होता है, वही भावना विकसित होकर मनुष्य को महामानव बना देती है। मनुष्य समस्त



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विश्व में उस परब्रह्म के दर्शन करता है। गृहस्थी व्यक्ति योगी और तपस्वी से भी महान् होता है। गृहस्थ में रहते हुए परमार्थ करने के अवसर मिलते हैं।

महाभारत में सुधन्वा और अर्जुन के बीच भयंकर द्वंद्व युद्ध छिड़ा। दोनों महाबली थे और युद्ध विद्या में प्रवीण–पारंगत भी। घमासान लड़ाई चली। निर्णायक स्थिति आ नहीं रही थी।

अंतिम बाजी इस बात पर अड़ी कि फैसला तीन बाणों में ही होगा। या तो इतने में ही किसी का वध होगा अन्यथा युद्ध बंद करके दोनों पक्ष पराजय स्वीकार करेंगे।

जीवन–मरण का प्रसंग सामने आ खड़ा होने पर कृष्ण को भी अर्जुन की सहायता करनी पड़ी। उन्होंने हाथ में जल लेकर संकल्प किया कि गोवर्धन उठाने और ब्रज की रक्षा करने के पुण्य मैं अर्जुन के बाण के साथ जोड़ता हूँ। आग्नेयास्त्र और भी प्रचंड हो गया।

काटने का सामान्य उपचार हल्का पड़ रहा था। सो सुधन्वा ने भी संकल्प किया कि एक पत्नीव्रत पालने का मेरा पुण्य भी इस अस्त्र के साथ जुड़े। दोनों अस्त्र आकाश मार्ग में चले। दोनों ने दोनों के अस्त्र बीच में काटने के प्रयत्न किए। अर्जुन का अस्त्र कट गया और सुधन्वा का वाण आगे बढ़ा, किंतु निशाना चूक गया।

दूसरा अस्त्र फिर उठाया, अबकी बार कृष्ण ने अपना पुण्य उसके साथ जोड़ा और कहा–''ग्राह से गज को बचाने और द्रौपदी की लाज बचाने में मेरा पुण्य अर्जुन के बाण के साथ जुड़े।'' दूसरी ओर सुधन्वा ने भी वैसा ही किया और कहा–''मैंने नीतिपूर्वक ही उपार्जन किया है और चरित्र के किसी पक्ष में त्रुटि न आने दी हो तो पुण्य इस अस्त्र के साथ जुड़े।'' इस बार भी दोनों अस्त्र आकाश में



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

टकराए और सुधन्वा के बाण से अर्जुन का बाण आकाश में कटकर धराशाही हो गया।

तीसरा अस्त्र और शेष था। इसी पर अंतिम निर्णय था। कृष्ण ने कहा–''मेरे बार–बार अवतार लेकर धरती का भार उतारने का पुण्य अर्जुन के बाण के साथ जुड़े।'' दूसरी ओर सुधन्वा ने कहा–''यदि मैंने स्वार्थ का क्षण भर चिंतन किए बिना धन को निरंतर परमार्थ में निरत रखा हो, तो मेरा पुण्य बाण के साथ जुड़े।'' इस बार भी सुधन्वा का बाण ही विजयी हुआ। उसने अर्जुन का बाण काट दिया।

दोनों पक्षों में से कौन अधिक समर्थ है, इसकी जानकारी देवलोक तक पहुँची, तो देवता सुधन्वा पर आकाश से पुष्प वर्षा करने लगे। युद्ध समाप्त कर दिया गया। भगवान कृष्ण ने सुधन्वा की पीठ ठोकते हुए कहा–''नर श्रेष्ठ! तुमने सिद्ध कर दिया कि नैष्ठिक गृहस्थ साधक किसी भी तपस्वी से कम नहीं होता।''

गृहस्थाश्रम में विश्व की अधिकांश जनसंख्या समा जाती है। मानव के सर्वांगीण विकास का प्रथम सोपान परिवार है। ''धन्यो गृहस्थाश्रम'' कहकर महाप्राज्ञ कहते हैं कि समाज को सुनागरिक देने की खान ही परिवार है। भक्त, ज्ञानी, पंडित, विद्वान्, संत, समाज सुधारक जितने भी महापुरुष हुए हैं, वे सब परिवार की फुलवारी के सुगंधित पुष्प हैं, जिनसे सारा विश्व महकता है। साधारणतया यह मान्यता बन गई है कि गृहस्थ एक बंधन है, इससे बचकर ही रहना चाहिए, किंतु यह धारणा गलत है, क्योंकि प्राचीन इतिहास पर दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाता है कि साधारण व्यक्ति की तो बात ही क्या हमारे ऋषि–मुनि भी आश्रम में सपत्नीक रहते थे। योग साधना के समय भी उनकी पत्नियाँ उनके साथ रहतीं थीं। उनकी संतान भी थी। ईश्वर के



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अवतारों में भी अधिकांश गृहस्थ थे। राम और कृष्ण ने भी सद्गृहस्थ के रूप में अपना चरित्र प्रस्तुत किया है। स्वामी विवेकानंद सन्यासी थे, किंतु उन्हें भी परमहंस तथा माँ शारदा मणि से संस्कार सीखने को मिले थे।

विवेकानंद विदेश जा रहे थे। वे माता शारदामणि के पास आशीर्वाद लेने पहुँचे। माताजी ने कहा–''पहले मेरा काम कर। बाद में आशीर्वाद दूँगी।'' सामने खुली तलवार पड़ी थी, इशारा करते हुए कहा–''उसे उठा कर ला।''

विवेकानंद ने माता के हाथ में मूँठ थमा दी और धार वाली नोंक उसने अपने हाथ में रखी।

माता ने आशीर्वाद देते हुए कहा–''जो दूसरों की कठिनाई को समझता है और मुसीबत अपने हिस्से में लेता है, उसी पर भगवान का आशीर्वाद बरसता है। तुम्हें भगवान का अनुग्रह सदा मिलता रहेगा।''

विवेकानंद जी कहते थे, महानता के ढेरों गुण मुझे परमहंस जी के पारिवारिक वातावरण में सीखने–विकसित करने का लाभ मिला। अन्यथा वे दुर्लभ ही रहते ।

*है विवाह एक बंधन प्यारा, गुड्डे–गुड़ियों का खेल नहीं।*
*धन, दान, दहेज, प्रदर्शन से, है इसका कोई मेल नहीं॥*
*यह संगम दो आत्माओं का, काया–छाया का नाता है।*
*पत्नी और पति का यही समर्पण, घर को स्वर्ग बनाता है॥*
*दोनों रहें यदि पूरक बनकर, आदर्श गृहस्थी कहलाएँ।*
*तब विषम परिस्थितियों में भी, यह गृहस्थ तपोवन बन जाए॥*
*है गृहस्थी योगी बड़ा, सुन लो धर कर ध्यान।*
*संयम, सेवा, साधना, योगी की पहचान॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**पतिः पत्नी च प्राणैस्तु गच्छेतामेकतां सदा।**
**शरीरेण द्वयं स्यातां स्नेहसम्मानमेव च ॥ ३। २। ४१॥**
**त्रुटयश्च सदा शोध्या हेया प्रतिशोधभावना।**
**न ग्राह्या मतभेदाश्च विचारैस्ते परस्परम् ॥ ३। २। ४३॥**

गृहस्थाश्रम की नींव पति–पत्नी के प्रेम पर आधारित है। पति–पत्नी एक जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। यदि एक पहिया कार का हो और दूसरा बैलगाड़ी का तो गाड़ी कभी नहीं चल सकती। अतः सुखी दांपत्य जीवन तभी संभव है, जब पति–पत्नी एक प्राण दो देह बनकर रहें। परिस्थितियाँ कितनी ही विषम क्यों न हों, किंतु जब पति–पत्नी एक दूसरे के पूरक बनकर रहते हैं, तो घर स्वर्ग बन जाता है। चारों ओर आनंद ही आनंद दिखाई पड़ता है।

सुभद्राकुमारी चौहान प्रयाग के एक राजपूत घराने में जन्मीं। पढ़ती भी रहीं, पर उस समय के प्रचलन के अनुसार उनका विवाह खंडवा के लक्ष्मण सिंह नामक लड़के से हो गया। सुभद्रा कुमारी आरंभ से विद्या प्रेमी थीं। विवाह के बाद भी पति से आगे पढ़ने की प्रार्थना की, तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर ली। उन्हें कालेज में भर्ती करा दिया गया। इस बीच पति ने भी वकालत पास कर ली।

आगे क्या करना है ? दोंनों ने निश्चय किया कि देश सेवा करेंगे। उन्हीं दिनों कांग्रेस आंदोलन चल पड़ा। पति–पत्नी दोनों झंडा सत्याग्रह में सम्मिलित हुए और जेल गए।

उनके पति ने खण्डवा के 'कर्मवीर' साप्ताहिक में सहायक संपादक का काम कर लिया। माखनलाल चतुर्वेदी उसके संचालक थे। दोनों में से एक संपादक का कार्य करके घर चलाता और दूसरा जेल चला जाता । यह क्रम कई वर्षों तक चलता रहा। इस बीच सुभद्राकुमारी



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की प्रतिभा भी विकसित हुई। उन्होंने अनेकानेक उच्चकोटि की कविताएँ तथा कहानियाँ लिखीं, जो देश भर में बहुत प्रख्यात हुईं। 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' कविता सुभद्रा जी की ही है। दोंनों ने मिलकर समाज सेवा के भी अनेक कार्य किए। पारिवारिक धर्म निबाहते हुए भी राष्ट्रसेवा का यह एक अनुपम उदाहरण है।

पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी काया और छाया की भाँति रहते थे। अतः उनके इस पारस्परिक प्रेम सद्भाव से ही गायत्री परिवार बना है, जिसमें करोड़ों साधक हैं। आज समस्त विश्व में जब परिवार नियोजन की माँग है, पूज्य गुरुदेव का गायत्री परिवार मत्स्यावतार की तरह दिन दुगनी, रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। इसीलिए गृहस्थ को तपोवन कहा गया है, क्योंकि गृहस्थी को योगी की भाँति निःस्वार्थ तथा त्यागमय जीवन व्यतीत करना होता है।

दांपत्य जीवन का आधार भोग–विलास पर आधारित नहीं होना चाहिए। नारद जी के परामर्श पर स्वायंभुव मनु अपनी दूसरी पुत्री देवहुति कर्दम ऋषि को अर्पित करने के लिए पहुँचे। कर्दम बोले– ''मेरी शर्त सुन लें। मुझे कामपत्नी नहीं धर्मपत्नी चाहिए। दांपत्य काम विकार के लिए नहीं, काम को मर्यादित करने के लिए होता है। मैं एक सत्पुत्र की प्राप्ति के बाद संन्यास धर्म का पालन करूँगा। आपकी पुत्री को यह स्वीकार हो, तो ही संबंध होगा।''

मनु जी ने कहा–''बेटी ! यह तो विवाह के पूर्व ही संन्यास की बात करने लगे।'' किंतु देवहुति भी कम न थी। बोली–''कामांध होकर संसार सागर में डूबने के लिए गृहस्थाश्रम नहीं है। मैं भी कोई संयमी, जितेंद्रिय पति ही चाहती हूँ।''

विवाह हो गया। दोनों के तपस्वी जीवन के प्रतिफल के रूप में



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'कपिल' जी उत्पन्न हुए, जो चौबीस अवतारों में से एक माने गए। विवाह एक पवित्र बंधन है, दो आत्माओं का मिलन है।

कामेच्छा का सुनियोजन न होने के कारण वासना ही मन–मस्तिष्क पर हावी हो जाती है एवं व्यक्ति को अंततः पतन के गर्त में ले जाती है।

महाराज ययाति वैसे तो बड़े ही विद्वान और ज्ञानवान राजा थे, किंतु दुर्भाग्यवश उन्हें वासनाओं का रोग लग गया और वे उसकी तृप्ति में निमग्न हो गए। स्वाभाविक था कि ज्यों–ज्यों वे इस अग्नि में आहुति देते गए, त्यों–त्यों वह और भी प्रचंड होती गई और शीघ्र ही वह समय आ गया, जब उनका शरीर खोखला और शक्तियाँ बूढ़ी हो गईं। सारे सुकृत खोए, बेटे के प्रति अत्याचारी प्रसिद्ध हुए, परमार्थ का अवसर खोया और मृत्यु के बाद युग–युग के लिए गिरगिट की योनि पाई, किंतु वासना की पूर्ति न हो सकी। अतः दांपत्य जीवन में संयम और सेवा का बहुत महत्व है।

दुर्भाग्यवश मध्यकाल के अंधकारयुग में कुछ ऐसी कुप्रथाएँ प्रारंभ हुईं, जिनके कारण विवाह जैसे पवित्र संस्कार को कलुषित कर दिया। धूमधाम का प्रदर्शन, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, बाल विवाह, पुरुषों के लिए अनेक विवाह करने की छूट, स्त्री के लिए सती प्रथा आदि अनेक कुप्रथाओं के कारण दांपत्य जीवन नरक बनकर रह गया। गुरुदेव ने खर्चीली शादियों का विरोध किया है। दहेज की शादियाँ घर में कलह–क्लेश का कारण बनती हैं।

**गीत–**

दुनियाँ हो गई पुरानी, बदलो भैया।
कहने आए युग निर्माणी, बदलो भैया॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम बदलेंगे, युग बदलेगा, आज लगाओ नारा।
व्यक्ति और परिवार बदल कर बदले भारत सारा॥
होगी बड़ी मेहरबानी, बदलो भैया....
मानव मात्र एक समान, सबका ईश्वर एक।
जाति वंश के भेदभाव पर, आप लगा दो रोक॥
देनी होगी अब कुर्बानी, बदलो भैया....
घूस मिलावट चोर बजारी, हिंसा चारों ओर।
दहेज का रावण, चारों तरफ ही मचा रहा है शोर॥
बढ़ गई कैसी बेईमानी, बदलो भैया....
सास–बहू करतीं हैं, झगड़ा, बेटा–बाप लड़ाई।
आज बना है जानी दुश्मन, अपना ही ये भाई॥
यह है घर–घर की कहानी, बदलो भैया....
माँसाहार नशेबाजी से, तन पर रोग लगाए।
नकली फैशन करके भैया, झूठी शान दिखाए॥
छोड़ो छोड़ो यह नादानी, बदलो भैया....

सुखी, सफल दांपत्य जीवन तभी संभव है, जब नर व नारी दोनों एक दूसरे के पूरक होकर जिएँ। पति–पत्नी में आपस में कोई दुराव छिपाव न हो। गलतियाँ दोनों में से किसी की भी हो सकती हैं। उन्हें विनम्रता से इंगित कर उनका समाधान निकाला जा सकता है। सौजन्य एवं सहकार पर परिवार रूपी रथ की धुरी टिकी हुई है। इसमें दुराग्रह, पूर्वाग्रह या प्रतिशोध की भावना पनपने का अर्थ है, विग्रह का जन्म लेना, ऐसे संदेहों का जन्म होना, जो घुन की तरह धीरे–धीरे शहतीर को नष्ट कर डालते हैं, जिस पर भवन टिका हुआ है।

इस कुप्रथा के कारण सामाजिक जीवन कलंकित हो रहा है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसका दुष्परिणाम यही होता है कि पारिवारिक संबंधों में दरार पड़ती है। किसी गरीब परिवार का लड़का जब पढ़–लिखकर किसी अच्छे पद पर पहुँच जाता है, तो डाक्टर, इंजीनियर या कलेक्टर होने के कारण उसका मूल्य बढ़ जाता है और किसी धनी व्यक्ति की बेटी से विवाह हो जाता है। जो लड़की अपने माता–पिता के यहाँ से दहेज में कार, कोठी, टी.वी., फ्रिज आदि सुख–सुविधाओं के सारे सामान लेकर आती है, वह भला गाँव के टूटे–फूटे घर में क्यों रहेगी ? सास–श्वसुर भी यदि उसके किसी भी कार्य में हस्तक्षेप न करें, तो वे उसके साथ रह सकते हैं अन्यथा उनका रहना भी उसे अच्छा नहीं लगता। परिणाम यही होता है कि लड़का यदि माता–पिता की बात मानता है, तो पत्नी मायके जाने की धमकी देती है। पत्नी की बात मानता है, तो माता–पिता उसे गुलाम कहकर पुकारते हैं। घर में कलह–क्लेश होने लगता है। फिर या तो पत्नी के तलाक की नौबत आती है या जल कर मरने की। माता–पिता का पलड़ा भारी हो, तो उसे जलाकर भी मार दिया जाता है। भाइयो और बहनो ! यदि इस दहेज को बीच में से हटा दें और सास–श्वसुर भी बहू को बेटी की तरह मानें, तो यह समस्या हल हो सकती है। एक बात और लोहे का दान शनि ग्रह देवता को शांत करने के लिए दिया जाता है, जब आप लोग फ्रिज, गोदरेज की आलमारी, ए. सी., कूलर तथा अन्य वस्तुओं के रूप में इतना लोहा दान में लेते हैं, तो शनि का प्रकोप तो होगा ही। अतः आज कथा सुनने वाले भाई–बहन संकल्प लें कि हम दहेज न देंगे और न लेंगे। बहू को मुँह दिखाई में सोने का नेकलेस न देकर उसे तिजोरी की चाबी का गुच्छा सौंपकर आप निश्चिंत होकर समाज सेवा के कार्यों में लगें। यदि लड़के–



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लड़कियाँ भी संकल्प लें कि हम दहेज लेने वाले परिवार में शादी नहीं करेंगे, तो भी कोई हानि नहीं है। आजकल जाति बंधन को तोड़कर भी जो लड़के–लड़कियाँ अपनी पसंद से विवाह कर रहे हैं, वे सुखी जीवन बिता रहे हैं। आप उसमें सहयोग दीजिए। गुरुदेव दहेज विरोधी थे। उन्होंने शांतिकुंज में अनेक कन्याओं की शादी बिना दहेज कराई हैं। इस दहेज के दानव को नष्ट करने का उन्होंने संकल्प लिया था। इस समय भी सुशिक्षित समाज को दहेज न लेने का संकल्प लेना चाहिए, तभी गुरुदेव के दिए संदेश को मानकर हम सब उनके शिष्य कहलाने के अधिकारी बन सकते हैं।

**दहेज का गीत**

लाखों घर बरबाद हो गए इस दहेज की बोली में।
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाईं डोली में॥

कितनों ने कन्या के अपनी, पीले हाथ कराने में।
कहाँ–कहाँ तक मस्तक टेके, आती है शर्म बताने में॥
जिस पर बीती वहीं जानता, बात नहीं है कहने की।
जीवन भर को कर्ज लद गए, सीमा टूटी सहने की॥
गहने, खेत, मकान बिक गए, सिर्फ मांग की रोली में॥

अर्थी चढ़ी.....

टूट रहे परिवार रोज ही, फूट रही हैं तकदीरें।
लोभी फिर भी खोज रहे हैं, नित शोषण की तदवीरें॥
नौजवान गुणवान युवक क्यों ? बनता अरे भिखारी है।
खून कलेजों का पी जाती, यह कैसी बीमारी है॥
ऐसी क्रूर प्रथा को आओ, आज झोंक दें होली में॥

अर्थी चढ़ी.....



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पति–पत्नि के बीच खाइयाँ, खोदी इस शैतान ने।
सास–बहू को शत्रु बनाया, है देखो हैवान ने॥
बे मतलब की बातों पर भी, रार मचायी जाती हैं।
क्रूर कर्म कर कहीं–कहीं तो, बहू जलायी जाती हैं॥
दानवता आ घुसी कहाँ से, मानवता की खोली में॥

अर्थी चढ़ी.....

सहन मत करो क्रूर प्रथा यह, इसे सदा को दूर करो।
दानवता के अहंकार को, संकल्पों से चूर करो॥
बहुत हो चुका नाच अशिव का, अब सज्जनता अपनाओ।
छोड़ रूढ़ियाँ, सद्विवेक संग, निर्भय हो आगे आओ॥
पापों का मन भरा खजाना, अब तो अपनी झोली में॥

अर्थी चढ़ी.....

जब पति व पत्नी आपस में घुलमिलकर रहते हैं, तो घर स्वर्ग नजर आता है, चारों ओर आनंद ही आनंद संव्याप्त होता है, परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी विषम क्यों न हों।

मेरी और टॉमस का दांपत्य जीवन अंनत प्रेम से भरापूरा था। हर वर्ष विवाह दिवसोत्सव मनाते और छोटा–मोटा उपहार उस दिन एक–दूसरे को भेंट करते। गरीबी में भी आनंद पूर्ण जीवन बिता रहे थे।

उस वर्ष विवाह का दिन फिर आया। दोनों एक–दूसरे के लिए उपहार देने की योजना बनाने लगे, पर जेबें बिल्कुल खाली थीं। टॉमस ने पत्नी के सुनहरे बालों में लगाने के लिए एक सुनहरी क्लिप खरीदने की बात सोची। मेरी सोचने लगी कि पति की हाथ घड़ी के लिए सुनहरी चेन खरीदी जाय। दोनों के मनोरथ मन में थे। साधन जुट नहीं रहा था। दिन निकट आ गया। टॉमस पुरानी घड़ी खरीदने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाले की दुकान पर गया। और घड़ी बेचकर बदले में सुनहरी क्लिप खरीद लाया। मन में बहुत प्रसन्नता थी। मेरी क्या करती ? वह सुनहरे बाल खरीदने वाले की दुकान पर गई और अपने घुँघराले बाल कटाकर मिले पैसों से घड़ी की चेन खरीद लाई। सिर पर टोपा लगा लिया।

दिन आया, उपहार देने के लिए एक ने दूसरे की ओर हाथ बढ़ाया । क्लिप कहाँ लगे बाल नदारद। चैन कहाँ बँधे, घड़ी गायब। पूछने पर तथ्य खुला। शोभित न होने पर भी, इन उपहारों ने एक–दूसरे का दिल सदा–सदा के लिए जीत लिया। दोनों की आँखों में प्रेम के आँसू भरे थे। इस तरह मना वह विवाह दिवसोत्सव।

दांपत्य जीवन की आधारशिला प्रेम, त्याग, समर्पण पर आधारित होनी चाहिए। सच्चा समर्पण ही दांपत्य जीवन का आधार है।

आवश्यकता पड़ने पर नारी को पति के लिए एक शिक्षक की भूमिका भी निभानी पड़ती है। अनीति से समझौता न करना, पति को सही रास्ते पर लाने का प्रयास करना, उसका एक ऐसा गुण है, जो कहीं और देखा जाना दुर्लभ है।

मंदोदरी रावण की पत्नी तो थी, पर उसकी गुलाम बनकर नहीं रही और न अपनी स्वतंत्र विवेक बुद्धि से हाथ धोया। सीताहरण के वह अंत तक विरुद्ध रही। रावण के मरने पर उसने प्रजा हित को प्रधानता दी और लंका के पुनर्निमाण में जुट गई।

*अपमान करो मत नारी का, इसकी पीड़ा को पहचानो।*
*यह नारी तुम्हारी जननी है, इसकी गौरव गरिमा जानो॥*
*यह गृहलक्ष्मी, यह अन्नपूर्णा, यह कामधेनु साकार बनी।*
*यही ऋद्धि–सिद्धि और श्रद्धा है, यही कल्पवृक्ष की छाँह घनी॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*इसकी शीतल छाया से ही, सब घर–परिवार महकता है।*
*इसका संरक्षण पाकर ही, नर सच्चा मानव बनता है॥*
*जहाँ कहीं भी होता है, नारी का सम्मान।*
*वहीं देवता करते हैं, प्रेम सहित विश्राम॥*

**भद्रजनाः ! गृहिण्याश्च महत्वं वर्णितं परम् ।**
**वस्तुतस्तु, यतो धुर्यां गृहिणी परिवारगा ॥ ३।३।८॥**
**उत्कृष्टत्वे निकृष्टत्वे तस्या एवं गृहस्थजम् ।**
**उत्थानं पतनं नूनमाश्रितं नात्र संशयः ॥ ३।३।९॥**

दांपत्य जीवन की मधुरता में पुरुष और स्त्री दोनों का ही पूर्ण सहयोग रहता है, किंतु फिर भी नारी का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। शास्त्रों में नारी को गृहलक्ष्मी, ब्रह्मविद्या, श्रद्धा, शक्ति, पवित्रता, कला, अन्नपूर्णा, ऋद्धि–सिद्धि तथा मूर्तिमान कामधेनु कहा गया है। इस विषय में गुरुदेव लिखते हैं कि नारी मनुष्य के समस्त अभावों, कष्टों और संकटों का निवारण करने में समर्थ है। यदि उसे श्रद्धापूर्वक सद्भावना से सींचा जाए, तो वह सोमलता विश्व के कण–कण को अपने स्नेहामृत से सींच सकती है।

रामकृष्ण परमहंस की पत्नी शारदामणि जब युवा हो गईं, तब अपने पति के पास दक्षिणेश्वर मंदिर आईं। परमहंस जी ने उन्हें पूरे स्नेह और सम्मान के साथ रखा। साथ ही अपना लक्ष्य भी उनके सामने रखा कि वे ब्रह्मचर्यपूर्वक आध्यात्मिक क्रिया–कलापों में संलग्न रहना चाहते हैं। यदि वे आज्ञा दें, तो इस व्रत को न तोड़ें। शारदामणि ने सहर्ष स्वीकृति दे दी और वे पति के साथ रहते हुए भी आजीवन ब्रह्मचारिणी रहीं। जितने पति के शिष्य–भक्त आते थे, उन्हें वे अपनी संतान की तरह स्नेह देती थीं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन दिनों बंगाल में सती प्रथा का प्रचलन था। वे भी सती होना चाहती थीं, पर मरते समय परमहंस जी ने आदेश दिया–''आत्महत्या से कोई लाभ नहीं। तुम मेरा छोड़ा काम पूरा करो।'' उन्होंने आदेश पाला और जब तक जीवित रहीं, भक्तजनों को ज्ञान तथा वरदान का अभाव नहीं खटकने दिया। अतः नारी परिवार का हृदय तथा प्राण है। वह अपनी कोमलता, सुशीलता, संवेदना, करुणा, स्नेह और ममता की साकार मूर्ति होने के कारण हर प्रकार से पूजनीय एवं मार्गदर्शक हैं।

प्रसिद्ध उपन्यासकार डॉ. क्रोनिन बड़े गरीब थे। डाक्टर बनकर वे धनवान हो गए, किंतु उनका मन पैसे में रम गया। उनकी पत्नी ने कहा–''हम गरीब ही ठीक थे, कम से कम दिल में दया तो थी, अब उसे खोकर कंगाल हो गए।'' डाक्टर क्रोनिन ने कहा–''सच है, धनी धन से नहीं होते, धनी तो मन से होते हैं। तुमने मुझे सही राह दिखाई, नहीं तो हम ऐसी स्थिति में पहुँच जाते, जहाँ परस्पर स्नेह के सूत्र भी कमजोर पड़ने लगते हैं।''

जब समझ आ जाए, तभी सही, परंतु पारस्परिक विचार–विमर्श में पूर्वाग्रह मिटाकर यदि एक–दूसरे की बात सुन ली जाए, तो उससे अंततः हित ही होता है। इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है–''यत्र नार्यस्त पूज्यंते, रमंते तत्र देवता'' इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को नारी को सम्मान देना चाहिए।

वन में खड़े एक पौधे के साथ लिपटी हुई एक लता भी धीरे–धीरे बढ़कर पौधे के बराबर हो गई। पौधे का आश्रय लेकर उसने फलना–फूलना आरंभ कर दिया। बेल को फलते–फूलते देखकर वृक्ष को अहंकार हो गया कि मैं न होता, तो लता कब की नष्ट हो गई होती।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसने धमकाते हुए कहा–''अरी बेल ! मैं जो कुछ कहूँ, तू उसका पालन किया कर, नहीं तो तुझे मार कर भगा दूँगा।'' अभी वह लता को डाँट ही रहा था कि दो पथिक उधर से निकले। एक बोला–''बंधु ! देखिए यह वृक्ष कैसा शीतल और सुंदर है। इस पर कैसी अच्छी लता पुष्पित हो रही है। आओ, यहाँ कुछ देर बैठकर विश्राम करें।'' अपना सारा महत्त्व लता के साथ है, यह सुनकर वृक्ष का सारा अभिमान नष्ट हो गया । उस दिन से उसने लता को धमकाना बंद कर दिया।

कथा का मर्म समझाते हुए महाप्राज्ञ ने कहा–''भक्तो ! नारी के साथ जुड़ा होने से ही नर का महत्त्व है। दोनों एक–दूसरे के सहयोगी–सहचर हैं। ऐसे में किसी एक को कनिष्ठ–वरिष्ठ नहीं माना जाना चाहिए। नारी प्रत्येक रूप में सम्माननीय है। वह माता के रूप में गौरवमयी जननी है, ब्रह्मपुराण में कहा गया है–नास्ति मातृ समोगुरु। पत्नी के रूप में सहधर्मिणी है। जब विषम परिस्थिति में सब साथ छोड़ देते हैं, धन–संपत्ति नहीं रहती, तब नारी शक्ति बनकर मनुष्य का मनोबल, आशा और संवेदनशीलता बढ़ाती है और गलत रास्ते पर चलने से रोकती है।''

पृथ्वीराज चौहान संयोगिता को कन्नौज से अपहरण करके लाए थे। उसके रूप–सौंदर्य पर इतने मुग्ध थे कि राजमहल छोड़कर शासन कार्य सम्हालने भी नहीं जाते थे। इस स्थिति का लाभ उठाकर मोहम्मद गौरी ने दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। नेतृत्व के अभाव में पराजय निकट दीखने लगी। स्थिति को देखते हुए चंद्रवरदाई ने सारा विवरण संयोगिता को लिख भेजा। उसने पृथ्वीराज को लताड़ा और मोरचा सम्हालने के लिए विवश किया।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रेम से कर्त्तव्य को उन्होंने श्रेष्ठ बताया और दिग्भ्रांत पति को नीति मार्ग पर चलाया।

बहन के रूप में नारी भाई के मस्तक पर तिलक कर उसे गौरवान्वित करती है, प्रेरणा देती है। पत्नी के अलावा नारी का दूसरा रूप बहन के रूप में है, जिसे परमपवित्र संबंध माना गया है। बिजली चमकी और पथिक को एक वृक्ष के नीचे खड़ी तरुणी दिखाई दी, लगा विपदा की मारी है, तो यात्री ने पास जाकर पूछा–''देवि ! मैं तुम्हारी कोई सेवा कर सकता हूँ।'' ''नहीं राही'' स्त्री ने कहा–''सेवा के नाम पर पुरुषों ने मुझे छला ही है, अब पुरुष मात्र से मुझे विरक्ति है।'' ''आर्ये ! मैं वचन देता हूँ'' पथिक ने कहा। ''कैसा वचन ?'' ''मैं तुम्हें अपनी माँ के समान आदर और सम्मान दूँगा।'' राही ने आश्वासन दिया। ''घर में बैठी माँ के प्रति वयस्क पुत्र एक अजीब तिरस्कार का भाव रखते हैं, जबकि माँ अपने शिशु के लिए शरीर का सारा सत्व निचोड़ती है।'' स्त्री बोली। ''तो चलो तुम्हें अपनी पुत्री मानूँगा।'' ''पिता पुत्री को भी पराया धन समझकर एक दिन उसे अनजान हाथों में सौंप देते हैं। पुरुष यहाँ भी अपनी गुरुता से उसे परास्त कर देता है।'' ''तो फिर पत्नी बनकर रहना। यदि तुम्हें इसमें कोई शंका न हो, तो।'' ''शंका'' स्त्री हँसी–''पत्नी को भी पुरुष अपनी प्रभुता के चंगुल में फँसाने से क्या बाज आते हैं? रोटी और कपड़े के बदले उसका सब कुछ तो छीन लेते हैं।''

अब राही को कुछ समझ में न आ रहा था और स्त्री कहे जा रही थी–''इन सब संबंधों का मैंने कटु अनुभव किया है। आर्य ! तुम अपना समय न गँवाओ और गंतव्य की ओर बढ़ते चलो।'' राही जैसे यह सब सुन ही रहा था, अपने विचारों में खोए हुए ही उसने यकायक गंभीरता



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को तोड़कर कहा–''यदि तुम मेरे निःस्वार्थ भ्रातृ प्रेम को स्वीकार कर सको, तो भगिनी बनकर ही मेरी सेवा ग्रहण करो।'' स्त्री के चेहरे पर एक चमक भरी प्रफुल्लता फैल गई और वह पथिक के साथ जाने के लिए तैयार हो गई। कहते हैं कि यह कथा उतनी ही पुरानी है, जितना कि प्राचीन राखी का पर्व।

पुत्री के रूप में वह घर की शोभा है। कन्या पुत्र की अपेक्षा कहीं अधिक संवेदनशील होती है। उसकी स्नेहधारा का मूल्य बहुत अधिक है। नारी स्रष्टा की जीवंत कलाकृति है। वह स्नेह और त्याग की साकार प्रतिमा है। अतः प्रत्येक रूप में उसकी गरिमा को प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए।

प्राचीनकाल में नारी का बहुत सम्मान था, किंतु दुर्भाग्यवश मध्यकाल में उसका बहुत शोषण हुआ। परिणाम यह हुआ कि वीर जननी, वीर पत्नी, वीर भगिनी, वीर पुत्री केवल शृंगार की कठपुतली बनकर रह गईं। जिसका दुष्परिणाम आज देश के सामने है, उसे कामिनी, रमणी बनाकर आकर्षण का केंद्र बनाया गया। वृद्ध विवाह, बाल विवाह, बहु विवाह, दहेज, परदा प्रथा आदि कुप्रथाओं के कारण नारी का जीवन ही नरक तुल्य हो गया। इसीलिए गुरुदेव ने सबको समझाया–माता ही यदि है अज्ञान, कैसे योग्य बने संतान। माता श्रेष्ठ होगी, तभी संतान सुयोग्य होगी।

रामकृष्ण परमहंस की माता एक बार कलकत्ता आईं और कुछ समय स्नेहवश पुत्र के पास रहीं। दक्षिणेश्वर मंदिर की स्वामिनी रासमणि ने उन्हें गरीब और सम्मानास्पद समझकर तरह–तरह से कीमती उपहार भेंट किए। वृद्धा ने उन सभी को अस्वीकार कर दिया और मान रखने के लिए एक इलायची भर स्वीकार की। उपस्थित



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोगों ने कहा–''ऐसी निस्पृह माताएँ ही परमहंस जैसे पुत्र को जन्म दे सकती हैं।''

*नारी हो पढ़ी लिखी तब ही, परिवार को स्वर्ग बनाती है।*
*माता निर्माता होती है, नर में देवत्व जगाती है॥*
*परिवार की शक्ति नारी है, संसार की शक्ति नारी है।*
*माता की गौरवगरिमा पर, सारी दुनिया बलिहारी है॥*
*यदि माता ही अनपढ़ हो तो, संतान सुघड़ कैसे होगी।*
*यदि निर्माता ही अनगढ़ हो, सुंदर रचना कैसे होगी॥*
*नारी को शिक्षित करो, तब हो राष्ट्र उत्थान।*
*नारी की जागृति बिना, कैसे हो कल्याण॥*

**स्नेहसौजन्ययोर्नार्यां बाहुल्यं प्राकृतं स्वतः।**
**व्यक्तिनिर्माणसामर्थ्यं द्वयमेतन्निगद्यते ॥ ३। ३। २६॥**
**यन्त्ररेखाश्रिता नूनं भूषणादिविनिर्मितिः।**
**कुम्भकारो यथा चक्रं स्वाङ्गुलीकौशलेन सः॥ ३। ३। २७॥**

नारी की अज्ञानता तथा शिक्षा के अभाव के कारण ही आज भारतीय संस्कृति रसातल को जा रही है। अतः युग ऋषि, पूज्य गुरुदेव ने नारी जागरण पर बहुत बल दिया है। इस विषय में वे कहते हैं कि नारी की गरिमा को गिराने का अर्थ है, अपने जीवन को पशुतुल्य बनाकर भगवान की अनमोल देन को व्यर्थ खोना। पारिवारिक शांति को नष्ट कर घर को कुरुक्षेत्र का मैदान बनाना। उन्होंने मातृशक्ति की गरिमा का केवल वर्णन ही नहीं किया, अपितु वंदनीया माता जी को श्रद्धा एवं सम्मान देकर उन्हें विश्ववंद्य बना दिया। उन्होंने नारी की शिक्षा–दीक्षा पर बहुत बल दिया है। सौभाग्य की बात है कि आज की विषम परिस्थितियों में भी भारतमाता



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की गोद में अनेक स्त्री रत्नों ने जन्म लिया है, जिन्होंने भारतमाता को अनेक नररत्न प्रदान किए हैं। इस देश के अनेक महापुरुषों ने अपनी महानता का श्रेय अपनी माता को दिया है। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने सादगी, विनम्रता तथा पर–दुखकातरता का पाठ अपनी माता से पढ़ा था। छत्रपति शिवाजी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, विनोबा भावे के व्यक्तित्व का निर्माण उनकी माता ने ही किया था। महात्मा गाँधी व उनकी माँ, विनोबा भावे को माँ की सीख, शास्त्री जी का परिवार शिक्षण आदि अनेक प्रेरक प्रसंगों द्वारा यह प्रमाणित किया जा सकता है कि माता ही बच्चे की प्रथम गुरु है।

चित्तौड़ के राजकुमार एक चीते का पीछा कर रहे थे। वह चोट खाकर झाड़ियों में जा छिपा था। राजकुमार घोड़े को झाड़ी के इर्दगिर्द घुमा रहे थे, पर छिपे चीते को बाहर निकालने में वे सफल न हो पा रहे थे। किसान की लड़की यह दृश्य देख रही थी। उसने राजकुमार से कहा–''घोड़ा दौड़ाने से हमारा खेत खराब होता है। आप पेड़ की छाया में बैठें। चीते को मारकर मैं लाए देती हूँ।'' वह एक मोटा डंडा लेकर झाड़ी में घुस गई और मल्लयुद्ध से चीते को पछाड़ दिया । उसे घसीटते हुए बाहर ले आई और राजकुमार के सामने पटक दिया । इस पराक्रम पर राजकुमार दंग रह गए। उन्होंने किसान से विनय करके उस लड़की से विवाह कर लिया। प्रख्यात योद्धा हमीर उसी लड़की की संतान थे। माताओं के अनुरूप संतान का निर्माण होता है।

सुभद्रा ने अभिमन्यु को तथा अंजनि ने हनुमान को जन्म दिया था। श्रेष्ठ स्तर की माताएँ अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुरूप ही श्रेष्ठ संतानों को जन्म देती हैं। हिरण्यकशिपु के घर प्रह्लाद जैसे भक्त का होना उनकी धर्मपरायण माता कयाधु की योग्यता का प्रमाण है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माता के पश्चात् पत्नी के आदर्श रूप में नारी की प्रतिष्ठा की जा सकती है। पत्नी चाहे तो पति को ठीक रास्ते पर ला सकती है। विद्योत्तमा ने कालिदास को विद्वान बनाया, मंडन मिश्र की पत्नी ने शास्त्रार्थ करके मंडन मिश्र के गौरव की रक्षा की ।

राजस्थान की हाड़ा रानी की कथा आज भी गीतों में गाई जाती है। अभी विवाह हुए कुछ अधिक दिन भी नहीं हुए थे कि चूड़ावत को औरंगजेब के आक्रमण का प्रत्युत्तर देने के लिए रणक्षेत्र में जाने का मौका आया। इधर चूड़ावत का मन अजीब द्विविधा में पड़ा था। एक ओर नवपरिणीता पत्नी का आकर्षण और दूसरी ओर कर्त्तव्य। पति को असमंजस में देख रानी की चिंता बढ़ी। उसने कारण पूछा। रानी कुछ गंभीर हुई और सोचने लगी, यदि मेरा आकर्षण पति को कर्त्तव्य पथ से विचलित करता है, तो मेरे जीवन को धिक्कार है। मुझे अपना बलिदान देकर पतिदेव की द्वंद्व स्थिति मिटानी चाहिए। दीवाल पर टँगी तलवार लेकर उसने पूरे बल से वार किया और अपना सिर काट कर चूड़ावत को भेज दिया। कर्त्तव्य पथ से विचलित न होने के लिए जिन वीरांगनाओं में इतना आत्मबल भरा पड़ा हो, वहाँ नर के लिए कायरता असंभव है। चूड़ावत ने तुरंत अपना घोड़ा युद्ध क्षेत्र की ओर मोड़ा । बिजली की तरह शत्रु सेना पर टूट पड़ा। इस तरह वीर नारियों ने अनेक प्रकार से पति को गलत रास्ते पर चलने से रोका है।

*नारी है मनस्वी तेजस्वी, वह शक्तिस्वरूपा माता है।*
*पर फिर भी उसे, अबला कहकर, घर–घर में दबाया जाता है॥*
*आकर्षण केंद्र बना करके, उसे खूब सजाया जाता है।*
*रमणी, कामिनी, वेश्या कहकर, सम्मान गिराया जाता है॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*सहमी, झिझकी, वह दीन–हीन, अपराधिन बन रह जाती है।*
*पतिता, दलिता, दुष्टा कहकर, सबसे ठुकराई जाती है॥*
*ना ही तुम अबला नारी हो, ना ही तुम करुण कहानी हो।*
*जागो, सोचो तुम बढ़ो सभी, तुम झाँसी वाली रानी हो॥*
*माता शिशु की प्रथम गुरु, यदि वो हो अज्ञान।*
*तो सोचो कैसे बने, जग में मनुज महान॥*

**अबलात्वाच्च नार्यास्तु नात्याचारस्तु कश्चन।**
**कोमलाङ्गया भवेदित्थमेतदर्थं च निश्चितम् ॥ ३। ३। ६८॥**
**समस्तस्य समाजस्य भाव उद्बुद्ध इष्यते ।**
**अनीत्याश्रयिणो नैव नराः स्युर्दण्डवञ्चिताः ॥ ३। ३। ६९॥**

नारी मनस्वी भी है और तेजस्वी भी । हर क्षेत्र में उसने योग्यता एवं प्रतिभा का परिचय दिया है, किंतु फिर भी हृदय की सुकुमार कोमल भावनाओं के कारण वह आत्मसमर्पण कर देती है, जिसके कारण उसे अबला कहकर पुकारा जाता है। प्राचीनकाल में स्त्रियों को शक्ति स्वरूपा देवी माना जाता था।

मिथिला देश के महापंडित मंडन मिश्र का जगद्गुरु शंकराचार्य से शास्त्रार्थ हुआ। मंडन मिश्र हारने लगे, तो उनकी पत्नी भारती (जो उन्हीं के समान विद्वान थीं) ने कहा कि अभी मिश्रजी के आधे अंग के रूप में मैं मौजूद हूँ । शास्त्रार्थ का उत्तरार्द्ध मैं पूरा करूँगी। शास्त्रार्थ लंबे समय तक चला। भारती की विद्वत्ता देखकर सारा विद्वतसमुदाय दंग रह गया। अंततः पति–पत्नी दोनों हार गए, तब दोनों ने शंकराचार्य से दीक्षा ली और वेदांत धर्म के प्रचार में जुट गए।

पहिले समय में पुत्र को वीर तथा पुत्री को वीरा कहा जाता था।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काली, भवानी, अंबा, चामुंडा, दुर्गा आदि नाम से उन्हें इसीलिए पूजा जाता है कि वे राक्षसों का वध करने में समर्थ हैं। आधुनिक युग में भी रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, दुर्गावती जैसी शूरवीर नारियाँ इसकी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। हृदय में दिव्य गुणों से विभूषित नारी शारीरिक शक्ति की कमी के कारण ही अबला कहकर पुकारी गई। पुरुष प्रधान समाज ने उसके प्रेम, स्नेह, उदारता, त्याग, समर्पण का अनुचित लाभ उठाकर उसे कामिनी, रमणी बनाकर, सजाकर उसे कठपुतली की भाँति अपनी उँगलियों पर नचाया और वह बेचारी दलिता, पतिता, अबला बनकर रह गई, किंतु अब इस अनाचार का अंत होना चाहिए। महर्षि दयानंद, राजा राममोहन राय, महर्षि अरविंद घोष, महात्मा गाँधी तथा परमपूज्य गुरुदेव ने नारी जागरण का शंखनाद कर दिया है।

सहस्रों वर्षों से नारी जाति को 'स्लो पायजन' देकर सुला दिया गया था। अब वह करवटें बदल रही हैं। आँखें खोल रही हैं। अपने स्वरूप को पहचान रही हैं, किंतु इस समय भी पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से उसके भटकने का भय है। इस समय आवश्यकता है, उसे सही दिशा देने की, सही मार्गदर्शन की।

शमीन यहूदी साहूकार था, साथ ही धर्मात्मा भी। ईसा को उसने अपने यहाँ भोजन पर बुलाया और वे गए भी। उसी गाँव में एक वेश्या भी रहती थी। नाम था—मेरी। मेरी भी ईसा के चरणों में पहुँची और आतिथ्य स्वीकार करने का आग्रह करने लगी। ईसा ने उसे स्वीकार कर लिया और दूसरे दिन उसके यहाँ गए भी। यह प्रसंग शिष्य मंडली में चर्चा का विषय बन गया। कानाफूँसी होने लगी। वेश्या के यहाँ संत—भगवान का जाना अनुचित है। बात ईसा के कान तक पहुँची,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्होंने शिष्यों को बुलाया और कहा–''जो प्रायश्चित करता है, सो पवित्र है। पापी तो वह है, जो दुष्टता पर अड़ा रहे। मन बदलने के बाद कोई वैसा नहीं रहता, जैसा पहले था।'' वेश्या ने व्यवहार बदला और सज्जनों की तरह रहने लगी। कुछ दिन बाद ईसा ने मंडली को बुलाया और मेरी का प्रसंग बताते हुए कहा–''यदि बुहारी गंदगी तक न पहुँचे, तो सफाई की संभावना कैसे बने ?''

यही शिक्षा देने के लिए पूज्य गुरुदेव ने शांतिकुंज, आँवलखेड़ा, गायत्री तपोभूमि आश्रम तथा अनेक गायत्री शक्तिपीठों की स्थापना की है, जहाँ नारियाँ स्वयं संस्कारयुक्त होकर समाज को तथा आने वाली पीढ़ी को सही संस्कार और भारतीय संस्कृति की शिक्षा दे रहीं हैं। भाइयो और बहनो ! इस समय आप सब इसमें सहयोगी बनकर गुरुदेव के सपनों को साकार करने का संकल्प लें, क्योंकि यदि समाज की आधी जनसंख्या को उपेक्षित किया गया, तो युग निर्माण का स्वप्न अधूरा ही रह जाएगा।

*जागो, प्यारी बहनो जागो, अब समय नहीं है सोने का।*
*सोई शक्ति को पहचानो, अब गया जमाना रोने का॥*
*चंड–मुंड के मर्दन को, तुम महाचंडिके बन जाओ।*
*महिषासुर का वध करने को, तुम महादुर्गा बनकर आओ॥*
*जागो लक्ष्मीबाई जागो, आसुरी शक्ति से टकराओ।*
*सत्यवान को सावित्री बन, यम से आज छुड़ा लाओ॥*
*तुम जागो तो जाग उठे, सारा हिन्दुस्तान।*
*जगद्गुरु फिर से बने, अपना देश महान्॥*

**उपदेशेन चाऽनेन तत्रस्थानामभूत्स्वतः।**
**नारीणां स्वगरिम्णस्तु बोधो विस्मयकारकः॥ ३। ३। ७८॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**संकल्पश्च नवस्तेन तासां प्रादुरभूद् हृदि ।**
**कर्तुं नव्यं च निर्माणं स्वस्तरस्य तथैव च ॥ ३।३।७९॥**

इस प्रकार नारी की सोई चेतना को जगाते हुए गुरुदेव ने घोषणा की है कि यह युग नारी जागरण का है। प्यारी बहनो, जागो, अपने अस्तित्व को पहचानो, अपनी गौरव गरिमा का ध्यान करो। अब पति देवता से मार खाकर या जलकर मर जाने का समय समाप्त हो चुका है। अपनी सोई हुई शक्ति को पहचानो तथा दुर्गा, चामुण्डा, काली बनकर दुष्टों के दमन के लिए तैयार हो जाओ। इस समय तुम्हें वंदनीया माता जी की शक्ति तथा गुरुदेव का वरदान मिल रहा है। अपने को अबला मत समझो।

पति का सहारा चले जाने पर विधवा से सहानुभूति व्यक्त करने वाले कितने ही आए। सभी के मुख पर एक ही चर्चा थी–''इस अबला का भविष्य क्या होगा ?'' सुनते–सुनते जब उससे न रहा गया, तो उसने एकदम कह ही दिया, ''आप लोग चिंता न करें, मेरा परिश्रम, मेरा ईमान और मेरा भगवान इन तीनों संरक्षकों के रहते मुझे किसी प्रकार की कमी पड़ने वाली नहीं है।'' इसी जीवन दर्शन को अपनाकर उसने अपने आप को स्वावलंबी बनाया एवं अपने परिवार का पोषण किया।

तुम्हारे अंदर झाँसी की रानी, अहिल्याबाई, दुर्गावती, सावित्री, मदालसा, मैत्रेयी सोई हुई हैं, उसे जगाओ और अपनी संस्कृति का उद्धार करने के लिए आसुरी संस्कृति से टकराकर तुम दुर्गा चामुण्डा बन जाओ। असत्य, दुराचार, भ्रष्टाचार रूपी राक्षस से टक्कर लेने के लिए सत्यवान को यमराज से बचाओ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

## नारी जागरण गीत

नारियाँ देश की जाग जाएँ अगर,
युग स्वयं ही बदलता चला जाएगा।
शक्तियाँ जागरण गीत गाएँ अगर,
हर हृदय ही मचलता चला जाएगा॥

वीर संतान से कोख खाली नहीं,
गोद में कौन सी शक्ति पाली नहीं।
जननियाँ शक्ति को साध पाएँ अगर,
शौर्य शिशुओं में बढ़ता चला जाएगा॥

मूर्ति पुरुषार्थ में है सदाचार की,
पूर्ति श्रम से सहज साध्य अधिकार की।
पत्नियाँ सादगी साध पाएँ अगर,
पति स्वयं ही बदलता चला जाएगा॥

**बालो योऽद्यतनः सः वै भविता राष्ट्रनायकः ।**
**समाजग्रामणीर्वृक्षा भवन्त्येव यथा क्षुपाः ॥ ३।४।९॥**
**कुशला अत एवात्र मालाकारा विशेषतः ।**
**क्षुपाणां रक्षणे ध्यानं ददत्यावश्यके विधौ ॥ ३।४।१०॥**

नारी जागरण का संदेश देते हुए महाप्राज्ञ शिशु निर्माण की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। परिवार एक फुलवारी है, जिसमें शिशु के रूप में पुष्प विकसित होते हैं। माता–पिता माली के समान उनकी देखभाल करते हैं। जिस प्रकार माली की थोड़ी सी भी असावधानी पौधों को नष्ट कर देती है, उसी प्रकार माता–पिता यदि शिशु निर्माण में असावधान होते हैं, तो बालकों को अच्छे संस्कार नहीं दे पाते और इसका दुष्परिणाम सारे राष्ट्र को भुगतना पड़ता है। इस विषय में



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वंदनीया माता जी कहती थीं कि बच्चों के निर्माण में माता–पिता की एक आँख सुधार की तथा दूसरी दुलार की होनी चाहिए। अधिक लाड़–प्यार बच्चों को गुमराह कर देता है और वे रावण, कंस, हिरण्यकशिपु की भाँति अत्याचारी बन जाते हैं। भारत का सारा इतिहास इस बात का साक्षी है कि मनुष्य को महामानव बनाने वाली प्रथम गुरु माता ही है।

एक फ्रांसीसी ने सड़क की पहाड़ी पर बैठे एक गरीब लड़के से जूते की मरम्मत कराई और उसकी गरीबी को देखते हुए एक रुपया दे दिया। लड़के ने बाकी पैसे लौटा दिए और कहा–''जो मेरा उचित पारिश्रमिक है, वही मुझे लेना चाहिए। मेरी माता ने मुझे सिखाया है, जितना मैं श्रम करूँ, उससे अधिक उसके बदले में न लूँ।'' यही बालक आगे चलकर फ्रांस का राष्ट्रपति दगाल बना।

इस पारिवारिक जीवन की सुखानुभूति करने के लिए स्वयं भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण बनकर दशरथ तथा नंदबाबा के आँगन में क्रीड़ाएँ करते हैं। प्राचीनकाल में माता, दादी, नानी बच्चों को लोरी गा–गाकर सुनाती थीं और बच्चों में संस्कार भरती थीं। आज माता–पिता को समय ही नहीं है कि बच्चों की ओर ध्यान दे सकें। इसका दुष्परिणाम सामने है। आज विद्यालय में भी केवल शिक्षा दी जाती है, धनोपार्जन की भौतिक उन्नति की। उनके नैतिक विकास, चरित्र के निर्माण की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। अतः देश का पतन हो रहा है। शकुंतला ने वन में रहकर भरत के व्यक्तित्व का निर्माण किया था।

महर्षि कण्व के आश्रम में पली, विश्वामित्र कन्या शकुंतला अपने अध्ययन और आश्रम के प्रबंध में संलग्न रहती थी। एक दिन राजा दुष्यंत उधर आ निकले और आश्रम में ठहरे। महर्षि कण्व उन दिनों



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वहाँ नहीं थे। वे शकुंतला के सौंदर्य को देखकर मोहित हो गए और उसे अपनी रानी बनाने का आश्वासन देकर उसके साथ गंधर्व विवाह कर लिया। महर्षि कण्व जब वापस आए तो उनको इस बात का पता चला। कुछ ही दिनों बाद शकुंतला के गर्भवती होने के कारण महर्षि ने विद्यार्थियों के साथ शकुंतला को पत्नी रूप में रखने के लिए राजा दुष्यंत के पास भेजा, पर दुष्यंत ने शकुंतला को पहचानने से इंकार करके उसे लौटा दिया। लड़की ने अपना पुरुषार्थ जगाया। बिना पति के ही पहले की तरह ऋषि आश्रम में निर्वाह किया। बच्चे को स्वयं इतना सुयोग्य बनाया कि वह सिंह शावकों के साथ खेलता था और अंत में चक्रवर्ती भरत के नाम से प्रख्यात हुआ। जिनके नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। इसी प्रकार सीता ने भी वाल्मीकि आश्रम में लव–कुश का लालन–पालन और प्रशिक्षण किया था। इससे यह सिद्ध होता है कि माता यदि समर्थ है, तो वह शिशु को योग्य बना सकती है। इसीलिए गुरुदेव ने नारी शिक्षा–दीक्षा पर बहुत बल दिया है।

*जीवन को श्रेष्ठ बनाने को, संस्कार जगाए जाते हैं।*
*जैसे लोहे को गला ढला, औजार बनाए जाते हैं॥*
*सोने को गला, तपा करके, उससे आभूषण बनते हैं।*
*तब वे साँचे में ढल करके, शृंगार सभी का करते हैं॥*
*जब बालक को संस्कारों के, साँचे में ढाला जाता है।*
*तब वही साधना के बल पर, युग निर्माता बन जाता है॥*
*संस्कार दो शिशु को, मानव बने महान।*
*ऋषि तुल्य जीवन जिए, जग का हो कल्याण॥*

**बाला: बोध्या विनेयाश्च प्राय: स्नेहेन साध्विदम् ।**
**उच्यते शिशव: स्नेहं लभन्तां शिक्षणोन्मुखम्॥ ३। ४। ४४॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**स्नेहातिरेकतो बाला विकृतिं यान्ति सन्ततम् ।**
**नाऽयोग्यं दण्डयेद् बालान् भयभीतान्न कारयेत्॥ ३। ४। ४५॥**

शिशु के चरित्र निर्माण के लिए अच्छे संस्कार देने की आवश्यकता है। उन्हें डराना–मारना नहीं चाहिए, अपितु प्यार से समझाने का प्रयास करना चाहिए। मद्रास में एक छोटा बच्चा गांधी को आग्रहपूर्वक एक छोटी पेंसिल लिखने के लिए दे गया। उन्होंने कई दिन उसी से लिखा। एक दिन वह गुम हो गई । गाँधी जी ने सारा सामान ढूँढ़ डाला और तब चैन से बैठे, जब पेंसिल खोज ली। वे कहते रहे कि मैं बच्चे की भावना के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता। मेरी आज की लापरवाही कल भयंकर रूप ले सकती है। अतः शिशु के संतुलित विकास के लिए तीन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है। १. दुलार तथा सुधार की समन्वित नीति को अपनाना चाहिए। २. पाठ्यक्रम की शिक्षा के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा कथा–कहानियों के माध्यम से दी जानी चाहिए। ३ बच्चों को कुसंगति से बचाना चाहिए और सत्संगति द्वारा उन्हें श्रेष्ठ नागरिक बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

सुभाषचंद्र बोस छोटे ही थे, माँ की बगल से उठकर जमीन पर जाकर सो गए। माँ ने जब पूछा–''जमीन पर क्यों सो रहे हो ?'' तो उन्होंने कहा–''आज अध्यापक कह रहे थे कि हमारे पूर्वज ऋषि मुनि थे, जमीन पर सोते और कठोर जीवन जीते थे। मैं भी ऋषि बनूँगा, इसीलिए कठोर जीवन का अभ्यास कर रहा हूँ।'' उनके पिताजी ने कहा–बेटे ! जमीन पर सोना ही पर्याप्त नहीं है, ज्ञान संचय करके देश सेवा करना भी आवश्यक है। सुभाष ने अध्यापक की ही नहीं पिता की बात भी गाँठ में बाँध ली और जब उनके आई. सी. एस. पास करके अफसर बनने की बात आई तो उन्होंने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहा–''मैं मातृभूमि की सेवा करूँगा और महान् बनूँगा।'' महामानव ऐसे ही होते हैं।

कन्या और पुत्र को एक समान समझना चाहिए। पुत्र को पुत्री की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया जाता है। कन्या की शिक्षा–दीक्षा की ओर भी ध्यान नहीं दिया जाता। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि अशिक्षित कन्या विवाह के पश्चात् अपने परिवार तथा संतान के प्रति कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं कर पाती। राजा जनक की कन्या सीता थीं, जिन्होंने पिता तथा श्वसुर दोनों कुलों को श्रेय दिया तथा रावण के अनेक पुत्र भी उसके अपयश का कारण बने। वंश पुत्र से चलता है, यह धारणा निराधार है। रावण तथा कंस जैसे पुत्र कुल को कलंकित करते हैं तथा सुयोग्य कन्याएँ दोनों कुलों की शोभा बढ़ाती हैं।

महापंडित भास्कराचार्य गणित एवं ग्रहविज्ञान के असाधारण ज्ञाता थे। उनकी एक ही संतान थी–लीलावती। पिता जी ने उसे पुत्रवत् पाला और अपने संचित ज्ञान की परंपरा को आगे बढ़ाने का निश्चय किया। उसे सदा अपने साथ ही रखा और अपने समतुल्य विद्वान बनाया । लीलावती को कोई कुमारी कहते थे और कोई विधवा। जो हो, वे रहीं सदा पिता का दाहिना हाथ बनकर ही। लीलावती के नाम से पुरातन गणित विज्ञान अभी भी उपलब्ध हैं।

इसी प्रकार जैसलमेर के राजा युद्ध मोर्चे पर सेना लेकर लड़ने गए थे। किले की रखवाली का भार अपनी कन्या रत्नावती को सौंप गए। वह मर्दाने कपड़े पहनकर किले के बुर्जों पर निरंतर रखवाली करती। एक दिन शत्रु सेना के कुछ सैनिक किले की दीवार पर चढ़ने लगे, तो उसने ऊपर से पत्थरों की वर्षा की और खौलता तेल ऊपर से डाला। और भी कई घातें किले में प्रवेश करने की शत्रुओं ने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगाईं, पर रत्नावली की सूझबूझ से एक में भी सफलता न मिली । अंत में शत्रुओं को वापस लौटना पड़ा । वे रत्नावली को लड़की नहीं फरिश्ता बताते थे। आज की विषम परिस्थितियों में भी नारी को अपनी सुरक्षा के लिए इसी प्रकार समर्थ बनने की आवश्यकता है।

बहनो और भाइयो ! आज के युग में पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर हम अपने संस्कारों को भूल गए हैं। बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं मिल रहे हैं। आज बच्चों को जो शिक्षा दी जा रही है, उसके द्वारा उनकी प्रतिभा और योग्यता का पूर्ण विकास नहीं हो रहा है, क्योंकि जो विद्या मनुष्य को मुक्ति की ओर ले जाती है, उसका आज अभाव हो गया है। आज लड़कियों को भी लड़कों जैसी शिक्षा दी जा रही है। लड़कियों ने वेशभूषा भी उसी तरह की अपना ली है। आज वह इंजीनियर, डॉक्टर, कलेक्टर, वैज्ञानिक तथा कलाकार बनकर सब जगह अपने कीर्तिमान बना रही है। यह बहुत अच्छी बात है, किंतु हम यह बताना चाहते हैं कि अपनी भारतीय संस्कृति को मत भूलो। नारी का वास्तविक रूप मातृत्व में छिपा है। उसकी ममता ही उसे गौरव प्रदान करती है, किंतु आज सर्विस करने के कारण अथवा क्लबों में जाने के कारण माता को बच्चों को देखने का अवकाश ही नहीं मिलता। आज माँ तो ममी बन गई हैं और पिता डैड हो गए हैं, फिर बच्चों को शिक्षा कौन दे ? जब बच्चे नौकर या आया के सहारे पलते हैं, तो उन्हीं के संस्कार उनको मिलते हैं और फिर रही–सही कमी टी.वी. के द्वारा पूरी हो जाती है, फिर यदि आपके बच्चे आपका सम्मान नहीं करते, तो उन्हें दोष देना व्यर्थ है। दूध डिब्बे का पिया तालीम दी सरकार ने, तो बंच्चे के मन में माता–पिता के लिए प्यार या सम्मान कैसे पैदा हो सकता है ? यदि आप अपने बुढ़ापे के सहारे



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को, अपनी आँख के तारे को योग्य बनाना चाहते हो, तो उनके संस्कारों पर ध्यान दीजिए।

प्राचीनकाल में आर्य पद्धति के अनुसार सोलह संस्कार होते थे। इस समय परिस्थिति के अनुसार गुरुदेव ने दस संस्कार महत्त्वपूर्ण बताए हैं। पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन, विद्यारंभ, दीक्षा, उपनयन, विवाह, वानप्रस्थ तथा अंतिम संस्कार। इसके अतिरिक्त आजकल जन्मदिन तथा विवाहदिवसोत्सव मनाने का बहुत प्रचलन है, जिसे गुरुदेव ने भी महत्त्व दिया है।

पुंसवन संस्कार जन्म से पहले ही किया जाता है। मानव योनि बड़े भाग्य से मिलती है। चौरासी लाख योनियों में से निकल कर जीव जब पुण्यवश मानव योनि पाता है, तो पूर्व जन्म के संस्कार उसे पतन की तरफ घसीटते हैं। उन पूर्व जन्म के कुसंस्कारों को दूर करने के लिए ये संस्कार कराए जाते हैं। नामकरण संस्कार में बच्चों को नाम दिए जाते हैं। आजकल तो रिंकू, टिंकू, बबली, बबलू, स्वीटी न जाने कितने निरर्थक नाम रखे जाते हैं, नाम सुंदर और सार्थक होने चाहिए और बच्चे को नाम का महत्त्व समझाना चाहिए कि तुम राम और कृष्ण जैसे बनो। जन्मदिन पर मोमबत्ती न बुझाकर दीपक जलाकर उन्हें समझाना चाहिए कि तुम्हारा जीवन दीपक की भाँति प्रकाशमय होना चाहिए, जिससे तुम कुलदीपक बनकर कुल का नाम रोशन कर सको। केक पर नाम न लिखकर बच्चों को नाम का महत्त्व समझाना चाहिए। जन्मदिन के गीत गा कर उन्हें बधाई दी जा सकती है।

**नन्हे बच्चो आने वाले कल की तुम तस्वीर हो**

नन्हे बच्चे आने वाले कल की तुम तस्वीर हो।
नाज करेगी दुनियाँ तुम पर, दुनियाँ की तकदीर हो॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुम हो जिस कुटिया के दीपक, जग में उजाला कर दोगे।
भोली भाली मुस्कानों से, सबकी झोली भर दोगे॥
बिगड़ी जो तकदीर बदल दे, ऐसी तुम तस्वीर हो।
नाम न लेना रोने का, रोतों को हँसाने आए हो॥
नहीं रूठना किसी से तुम, रूठों को मनाने आए हो।
हँसते चलो जमाने में तुम, चलता हुआ एक तीर हो॥
एक दिन होंगे जमी आसमाँ, चाँद सितारे हाथों में।
एक दिन होगी बागडोर, इस जग की तुम्हारे हाथों में॥
तोड़ सकें न दुश्मन जिसको, ऐसी तुम जंजीर हो॥

विवाह दिवस भी एक ऐसा संस्कार है, जिसमें हर वर्ष पति पत्नी वर्ष भर के कार्यों का विश्लेषण करें और अपनी कमियों को दूर करने का संकल्प लें।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

एक जिज्ञासु ने स्वामी रामतीर्थ से पूछा कि यह संस्कार प्रथा समाप्त क्यों हो गई ? उन्होंने उत्तर दिया–पंडितों की दक्षिणा मँहगी होने के कारण और पंडितों के प्रति श्रद्धाभाव न होने के कारण ये परंपरा समाप्त हो गई थी, पर अब गुरुदेव ने इन संस्कारों को जगाने पर बहुत बल दिया है। उन्होंने बताया कि ये संस्कार मनाने के लिए पंडितों की आवश्यकता नहीं है। गायत्री परिवार के परिजन गायत्री यज्ञ अथवा दीपयज्ञ के माध्यम से ये संस्कार मना कर बच्चों को अच्छे संस्कार देने में लगे हुए हैं।

संस्कारों को देने के लिए सत्संग की महत्ता का वर्णन भी हमारे ऋषियों ने किया है। मनुष्य के जीवन पर संगति का बड़ा प्रभाव पड़ता है अतः इसके लिए जो भी अवसर मिले, उसे खोना नहीं चाहिए। एक शिकारी के पास दो तोते थे। एक का मूल्य ५ रुपए था, दूसरे का सौ



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रुपए। किसी व्यक्ति ने पूछा कि दोनों के मूल्य में इतना अंतर क्यों है ? उसने कहा–तोतों को खरीद कर देख लो। उसने पाँच रुपए का तोता खरीदा और उसने जैसे ही पिजड़ा उठाया। तोते ने मारो, भागो, लूट लो पकड़, लो कह कर गालियाँ देना शुरु करदी। उसने दूसरे तोते को भी खरीद लिया और जब पिजड़े को उठाया तो उस तोते ने पहिले राम–राम, राधेश्याम कहा और उसका स्वागत करते हुए कहा–आइए ! पधारिए ! उस व्यक्ति ने इन दोनों तोतों की बोली में अंतर होने का कारण पूछा तो शिकारी ने कहा कि भइया एक तोता मैंने डाकुओं के पास से लिया है और दूसरा तोता एक संत के आश्रम से। कहने का तात्पर्य यह है कि बचपन से ही बच्चों की सत्संगति की ओर ध्यान देना चाहिए। तभी उनके महामानव बनने की आशा की जा सकती है।

*गुरुजनों के संग में रहने से मन आनंद से भर जाता है।*
*उनकी आशीष को पा करके, नर जीवन सफल बनाता है॥*
*गुरुजनों से घर की शोभा है, उनसे ही घर का है गौरव।*
*उनके द्वारा ही तो मानव, पाता जीवन के है अनुभव॥*
*उनकी सेवा करने से ही, यश, आयु, तेज, बल बढ़ता है।*
*जग में सम्मानित होता है, जो उनकी सेवा करता है॥*
*वृद्धों की सेवा करो, करो उनका सम्मान।*
*उनके आशीर्वचन से, हो जाए कल्याण॥*

**निश्चिचाय ततस्तेषां कर्तुं स मार्गदर्शनम् ।**
**गृहस्थे वृद्धव्यक्तीनामपि स्थानं महत्वगम् ॥ ३। ५। ८॥**
**वर्तते सञ्चितैस्तेऽपि स्वीयैरनुभवैरलम् ।**
**लाभं बहुभ्यो दातुं तु शक्ता अल्पबला अपि॥ ३। ५। ९॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिवार को सुसंस्कृत तथा उन्नतिशील बनाने में वृद्धजनों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके संचित अनुभवों से बहुत लाभ उठाया जा सकता है। प्राचीनकाल में गुरुजनों का बहुत आदर–सम्मान किया जाता था। भारतीय समाज में बड़ों के प्रति सम्मान तथा प्रणाम करने की प्रथा रही है।

प्रातःकाल उठि के रघुनाथा।
माता–पिता–गुरु नावहिं माथा॥

बड़े लोगों को घर का मुखिया माना जाता था। प्रत्येक व्यक्ति उनकी आज्ञा का पालन करता था। इस समय संयुक्त परिवार प्रणाली इसीलिए असफल हो रही है कि बच्चों को बड़ों का सम्मान करना नहीं सिखाया जाता। बच्चे जो देखते हैं, वही करते हैं। एक महिला अपनी सास को मिट्टी के बर्तनों में खाना देती थी। कुछ दिन बाद जब उसके बेटे की बहू आई, तो उसने समझा कि इस घर में सास को मिट्टी के बर्तनों में भोजन देने का रिवाज है, इसलिए उसने मिट्टी के बर्तन धोकर रखने शुरू कर दिए। एक दिन उस महिला ने मिट्टी के बर्तनों का ढेर देखा, तो कहने लगी–''बहू यह क्या है ? यह बर्तनों का ढेर क्यों लगा रखा है ?'' बहू ने कहा–''माँ जी, ये बर्तनों का ढेर मैंने आपके लिए रखा है। आप तो रोज बर्तन मँगा लेती हो, मैं आपके लिए रोज नए मिट्टी के बर्तन कहाँ से मँगाऊँगी। इसलिए मैंने इन्हें धोकर रख दिया है।'' यह सुनकर उस महिला की आँखें खुल गईं और उसने अपनी सास को मिट्टी के बर्तनों में खाना देना बंद कर दिया। इस प्रकार की कथाएँ यह सिद्ध करती हैं कि यदि वृद्धावस्था में बच्चों का सुख उठाना है, तो उन्हें अच्छे संस्कार देने चाहिए और गुरुजनों के प्रति अच्छा व्यवहार करना चाहिए।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वृद्ध जनों को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। उन्हें पुरानी परंपराओं से बँध कर नहीं रहना चाहिए। यदि बेटे–बहू अनैतिक आचरण करें तो उन्हें समझाना चाहिए, किंतु मोह में पड़कर अनावश्यक आलोचना नहीं करनी चाहिए। अच्छा यह है कि इस समय वृद्धजन किसी लोकसेवी संस्था से जुड़कर अपने अनुभव, संपत्ति तथा समय का सदुपयोग करें और अपनी गरिमा को बनाएँ रखें।

अपनी संतानों को संस्कार की संपत्ति ही दी जानी चाहिए। महर्षि कर्वे ने दसवीं पास करने के बाद अपने बच्चों को इस शर्त पर रुपया दिया कि वे अपनी सर्विस लगने पर वापस कर देंगे। बच्चों ने उस शर्त को ईमानदारी से निभाया। कमाने योग्य बनते ही पहले कर्जा चुकाया। बाद में विवाह किया। महर्षि ने वह पैसा महिला सुधार आंदोलन में लगा दिया। वे कहते थे कि उत्तराधिकार में संतान को अच्छे संस्कार ही देने चाहिए।

वृद्धावस्था जीवन का स्वर्णिम काल है। बचपन में अच्छे संस्कार पाने के लिए बच्चों को हमेशा कुछ न कुछ सीखना पड़ता है। यह करो, यह मत करो, यह खाओ, यह मत खाओ अथवा यहाँ जाओ, वहाँ मत जाओ, हर तरह के नियंत्रण को सहना पड़ता है, युवावस्था में गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियों को सँभालना पड़ता है। माता–पिता, अतिथि, बच्चे, समाज सबके बारे में सोचना पड़ता है। आदर्श गृहस्थी व्यक्ति को अपने लिए कुछ सोचने का अवसर ही नहीं मिलता, किंतु वृद्धावस्था में वानप्रस्थी बनकर मनुष्य सब जंजाल से मुक्त होकर स्वतंत्र भाव से समाज सेवा करे, तो वह अपना भी कल्याण कर सकता है और समाज का भी। आर्य परंपरा में वानप्रस्थ जीवन का बहुत महत्त्व है। मोहपाश को छोड़कर व्यक्ति यदि वसुधा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को कुटुंब मानकर तन, मन, धन समर्पित कर दे, तो वह अपने समाज, राष्ट्र में ही नहीं विश्ववंद्य हो सकता है। जैसे सूर्य दिन भर विश्व की परिक्रमा करके संध्या समय विश्रामदायिनी रात्रि की गोद में सो जाता है, उसी प्रकार जीवनयात्रा से थका मुसाफिर भी जीवन की संध्या में विश्राम पा सकता है। जीवन का समापन नाटक के कलाकार की भाँति होना चाहिए। गेटे जर्मनी का बहुत बड़ा नाटककार था। वह अपने कार्य में इतना रम गया था कि अपने को नाटक का कलाकार ही समझने लगा था। मरते समय बच्चों की तरह मुस्कराते हुए उसने ताली बजाई और कहा–लो अब परदा गिरा दो, नाटक समाप्त हो रहा है। महापुरुष मृत्यु को विश्राम स्थल समझते हैं।

मनुष्य इस लोक में रहते हुए भी यदि परलोक की चिंता करते रहें, तो परमार्थ स्वयं ही संपादित होने लगेगा।

एक देश का रिवाज था कि जो राजा चुना जाता, उसे दस वर्ष राज्य करने दिया जाता था। इसके बाद उसे निर्जन द्वीप में भेज देते थे, जहाँ निर्वाह के कोई साधन नहीं थे। अनेक राजा दुर्गति ग्रस्त होते रहे। एक बुद्धिमान राजा उस गद्दी पर बैठा। उसने पता लगाया कि दस वर्ष बाद किस द्वीप में जाना है। अगले ही दिन उसने उस स्थान पर सुविधाएँ उत्पन्न करने की आज्ञा दे दी। दस वर्ष की अवधि में वह द्वीप सुविधा संपन्न हो गया। नियत समय पर राजा को वहाँ जाने और रहने में कोई कठिनाई नहीं हुई। इस कहानी का तात्पर्य यही है कि परलोक ही वह द्वीप है, जहाँ पर हर किसी को जाना पड़ता है। वहाँ सुविधा उत्पन्न करने के लिए जीवन में परमार्थ करते रहें, तो अगले जन्म में भी सुख–शांति ही प्राप्त होगी। अतः वानप्रस्थ अवस्था में मनुष्य को इसी प्रकार



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अगले जन्म के लिए तैयारी करनी चाहिए, जिससे अपना और दूसरों का भला हो।

*स्वजनों तक सीमित प्रेम रहे, तो मोहपाश कहलाता है।*
*व्यापक होता आत्मीय भाव, तो विश्व कुटुंब बन जाता है॥*
*सब अपने जैसे लगते हैं, यहाँ कोई नहीं पराया है।*
*सबमें ही वे प्रभु रहते हैं, हम सब उन की ही छाया हैं॥*
*है प्रेम अमूल्य निधि जग में, जो जितना उसे लुटाता है।*
*मिलता है कई गुना उसको, वह ब्रह्मतुल्य हो जाता है॥*
*ईर्ष्या–द्वेष की अग्नि पर, बरसे प्रेम की धार।*
*भेद–भाव सब ही मिटें, रहे प्यार ही प्यार॥*

**कुटुम्बं स्वं गृहस्थस्य सीमितं परिधौ सदा ।**
**तिष्ठतीह तदाधारं कुलं तच्च कुटुम्बकम् ॥ ३।७।२५॥**
**विद्यन्ते तस्य नूनं च महत्ताऽथोपयोगिता ।**
**आवश्यकत्वमत्रैवं दायित्वं मौलिकं शुभम्॥ ३।७।२६॥**

परिवार का महत्त्व बता कर युग ऋषि ने विश्व परिवार की ओर ध्यान आकर्षित किया है। यदि व्यक्ति जितना प्यार अपने स्वजनों से करता है, उतना ही स्नेह संसार के प्रत्येक प्राणी से करें तो उसे सारा संसार ही अपना परिवार दिखाई देगा। अतः मनुष्य को स्वार्थी बनकर अपने स्वजनों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इस प्यार को विश्वव्यापी बना देना चाहिए। यह मानव जीवन व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है, यह विश्वविराट् भगवान की धरोहर है, अतः जो व्यक्ति समस्त प्राणियों के दुःखों को अपना दुःख समझता है, वह सारे संसार में वंदनीय हो जाता है।

भारतीय संस्कृति की अमरता का कारण यह विश्व बंधुत्व की



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भावना ही है। जिन्हें सारा विश्व अपना परिवार प्रतीत होता है, वे स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों का ध्यान रखते हैं। महात्मा गांधी गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने लंदन गए। उन्हें ब्रिटिश राजा से भेंट करनी थी। सचिव ने बताया कि राजा से भेंट करने के लिए आप को वहीं की पोशाक पहननी पड़ेगी। गांधी जी ने कहा–''मैं भारतवर्ष से आया हूँ, वहाँ के निवासी टूटे फूटे मकान में रहते हैं, उनके पास पहनने के लिए कपड़े भी नहीं हैं। मैं निर्धन भारतवासियों का प्रतिनिधि हूँ। यदि आप के राजा मुझसे भेंट करना नहीं चाहते तो मैं देश लौट जाता हूँ।'' सचिव राजा के पास गया और गांधी जी की बात कह सुनाई। राजा ने कहा–''गांधी जी ने जो भी कपड़े पहने हैं, उन्हीं कपड़ों में ही मेरे पास आने दो।'' गांधी जी धोती पहने और चादर ओढ़कर अपनी बात कहने के लिए उनके पास पहुँच गए। उनकी इस विशेषता के कारण ही उन्हें राष्ट्रपिता कहकर पुकारा गया।

बहनो और भाइयो ! हमारी भारतीय संस्कृति का यही संदेश है कि अपने हृदय में विश्वप्रेम की ज्योति जगा दो। विश्व के कण–कण को अपने प्यार से सींच दो। इस संसार में कोई भी पराया नहीं है। ईश्वर की दृष्टि में सभी प्राणी, सभी जीवधारी एक समान हैं, किंतु जो गरीबों के आँसू पौंछते हैं, उन्हें वे सबसे अधिक प्यार करते हैं। भीम भगवान कृष्ण से मिलने गए तो पता चला कि भगवान इस समय ध्यानमग्न हैं, भीम प्रतीक्षा करते रहे। जब भगवान पूजा से उठे तो भीम ने आश्चर्य से पूछा–''संसार आप का ध्यान करता है, आप किसका ध्यान करते हैं ?'' भगवान ने कहा–''मेरे जो भक्त, सारे संसार के दुःखी व्यक्तियों को अपना समझकर उनका दुःख दूर करने का प्रयत्न करते हैं। उनकी कुशलता का ध्यान मुझे करना पड़ता है।'' अतः यह कहा जा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता है कि दु:खियों की सेवा ही भगवान की सेवा है।

अनेक पौराणिक कथाएँ इसी प्रकार मनुष्य को दूसरों का उपकार करने की प्रेरणा देती हैं। एक वृद्धा ने चारों धाम की यात्रा के लिए धन इकट्ठा किया, उन्हीं दिनों अकाल पड़ा, लोग भूख से मरने लगे तो उस वृद्धा ने वह सारा धन राहत के कार्यों में लगा दिया। परलोक में जब उसके पुण्यों का लेखा–जोखा किया गया, तो उसको स्वर्ग मिला। इसीलिए कहा गया है–परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अध माई। इसलिए परोपकार में लगे रहना ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है।

## प्रज्ञा गीत

औरों के हित जो मरता है, औरों के हित जो जीता है।
उसका हर आँसू रामायण, प्रत्येक कर्म ही गीता है॥
जो तृषित किसी को देख, सहज ही होता है आकुल–व्याकुल।
जिसकी साँसों में पर–पीड़ा, भरती है अपना ताप अतुल॥
वह है शंकर जो औरों की, वेदना निरंतर पीता है॥
उसका हर आँसू रामायण.....

जो सहज समर्पित जनहित में, होता है स्वार्थ त्याग करके।
जिसके पग चलते रहते हैं, दु:ख दर्द मिटाने घर–घर के॥
वह है दधीचि जिसका जीवन, जगहित तप करके बीता है॥
उसका हर आँसू रामायण.....

जिसका चरित्र गंगा जल सा, है स्वच्छ विमल पावन निर्मल।
जिसके उर में सद्भावों की, धारा बहती कल–कल छल–छल॥
वह है लक्ष्मण जिसने, पर नारी को समझा माँ सीता है॥
उसका हर आँसू रामायण.....



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिसका जीवन संघर्ष बनी, औरों की गहन समस्या है।
तम में प्रकाश फैलाना ही, जिसकी आराध्य तपस्या है॥
जो प्यास बुझाता जन–जन की, वह पनघट कभी न रीता है॥
उसका हर आँसू रामायण.....

जिसने जग के मंगल को ही, अपना जीवन–व्रत मान लिया।
परिव्याप्त विश्व के कण–कण में, भगवान तत्व पहचान लिया॥
उस आत्मा का सौभाग्य अटल, वह ही प्रभु की परिणीता है॥
उसका हर आँसू रामायण.....

**केवलं न मनुष्या हि विश्वस्य परिवारगाः ।**
**पशवः पक्षिणश्चात्र संगताः सन्ति पूर्णतः॥ ३। ७। ७५॥**
**भविष्यदुज्ज्वलं चैतत्सम्बद्धं च यया सह ।**
**अजस्रसुखशान्त्योश्च यत्रावतरणं तथा ॥ ३। ७। ८०॥**

विश्व परिवार की परिधि बहुत विशाल है। उसमें समस्त प्राणी आ जाते हैं। हमारे देश में पशु–पक्षियों को भी परिवार का सदस्य माना जाता है। गोमाता के लिए पहली रोटी निकाली जाती है तो कुत्ते के लिए भी बाद की रोटी निकाली जाती है। चीटिंयों को आटा डालते हैं तो चिड़ियों और पक्षियों को दाना चुगाते हैं। महापुरुष प्रत्येक प्राणी में भगवान के दर्शन करते हैं। भगवान के एक भक्त हुए हैं नामदेव। एक दिन उन्होंने अपने लिए रोटी बनाकर रखी तो एक कुत्ता उसे उठाकर भाग लिया। नामदेव उसके पीछे घी लेकर भागे और कहने लगे–''प्रभु ! रुखी रोटी तो मत खाओ, यह घी भी लेते जाओ।'' इसी प्रकार एक बार मालवीय जी स्टेशन के पास से गुजर रहे थे, उन्हें एक कुत्ते के रोने का स्वर सुनाई दिया, कुत्ते के पास गए और ध्यान से देखने पर पता चला कि कुत्ते के कान के पीछे एक बहुत बड़ा घाव है। मालवीय



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जी अपना काम छोड़कर वैद्य के पास गए और कुत्ते के लिए दवा माँगी। वैद्य जी ने कहा–''दवा बहुत लगने वाली है आप उसे कैसे लगाएँगे ?'' मालवीय जी ने कहा–''आप दवा तो दे दीजिए।'' दवा लेकर मालवीयजी अपनी गली में आए और दवा को एक कपड़ा बँधी लकड़ी से कुत्ते के घाव पर लगा दिया। पहले तो कुत्ता दर्द से चिल्लाया, फिर वह शांति से सो गया। इस प्रकार मालवीयजी ने उस कुत्ते की जान बचाई। हमारे पूज्य गुरुदेव ने भी इसी प्रकार एक जमादारिन माँ की सेवा की थी। माताजी हमेशा कहती थीं कि उस माँ के आशीर्वाद से ही गुरुदेव इतने महान बने। अत: यह कहा जा सकता है कि प्रेम से सारे संसार को अपने वश में किया जा सकता है और जब मनुष्य के हृदय में प्रेम और करुणा की धारा बहती है तो वह सबको अपना समझता है और यही भावना उसे समस्त विश्व में पूजनीय बना देती है।

वास्तविकता यह है कि सच्चा सुख देने में है, लेने में नहीं। इसीलिए देने वाले को देवता कहते हैं। भारतवर्ष में वसुधैव कुटुम्बकम् तथा आत्मवत् सर्वभूतेषु का महामंत्र हजारों वर्षों से गूँज रहा है तथा यहाँ के ऋषि–मनीषियों ने इसे अपने जीवन में उतारा भी है। अत: युगऋषि परिवार प्रणाली से विश्व परिवार की महान भावना का संदेश देते हुए कहते हैं–''हे भक्तजनो ! हे सद्गृहस्थियो ! आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारा जीवन, हमारे प्रत्येक कार्यकलाप का आधार अपने लिए नहीं, बल्कि सबके लिए हो।'' मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन अपूर्ण है। वह सामाजिक जीवन से मिलकर ही पूर्ण बनता है। इसीलिए मनुष्य को केवल अपने लिए नहीं बल्कि समस्त विश्व का बनकर रहना चाहिए। विश्वयज्ञ में मनुष्य का प्रत्येक प्रयास अग्नि



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डालने के समान हो तो धरती पर स्वर्ग के अवतरण की मान्यता साकार हो उठेगी।

अंत में युगऋषि जनसामान्य को आश्वासन देते हुए कहते हैं–''हे नागरिको ! इन दिनों पृथ्वी पर चारों तरफ विनाश के संकट दृष्टिगोचर हो रहे हैं। उसका कारण यही है कि मनुष्य अपने तक सीमित रह गया है। जब मनुष्य का विवेक जागेगा उसके अंदर वसुधैव कुटुंबकम् की भावना पैदा हो जाएगी तो यह संकट उसी प्रकार समाप्त हो जाएगा जैसे प्रातः काल होने पर अंधकार नष्ट हो जाता है। वह युग प्रज्ञा युग होगा। सब मनुष्य एक दूसरे से प्यार करेंगे और एक दूसरे को सम्मान देंगे तो चारों ओर सुख शांति का वातावरण दिखाई देगा और समस्त दिशाओं से सुख शांति की वर्षा होगी।

इसके लिए हमें इन्हीं महाप्रज्ञा की पूजा करने की आवश्यकता है, जो सद्बुद्धि देने वाली है। अतः आइए ! हम सब इन्हीं की शरण में चलें। वे सबको सद्बुद्धि दें कि सारी धरती पर प्रेम की धारा प्रवाहित हो, मनुष्य मात्र में देवत्व का उदय हो और तब धरती पर स्वर्ग उतर आएगा। आइए, हम सब एक स्वर से उस महाप्रज्ञा की स्तुति करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

यह कहकर ऋषिवर मौन हो गए। आज का सत्संग बहुत प्रभावशाली था। श्रोताओं ने मन ही मन गुरुदेव का भावभरा अभिनंदन किया और अपने को धन्य माना और मन में संकल्प लिया कि हम सब स्वार्थ वृत्ति को छोड़कर परमार्थ के लिए जिएँगे। सारी धरती को कुटुंब मानकर गुरुदेव के सच्चे शिष्य बनेंगे। परमपूज्य गुरुदेव के प्रज्ञा पुत्रो, बहनो, दूर–दूर से आए नैष्ठिक साधको ! आप भी इस युग निर्माण योजना में



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुदेव के सहयोगी बनने का संकल्प लें। तभी प्रज्ञा पुराण कथा का सुनना सार्थक होगा।

**इतिश्री मत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययो:,**
**युगदर्शनयुगसाधनाप्रकटीकरणयो: श्री द्यौम्य ऋषि प्रतिपादते**
**''परिवार'' इति प्रकरणो नाम षष्ठोऽध्याय: ॥६॥**

**आरती श्री प्रज्ञा पुराण की**






Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ श्री गुरवे नमः

# प्रज्ञा-पुराण-कथामृतम्

## सप्तम दिवस

### प्रज्ञावतार प्रकरण

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

## गुरु वंदना

जन्म लिया आँवल खेड़ा में सारा जगत् निहाल किया।
हे युग ऋषि श्रीराम आपने सचमुच बड़ा कमाल किया॥
बचपन से ही थे तेजस्वी, कर्म तुम्हारे सब ओजस्वी,
तुम स्वतंत्र सैनिक बन धाए, मस्त रहे और मत्त कहाए।
सैनिक संत तपस्वी खुद को, हर साँचे में ढाल लिया॥
तुम दुनिया की पीर पी गए, युग के सच्चे पीर हो गए।
तपा दिया अपने जीवन को, जीवन कला सिखाई जग को।
दीन–दुःखी को गले लगाकर, जन–जन को खुशहाल किया॥
तुम्हें हिमालय अति प्यारा था, जीवन वैसा ही न्यारा था।
दुनियाँ भर की हर ऊँचाई, तुमने छोटी कर दिखलाई॥
छोटे से छोटे जीवन को, ऊँचा खूब उछाल दिया॥
दिव्य ज्ञान धरती पर लाए, युग के भागीरथ कहलाए।
मानव में देवत्व जगाने, इस धरती को स्वर्ग बनाने।
मानवता को दिव्य संपदा, देकर मालामाल किया॥
तप से सूक्ष्म जगत् शोधित कर, नए सृजन की शक्ति जगाकर।
बदल गए दुनियाँ की धारा, दे उज्ज्वल भविष्य का नारा।
महाकाल बन करके तुमने, अपने वश में काल किया॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

## प्रज्ञा गीत

तुम्हारे दिव्य दर्शन की हम इच्छा ले के आए हैं।
पिला दो प्रेम का अमृत पिपासा ले के आए हैं॥

रतन अनमोल लाते लाने वाले भेंट को तेरी।
प्रभो हम आँसुओं की मंजु माला ले के आए हैं॥

जगत के रंग सब फीके तू अपने रंग में रंग दे।
हम अपना यह महा बदरंग बाना ले के आए हैं॥

प्रकाशानंद हो जाएँ प्रभु अँधेरी कुटिया में।
तुम्हारा आसरा विश्वास आशा ले के आए हैं॥

(प्रथम दिवस के अनुसार कथाव्यास द्वारा पूजन)

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

## कीर्तन

ज्योति से ज्योति जगाओ सद्गुरु।
अंतर तिमिर मिटाओ सद्गुरु॥
प्रकट रूप में तुम परमेश्वर।
ज्योति पुरुष तुम हे सर्वेश्वर॥
निज किरणें दर्शाओ सद्गुरु॥ ज्योति से.....
पथ दर्शक तुम हे ज्ञानेश्वर।
हे सद्गुण निधि, हे योगेश्वर।
अवगुण दूर भगाओ सद्गुरु॥ ज्योति से.....
हम बालक हैं शरण में आए।
श्रद्धा पूरित आस लगाए॥
दिव्य दरश दिखलाओ सद्गुरु॥ ज्योति से.....



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सोयी महा शक्ति है अंदर।
युग युग भटके खोजा बाहर॥
सोयी शक्ति जगाओ सद्गुरु॥ ज्योति से.....

**सत्रस्यान्त्यमभूदद्य दिनं जिज्ञासवः समे ।**
**सन्तुष्टा मुनयो लब्धैर्विचारैरस्ते मनीषिणः ॥ ४।७।१॥**
**लब्धुं ततोऽधिकं चाद्य महत्त्वमहिता भृशम् ।**
**विचारसंपदाकाले नियते ते समागताः ॥ ४।७।२॥**

हमारे आत्मीय परिजनो, देवी स्वरूपा बहनो–भाइयो एवं फूलों की तरह खिलखिलाते मुस्कराते प्यारे बच्चो ! आज कथा का समापन दिवस है। कई दिन से आपने बड़ी तन्मयता से कथा सुनी है, लगता है आप पर भगवत कृपा बरस रही है, क्योंकि कहा है कि–''बिनु सत्संग विवेक न होई, बिनु हरि कृपा सुलभ नहीं सोई।'' सद्बुद्धि प्राप्त होती है सत्संग से और सत्संग मिलता है भगवान की कृपा से। आप यह न समझें कि आप अपनी इच्छा से यहाँ आए हैं, आने की इच्छा तो बहुत लोगों की होगी, पर नहीं आ सके, कुछ अनायास ही आ गए हों ऐसा भी हो सकता है। जब ईश कृपा होती है तो चेतना के रूप में, प्रेरणा के रूप में, मानव हृदय में सत्संग में जाने की इच्छा होती है और उससे मनुष्य के भाग्य का द्वार खुलता है, क्योंकि सत्संग में स्वयं परमसत्ता जाग्रतात्माओं को खोजती हुई आती है और स्वयं साक्षात्कार करके विचार–क्रांति पैदा करती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब मनुष्य का भाग्य उदय होता है तब ही परम सत्ता गुरु के रूप में शिष्य का द्वार खटखटाती है और जो भाग्यशाली उस क्षण को पहचान लेते हैं वे क्षणभर में ही लोहे से सोना बन जाते हैं। यह क्षण आया रत्नाकर के जीवन में, जब देवर्षि नारद उसके पास पहुँच



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गए। उससे पूछा–''यह दुष्कर्म क्यों करते हो ?'' उत्तर मिला–''बच्चों के लिए, माता–पिता के लिए'' ऋषि ने फिर पूछा–''क्या तुम्हारे बच्चे, पत्नी, माता–पिता इस दुष्कर्म के फल में सहयोगी होंगे ?'' रत्नाकर ने कहा–''यह मैं नहीं जानता, घर से पूछ कर आता हूँ।'' और घर से पूछकर आया तो माता–पिता, पत्नी सब ने यही कहा कि हम तुम्हारे दुष्कर्मों के फल में साथी नहीं हो सकते। जो जैसा कर्म करता है, उसका फल उसी को भोगना पड़ता है। बस रत्नाकर की सोई आत्मचेतना जाग गई, वे आदि कवि वाल्मीकि बन गए। यह क्षण आया अंगुलिमाल डाकू के जीवन में जब तथागत उसके पास पहुँचे और उसे डाकू से भिक्षु बना दिया। महर्षि विश्वामित्र पहुँचे, अयोध्या, राम–लक्ष्मण को वन में ले जाने के लिए, राक्षसों से रक्षा करने के लिए। वे सुकुमार बालक कैसे रक्षा करेंगे ? दशरथ ने कहा–''मेरी सेना ले जाओ ये तो सुकुमार बालक हैं'' पर ऋषि तो दिव्य दृष्टि संपन्न थे, वे तो राम के अवतारी रूप को जानते थे। उन्होंने बला अतिबला विद्या देकर राम लक्ष्मण को अजेय बना दिया। राम हनुमान को खोजते हुए किष्किन्धा पहुँचे। परमहंस ने नरेन्द्र को विवेकानंद तथा स्वामी विरजानंद जी ने मूलशंकर को ऋषि दयानंद बना दिया। अभी कुछ ही समय की बात है कि आगरे में आँवलखेड़ा ग्राम में छोटी–सी कोठरी में बालक श्रीराम को खोजते हुए दादा गुरु हिमालय से आए और १५ वर्ष के बालक को उनके पूर्वजन्मों का दृश्य दिखाकर उसे साधना पथ पर चलने का मार्ग बता दिया। वही हमारे गुरुदेव आचार्य श्री आज आप सब को खोजते हुए यहाँ आए हैं, आप को अपना संदेश देकर आप से कुछ कराना चाहते हैं। हमें संदेश वाहक डाकिया बनाकर उन्होंने भेजा है। आपने अब तक जो कथा सुनी वह आत्मज्ञान को जगाने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाली है। आप उस पर विचार करें, उसे जीवन में धारण कर मानव जीवन को धन्य बना सकें यही हमारी कामना है। बहनो और भाईयो, ये मूर्तियाँ जो आपने स्थापित की हैं, साधारण चित्र नहीं है, इनमें हम सबने प्राण प्रतिष्ठा की है। जब इन मिट्टी की, कागज की मूर्तियों में श्रद्धा–प्रज्ञा– निष्ठा द्वारा प्राण प्रतिष्ठा कर दी जाती है, तो ये मृण्मयी मूर्तियाँ चिन्मयी हो जाती हैं। इनमें चेतना आ जाती है। अगर ऐसा न होता तो सोचिए, खम्भे में से नृसिंह भगवान कैसे प्रकट होते ? मीरा के साथ गिरधर गोपाल कैसे नाचते ? मीरा का विष का प्याला अमृत और सर्प पिटारी फूलों की माला कैसे बन जाती ? परमहंस के साथ काली भोजन कैसे करतीं और माँ गायत्री गुरुदेव को अमृतपान कैसे करातीं ? गुरुदेव महाप्रज्ञा से पूछते थे, माँ मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ ? माँ कहती थी, बेटे मैं तुझे क्या दूँ ? सब अनुदान वरदान तुम पर बरस रहे हैं, बस आगे बढ़ो। गुरुदेव ने अपने जीवन में जो पाया, उसी को वे हम सबको देना चाहते हैं। आप एक बार सद्प्रज्ञा को जाग्रत कर निष्ठा, श्रद्धा से समर्पण करके तो देखिए, अपने मन के लोटे को खाली कर गंगा जल से भरने के लिए आगे बढ़िए, अपनी पात्रता का विकास कीजिए तभी कुछ मिल सकता है। एक बार गौतम बुद्ध से किसी भक्त ने कहा– ''गुरुदेव कुछ दीक्षा दीजिए'', बोले–''कल मैं तुम्हारे घर आऊँगा।'' गृह–स्वामिनी खीर लेकर आई तो उन्होंने अपना कमंडल आगे बढ़ा दिया। देखा तो उसमें गोबर भरा था गृह–स्वामिनी ने कहा–''भगवन् ! इसमें तो गोबर भरा है, इसमें खीर कैसे दूँ ?'' तथागत ने कहा–''बस यही दीक्षा तुमको देनी है। तुम्हारे मनरूपी कमंडल में जब तक काम, क्रोध, लोभ, मोह का गोबर भरा है, तब तक दीक्षारूपी खीर कैसे दी जा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकती है ? अतः मन के विकार दूर करो, यही शिक्षा है, यही ज्ञान है, यही कर्म है और यही भक्ति है। इसे पाकर व्यक्ति स्वर्ग को भी तुच्छ समझता है।''

ऋषि मुद्गल कुरुक्षेत्र की धर्मभूमि में तपस्यारत थे। धर्माचरण, आराधना और उदार वृत्ति द्वारा जीवन निर्वाह उनके आदर्श थे। मास के पहले पक्ष में वे खेतों से धान बीनकर चावल एकत्र करते, दूसरे पक्ष में उसे यज्ञ और अतिथि सत्कार में व्यय कर देते। ऋषि दुर्वासा छह हजार शिष्यों सहित मुद्गल की परीक्षा हेतु उनके आश्रम पर कई बार गए और निस्पृह मुद्गल ने उन्हें हर बार आतिथ्य द्वारा पूर्णतः संतुष्ट कर दिया।

दुर्वासा ऋषि मुद्गल पर कृपालु हुए। उन्होंने कुरुक्षेत्र के इस तपस्वी को स्वर्ग प्राप्ति का वरदान दिया। स्वर्ग ले जाने के लिए आए देवदूतों को नम्रतापूर्वक मना करते हुए ऋषि मुद्गल ने कहा–''हे दूतो ! खेद है तुम्हें एकाकी ही स्वर्ग लौटना पड़ेगा, मैं तुम्हारा साथ नहीं दे सकूँगा। जिस लोक में कर्म को स्थान नहीं, वहाँ केवल सुख भोगने मैं नहीं जाना चाहता। कर्म करते हुए ही मैं सौ वर्षों तक जीने की इच्छा रखता हूँ। मुझे अपना यह कर्म लोक ही प्रिय है, जहाँ कर्म साधना व भक्ति के अवलंबन द्वारा मैं निर्वाण प्राप्त कर सकता हूँ।'' तपस्वी मुद्गल मृत्युलोक में ही लोक मंगल के लिए चिर साधना करते हुए निर्वाण को प्राप्त हुए।

आइए, मन के आँगन को बुहार कर, ज्ञान का दीपक जलाकर, हम लोग मन को सुपात्र बना कर कथा सुनें, जिससे जीवन धन्य हो जाए।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

## प्रज्ञा पुराण गीत

यह प्रज्ञा पुराण पूज्य गुरुजी को प्यारा है।
इसकी जगमग ज्योति से सारा जग उजियारा है॥

यह प्रज्ञा पुराण.....

दूर हुआ अँधियारा मन का ऐसा दीप जलाया है।
धर्म–अधर्म और पाप–पुण्य का, स्वर्ग–नरक समझाया है।
कोई नहीं है गैर यहाँ पर, हर कोई प्रभु का प्यारा है।

यह प्रज्ञा पुराण.....

दुष्प्रवृत्तियों के घेरे को, ध्वंस करें इस ज्ञान से।
रहे सदैव सचेत हृदय से, काम क्रोध की आग से।
सादा जीवन उच्च विचार, यही हमारा नारा है।

यह प्रज्ञा पुराण पूज्य गुरुजी को प्यारा है।
इसकी जगमग ज्योति से सारा जग उजियारा है॥

**प्रश्नकर्त्ता मुनिश्रेष्ठोऽगस्त्यः पप्रच्छ सादरम्।**
**लोकल्याणभावेन करुणः स महामनाः ॥ ४।७।३॥**

आज के प्रश्नकर्त्ता हैं महर्षि अगस्त्य, वे तपोनिधि अगस्त्य जिन्होंने तीन आचमन में समुद्र को सुखा दिया था। कारण क्या था ? ऋषि करुणावान, संवेदनशील होते हैं। सच पूछो तो करुणा की भावना ही मनुष्य को देवता बनाती है। भवभूति ने कहा है ''एको रस करुणैवः'' जिस मनुष्य हृदय में दीन दुःखी को देखकर करुणा की रस धार नहीं बहती उन्हें तो पत्थर ही कहा जाएगा। ऋषि अगस्त्य एक दिन प्रातःकाल भ्रमण को निकले तो देखा कि एक टिटहरी चोंच में बालू भरकर समुद्र में डाल रही है। पूछा–''टिटहरी, बेटे तुम यह क्या कर रही हो?'' उसने रोते हुए कहा–''इस समुद्र ने मेरे बच्चों को बहा



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया है, मैं इसे सुखा कर ही दम लूँगी।'' छोटी–सी टिटहरी और इतना बड़ा संकल्प। बस करुणार्द्र ऋषि ने कहा–''टिटहरी ! मैं तेरी मदद करूँगा और उन्होंने समुद्र का पान कर टिटहरी को उसके बच्चे दिलवाए। यही ऋषित्व की पहचान है। यही करुणा वाल्मीकि ऋषि के मन में जगी थी, जब निषाद के द्वारा क्रौंच वध को देखकर उनके मुख से निकला। हे निषाद ! तुझे कभी प्रतिष्ठा प्राप्त न हो, क्योंकि तूने काममोहित क्रौंच का वध किया है। इसी करुणा ने उन्हें महर्षि बना दिया। यही करुणा राम, कृष्ण, गौतम को महापुरुष बना सकी और यही करुणा जागी थी व्यास जी के मन में, जिन्होंने पुराणों की रचना की। जिन्होंने कहा–''सबसे बड़ा पुण्य, परोपकार है तथा परपीड़ा ही सबसे बड़ा पाप है।'' वही करुणा जगी, आचार्य श्रीराम जी के हृदय में, जिन्होंने विश्व के दुःखों का विषपान करके प्रज्ञा पुराण लिखने का संकल्प लिया। यह करुणा ही मनुष्य को महामानव बनाती है और इससे पशुपक्षी भी वश में हो जाते हैं।

आज जिज्ञासु हैं अगस्त्य ऋषि और समाधान कर्त्ता हैं कात्यायन जी, जो ब्रह्म ज्ञानी भी हैं और वैज्ञानिक भी। संवेदनशील परहित चिंतन में व्याकुल ऋषिगण यही सोचते रहते हैं कि संसार का कल्याण कैसे हो ? आज अगस्त्य जी भी वही पूछ रहे हैं–''हे देव ! साधारण विपत्तियों में तो समाज सुधारक, महामानव सुधार कर लेते हैं, पर कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आ जाती हैं, जिनका समाधान साधारण मानव नहीं कर पाता। इन दिनों ऐसा ही लग रहा है। क्या इस समय खण्ड प्रलय होकर ही रहेगी ? इस समय चारों ओर विनाश के बादल मंडरा रहे हैं। घर परिवार टूट रहे हैं। विश्व प्रेम की तो बात ही क्या भाई–भाई, बहन–भाई, पिता–पुत्र में भी वह स्नेह नहीं रह गया है,



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जैसा पहले था। आज की परिस्थितियाँ तो रामायण काल और महाभारत काल से भी भयंकर हो गई हैं। आज विज्ञान के वरदान भी अभिशाप बन गए हैं। पहले युग में बंदरों और भालुओं ने मिलकर समुद्र पर पुल बाँध कर सीता की खोज की थी, पर आज तो मनुष्य ही बंदर का रूप धारण कर घोर आतंक मचा रहा है। मानव ने प्रकृति का भी शोषण किया है, अतः आज मानवी अनाचार से रुष्ट प्रकृति के अनेक प्रकोप बरस रहे हैं। कहीं पर अकाल, अनावृष्टि है, तो कहीं पर अतिवृष्टि के कारण बाढ़ और तूफान आ रहे हैं। कहीं भूकंप से ग्राम के ग्राम धरती माता की गोद में समा गए हैं, तो कहीं पर्वत खण्ड गिर–गिर कर सर्वनाश कर रहे हैं। हे देव ! बताइए तो, भगवान इस सृष्टि को कैसे बचाएँगे? अब तक उन्होंने जिन रूपों में अवतार लिया है, उसे पुनः सुनने की इच्छा हो रही है। कृपया उनके विषय में कुछ बताइए।

*बोले अगस्त्य कुछ सकुचाकर, इच्छा एक नाथ हमारी है।*
*अवतार हुए हैं जो अब तक, जो जग के लिए हितकारी है॥*
*उनकी अद्भुत लीलाओं का, फिर से ऐसा गुणगान करें।*
*सुनकर जिनसे हो हृदय तृप्त, ऐसे उनमें कुछ प्राण भरें॥*
*यह सुनकर बोले महाप्राज्ञ, हे तात् ! बताता हूँ सुन लो।*
*उनके आदर्शों को सुनकर, अपने मन में धारण कर लो॥*
*फिर नारद जी की तरह, जग में करो प्रचार।*
*प्रज्ञावतार की लीला का, जिससे हो विस्तार॥*

**पुरातने च काले स भगवान् विश्वभावनः।**
**अवातरत् स्थितावत्र विषमायामनेकशः॥ ४।७।२३॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**आदितो देव ! सृष्टेर्ये जाता अद्यावधि प्रभोः।**
**अवतारा: समे वर्ण्या जिज्ञासा श्रोतुमस्ति नः॥ ४। ७। २४॥**

इन समस्याओं का समाधान करते हुए युग ऋषि महाप्राज्ञ साधकों से कहते हैं–''हे महाभाग ! अभी परिस्थितियों का जो चित्रण किया गया है, उनकी गम्भीरता में तनिक भी संदेह नहीं है। फिर भी हमें यह विश्वास करना चाहिए कि वह सृष्टिकर्त्ता अपनी प्रिय सृष्टि को ऐसे ही नष्ट–भ्रष्ट नहीं होने देगा।''

भगवान ने समय समय पर अवतार लिए हैं। उनमें से दस प्रधान हैं और कुल मिलाकर उनकी संख्या चौबीस है। इन सब अवतारों का उद्देश्य अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना है। गीता में भगवान कृष्ण ने अपने अवतार का यही उद्देश्य बताया है और रामायण आदि अन्य ग्रंथों में भी विभिन्न अवतारों ने अपने अवतरणों का यही उद्देश्य बताया है। यथा–

**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।**
**अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥**

''हे भारत ! जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् प्रकट करता हूँ।''

जहाँ तक प्रकृति के प्रकोप की बात है, वह अप्रत्याशित नहीं है। मनुष्य की चेतन प्रकृति का सृष्टि की जड़ प्रकृति से घनिष्ठ संबंध है। मनुष्य की विचारधारा तथा उसके कर्मों का प्रभाव जड़ प्रकृति पर भी पड़ता है। सतयुग में जब मनुष्य यज्ञादि शुभ कर्मों में लगे रहते थे तो उसका परिणाम था, समय पर वर्षा, सुंदर जलवायु। उस समय धन–धान्य की समृद्धि और सुखद परिस्थितियाँ रहतीं थीं। ऋतुएँ समय पर आती थीं, धरती और आकाश से मंगल वर्षा होती थी, दूध की नदियाँ



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहतीं थीं, पर आज तो परिस्थिति बिलकुल भिन्न हैं। इस समय अपराध, दुष्टता, दुर्बुद्धि, दुष्कर्म, छल, विश्वासघात, अनास्था, अनाचार का पलड़ा भारी हो गया है, इसीलिए अकाल, भूकंप, बाढ़, अतिवृष्टि, अनावृष्टि का प्रकोप बार बार दिखाई दे रहा है। हे संतो ! मनुष्यों के दुश्चिंतन, कुविचार, अंतरिक्ष में ऐसा विचार प्रदूषण फैलाते हैं, जिससे जनसाधारण को हर समय असह्य कष्ट सहने पड़ते हैं।

इस समय दुर्बुद्धि ग्रस्त मानव विज्ञान के आविष्कारों का भी दुरुपयोग कर रहा है। बम, एटमबम, अणुयुद्ध, साउण्डवार, न्यूट्रॉन बम, लेसरबम आदि का निर्माण करके मानव स्वयं ही विनाश की ओर जा रहा है। प्रकृति का दोहन कर मनुष्य ने संतुलन को बिगाड़ दिया है। रासायनिक खाद से भूमि बंजर हो गई है। वन संपदा नष्ट हो जाने के कारण वायु प्रदूषण बढ़ रहा है। खनिज पदार्थ समाप्त होने से भूमि खोखली हो गई है, अतः भूकंप, ज्वालामुखी जैसे खतरे प्रत्यक्ष दिखाई दे रहे हैं। इस समय जो विनाश लीलाएँ हो रहीं हैं, उन्होंने सभी को दहशत में डाल दिया है। भूगर्भ वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी है कि पता नहीं कब यह पृथ्वी कुपित होकर भयंकर रूप धारण कर सर्वनाश करके कहर ढहा दें, कहा नहीं जा सकता। प्रलय तथा खण्ड प्रलय की घटनाओं से विश्व साहित्य भरा पड़ा है, किंतु फिर भी यह विश्वास रखना चाहिए कि वह स्रष्टा अपनी अनमोल कृति को इस तरह नष्ट नहीं होने देगा। जब जब पृथ्वी पर अधर्म बढ़ा है और धर्म नष्ट होता है वह परमसत्ता अवतारी रूप में अवतरित हुई है और आगे भी होती रहेगी।

*दुष्कर्म अनाचारी का जब, सब जग को है पीड़ित करता।*
*जब उनके अनाचार का विष, जन मानस को आहत करता॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*तब सूक्ष्म दृष्टि संपन्न ऋषि, नवयुग की सृष्टि रचते हैं।*
*और युग निर्माण का ले संकल्प, वे अपनी रचना करते हैं॥*
*ऋषि वाल्मीकि युग द्रष्टा ने, था रामायण का सृजन किया।*
*संजय ने भी महाभारत में था, दिव्य दृष्टि से कथन किया॥*
*चौबीस अवतारों का वर्णन, भागवत पुराण में आया है।*
*जिनमें से दस अवतारों की, लीला को सबने गाया है॥*
*कलियुग में कल्कि प्रकटे, बनकर प्रज्ञावतार।*
*नवयुग के श्रीव्यास ने, जिनका किया प्रचार॥*

**अवताराः प्रभोर्दिव्यदर्शिभिर्दश वर्णिताः।**
**लीलोद्देश्य स्वरूपाणि पुराणादिषु दृश्यताम्॥ ४। ७। २५॥**
**आद्यो मत्स्यावतारस्तु प्रास्तौषीद् बीजतस्तरोः।**
**निर्मितेरिव प्रामाण्यं बोधिताः सकला जनाः॥ ४। ७। २६॥**

महामनीषी के ये वचन सुनकर जिज्ञासु ऋषि ने कहा–''हे भगवन्! सृष्टि के आदि से लेकर अब तक के भगवान के अवतारों को सुनने की इच्छा हो रही है। कृपया उनके विषय में बताने का कष्ट करें।'' यह सुनकर सत्राध्यक्ष बोले–''हे महामुने! पुराणों में कहीं भगवान के दस अवतारों का उल्लेख है, कहीं चौबीस का। जहाँ चौबीस का उल्लेख है, वहाँ उसे गायत्री के चौबीस अक्षरों की चौबीस शक्तियों की तरफ किया गया संकेत समझना चाहिए। दत्तात्रेय के चौबीस गुरु, चौबीस ऋषि, चौबीस देवता, चौबीस ज्योतिर्लिंग, चौबीस शक्तिपीठ इसी के साथ जुड़ती हैं। उद्देश्य सब का एक ही है, अधर्म का नाश तथा धर्म की स्थापना। समय और परिस्थितियों के अनुसार भगवान ने अवतार लेकर धरती के बोझ को हल्का किया है।''

प्रज्ञा पुराण में गुरुदेव ने दश अवतारों को प्रधान माना है। जिसमें



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रथम मत्स्यावतार है। राजा 'मनु' नदी में स्नान कर रहे थे कि एक छोटी–सी मछली उनकी अंजलि में आ गई। जैसे ही राजा ने उसे जल में छोड़ना चाहा, वह मनुष्य की आवाज में बोली–''राजा ! मुझे पानी में मत छोड़ो। मैं आपकी शरण में हूँ।'' राजा दयालु था, वह उसे घर ले आया। घर आते–आते मछली का विस्तार बढ़ा और वह कमण्डलु छोटा पड़ गया। राजा ने उसे बड़े बर्तन में डाल दिया। थोड़ी देर में वह फिर बोली–''राजा ! मेरे लिए यह बर्तन भी छोटा पड़ रहा है, कृपया मुझे जलाशय में भेज दो।'' जब जलाशय भी उसके लिए छोटा पड़ गया तो राजा ने उसे समुद्र में डलवा दिया।'' तब उसने राजा से कहा–राजा ! आज से आठवें दिन प्रलय होगी। तुम सृष्टि के बीजों को तथा सप्तर्षियों को लेकर नौका में सवार हो जाना। राजा ने ऐसा ही किया। मत्स्यावतार भगवान की कृपा से राजा की नौका बच गई और प्रलय के बाद सृष्टि का पुननिर्माण हुआ। इस प्रकार मत्स्यावतार ने अपना आकार बढ़ाया और राजा मनु को बचाया।

हे संतो ! इस युग के मत्स्यावतार ने आगरे के एक छोटे से गाँव ऑवलखेड़ा में जन्म लिया और आठ वर्ष की आयु में मदन मोहन मालवीय जी से गायत्री मंत्र की दीक्षा ली। उसके बाद धीरे–धीरे गायत्री मंत्र की ६६ माला रोज कर २४ वर्ष में २४–२४ लाख के अनुष्ठान कर अपना विस्तार इतना बढ़ा लिया है कि इस समय केवल भारत के कौने–कौने में ही नहीं अपितु विदेशों में भी गायत्री मंत्र के करोड़ों उपासक उनके परिवार में सम्मिलित हैं। देश विदेश में हजारों की संख्या में शक्तिपीठ हैं, एक कुण्डी यज्ञ से १५५० कुण्डी यज्ञ किए गए हैं। पहले एक अखण्ड दीप जलाया, फिर उससे लाखों दीप जलाकर दीपयज्ञ के माध्यम से उस मत्स्यावतार का संदेश लोग सुन



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहे हैं। पहले हाथ की मशीन से छाप कर अखण्ड ज्योति की ५०० पत्रिका प्रारंभ कीं जो अब लगभग दस लाख पत्रिकाएँ देश विदेश में विभिन्न भाषाओं में संदेश दे रहीं हैं। वेद, स्मृति, उपनिषद् तथा पुराण सहित लगभग ३ हजार ऐसी पुस्तकों का निर्माण किया है जो दीपक के प्रकाश की भाँति लोगों का मार्गदर्शन कर रही हैं। इस नवयुग के मत्स्यावतार ने बताया है कि जब संसार–सागर में मनुष्य लोभ प्रलोभनों की आँधी से भ्रमित होता है, उस की जीवन नौका डूबने लगती है, तो मनु की भाँति परोपकारी और सहृदय व्यक्ति की जीवन नौका को भगवान मत्स्यावतार बनकर पार लगाते हैं। उन्होंने बताया कि संकल्प और उद्देश्य महान हों तो साधनहीन होने पर भी मनुष्य महान बन जाता है।

बोलो मत्स्यावतार भगवान की जय।

## गीत

मानवता का पतन देखकर, आज धरा अकुलाई है।
देव शक्तियों ने मिलकर, दुर्गा शक्ति जगाई है॥
नवयुग का मत्स्यावतार यह पल–पल बढ़ता जाता है।
शत सहस्र से कोटि–कोटि बन अपना ओज दिखाता है॥
विश्व रूप होगा यह कल को ऋषि ने हमें बताया है।
इसीलिए यह महायज्ञ का अनुष्ठान करवाया है॥
अपनाएँगे वही राह जो युग ऋषि ने दिखलाई है।
देव शक्तियों ने मिलकर दुर्गा शक्ति जगाई है॥

**अवतारो द्वितीयश्च कच्छपोऽभूत् स उत्तमः ।**
**श्रमसहयोगजं सर्वान् बोधयामास स्वं मतम् ॥ ४। ७। २९॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**स्वयं चाऽप्रकटो भारं मन्दरस्यातुलं प्रभुः ।**
**उवाह पृष्ठे श्रेष्ठानां कर्मोक्तं भृतसौहृदम् ॥ ४।७।३१॥**

हे संतो ! दूसरी बार वे प्रभु कच्छप के रूप में अवतरित हुए, जिन्होंने समुद्र मंथन के समय अपनी पीठ पर मंदराचल का भार ग्रहण किया। देवासुरों ने मिलकर जब समुद्र मंथन किया तो मंदराचल को मथनी बनाया, शेषनाग की डोरी। जब मंदराचल समुद्र में डूबने लगा तो भगवान ने कच्छप का रूप धारण किया। समुद्र मंथन से अनेक रत्न निकले ऐरावत, कामधेनु, धन्वंतरि, लक्ष्मीजी, अमृत आदि। लक्ष्मीजी ने भगवान विष्णु जी के गले में जयमाल डाल दी और उन्हें अपना लिया, कौस्तुभ मणि भी उनके हिस्से में आ गई। उच्चैःश्रवा अश्व को सूर्य ने, ऐरावत हाथी इंद्र ने, कामधेनु को वृहस्पति ने तथा कल्पवृक्ष शुक्राचार्य ने ले लिया। उस समय भगवान शिव खड़े थे, कुछ बचे तो मैं भी लूँ। अमृत निकला तो देवताओं ने ले लिया, वारुणी को असुरों ने लिया और तब उसमें निकला भयंकर विष, उसे देखकर सब भाग खड़े हुए और तब सामने आए भगवान शिव, उन्होंने विषपान किया, उसे अपने कण्ठ में रोककर वे नीलकण्ठ तो कहलाए ही, किंतु स्वयं विषपान कर दूसरों को अमृत देने वाले शिव महादेव बन गए। भगवान शिव की पूजा के नाम पर भाँग, गाँजा, चरस पीने वालो, यदि पीना है, तो शिव के नाम पर दूसरों के दुःख दर्द का जहर पीकर अमर हो जाओ। यही शिव की सच्ची पूजा है। इस पूजा को किया, ऋषि दयानंद ने। शिवरात्रि के दिन संकल्प लिया कि सच्चे शिव की खोज करनी है। सच्चे शिव की खोज करते–करते वे स्वयं शिव बन गए। उन्होंने स्वयं विषपान कर संसार को ज्ञान का अमृत प्रदान किया। सच्चे शिव की पूजा की थी सुकरात ने, जिन्होंने धर्म के नाम



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर जहर का प्याला पिया और सच्ची शिव की आराधना की युग ऋषि आचार्य श्रीराम शर्मा ने जिन्होंने सारे संसार की बुराइयों का जहर पीकर हम सब को शिव बनाने का संकल्प लिया। ''सुधा बीज बोने से पहले कालकूट पीना होगा।'' हे साधको ! जीवन में सुख का उपभोग तो सभी करते हैं, परंतु दूसरों के लिए जो कष्ट सहते हैं, वे ही शिव के सच्चे भक्त हैं।

इस जग में सुख–दुःख निरंतर आते–जाते रहते हैं।
सुख तो सभी सह लेते, पर दुःख धीर ही सहते हैं॥
मनुज दुग्ध से, दनुज रुधिर से, देव सुधा से जीते हैं।
किंतु हलाहल विष का प्याला शिव शंकर ही पीते हैं॥

गुरुदेव शिव के प्रतीक हैं। वे आप सब की बुराइयों का जहर पीना चाहते हैं। आज दीप यज्ञ तथा कल के यज्ञ में आप अपनी एक एक बुराई के जहर को गुरुदेव की झोली में डाल देना और उसके बदले उनसे अमृत लेकर जीवन को अमर बना लेना।

बोलिए युगाधिपति महाकाल की जय।

## *गीत*

जय महाकाल, जय महाकाल, जय महाकाल, जय महाकाल।
जो पाप–ताप का हरता है, जो युग परिवर्तन करता है।
माँ आदि शक्ति को साथ लिए, जो बदल रहा है सृष्टि चाल॥
जिसने सोतों को जगा दिया, जागों को जिसने चला दिया।
चलतों को जिसने दौड़ाया, निष्ठा को दी प्रेरक उछाल॥
छल द्वेष–दम्भ का हनन करो, सद्भावों का शुभ सृजन करो।
प्रज्ञा प्रकाश जग में भर दो, उज्ज्वल भविष्य की ले मशाल॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आओ देवत्व जगाने को, धरती को स्वर्ग बनाने को।
अपनत्व सभी में विकसा दो, हे सज्जन के मानस मराल॥
तुम हो अनादि, तुम हो अनंत, तुमसे प्रेरित यह दिग्–दिगंत।
परिवर्तन के आधार तुम्हीं, तुमसे प्रेरित यह जग विशाल॥
हे प्रभु सद्बुद्धि हमें दे दो, शुभ सृजन शक्ति हम में भर दो।
उज्ज्वल भविष्य तक पहुँचा दो, मानवता को कर दो निहाल॥

**अवतारस्तृतीयोऽभूद् वराहो युयुधे स्वयम् ।**
**हिरण्याक्षस्य दुर्धर्षप्रवृत्या सञ्चयस्य यः ॥ ४। ७। ३२॥**
**चकार शमनं पूर्णमाधिपत्यस्य तस्य सः ।**
**सुलभां सम्पदां चक्रे सर्वेभ्यः करुणापरः ॥ ४। ७। ३३॥**

तीसरा अवतार बाराह भगवान का है। एक राक्षस पैदा हुआ। नाम था हिरण्याक्ष, सोने पर ही दृष्टि रखने वाला। उसने सारी संपत्ति समुद्र में छिपाकर रख दी। भगवान ने बाराह का रूप धारण कर उसका वध किया और संपत्ति को समाज में वितरण किया। उस समय तो एक हिरण्याक्ष था, आज तो सोने का मायावी हिरन सब को ललचा रहा है। भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार, घोटाले, हवाले, चालाकी, बेईमानी सब इसी पैसे के कारण हैं। कहीं अपहरण, कहीं चोरी, कहीं डकैती, कहीं लूटमार, कहीं मिलावट इस पैसे के कारण ही लोगों का चरित्र गिर गया है। एक सेठ जी के घर में आग लगी, सिर पटक पटक कर रो रहे थे चिल्ला रहे हैं, सब नौकर सारा सामान निकालने में लगे थे। रुपया, पैसा, जेबर, कपड़े, बर्तन जल्दी निकालो, जब आग बुझी तो पता लगा कि सामान तो काफी बच गया, पर सेठ का इकलौता बेटा जल कर मर गया, उसका ध्यान ही नहीं आया।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज यही हालत है कि जो बहुमूल्य वस्तु हैं, बुद्धि की संपदा उस की सुरक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया जाता, वरन् बाहरी धन की रक्षा में ही सारी शक्ति लगा दी जाती है। सब जानते हैं यह धन किसी का नहीं हो सकता। फिर भी उसके पीछे पागल हो रहे हैं। प्यारे भाइयो ! इस नश्वर वस्तु को छोड़ कर उस अविनाशी अंश को पहचानो, तो जीवन सफल होता है। श्रेष्ठ कर्म करते हुए व्यक्ति सदैव अपने लिए परलोक हेतु गुण–संपदा की विभूति सुरक्षित कर सकता है।

उन दिनों गुरु नानक लाहौर में ठहरे हुए थे। एक धनिक दुनीचंद सपत्नीक उनसे मिलने के लिए आया। गुरु नानक ने उसे एक सुई देते हुए कहा–''इसे आप अपने पास रखिए और दूसरी दुनिया में मुझे वापस कर देना।'' दुनीचंद गुरुदेव की बातें सुनकर हैरान रह गया। उसे अपने कानों पर विश्वास न हो रहा था। वह आश्चर्यचकित हो पूछने लगा–''मरने के बाद सुई को हम अपने साथ कैसे ले जा सकते हैं ?'' प्रश्न का उत्तर प्रश्न में देते हुए नानक ने कहा–''संपत्ति जोड़ने के पीछे आपका क्या उद्देश्य है ?'' दुनीचंद अब अच्छी तरह समझ गया था कि मरने के बाद तो हम अपनी संपत्ति में से एक भी पैसा नहीं ले जा सकते, फिर अनैतिकता का सहारा लेकर संचय प्रवृत्ति को प्रोत्साहन क्यों दें ? उन्होंने गुरु नानक से पूछा–''आप ही बताइए, हम अपने साथ क्या ले जा सकते हैं ?'' ''सत्कर्म रूपी संपत्ति''–नानक ने उत्तर दिया।

भौतिक संपत्ति को कमाने वाला दुनीचंद अब सत् कार्यों की संपत्ति जोड़ने में लग गया। अतः हे संतो ! धन का संग्रह छोड़ कर समयदान और अंशदान की प्रवृत्ति को अपनाओ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

## गीत–

जिंदगी एक किराए का घर है, एक न एक दिन बदलना पड़ेगा।
मौत जब तुझको आवाज देगी, घर से बाहर निकलना पड़ेगा॥
देह मिट्टी का हर आदमी का, मरने के बाद जाना वहीं है।
जमीन में कब्रें बनेंगी या चिताओं पै जलना पड़ेगा॥
जिंदगी एक किराए का घर है, एक न एक दिन बदलना पड़ेगा॥
जो भी करना है कर लो यहीं पर, जो भी भरना है भर लो यहीं पर।
ये जवानी अगर ढल गई तो, उम्र भर हाथ मलना पड़ेगा।
जिंदगी एक किराए का घर है, एक न एक दिन बदलना पड़ेगा॥
जब आई जोशे–जवानी, चंद लमहों की है जिंदगानी।
चंद दिन का है घर में बसेरा, छोड़ करके निकलना पड़ेगा।
जिंदगी एक किराए का घर है, एक न एक दिन बदलना पड़ेगा।
शाम के बाद होगा अँधेरा, देखना है अगर दिन सुनहरा।
पाँव फूलों पर रखने से पहले, हमें काँटों पर चलना पड़ेगा।
जिंदगी एक किराए का घर है, एक न एक दिन बदलना पड़ेगा॥

**नरसिंहावतारश्च चतुर्थोऽभूत्पुपोष यः।**
**सौहार्द्र दुर्बले जाते तस्मिन् कालप्रभावतः॥ ४।७।३४॥**
**षष्ठः परशुरामश्च विद्यते स्वीचकार यः।**
**दुष्टतानाशसंकल्पं यतो नैव कदाचन॥ ४।७।३९॥**

चतुर्थ अवतार नृसिंह भगवान का हुआ। एक राक्षस हुआ हिरण्यकशिपु, उसने तपस्या की और कभी न मरने का वर माँगा, न दिन में मरूँ, न रात में, बारह महीने में कभी न मरूँ, न घर में मरूँ न बाहर, न आदमी से मरूँ न जानवर से, न अस्त्र से न शस्त्र से और यह वरदान माँग कर वह अपने को ही भगवान मान बैठा। उसके पुत्र



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रह्लाद ने उसकी अनुचित आज्ञा नहीं मानी तो उसे भयंकर कष्ट दिए। उसे पहाड़ से गिराया, समुद्र में धक्का दिया, अग्नि में जलाया, जिसके उपलक्ष में होली मनाई जाती है, पर भगवान ने सर्वत्र उसकी रक्षा की, और अंत में अपने दिए हुए वरदान की रक्षा करते हुए हिरण्यकशिपु को संध्या के समय घर की देहरी पर अपनी जांघ पर रखकर नाखूनों से पेट फाड़ कर मार डाला और तेरहवें मास पुरुषोत्तम मास में मारा। इससे उन्होंने शठेशाठ्यं समाचरेत्' का पाठ सिखाया। आज के इस भौतिकता वादी युग में धर्म–पथ पर चलना बहुत मुश्किल हो गया है, पर अभी भी प्रह्लाद की भाँति अविचल भक्ति मार्ग पर चलने वालों का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। इस शरीर को नश्वर तथा आत्मा को अनश्वर मानते हुए गुरुदेव ने धर्म–पथ पर चलने का निर्देश दिया है।

पंचम अवतार वामन भगवान का है। आत्मबल संपन्न व्यक्ति यदि छोटा हो तो भी विजय श्री उसका वरण करती है। वामनावतार के रूप में भगवान ने तीन पग में बलि की सारी संपदा लेकर उसे लोकहित में लगाने का संदेश किया। बलि ने अपने गुरु की आज्ञा को भी न मानकर इस कार्य में सहयोग दिया।

बलि अपनी संपदा लोकहित के लिए भगवान को सौंपना चाहते थे। शुक्राचार्य ने स्वार्थ को प्रधानता देने और दान न करने के लिए भरसक समझाया। यहाँ तक कि संकल्प का जल रोकने के लिए कमंडल के छिद्र में घुसकर बैठ गए। बलि ने गुरु के भी अनुचित आदेश का उल्लंघन किया और कमंडल के छिद्र में सींक डालकर अवरोध बने गुरु को निकाल फेंका। इसी प्रसंग में शुक्राचार्य की एक आँख फूट गई सत्कार्य में रोड़ा अटकाने वालों को ऐसा ही दंड भुगतना पड़ता है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज के युग में भी महात्मा गांधी ने, लाल बहादुर शास्त्री ने अंशदान के सिद्धांत को अपनाया। विनोबा भावे का भूदान यज्ञ भी इसी श्रेणी में आते हैं। स्वयं गुरुदेव ने भी दस पैसे के अंशदान द्वारा जो निर्माण कार्य किया है, वह अनुकरणीय है।

छटा अवतार, परशुराम भगवान का है। उन्होंने २१ बार अत्याचारियों के सिर काटे अर्थात् दुर्बुद्धि ग्रस्त लोगों का विचार परिवर्तन किया।

परशुराम जी ने आततायी सहस्रबाहु की भुजाओं को काट फेंका। स्वार्थी आततायी कुछ लोगों को स्वार्थ के लालच से तथा कुछ को अपने आतंक से अपना समर्थक बना लेते हैं। उनकी हजार भुजाएँ होती हैं । उन सहस्त्र समर्थकों के कारण वे अजेय दिखते हैं। परशुराम भगवान का परशु उनके स्वार्थ और समर्थकों के भय की भावना को काटता है। एक–एक करके हाथ कट जाने पर भीषण असुरता निरीह की तरह परास्त हो जाती है।

इस क्रांतिकारी योजना के पश्चात् उन्होंने फावड़ा उठाकर हरीतिमा संवर्धन किया। इस प्रकार गुरुदेव का भी विचार क्रांति अभियान चल रहा है, दृष्टिकोण बदलने से ही परिवर्तन हो सकता है। आइए हम सब उनके सहयोगी बने। ''तन्मे मनःशिव संकल्पमस्तु'' का व्रत लेकर शुभ कर्म में अग्रसर हों।

*भगवान राम के आवाहन पर, जैसे भालू–वानर आए।*
*पाकर निज प्रभु से शक्ति प्रबल, सागर पर पत्थर तैराए॥*
*जैसे गिरिधर संग ग्वालों ने, गिरि गोवर्धन उठवाया था।*
*अपनी लाठी की टेक लगा, अपना सौभाग्य जगाया था॥*
*सुनकर पुकार गौतम बुद्ध की, जो भी था उनके संग आया।*
*था जीवन धन्य हुआ उसका, उसने जग में गौरव पाया॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*स्वार्थ हितों को छोड़ जो, करते जग कल्याण।*
*युग–युग तक इतिहास में, रहता उनका नाम॥*

**सप्तमो राम उक्तश्चावतारो लोक उच्यते ।**
**जनैः श्रद्धायुतैः सर्वैर्मर्यादापुरुषोत्तमः ॥ ४। ७। ४२॥**
**मूर्तिमान् धर्म एवायमुच्यते पुरुषो जनैः।**
**एकपत्नीव्रती सर्वभूतात्मा वेदशासितः ॥ ४। ७। ४४॥**

सातवें अवतार भगवान राम हुए, जो मर्यादा पुरुषोत्तम थे। उन्होंने असुरता हटाकर देवत्व का निर्माण करने के लिए जन्म लिया। माता–पिता की आज्ञा पालन करने वाले राम का आदर्श कहीं ढूँढ़ने से भी नहीं मिलेगा। लोक आराधना ही उनके जीवन का लक्ष्य था।

भगवान राम ने असुरता को हटाकर देवत्व की अभिवृद्धि का संकल्प लिया। ऋषि विश्वामित्र के यज्ञ में विघ्न फैलाने वाले ताड़का, सुबाहु, मारीचि आदि असुरों का दमन किया और यज्ञ परंपरा की रक्षा में कुछ उठाकर न रखा। माता–पिता की आज्ञा मानकर धर्म–मर्यादा को दीप्तिमान बनाए रखने के लिए उन्होंने वन गमन सहर्ष स्वीकार किया। छोटे भाई सुग्रीव के साथ अन्याय करने वाले बालि को परास्त किया। ऋषियों को त्रास देने वाले खर दूषण का दमन किया। कपटी मारीचि की माया से ठगे जाते रहने वाले लोगों का दुःख दूर किया और अंत में स्वल्प साधन रहते हुए भी रावण जैसे अधर्मी, सत्ताधीश से भिड़ गए। विजय सत्य की ही होती है, इसलिए जीते भगवान राम ही। ऋषियों का मार्ग कंटकाकीर्ण किए रहने वाले, प्रजा को सताने वाले, जनता के सामने अधार्मिकता की विजय के उदाहरण प्रस्तुत कर उसे कुमार्ग पर चलने का लालच उत्पन्न करने वाले असुरों का दमन आवश्यक था और वही भगवान राम ने किया भी।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का महत्त्वपूर्ण भाग उन्होंने अधर्म नाश के संघर्ष में ही लगाया।

ऋषियों की हड्डियों का पर्वत देखकर उन्होंने हाथ उठाकर पृथ्वी को राक्षसों से विहीन करने की प्रतिज्ञा की थी।

**निशिचर हीन करौं महि, भुज उठाय प्रण कीन।**
**सकल मुनिन्ह के आश्रमहि जाय–जाय सुख दीन॥**

**गीत**

मानवता का पतन देखकर आज धरा अकुलाई है।
देव शक्तियों ने मिलजुलकर दुर्गा शक्ति जगाई है॥
मानवता को त्राण मिला था गौतम के संदेशों में।
धर्म चेतना का विस्तार हुआ था देश विदेशों में॥
संस्कार से रहित मनुजता पुनः लक्ष्य पथ भूली है।
पल भर का कुछ पता नहीं पर भौतिकता में फूली है॥
इस युग में भी प्रज्ञावतार बन ईश चेतना आई है।
देव शक्तियों ने मिलजुल कर दुर्गा शक्ति जगाई है॥
वानर, रीछ, गिलहरी बनकर जो अब कदम बढ़ाएगा।
सेतु राम बाँधेंगे निश्चित पुण्य वही पा जाएगा॥
उठना है गोवर्धन लेकिन लाठी जरा लगालो तुम।
प्रभु के सहयोगी बनने का श्रेय सहज ही पा लो तुम॥
उठो तुम्हारे इम्तहान की आज घड़ी यह आई है।
देव शक्तियों ने मिलजुल कर दुर्गा शक्ति जगाई है॥

**कृष्ण एवाष्टमः पूर्णोऽवतारो विद्यते स्वयम्।**
**दूरीकर्तुमनीतीर्यश्चातुर्यस्य तथैव च ॥ ४। ७। ४५॥**
**सर्वप्रकारकस्योक्तः कौशलस्यायमुत्तमः।**
**नीतिनिर्धारको लक्ष्ये पवित्रे स्थितिरूपतः॥ ४। ७। ४६॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आठवें अवतार भगवान कृष्ण हुए जिन्होंने अनीति और अधर्म को समाप्त करने का संकल्प लिया। उन्होंने अपने कैदी माता–पिता को दुष्ट कंस के बंधन से छुड़ाया। वे जेल में पैदा हुए, दूसरों के घर उनका पालन पोषण हुआ, फिर भी उन्होंने संसार में अपने नीतिबल के आधार पर पांडवों को महाभारत करने के लिए प्रेरित किया और स्वयं अर्जुन के सारथि बने।

श्रीकृष्ण को पूर्ण पुरुष कहा जाता है। यह अवतार लेकर भगवान ने उस युग में फैली हुई अनीति एवं मूढ़ता को परास्त किया। अनीति बरतने वाले तृणासुर, अघासुर, बकासुर, पूतना, कालिया नाग आदि धूर्तों से उन्होंने बचपन में ही टक्कर ली। थोड़े बड़े होने पर अन्यायी शासक कंस से भिड़ गए और कुराज्य मिटाकर सुराज्य की स्थापना की। निरीह प्रजा को अपना सारा दूध, घी धनिकों और सरदारों को देना पड़ता था। गोपियों को उनके आगे न झुकने और अपना आवश्यक भोजन स्वयं ही रखने के लिए उन्होंने सत्याग्रह भी किया। उनका रास्ता रोका और सत्ताधारियों से न डरने का साहस मन में उत्पन्न किया।

बड़े हुए तो अन्याय और अधर्म को नष्ट करने के लिए उन्होंने महाभारत की योजना की और स्वल्प साधन संपन्न पांडवों को सत्ताधारी सौ कौरवों के समक्ष न्याय की माँग को लेकर अड़ जाने के लिए खड़ा कर दिया। अठारह अक्षौहिणी सेना और अगणित सुभट मर गए, पर इससे क्या ? न्याय की रक्षा के लिए जो भी कीमत चुकानी पड़े, कम है।

उन दिनों भारत छोटे–छोटे टुकड़ों में बँटा हुआ पड़ा था। छोटे–छोटे सामंत अपनी अलग–अलग सत्ता बनाए रखने के लिए देश को



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोटे–छोटे टुकड़ों में बाँटे हुए थे। एकता की शक्ति से परिचित होते हुए भी वे अपने संकुचित स्वार्थों के लिए पृथकतावाद को ही प्रश्रय देते थे। इन पृथकतावादियों के विनाश की योजना बनाकर भगवान ने महाभारत युद्ध कराया और खंड भारत को एक परिपूर्ण राज्य बना दिया। इसके लिए युद्ध के रूप में भारी कीमत चुकानी पड़ी, पर कीमत चुकाए बिना कीमती चीज मिलती भी कहाँ है ?

कैदी माता–पिता की गोद में बंदीगृह में उत्पन्न होने वाला, दूसरों के घर पलने वाला, गोप परिवार में जन्मने वाला बालक भी अपने आत्मबल और पुरुषार्थ से कितना कुछ कर सकता है ? भगवान कृष्ण ने अपना उदाहरण प्रस्तुत करके उन लोगों का मनोबल बढ़ाया, जो छोटी या साधनविहीन परिस्थितियों में जन्मे या बड़े न होने के कारण ऊँचा उठने की आशा छोड़ बैठे। अर्जुन के कोचवान बनकर उन्होंने बताया कि संसार में कोई काम छोटा नहीं है और लोक कल्याण के लिए धर्म रक्षा के लिए छोटे दीखने वाले कार्यों को भी प्रसन्नतापूर्वक करना चाहिए। दुष्टता, अवांछनीयता का दमन तथा सज्जनता की, औचित्य की स्थापना के कार्य में ही श्रीकृष्ण भगवान का सारा जीवन व्यतीत हुआ।

राम और कृष्ण दोनों का उद्देश्य एक ही था–धर्म की स्थापना, अधर्म का नाश, किंतु दोनों में बहुत अंतर था।

राम सूर्यवंशी थे रघुकुल नायक, कृष्ण यदुवंशी यदुकुल नायक थे। राम का जन्म राजमहल में हुआ, बधाई गाईं गईं, कृष्ण जेल में पैदा हुए। पिता ने इन्हें गोकुल पहुँचा दिया। राम का सारा जीवन कष्ट में बीता, कृष्ण हमेशा हँसते रहते थे। ये दोनों महापुरुष आज भी भारतीय संस्कृति के आदर्श मानकर पूजे जाते हैं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**बुद्धावतारो नवमो बुद्धिं धर्ममथापि च ।**
**संघं प्रधानरूपेण स्वीचक्रे जनमङ्गलम् ॥ ४।७।४८॥**
**तपः पौरुषशक्त्या स संघमुच्चात्मनां नृणाम्।**
**व्यधाद् भूयश्च तान् सर्वान् प्रेषयामास भूतले॥ ४।७।४९॥**

नवाँ अवतार भगवान बुद्ध का है, जिन्होंने बौद्धिक क्रांति की। इसीलिए उन्हें बुद्ध कहा गया। उन्होंने करुणा, दया और प्रेम के द्वारा दुष्टों के हृदय परिवर्तन कर धरती को अधर्म, अन्याय, ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ से छुटकारा दिलाया।

जातक कथाओं में बोधिसत्व के रूप में इनकी अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। बोधिसत्व अपने पुण्य प्रभाव से वंश परंपरानुसार प्राप्त एकछत्र पृथ्वी का पालन कर रहे थे। वह जितेन्द्रिय तथा प्रजा के हित के कार्य में दत्तचित्त थे। वे स्वयं सदाचरण में आसक्त थे तथा प्रजा भी उनका अनुसरण करती थी।

एक बार उस देश में अनावृष्टि के कारण व्याकुलता फैल गई। राजा ने कुल पुरोहितों, वृद्ध ब्राह्मणों और बुद्धिमान मंत्रियों से इसके निवारण का उपाय पूछा,। उन्होंने इसका उपाय वेद विहित यज्ञ सुझाया, परंतु इसमें सैकड़ों निर्दोष प्राणियों की बलि चढ़ानी पड़ेगी, यह जानकर राजा ने इसकी उपेक्षा कर दी।

वे विचार करते रहे और उनकी प्रजा जाग पड़ी। भला पशु हिंसा से धर्म का, स्वर्ग प्राप्ति का या देवताओं की प्रसन्नता का क्या संबंध हो सकता है ? मंत्र शक्ति से मारा जाता हुआ पशु स्वर्ग जाता है, इसलिए उसकी हिंसा पुण्यकार्य है, यह भी असत्य है। भला दूसरों के कर्मफल को कौन परलोक में प्राप्त करेगा ? जिसका चित्त असत् की ओर से विमुख नहीं हुआ है, जिसने शुभ कर्म करने के लिए निश्चय



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं किया है, वह पशु यज्ञ में मारा जाने पर भी अपने कर्म रूप आश्रय के बिना किस कारण से स्वर्ग जाएगा ? यज्ञ में मारा जाने पर यदि वह स्वर्ग जाता, तो ब्राह्मण स्वयं पशु बन जाते। सुंदर अप्सराओं द्वारा दिए गए स्वाद, सुगंधि व ओजपूर्ण सुधा छोड़कर देवगण क्या चर्बी के लिए पशु हिंसा से प्रमुदित होंगे ?

ये सब विवेकपूर्ण बातें सोचकर बोधिसत्व ने निर्णय लिया कि सहस्र नरमेध यज्ञ किया जाएगा और यज्ञ की तैयारी की आज्ञा दे दी। सारे गाँव में, नगरों में डंके की चोट पर घोषणा की गई कि ''जो व्यक्ति दुराचारी, दुर्विनीत होगा, शील, सदाचरण के रास्ते पर नहीं चलेगा, राजाज्ञा की अवहेलना करेगा, पशु के स्थान पर उनकी बलि दी जाएगी। यह आज्ञा सभी देश के सामंतों और नरेशों के लिए भी है।'' दुराचारी पुरुषों की खोज में सावधान राजपुरुषों को चारों तरफ भेज दिया गया।

देखते–देखते सारी बुराइयाँ जाती रहीं। जनता के धर्म परायण होने से ऋतुओं की विषमता भी दूर हुई। पृथ्वी नाना प्रकार की फसलों से परिपूर्ण हो गई। पृथ्वी से रोग–शोक जैसे संताप दूर हुए। लोगों को पशु हिंसा का दोष अनुभव हुआ। धर्माचरण से प्रजा का कल्याण हुआ।

*जन–जन में चेतना जगा रहा, प्रज्ञावतार यह सच मानो।*
*सोया देवत्व जग जाएगा, इस आवाहन को पहचानो॥*
*इस समय जो जाग्रतात्माएँ, इस गरिमा को अपनाएँगी।*
*वे पाकर सुख सौभाग्य श्रेय, निज नाम अमर कर जाएँगी॥*
*मानस की प्रवृत्ति बदलते ही, सारा संसार बदलता है।*
*जिस रंग का शीशा आँखों पर, वैसा ही सब जग दिखता है॥*



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

*लोभ मोह अहंता मिटे, मिटे पाप व्यवहार।*
*मिट जाए सब असुरता, सुखी रहे संसार॥*

**प्रज्ञावतारो कल्किश्च निष्कलङ्कोऽपि वा पुनः।**
**दशमोऽयं च लोकेऽस्मिन्नवतारस्तु विद्यते ॥ ४। ७। ५३॥**
**महाप्रज्ञेति रूपे च साद्यशक्तिरनुत्तमा ।**
**गायत्री केवलं लोके युगशक्तिर्भविष्यति ॥ ४। ७।५५॥**

अंत में दसवें अवतार का उल्लेख करते हुए आचार्यश्री लिखते हैं कि यह दसवाँ अवतार प्रज्ञावतार है जिसे कल्कि अवतार भी कहते हैं। इसका तात्पर्य है निष्कलंक अवतार, जिसमें किसी प्रकार की कोई कमी नहीं। यह हमारी पिछली तथा वर्तमान दुष्प्रवृत्तियों को धोने जा रहा है। उसके द्वारा ऐसा भावनात्मक प्रवाह उत्पन्न किया जा रहा है, जिससे लोग स्वार्थ वृत्ति को छोड़कर लोक–कल्याण में संलग्न हों। इस समय का मुख्य संकट आस्था संकट है। आस्थाएँ चेतना से संबंधित होती हैं, अतः इस अवतार का प्रधान कार्य चेतना को जगाना है। इस प्रज्ञावतार को गायत्री मंत्र के रूप जाना जा सकता है, क्योंकि इस महामंत्र में व्यक्ति का चरित्र निर्माण करने की क्षमता है। इसमें प्रज्ञा तथा प्रखरता दोनों वस्तुएँ विद्यमान हैं। अज्ञान रूपी अंधकार का निराकरण तथा नवयुग के उज्ज्वल भविष्य का शुभारंभ इसी आदि शक्ति वेदमाता, देवमाता गायत्री महाप्रज्ञा के द्वारा होगा, यह निश्चित है। ये ही वेद माता मानव में देवत्व का निर्माण करने के कारण देवमाता कही जाती हैं और जब ये मनुष्य मात्र को देवत्व से पूर्ण बना देंगी तो ये विश्वमाता के पद पर आसीन होंगी।

क्षत्रिय कुल में उत्पन्न विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि पद वेदमाता गायत्री



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की कृपा से प्राप्त हुआ। यह प्रसंग उठने पर जन्मेजय ने पूछा–''गायत्री को वेदमाता क्यों कहा गया ?''

द्रष्टा आस्तीक ऋषि ने कहा–''वेदमाता ही नहीं देवमाता और विश्वमाता यही तीनों संबोधन आद्यशक्ति गायत्री के हैं। सृष्टि के प्रारंभ में ब्रह्मा को स्फुरणा देने, ज्ञान विज्ञान का विस्तार करने के कारण यह वेदमाता कहलाती हैं।''

''जब सृष्टि संचालन का क्रम चलता है, तब देव शक्तियों का क्रम चलता है, तब देव शक्तियों को पोषित करने का कार्य यही शक्ति करती है। इसके संसर्ग से देवत्व का विकास होता है, इसलिए इसे देवमाता कहते हैं।''

''जब कभी विश्व स्तर पर अनास्था का कुविचार–दुर्भावना का कुहासा छा जाता है, तब उसके निवारण के लिए यह महाशक्ति जन स्तर पर सक्रिय होती है। स्वर्ग से गंगा को भू पर लाने जैसा प्रचंड तप कोई युग पुरुष करता है, तब यह दिव्य धारा जन कल्याण हेतु महाप्रज्ञा के रूप में जन–जन को स्पर्श करती है। तब यह विश्वमाता की भूमिका संपन्न करती है। उस समय वेद अर्थात्, सद्ज्ञान और देवत्व के विस्तार के अनोखे प्रयोग होते हैं।''

यह अवतार बुद्धावतार का पूरक है। आज के बुद्धिवादी युग में समस्याएँ भी चिंतन प्रधान हैं। इस समय जनमानस में जो विकृतियाँ, दुष्प्रवृत्तियाँ घुसी हैं, उनका निराकरण करने में महाप्रज्ञा ही समर्थ हो सकती है। इनके प्रभाव से जन–जन के मन में सोये हुए देवत्व का उदय होगा और धरती पर स्वर्ग उतर आएगा।

**यथा प्राभातिके जाते ऋषयोऽत्रारुणोदये ।**
**अन्धकारोऽथ संव्याप्तोऽपैति दूरं तथैव तु ॥ ४। ७। ६३॥**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

**समस्यास्ताः विकाराश्च विपदो वा विभीषिकाः ।**
**समाहिताः स्वतः स्युस्ताः प्रज्ञावतरणे भुवि ॥ ४।७।६४॥**

अंत में आश्वस्त करते हुए महाप्राज्ञ जी कहते हैं–''हे ऋषियो ! जैसे प्रातःकाल होते ही सारा अंधकार छट जाता है वैसे ही प्रज्ञावतार के आते ही सारी समस्याएँ, विपत्तियाँ, विकृतियाँ एवं विभीषिकाएँ स्वयं ही नष्ट हो जाएँगी। आज की विभीषिकाओं को देखकर लगता है कि न जाने क्या होगा ?कहीं प्रलय तो नहीं होगी, किंतु ये सब आपत्तियाँ मनुष्य को सबक सिखाने के लिए ही हैं। जैसे कभी–कभी उद्दंड बालक को दंड देकर चेतावनी दी जाती है, उसी प्रकार ये सब प्राकृतिक आपदाएँ भी महाकाल के द्वारा ही दी गई चेतावनी हैं। हे मनीषियो ! यह प्रज्ञावतार निराकार होगा। यह मनुष्य में सद्बुद्धि की प्रेरणा भर कर लोभ, मोह, अहंता आदि त्रिपुरासुर को जलाकर भस्म कर देगा। मनुष्यों में यज्ञादि सत्कर्मों की प्रेरणा जगेगी। यह एक अदृश्य प्रवाह है जो रोके नहीं रुकेगा। यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों से सृष्टि का संतुलन बना रहेगा।''

हे साधको ! यह प्रज्ञा युग का सुप्रभात है। इस समय महाकाल की आवाज सुनकर जो उनके साथ चलेगा। वह रीछ, वानर, गोप–ग्वालों की भाँति धन्य हो जाएगा। अब वह समय दूर नहीं जब समय बदलेगा। हम बदलेंगे युग बदलेगा की प्रेरणा पाकर जब मानव अपनी कमियों को दूर करेंगे तो विधिवत् रूप से आसुरी प्रवृत्तियाँ एवं अपराध समाप्त होंगे। असीम सुख शांति विकसित होगी। एक भाषा होगी, एक राष्ट्र होगा, एक धर्म होगा। मानवता का समस्त विश्व में राज्य होगा। इसलिए हे साधको ! हे प्रज्ञा पुत्रो ! उठो, जागो।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

*है महाकाल की यही पुकार, नव सृजन करो आगे आओ।*
*कुछ समयदान और अंशदान दे, जीवन सफल बना जाओ॥*
*जो रहते श्रम से दूर वे ही, किस्मत का रोना रोते हैं।*
*बनते उपहास का पात्र तथा, सबसे अ पमानित होते हैं॥*
*श्रम सीकर निष्ठावानों के नव शक्ति प्रदाता होते हैं।*
*खिलते हैं पुष्प वहाँ, जहाँ पर उनके श्रम सीकर गिरते हैं॥*
*प्रभु सहयोगी जो बने, मिलती शक्ति अपार।*
*मन में प्रज्ञा ज्योति जगे, मिटे सभी अंधकार॥*

अतः आइए हम सब भी इस संदेश को घर–घर पहुँचाने का संकल्प लें।

**इतिश्री मत्प्रज्ञापुराणे ब्रह्मविद्याऽऽत्मविद्ययो:, युगदर्शनयुगसाधनाप्रकटीकरणयो: श्री पिप्लाद–श्वेतकेतु ऋषि–सम्वादे ''संयमशीलताकर्त्तव्यपरायाण्ता चे,'' ति प्रकरणो नाम सप्तमोऽध्याय: ॥१॥**

**आरती श्री प्रज्ञा पुराण की**



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

## ॐ श्री गुरवे नमः

### कलश यात्रा समय के गीत–

हम गायत्री माँ के बेटे, तुम्हें जगाने आए हैं।
जाग उठो भारत के वीरो, तुम्हें जगाने आए हैं॥
एक बनेंगे नेक बनेंगे, प्यार बढ़ाने आए हैं।
शांतिकुंज हरिद्वार के नारे, तुम्हें सुनाने आए हैं॥ हम गायत्री.....
हम सुधरेंगे युग सुधरेगा, यही बताने आए हैं।
ऊँच नीच और जाति–पाँति का, भेद मिटाने आए हैं॥ हम गायत्री.....
गायत्री के महामंत्र की, महिमा गाने आए हैं।
युग निर्माण योजना का, संदेशा ले कर आए हैं॥ हम गायत्री.....
देव संस्कृति निर्मित करने, नई प्रेरणा लाए हैं।
मानव में सद्बुद्धि का, दीप जलाने आए हैं॥ हम गायत्री.....
भ्रष्टाचार का अंत करने, लोभ मिटाने आए हैं।
कुरीतियों और पाखंडों को, जड़ से मिटाने आए हैं॥ हम गायत्री.....
ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल, हम तुम्हें थमाने आए हैं।
श्रीराम शर्मा जी का, संदेशा लेकर आए हैं॥ हम गायत्री.....
लाल ज्वाल और नई रोशनी, जग में लेकर आए हैं।
अनाचार के अंधकार को, जड़ से मिटाने आए हैं॥

हम गायत्री माँ के बेटे, तुम्हें जगाने आए हैं।
जाग उठो भारत के वीरो, तुम्हें जगाने आए हैं॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# आओ आओ सुहागिन नारि, कलश सिर धारण करो

आओ–आओ सुहागिन नारि, कलश सिर धारण करो।
आओ राधा–रुक्मिणि नारि, कलश सिर धारण करो॥
कलश के मुख में, विष्णु जी सोहें।
कंठ से लगकर, शंकर मोहें॥
ए जी ब्रह्मा सोहें मूलाधार, कलश सिर धारण करो॥ आओ–२
तेरी चूड़ी अमर हो जाए.....

सात समुद्रों का निर्मल जल।
सात द्वीप औ, पृथ्वी अञ्चल॥
गंगा–यमुना की पावन धार,कलश सिर धारण करो॥ आओ–२
तेरो ललना अमर हो जाए.....

चार वेद का ज्ञान भरा है।
वसुधा और संसार भरा है॥
ए तो मनवांछित दातार, कलश सिर धारण करो॥ आओ–२
तेरी बिन्दिया अमर हो जाए.....

आओ माता, बहनों आओ।
कलश गीत सब मिलकर गाओ॥
ये तो गायत्री सावित्री परिवार,कलश सिर धारण करो॥ आओ–२
आओ राधा रुक्मिणि नारि.....



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# सतयुग फिर से आएगा

कर लो मिलकर नेक कमाई सतयुग फिर से आएगा।
हमने छोड़ी नहीं बुराई कलियुग कैसे जाएगा॥
मानव की काया तो पगले देवों को दुर्लभ है।
भौतिकता की चमक में भूला खुद बनता निर्धन है।
सच्चे कर्मों का फल पाए सतयुग ऐसे आएगा॥
कर लो मिलकर.....

नर तन देकर प्रभु ने हमको है धनवान बनाया।
हर प्राणी से श्रेष्ठ बनाकर ऊँचे पद बिठलाया।
हर दम करता नीच विचारे कलियुग कैसे जाएगा॥
कर लो मिलकर.....

अपने सुख के कारण हमने तोड़ा सबसे नाता।
मन कलुषित होकर बोझिल है यत्न नहीं कर पाता।
मन से स्वार्थ हटा न पाया सतयुग कैसे आएगा॥
कर लो मिलकर.....

जग में दुःख का कारण है क्या कभी न तूने जाना।
नीयत में जब खोट भरा हो तब तो दुःख ही पाना।
जीवन स्वारथ में भरमाया सतयुग कैसे आएगा॥
कर लो मिलकर.....

जीवन उसने जीना सीखा जिसने निज को जीता।
दीन दुखी पीड़ित मानव की सेवा का सुख पीता।
बन जा प्रेम दया का सागर, सतयुग ऐसे आएगा॥
कर लो मिलकर.....



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ईश्वर तू है मंदिर तू है तुझे ना ज्ञान हुआ है।
इसी भूल के कारण अब तक तू हैरान हुआ है।
मन मंदिर में कर उजियारा सतयुग फिर से आएगा॥
कर लो मिलकर.....

## जगत के काम आ जाऊँ

यही है कामना मेरी जगत के काम आ जाऊँ।
चढ़ा जन्मांतरों से है वो सारा ऋण चुका जाऊँ॥
भ्रमित हो मैनुज अमृत के भरोसे गरल को पीता।
असत् को सत् समझ करके, तमोमय जिंदगी जीता॥
स्वयं को मैं जला करके, अंधेरा यह मिटा जाऊँ।
यही है कामना मेरी.....
कृपणता स्वार्थपरता छोड़ मैं सेवक बनूँ सबका।
रहूँ नित साथ में उसके नहीं साथी यहाँ जिसका।
विहँस कर दीन दुखियों को गले से मैं लगा जाऊँ॥
यही है कामना मेरी.....
न लाया साथ में कुछ भी न लेकर जा सकेंगे हम।
यहाँ कुछ दे न पाये तो न आगे पा सकेंगे हम।
उचित है हाथ से अपने यहाँ सब कुछ लुटा जाऊँ॥
यही है कामना मेरी जगत के काम आ जाऊँ।
चढ़ा जन्मांतरों से है वो सारा ऋण चुका जाऊँ॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

## माता तेरे चरणों में

माता तेरे चरणों में, स्थान जो मिल जाए।
यह जीवन धन्य बने, वरदान जो मिल जाए॥
सुनते हैं कृपा तेरी, दिन रात बरसती है।
श्रद्धालु ही पाते हैं, दुनियाँ तो तरसती है॥
एक बूँद मुझे दो माँ, किस्मत ही बदल जाए॥

ये मन बड़ा चंचल है, पूजन में नहीं लगता।
यह इतना भोला है, संसार इसे ठगता।
समझाएँ इसे जितना, उतना ही मचल जाए॥
माँ के चरणों में तू, नित ध्यान लगाया कर।
पाना है मोक्ष अगर, उसमें खो जाया कर।
मन में वह प्यार जगा, माँ में ही समा जाए॥

देवत्व के फूलों से, माता झोली भर दो।
सब दोष हटा दो माँ, बस निर्मल मन कर दो।
जीवन भी सुगंधित हो, दुर्गंध निकल जाए॥

## राम और श्रीराम एक हैं

राम और श्रीराम एक हैं दुनियाँ जान न पाई,
दोनों ने ही एक तरह की, रामायण दोहराई।
सुनो रे संतो दोनों की प्रभुताई॥

राम अयोध्या में जनमे थे ऋषिकेश तप साधा,
बला अतिबला विद्या पाई चीर अनेकों बाधा।
खरदूषण त्रिजटा बलि बधकर ठकुराई दिखलाई॥
सुनो रे संतो दोनों की प्रभुताई॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आँवल खेड़ा में जन्मे तप किया हिमालय जाकर,
किया जागरण कुण्डलिनी का जौ की रोटी खाकर।
ब्रिटिश हुकूमत मार भगाने की थी कठिन लड़ाई॥
सुनो रे संतो दोनों की प्रभुताई॥

शिव का तोड़ विनाक राम ने सीता जी को ब्याहा,
बंधन तोड़ सनाड्य गौड़ का इनने शौर्य निवाहा।
असुर नाश की भुजा उठा दोनों ने शपथ उठाई॥
सुनो रे संतो दोनों की प्रभुताई॥

अपने अपने प्रण के लिए राम जंगल जंगल घूमे,
पत्थर पानी में तैराने की थी शक्ति प्रभु में।
रीछ बानरों से ही लंका पल में गई ढहाई॥
सुनो रे संतो दोनों की प्रभुताई॥

तपोनिष्ठ श्रीराम ज्ञान के ऐसे वाण चलाए,
किया धराशाही पश्चिम के लोग खड़े मुँह बाए।
ध्वजा देव संस्कृति की सारी दुनियाँ में फहराई॥
सुनो रे संतो दोनों की प्रभुताई॥

उत्तरकाण्ड महान ज्ञान का सेतु सभी को भाया,
बत्तीस सौ लिखी पुस्तकें घर–घर में पहुँचाया।
वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की ज्योति अखण्ड जलाई॥
सुनो रे संतो दोनों की प्रभुताई॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# जीवन गायत्री मय हो

ऐसी कृपा करो जग जननी, जीवन गायत्रीमय हो।
सद्चिंतन सद्भाव जगे सद्कर्मों की जग में जय हो॥
ऐसी कृपा करो.....

कण–कण में अणु अणु में माता, रूप तुम्हारा पाएँ हम,
अपना ही परिवार मिले जहाँ कहीं भी जाएँ हम।
धूप खिले नयनों में उजली, मन में नव सूर्योदय हो॥
ऐसी कृपा करो.....

जीवन लक्ष्य सुझाया तुमने कभी ना उसको भूलें हम,
धन साधन सम्मान मिले तो जरा न मद में फूलें हम।
कभी न हो पग डगमग–डगमग, पलभर भी ना कभी भय हो॥
ऐसी कृपा करो.....

कितने ही दानी बन जाएँ अथवा हों बलिदानी हम,
किंतु न किसी पलभर भी तो मन में हो ना सकें अभिमानी हम।
हर चिंतन हर कर्म हमारा, माता तुम में ही लय हो॥
ऐसी कृपा करो.....

ऐसा अंतःकरण हो माता जैसे मानसरोवर हो,
वाणी हो वेदों सी पावन कर्म सुमन से सुंदर हों।
कृपा तुम्हारी पा कर माता, मन पावन देवालय हो॥
ऐसी कृपा करो.....



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

## शक्ति गुरुवर आप देना

कर रहे हैं साधना हम, शक्ति गुरुवर आप देना।
देखना हम गिर ना जाएँ, बीच में ही थाम लेना॥
कर रहे हैं साधना.....

कम पड़ी पूजा अतः आवाज है गुरुवर लगाई।
चल रहे हैं राह वह जो आपने हमको बताई॥
शक्ति चलने की सतत दो, बीच में यह पग रुके ना॥
कर रहे हैं साधना.....

ज्ञान में डूबे हृदय को, हो प्रभामय छवि तुम्हारी।
दमकती हो तेज से प्रभु, प्राणमय आभा तुम्हारी॥
साथ ही वर दो कि सह लें, तेज वह ये निबल नैना॥
कर रहे हैं साधना.....

जन्म सार्थक हो गया, तुमने हमें ये कार्य सौंपा।
धन्य हैं हम जगत हित की योजना का अंश रोपा॥
अब किए बिन कार्य कुछ, इस हृदय को पड़ता न चैना॥
कर रहे हैं साधना.....

आप ही गुरु आप सविता आप गायत्री हमारे।
शक्ति लेने अतः आए आप के ही हृदय द्वारे॥
प्रभु हमें आलोक देना मिट जाए अज्ञान मेरा॥
कर रहे हैं साधना.....

दो हमें माँ शक्ति भक्ति अब यही है मात्र संबल।
दो हमें आशीष माता सूखने पाए ना दृग जल॥
दिग्विजय पथ पर सतत्, बढ़ती रहे यह सृजन सेना॥
कर रहे हैं साधना हम शक्ति गुरुवर आप देना॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

## ज्ञान गंगा नहा ले

ज्ञान गंगा नहा ले मन मेरे २, धन्य जीवन बना ले मन मेरे॥
युग ऋषि ने सुनो तुम्हें बुलाया, वह फिर से ज्ञान गंगा ले आया।
एक डुबकी लगा ले मन मेरे, मैल सारा बहा दे मन मेरे।
ज्ञान गंगा नहा ले मन मेरे २, धन्य जीवन बना ले मन मेरे॥
मन मेरे दुविधा में मत रहना,सुन मनुआ आलस में मतरुक जाना।
लाभ कुछ तो उठा ले मन मेरे, बात बिगड़ी बना ले मन मेरे।
ज्ञान गंगा नहा ले मन मेरे २, धन्य जीवन बना ले मन मेरे॥
दुनियाँ पापों में झुलस रही है, मानव की आत्मा तड़प रही है।
शांति सिंचन करा ले मन मेरे, धार रस की बहा दे मन मेरे॥
ज्ञान गंगा नहा ले मन मेरे २, धन्य जीवन बना ले मन मेरे॥
युगऋषि का संदेशा सबको सुना दे,घर–घर जा निष्ठा भी जगा दे।
राह सच्ची दिखा दे मन मेरे, लक्ष्य उत्तम बना ले मन मेरे॥
ज्ञान गंगा नहा ले मन मेरे २, धन्य जीवन बना ले मन मेरे॥
मन में शक्ति जगी है पूजा, ईश्वर को भाता नहीं काम दूजा।
नेह सबसे लगा ले मन मेरे, ज्योति भीतर जगा ले मन मेरे॥
ज्ञान गंगा नहा ले मन मेरे २, धन्य जीवन बना ले मन मेरे॥

## बोल रहा है महाकाल

अब फिर से सतयुग आएगा ( आएगा आएगा )
यह बोल रहा है महाकाल, यह बोल रहा है महाकाल।
निश्चिय ही दुनिया बदलेगी, निश्चिय ही परिवर्तन होगा।
नव भातृ भावना जागेगी, नव युग का आरोहण होगा॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है कौन शक्ति जो रोक सके, अब कालचक्र की प्रबल चाल॥
यह बोल रहा है महाकाल, यह बोल रहा है महाकाल॥
हैं वर्ष हजारों बीत चुके, अन्यायों को सहते सहते।
हैं बीत चुकी सदियाँ अनेक, इस कलियुग में रहते रहते॥
चल चुकी बहुत पर अब न चलेगी,कलि की कोई कुटिल चाल॥
यह बोल रहा है महाकाल, यह बोल रहा है महाकाल॥
अन्यायी अत्याचारी की अब, खैर नहीं निश्चित जानो।
सत्ता लोलुप मिट जाएँगे, चाहे मानो या ना मानो॥
अब खड़ा हो चुका जन मानस, क्रांति की कर में ले मशाल॥
यह बोल रहा है महाकाल, यह बोल रहा है महाकाल॥
अब दूर नहीं है वह दिन जब, सब में मानवता आएगी।
सब ओर विश्व में सत्य न्याय की, धर्म ध्वजा फहराएगी॥
टूटेंगे सब ये क्षुद्र बाँध, लहराएगा सागर विशाल।
यह बोल रहा है महाकाल, यह बोल रहा है महाकाल।
अब फिर से सतयुग आएगा, आएगा आएगा।
यह बोल रहा है महाकाल, यह बोल रहा है महाकाल।

## ऐसी हुंकार दो

करते हैं वंदन माँ ऐसी हुंकार दो।
कलयुग का अंत हो ऐसी झंकार दो॥
अर्पण हो चरणों में ये जीवन हमारा।
कल का अंधियारा लाए नया उजियारा॥
छूटेना छुटाए माँ ऐसी रसधार दो।
करते हैं वंदन माँ ऐसी हुंकार दो॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान की गंगा में हम जन–जन नहाएँ।
तेरा ही संदेशा माँ हम सबको सुनाएँ॥
भटके ना कभी माँ ऐसी वो राह दो।
करते हैं वंदन माँ ऐसी हुंकार दो॥

आए विपत्ति जो हमको ना डिगाए।
आए जो झोका कोई हमको ना हिलाए॥
करते हैं प्रार्थना माँ ऐसी यशधार दो।
करते हैं वंदन माँ ऐसी हुंकार दो॥

नव़युग के अभिनंदन की हो रही तैयारी है।
युग युग से है प्रतिक्षा अब जिसकी भारी है॥
कुछ कर दिखाएँ माँ ऐसे संस्कार दो।
करते हैं वंदन माँ ऐसी हुंकार दो॥

## कोठरी मन की सदा रख साफ वंदे

कोठरी मन की सदा रख साफ वंदे,
कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे।
तुम बुलाते हो उसे यदि भावना से।
कौन जाने कब निमंत्रण मान बैठे॥

दर्द यदि उभरे कभी मन में तुम्हारे,
खर्च मत करना बिना सोचे विचारे।
दर्द से रिश्ता सदा प्रभु का रहा है।
नाम करुणा सिंधु ही उसका रहा है।

एक भी आँसू न कर बरबाद बन्दे।
कौन जाने कब समंदर माँग बैठे।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाह हो तो राह बन जाती गगन में।
चाह से उत्साह भरता मन बदन में।
चाह पूरी हो यही सब माँगते हैं।
किंतु उसका मर्म कब पहचानते हैं।
स्वर्ग भूतल पर गढ़े कैसे विधाता।
नर्क में ही सुख मनुज यदि मान बैठे।

रोज मानव कर रहा दुःख की शिकायत,
दुष्टता की कर रहा फिर क्यों हिमायत।
दुःख हरेंगे प्रभु स्वयं अवतार लेकर।
मानवी पुरुषार्थ को पर साथ लेकर।
सूर्य उगकर भी भला क्या हित करेगा।
आँख से पट्टी अगर हम बाँध बैठे।

माँगने की रीति सी कुछ चल पड़ी है।
कृपणता से प्रीति सी कुछ हो चली है।
क्यों नहीं इंसानियत की शान रखते।
है तुम्हें दाता विधाता ने बनाया।
क्यों अरे खुद को भिखारी मान बैठे।
कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे॥

## चंदन सी इस देश की माटी तपोभूमि हर ग्राम हो

चंदन सी इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम हो।
हर नारी देवी की प्रतिमा, बच्चा बच्चा राम हो।
जिसके सैनिक समर भूमि में, गाया करते थे गीता।
जहाँ खेत में हल के नीचे, खेला करती थी सीता।
जीवन का आदर्श जहाँ पर, परमेश्वर का काम हो॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यहाँ कर्म से भाग्य बदल देती, श्रम निष्ठा कल्याणी।
त्याग और तप की गाथाएँ, गाती थी कवि की वाणी।
ज्ञान जहाँ का गंगा जल सा, निर्मल हो अविराम हो॥
रही सदा मानवता वादी, इसकी संस्कृति की धारा।
मिलकर रहना सीखें फिर से, मस्जिद गिरजा गुरुद्वारा।
मानवीय संस्कृति का फिर सारे जग में गुण गान हो॥
हर शरीर मंदिर सा पावन, हर मानव उपकारी हो।
क्षुद्र असुरता को ठुकरा दे, प्रभु का आज्ञाकारी हो।
जहाँ सबेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम हो॥

## आदत बुरी सुधार लो

आदत बुरी सुधार लो, बस हो गया भजन।
मन की तरंग मार लो, बस हो गया भजन॥ आदत.....
दृष्टि में तेरे दोष है, दुनियाँ निहारती।
समता का अंजन आँज लो, बस हो गया भजन॥ आदत.....
आए कहाँ से और अब, जाना कहाँ तुम्हें।
मन में यही विचार लो, बस हो गया भजन॥ आदत.....
नेकी सभी के साथ में, जितनी बने करो।
मत सिर बदी का भार लो, बस हो गया भजन॥ आदत.....
कटुता मनों से त्याग दो, मीठे वचन कहो।
वाणी का स्वर सुधार लो, बस हो गया भजन॥ आदत.....
अच्छे बुरे जो भी तुम्हें, कर्मों के फल दिए।
हँस कर सभी गुजार लो, बस हो गया भजन॥ आदत.....



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

## तुम्हें जन्म दिन की बधाई

तुम्हें जन्म दिन की बधाई बधाई।
यही बात इन दीपकों ने बताई॥

किया जो गया पंच तत्वों का पूजन,
इन्हीं पंच तत्वों के द्वारा बना तन।
अरे ! देव दुर्लभ मिला है ये जीवन,
नहीं भोग में ही खपे देह पावन॥
यही बात इस माध्यम से बताई॥

हरेक वर्ष के दीप तुमने जलाए,
तुम्हारा यह जीवन यूँ ही जगमगाए।
स्वयं यह प्रकाशित अँधेरा मिटाए,
भटकते हुओं को ये राहें दिखाए॥
यही बात इन दीपकों ने सुझाई॥

नहीं देह तुम हो अमर आत्मा हो,
नहीं स्वार्थी जीव विश्वात्मा हो।
अधम हो नहीं दिव्य देवात्मा हो,
अगर साध लो तो परमात्मा हो॥
हो स्वामी अरे ! मत करो सेवकाई॥

सुमन से सुगन्धित रहो मुस्कराओ,
ये जीवन सुमन देवता को चढ़ाओ।
जीओ लोकहित और आशीष पाओ,
जीवेम् शरदः शतम् व्रत निभाओ॥
इसी वास्ते पुष्प अंज्जलि चढ़ाई॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# शिव का सुमिरन हर घड़ी

शिव का सुमिरन हर घड़ी, करना कराना चाहिए।
यों अशिव के संग से, बचना बचाना चाहिए॥
मान जा मन हर घड़ी, आठों पहर शिव ध्यान कर।
तोड़ रिश्ता अशिव से, भव पार होना चाहिए॥ शिव का.....
क्यों अरे ! तू पड़ गया, चक्कर में मायाजाल के।
सत्य, शिव, आनंद में, मन को लगाना चाहिए॥ शिव का.....
क्यों वियोगी की तरह तू, जल रहा संताप से।
इस कुयोगी हृदय को, योगी बनाना चाहिए॥ शिव का.....

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

# लागी रे लगन ओ माँ

लागी रे लगन ओ माँ, एक तेरे नाम की।
एक तेरे नाम की माँ, एक तेरे नाम की॥ लागी रे लगन....
भव सागर में भटकी–भटकी, थकी जीव आत्मा।
ज्ञान का दीप जला दो, मिले परमात्मा।
हे माँ.....पाई है शरण तेरी कृपा श्री राम की॥
गीत तेरा गाए बिना, भक्ति नहीं जागती।
दिल में बसाए बिना, शक्ति नहीं जागती।
हे माँ.....भगवती कहूँ की अम्बा, जुदाई है नाम की॥
मन का सारा मैल धोकर, निर्मल मन कीजिए।
निर्मल बनाकर मन को, सद्बुद्धि दीजिए।
हे माँ.....अब न सताए हे माँ, चिंता धन धाम की॥



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समझ नहीं आती हे माँ, कहाँ तेरा वास है।
जिससे भी पूछूँ हे माँ, करे परिहास है।
हे माँ.....अब तो है आशा केवल, शांतिकुंज धाम की॥
ले चल हमें तू हे माँ, जहाँ तेरा वास हो।
सब कुछ दिखाई दे माँ, इतना प्रकाश हो।
हे माँ.....अंतिम अभिलाषा है माँ, पूर्ण विराम की॥

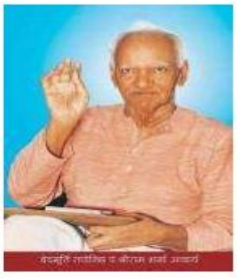
## घर घर अलख जगाएँगे

घर–घर अलख जगाएँगे, हम बदलेंगे जमाना।
निश्चय हमारा ध्रुव–सा अटल है।
काया की रग–रग में निष्ठा का बल है॥
जागृति शंख बजाएँगे, हम बदलेंगे जमाना॥
बदली है हमने अपनी दिशाएँ।
मंजिल नई तय करके दिखाएँ॥
धरती को स्वर्ग बनाएँगे, हम बदलेंगे जमाना॥
श्रम से बनाएँगे माटी को सोना।
जीवन बनेगा उपवन सलोना॥
मंगल सुमन खिलाएँगे, हम बदलेंगे जमाना॥
पीड़ा पतन की तोड़ेंगे, कारा।
ममता की निर्मल बहाएँगे धारा॥
समता का दीप जलाएँगे, हम बदलेंगे जमाना॥

मुद्रक: युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

**गायत्री परिवार** जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

**Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar**
**Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at**
**www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org**